संपादकीय जागरण
गुरुवार, 23 अक्टूबर, 2025 : कार्तिक शुक्ल - 2 वि. 2082

अनुशासन ही उन्नति का आधार है

मोदी-ट्रंप वार्ता

दीवाली के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच शुभकामनाओं का आदान-प्रदान होने के साथ ही दोनों देशों के बीच व्यापार समझौता होने के आसार बढ़ना एक शुभ संकेत है। माना जा रहा है कि दोनों देशों में अगले माह व्यापार समझौता हो सकता है। उसके पहले मलेशिया में आसियान शिखर सम्मेलन में दोनों नेताओं में भेंट भी हो सकती है। व्यापार समझौता होने को लेकर आसार इसलिए बढ़ गए हैं, क्योंकि एक तो दोनों नेताओं ने वैश्विक सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता, आतंकवाद और रणनीतिक साझेदारी समेत व्यापार वार्ता पर भी बात की और दूसरे, अमेरिकी राष्ट्रपति अपने इस दावे से पीछे हटते दिखे कि भारत रूस से तेल खरीद बंद करने पर सहमत हो गया है। इसके बजाय उन्होंने यह कहा कि भारत रूस से अधिक तेल नहीं खरीदेगा। दोनों बातों में अंतर है। यह अंतर समझौते की संभावनाएं पैदा करने वाला है। ट्रंप की बदली भाषा से यह संकेत मिलता है कि वे रूस से तेल खरीद के मामले में बीच का कोई रास्ता निकालने और भारत को रियायत देने के इच्छुक हैं। उन्हें ऐसा करना ही होगा, क्योंकि भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा से समझौता नहीं कर सकता। भारत यह भी नहीं कर सकता कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो कुछ कहें, वह उसे आंख मूंदकर मान ले।

संप्रभु राष्ट्र भारत को अपने हितों की रक्षा करने और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने का उतना ही अधिकार है, जितना अमेरिका को। शायद ट्रंप को यह समझ आने लगा है कि भारत को उस तरह नहीं झुकाया जा सकता, जैसे उन्होंने कई देशों को झुकाया है। भारत ने अमेरिकी राष्ट्रपति के मनगढ़ंत दावों और बड़बोले बयानों का जवाब कूटनीतिक भाषा में देने की जो रणनीति अपनाई है, वही उनके अड़ियल रवैये से पार पाने का सही तरीका है। भारत को उन्हें उनकी ही भाषा में जवाब देने के स्थान पर कूटनीतिक कौशल का सहारा लेकर अपने हितों की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। भारत की पहली प्राथमिकता यही होनी चाहिए कि उसके अनुकूल अमेरिका से कोई व्यापार समझौता हो जाए। एक बार ऐसा समझौता हो जाए तो संबंधों के पटरी पर आने में अधिक समय नहीं लगेगा, क्योंकि उसे भी भारत के सहयोग की आवश्यकता है। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि यदि अमेरिका के साथ शीघ्र व्यापार समझौता हमारी प्राथमिकता है तो अमेरिका को भी अपने अंतरराष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए हमारा साथ चाहिए। वास्तव में दोनों देशों के हित एक-दूसरे से संपर्क-सहयोग में ही जुड़े हैं। तथ्य यह भी है कि आज अमेरिका भारत की अनदेखी करने में समर्थ नहीं, क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से बढ़ने के साथ देश का अंतरराष्ट्रीय कद भी बढ़ा रही है।

चिंताजनक स्थिति

दिल्ली में वायु प्रदूषण के गंभीर स्तर के बावजूद ग्रेडेड रेस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के नियमों का उल्लंघन चिंताजनक है। ये निराशाजनक है कि दीपावली में पटाखों से वायु प्रदूषण बहुत बढ़ जाने के बावजूद दिल्ली में प्रदूषण नियंत्रण के लिए जिम्मेदार एजेंसियां लापरवाही बरत रही हैं। बुधवार को राजधानी में अनेक स्थानों पर धूल उड़ती नजर आई, वहीं खुले में कूड़ा भी जलाया जा रहा था। जो दर्शाता है कि ग्रेप के प्राविधानों को लेकर न ही प्रदूषण नियंत्रण के लिए जिम्मेदार एजेंसियां गंभीर हैं और न ही दिल्लीवासियों को ही इसकी चिंता है कि उन्हें गंभीर स्तर के प्रदूषण में सांस लेनी पड़ रही है और उन्हें प्रदूषण फैलाने वाली किसी भी गतिविधि से बाज आना चाहिए।

> दिल्ली में वायु प्रदूषण के गंभीर स्तर के बावजूद ग्रेडेड रेस्पांस एक्शन प्लान के नियमों का उल्लंघन चिंताजनक है

दिल्ली में सर्दी के दिनों में मौसम ऐसा हो जाता है कि वायु प्रदूषण गहराने लगता है। नमी और हवा की गति धीमी होने से प्रदूषक तत्व वायुमंडल में ऊपर नहीं जा पाते, जिससे प्रदूषण बढ़ता है व परेशानी का सबब बनता है। इस बीच, दीवाली में पटाखे फोड़े जाने से स्थिति और गंभीर हो जाती है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति और दिल्ली सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वायु प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए लगाए गए ग्रेप के प्रविधानों पर पूरी तरह अमल किया जाए। इसमें लापरवाही को दिल्ली सरकार को गंभीरता से लेना चाहिए और इसके लिए जिम्मेदार अधिकारियों-कर्मचारियों पर कार्रवाई करनी चाहिए। यह समझा जाना चाहिए कि जब तक इसके प्रविधानों पर सख्ती से अमल नहीं किया जाएगा, प्रदूषण नियंत्रित करना आसान नहीं होगा।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या ग्रीन पटाखों से प्रदूषण कम होने का दावा हवा-हवाई साबित हुआ?

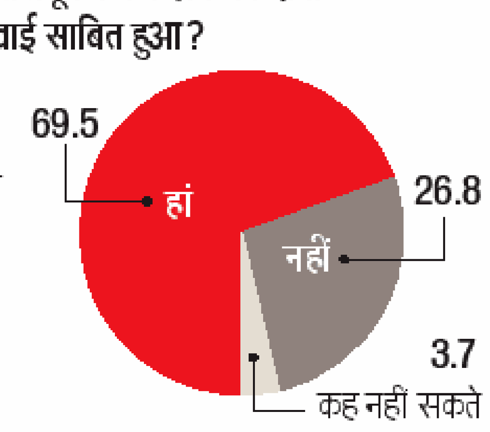

आज का सवाल

क्या तेजस्वी यादव को बिहार के मुख्यमंत्री पद का दावेदार घोषित करने से महागठबंधन को लाभ मिलेगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

अंतिम सांसें लेता माओवाद

आरके विज

सरकार यह सुनिश्चित करे कि माओवाद प्रभावित क्षेत्रों का अपेक्षित विकास हो और आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों का समुचित पुनर्वास किया जाए

माओवाद के खिलाफ लड़ाई में सुरक्षा बलों को हाल में कुछ बड़ी सफलताएं मिली हैं। इनमें महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में माओवादियों की केंद्रीय कमेटी एवं पोलित ब्यूरो के सदस्य वेणुगोपाल उर्फ भूपति उर्फ सोनू का दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी के सदस्यों सहित 60 माओवादियों का आटोमेटिक हथियारों के साथ आत्मसमर्पण कई अर्थों में महत्वपूर्ण था। इनमें से कई जोन एवं डिवीजन स्तर के और कई तकनीकी शाखा के सदस्य थे, जो हथियारों के निर्माण से लेकर उनकी मरम्मत का काम संभालते थे। भूपति दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का सचिव रहा है और आत्मसमर्पण से पहले सेंट्रल रीजनल ब्यूरो का सचिव था। भूपति ने शांति वार्ता की पेशकश की थी, परंतु पार्टी के एकमत न होने से बात आगे नहीं बढ़ पाई। भूपति का आत्मसमर्पण माओवादियों के लिए एक बहुत बड़ा झटका है। जब भूपति ने सशस्त्र संघर्ष को रोकने की बात कही तो उत्तर-बस्तर डिवीजन, माड डिवीजन और गढ़चिरौली डिवीजन के माओवादियों ने उसका समर्थन किया। इसके बाद दंडकारण्य के माओवादी रूपेश उर्फ कोपा उर्फ सतीश, भास्कर उर्फ राजमन मडावी, माड की सचिव रनीता, पूर्व-बस्तर की सचिव निर्मला सहित 210 साथियों ने 17 अक्टूबर को जगदलपुर में आटोमेटिक हथियारों के साथ पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। यह देश में अभी तक का सबसे बड़ा आत्मसमर्पण था। वहीं, 2025 में अब तक 312 माओवादी मुठभेड़ में मारे गए तो 1,600 से अधिक आत्मसमर्पण कर चुके हैं।

माओवादियों के सोच में यह बदलाव अचानक नहीं आया। अगस्त 2024 में माओवादियों के पोलित ब्यूरो ने पार्टी को बचाने के लिए सुरक्षात्मक तरीके अपनाने का निर्णय लिया था। सभी बड़े दलों और कंपनियों को छोटे टुकड़ों में बांटकर सुरक्षा बलों से बचने के प्रयास माओवादी लगातार कर रहे थे। इसके बावजूद सुरक्षा बलों के अभियानों से वे सिकुड़ते जा रहे थे। मई 2025 में पार्टी महासचिव बसवराजू अपनी मिलिट्री कंपनी के साथ नारायणपुर जिले में हुई मुठभेड़ में मारा गया। इसके बाद केंद्रीय कमेटी का सदस्य माडेम बालकृष्ण गरियाबंद में और रामचंद्र रेड्डी एवं कोसा भी मारे गए। कई माओवादियों ने विगत दिनों तेलंगाना में आत्मसमर्पण किया। इनमें पूर्व माओवादी किशन जी की पत्नी पद्मावती उर्फ सुजाता, चंदू, विकास आदि शामिल हैं। लगातार नए सुरक्षा कैंप स्थापित कर पुलिस को आगे बढ़ते हुए देखकर माओवादी सरगना समझ चुके हैं कि जो लड़ाई उन्होंने 1980 में दंडकारण्य में शुरू की थी, वह किसी भी हालत में जीत नहीं सकते। इसलिए बेहतर है कि आत्मसमर्पण कर अहिंसा का रास्ता अपनाया जाए। बावजूद इसके, सोनू और रुपेश ने कहा है कि वे आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

अवधेश राजपूत

बदली हुई स्थिति में सरकार के दो कर्तव्य महत्वपूर्ण हैं। पहला यह कि क्षेत्र का समुचित विकास हो और दूसरे आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों का समुचित पुनर्वास। सरकार को चाहिए कि वह ऐसी समस्त सामाजिक असमानताओं को दूर करने का प्रयास करे, जिन्हें आधार बनाकर माओवादियों ने ग्रामीणों में पैठ बनाई थी। विकास की योजना 'नियाद नेलानार' (आपका अच्छा गांव) जैसी योजनाओं का विस्तार केवल सुरक्षा कैंपों की पांच किलोमीटर की परिधि तक सीमित न रखते हुए ऐसे पूरे इलाकों में कर दें, जहां माओवादी आत्मसमर्पण कर चुके हैं। शिक्षा के आश्रम बनाने, स्वास्थ्य सेवा के लिए अस्पताल या डिस्पेंसरी बनाने की योजनाओं को शीघ्र मूर्त रूप देना होगा, क्योंकि आदिवासियों के लिए वनोपज जीवन का एक महत्वपूर्ण साधन है। उनके उचित दाम एवं उनकी प्रोसेसिंग के लिए कुछ योजनाएं लागू करने पर भी विचार करना होगा। सड़कों का निर्माण और मोबाइल टावर्स भी लगाए जाएं। ऐसे विकास कार्यों को क्रियान्वित करने में यह भी सुनिश्चित करना होगा कि पर्यावरण को कम से कम नुकसान हो। सरकार यह निगरानी भी करे कि आत्मसमर्पण कर चुके माओवादियों को पुनर्वास नीति का लाभ शीघ्र मिले। उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण देकर रोजगार के साधन उपलब्ध कराने होंगे। यह सब करने के बाद भी उन इलाकों पर सुरक्षा बलों को नजर बनाए रखनी होगी, जहां माओवादी आत्मसमर्पण कर चुके हैं।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार बसवराजू के मरने के बाद माओवादी अपने नए महासचिव का चुनाव नहीं कर पाए हैं। दंडकारण्य के नए सचिव का भी चुनाव नहीं हुआ है। यही कारण है कि केंद्रीय कमेटी एकजुट होकर कोई निर्णय नहीं ले पा रही है और सभी डिवीजन अपनी-अपनी प्रेस विज्ञप्ति जारी कर युद्धविराम की घोषणाएं कर रही हैं। हालांकि तेलंगाना स्टेट कमेटी ने युद्ध जारी रखने की बात कही है, परंतु वह न केवल स्वयं कमजोर स्थिति में है, बल्कि उसके बड़े सदस्य भी राज्य से बाहर शरण लिए हुए हैं। पूर्व महासचिव गणपति, केंद्रीय कमेटी सदस्य संग्राम, गणेशन्ना, हेमंत बिसरा आदि की तरफ से भी कोई बयान जारी नहीं हुआ है।

अभी पूरी माओवादी पार्टी नेतृत्वविहीन है तो भारत सरकार अगले वर्ष 31 मार्च तक माओवादियों के उन्मूलन को लेकर प्रतिबद्ध है। गृह मंत्रालय के अनुसार देश में माओवाद प्रभावित जिलों की संख्या घटकर 11 रह गई है, जिनमें से केवल तीन जिले ही अत्यंत प्रभावित हैं। इन 11 जिलों में से सात छत्तीसगढ़ के हैं। इनमें नारायणपुर और कांकेर में लगभग समस्त माओवादियों ने आत्मसमर्पण कर दिया है। गरियाबंद जिले के माओवादियों ने भी आत्मसमर्पण की बात कही है। कुछ क्षेत्रों को छोड़कर दंडकारण्य के लगभग सभी माओवादियों ने आत्मसमर्पण कर दिया है। अब केवल माओवादियों के सेंट्रल मिलिट्री कमीशन के प्रमुख देवजी के अलावा, मिलिट्री बटालियन का प्रमुख माडवी हिड़मा और दंडकारण्य कमेटी के कुछ सदस्य शेष हैं, जो शायद अभी आत्मसमर्पण करने या युद्ध जारी करने को लेकर असमंजस में हैं। संभव है कि वे भी सोनू और रूपेश की तरह परिस्थितियों को देखते हुए जल्द ही मुख्यधारा में शामिल होने का फैसला करें। अगर ऐसा नहीं होता तो भी माओवादी पार्टी केवल एक औपचारिकता ही बनकर रह जाएगी।

(लेखक छत्तीसगढ़ के पूर्व डीजीपी हैं)

response@jagran.com

संस्कृति के बहाने हिजाब की पैरवी

क्षमा शर्मा

अब पितृसत्ता से मुक्ति की चाह रखने वाले भी हिजाब या बुर्के को स्त्री अस्मिता का प्रतीक बताते हैं

केरल में कोच्चि के एक मिशनरी स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक लड़की जब हिजाब पहनकर आने लगी तो वहां के अधिकारियों ने कहा कि वह स्कूल यूनिफार्म में ही आए। इस पर विवाद हो गया और केरल के शिक्षा मंत्री वी. सिवनकुट्टी भी इसमें कूद पड़े। उन्होंने स्कूल को आदेश दिया कि लड़की को हिजाब पहनकर आने दिया जाए। उन्होंने एक जांच भी बिठा दी, जिसमें कहा गया कि स्कूल के आचरण से बच्ची को बहुत परेशानी हुई। कुट्टी ने यह भी कहा कि स्कूल का इस तरह का आदेश धार्मिक स्वतंत्रता के मानकों के खिलाफ है। बाद में स्कूल अधिकारियों ने बच्ची के माता-पिता से बात की, लेकिन बात नहीं बनी, क्योंकि राजनीतिक दल एसडीपीआइ विवाद भड़काने में लग गया। उसके सदस्यों ने स्कूल वालों के साथ बदतमीजी की, जिनमें से अधिकांश नन थीं। हिजाब का मामला केरल हाई कोर्ट भी पहुंचा, जिसने स्कूल को पुलिस सुरक्षा देने के आदेश दिए। इस सबके बीच बच्ची के माता-पिता ने कहा कि वह अपनी बेटी का दाखिला किसी अन्य स्कूल में कराएंगे। केरल सरकार ने इसमें बच्ची की मदद करने की पेशकश की यानी वह भी लड़की को हिजाब सहित पढ़ने की अनुमति देने के पक्ष में खड़ी हो गई। सवाल यह है कि क्या स्कूल अब मजहबी आदेशों से चलेंगे या अपने कायदे-कानूनों और परंपरा से? सिवनकुट्टी जिस वाम दल के प्रतिनिधि हैं, वह धर्म को नहीं मानता, फिर एकाएक उन्हें धार्मिक अधिकारों की याद कैसे आ गई?

कुछ साल पहले कर्नाटक के एक स्कूल को लेकर भी ऐसा ही विवाद हुआ था। इस विवाद को भी राजनीतिक दलों ने खूब हवा दी थी। बहुत सी महिलाएं, जो न कभी हिजाब पहनती थीं, न बुर्का, बल्कि पश्चिमी वेशभूषा में दिखाई देती थीं, उन्होंने हिजाब का समर्थन किया था। यह देखने योग्य है कि स्त्रीवाद की तमाम परिभाषाएं मजहब देखकर ही तय होती हैं। ईरान में खोमैनी के 1979 में सत्ता में आने के बाद स्त्रियों का हिजाब पहनना अनिवार्य कर दिया गया था। इसके लिए सड़कों पर मोरल पुलिस घूमती है। जो स्त्रियां हिजाब पहने नहीं पाई जातीं, उन्हें भारी जुर्माना,

हिजाब के समर्थन में केरल के शिक्षामंत्री ● फाइल

कोड़ों और जेल की सजा दी जाती। इसी सजा के चलते 2022 में वहां म्हासा अमीनी की मौत हो गई थी। तब स्त्रियों में गुस्सा फूट पड़ा था। उन्होंने सिर से हिजाब उतार फेंके थे। वे प्रदर्शन करने लगीं। वहां की सरकार ने इस आंदोलन को निर्ममता से कुचला। बहुत से स्त्री-पुरुष मारे गए। खोमैनी से पहले ईरान में स्त्रियां अपनी पसंद के कपड़े पहनती थीं, लेकिन 1979 की तथाकथित क्रांति ने स्त्रियों को फिर से हिजाब और बुर्के में लपेट दिया। मामला मजहब और संस्कृति का बताकर चुप्पी साध ली गई। इसके बरक्स तुर्किये में स्त्रियों ने हिजाब के समर्थन में आंदोलन चलाया। वहां स्त्रियां हिजाब पहनने की मांग कर रही थीं। कमाल पाशा ने तुर्की में जो सुधार किए, उनमें स्त्री को पर्दे से बिल्कुल आजाद कर दिया था, लेकिन अब तुर्किये की स्त्रियों को पर्दा चाहिए। कितना विरोधाभास है। शायद इसका कारण सरकारों द्वारा लादे गए कानून होते हैं। उनका विरोध करते-करते कभी-कभी अपने ही पांव में कुल्हाड़ी मार ली जाती है, जैसा कि तुर्किये की स्त्रियां कर रही थीं।

कुछ साल पहले हरियाणा की एक पत्रिका ने घूंघट को स्त्री अस्मिता का प्रतीक बताया था तो काफी विरोध हुआ था, लेकिन इन विरोध करने वालों ने ही हिजाब के मामले में खामोशी ओढ़ ली। आखिर यह कौन सी स्वतंत्रता की चाह है, जो मजहब और संस्कृति का बहाना बनाकर चुप हो जाती है। मेरी पसंद, मेरी आजादी की बात अब यहां तक भी आ पहुंची है कि बात-बात पर पितृसत्ता से मुक्ति की चाहत रखने वाले हिजाब या बुर्के को भी स्त्री अस्मिता का प्रतीक बताने लगे हैं। चाहे घूंघट हो या हिजाब, इसकी जिम्मेदारी स्त्रियों की ही क्यों है? पुरुषों के लिए ऐसा कोई नियम क्यों नहीं? दुनिया भर में पुरुषों ने तो अपनी ड्रेस पैंट-शर्ट कर रखी है और स्त्रियों के कपड़ों पर चील नजर लगी रहती है। क्या दुनिया के मजहबों और संस्कृतियों को बचाने का ठेका स्त्रियों ने ले रखा है। वे क्या करें, यह लादने वाले आप कौन? क्या इसे दोयम दर्जे की नागरिकता नहीं कहते?

जब राजा राममोहन राय बंगाल में सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन चला रहे थे, तो वहां एक सती समर्थक गुट भी था। उसने स्त्रियों का एक जुलूस निकाला, जिसमें वे कह रही थीं कि वे सती होना चाहती हैं। 1987 में जब राजस्थान के दिवराला में रूपकंवर सती हो गई थी, तब एक दल की बड़ी महिला नेत्री ने बयान दिया था कि सती होना स्त्री का अपना अधिकार है।

आपको शाहबानो केस याद होगा। मामला मात्र गुजारा भत्ते का था। अदालत ने शाहबानो के पक्ष में फैसला दिया कि उन्हें गुजारा भत्ता दिया जाना चाहिए। बस बवाल हो गया और उस समय की केंद्र सरकार ने उच्चतम न्यायालय के फैसले को पलट दिया। बाद में शाहबानो ने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने उनके पक्ष में फैसला देकर गलत किया। जब उनसे पूछा गया गया कि अपने ही पक्ष में दिए फैसले को गलत क्यों बताया तो वे बोलीं-अगर मैं ऐसा न कहती, तो देश में खून की नदियां बह जातीं। कई बार लगता है कि जब से आइडेंटिटी पालिटिक्स ने लोगों के जीवन में प्रवेश किया है, तब से कई लोगों को किसी भी सुधार की बात उन्हें अपने जीवन में हस्तक्षेप लगती है।

(लेखिका साहित्यकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

स्वयं की खोज

हम जन्म से लेकर अंतिम पड़ाव तक की यात्रा में कुछ न कुछ खोजते ही रहते हैं। यह खोज वैसे ही प्रसुप्त है जैसे बीज में अंकुर छिपा होता है। आराम से जीने के लिए धन खोजा, विज्ञान की खोज से सुख-सुविधाओं को जुटाया। नवीनतम चिकित्सा के साधन एवं औषधियां खोजने पर भी स्वास्थ्य में गिरावट रुकी नहीं और अंत में जाना कि मृत्यु होने पर धन और सुविधाएं सब यहीं रह जाते हैं। ऐसी ही नाना प्रकार की खोज में सारा जीवन बिता देने के बाद अंत में अनुभव हुआ कि जो कुछ भी खोजा है, वह सब सारहीन है। जो साथ न जा सके, वह सार कैसे होगा? यहां अपने के अतिरिक्त कुछ भी सार नहीं है। अपनी खोज से ही जीवन सार्थक हो सकता है। अपनी खोज ही मौलिक खोज है। जिसे खोजना है और पाना है, वह हमारे भीतर है। जैसे ही हम अपनी खोज प्रारंभ करेंगे, वैसे ही हमें लगेगा कि जानने के विषय तो बहुत बचते हैं, किंतु जानने का कारण शेष नहीं रहता। स्वयं को जानना अनिवार्यता है, क्योंकि जो हम हैं वही संसार है। जब अपनी खोज इतनी महत्वपूर्ण है तो हम उसे टालते क्यों हैं? शायद हम खुद को भूलना चाहते हैं।

अपने को भूल जाना स्वयं के प्रति सबसे बड़ा अपराध है। इसका कारण यही है कि हम दूसरी चीजों को याद करने में ही लगे रह जाते हैं। जहां स्मृति पटल पर हजारों चीजें अंकित हों, वहां स्वयं को याद करने की जगह ही नहीं बचती। हमारी यह भूल अक्षम्य है। अपनी खोज का एक ही मार्ग है कि सब की ओर से अपनी आंखें मूंद लेना। मन को इस संकल्प के साथ मोड़ना कि जब तक मैं स्वयं को नहीं जान लेता, तब तक कुछ और जानने का कोई मूल्य-महत्व नहीं है? मनीषियों का कहना है जो अपने से दूर निकल जाता है, वह अपने आप से अजनबी हो जाता है। उसके जीवन में सदा अंधकार बना रहता है। इसलिए, स्वयं के भीतर उतर कर अपनी खोज कर स्वयं को आलोकित करें।

डा. निर्मल जैन

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

शिक्षा से हुआ सकारात्मक परिवर्तन

'बेटियों की शिक्षा बदल रही है भाग्य' शीर्षक से प्रकाशित लेख में डा. शमिका रवि ने सही लिखा है कि जब आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं तो पूरे समाज को आगे ले जाते हैं। भारत आज प्रगति कर रहा है तो उसमें महिलाओं की तरक्की अहम कारक है। अगर महिलाएं पढ़ाई में पीछे रह जाती हैं तो हमारी पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक संरचना लुंज-पुंज हो जाती है। नारी सशक्तीकरण को लेकर सरकार ने सकारात्मक सोच का परिचय दिया है। बेटियों ने भी सरकार की उस नीति को अपने प्रयासों से सफल बनाया है। प्रधानमंत्री मोदी का कार्यकाल इस दृष्टि से उल्लेखनीय कहा जाएगा कि बेटियों ने शिक्षा जगत में लंबी छलांग लगाई है, जिसका सकारात्मक परिणाम हुआ है कि प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं ने मजबूती से उपस्थिति दर्ज कराई है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना ने आधी आबादी की उड़ान को ऊंचाई दी है, पर महिलाओं को समर्पित तमाम योजनाएं तब अधिक सार्थकता की अनुभूति कराएंगी, जब महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित न होना पड़े।

डा. मिथिलेश कुमार, भागलपुर (बिहार)

विकसित भारत का लक्ष्य

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। होना तो यह चाहिए था कि पूरा विपक्ष, खासतौर पर कांग्रेस इस राष्ट्रीय गौरव के लक्ष्य में बढ़ चढ़कर योगदान देता। अफसोस योगदान तो दूर, कांग्रेस पार्टी भारत को विश्व में नीचा दिखाने की कोशिश कर रही है। विकसित भारत के भव्य महल की नींव रखी जा चुकी है। इसका प्रमाण है भारत विश्व में चौथी सबसे बड़ी आर्थिकी बन गया है। पूरे विश्व में सबसे अधिक विकास दर लगातार बनी हुई है। रक्षा क्षेत्र में तो चमत्कार ही हो गया है। 2014 में जो भारत दो तिहाई रक्षा सामान विदेश से खरीद रहा था, आज केवल एक तिहाई ही आयात कर रहा है। मिसाइल, फाइटर जेट तक निर्यात कर रहा है। तेजस जैसा आधुनिक फाइटर विमान देश में बना चुका है। उन्नत किस्म का विमान वाहक पोत बना चुका है। भारत की वायु सेना चीन को पछाड़ कर विश्व की तीसरे नंबर की सेना बन गई है। चीन आज तक डराता था, अब डरने लगा है। इसरो तो नित नई बुलंदियों को छू रहा है। नासा तक इसरो का लोहा मानने लगे हैं। इसरो भी विश्व में तीसरे स्थान पर है। चिकित्सा क्षेत्र में भी चमत्कार हो रहे हैं। भारत ने पहली बार उच्च कोटि का एंटीबायोटिक, कोविड का टीका कोवैकसिन बनाया है। उच्च कोटि के रेलवे इंजन और कोच नीर्मित हो रहे हैं, और निर्यात भी हो रहे हैं। डिजिटल लेनदेन में तो क्रांति आ ही चुकी है। कंप्यूटर, चिप निर्माण, एआइ, रिसर्च एंड डेवलपमेंट में नित नए प्रयोग हो रहे हैं। नवीकरणीय, ग्रीन उर्जा में तेजी से वृद्धि हो रही है। देश में हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेन और ट्रक बन चुके हैं। सूची बहुत ही लंबी है। लेकिन यह उदाहरण यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त हैं कि भारत 2047 तक विकसित भारत बनकर रहेगा।

सीपी बंसल, दिल्ली

बदहाल न्याय व्यवस्था

भारत में न्यायालय से न्याय पाना सबसे कठिन कार्य है। यहां केवल तारीख पर तारीख मिलती है। करोड़ों केस न्याय के इंतजार में हैं। फैसला आने में 30-40 साल लगना साधारण सी बात है। कभी-कभी आरोप तय होने में ही 10 साल लग जाते हैं। कोर्ट कभी छोटी सी बात का भी स्वतः संज्ञान लेकर लेता है, पर सनातन को लेकर दिए गए अभद्र बयानों पर उसका ध्यान नहीं जाता। वह पत्थरबाजों, आतंकियों एवं बलवाइयों के मानवाधिकारियों का तो ध्यान रख लेता है, पर सैनिकों, अर्धसैनिक बलों एवं पुलिस कर्मियों के अधिकारों को दिलाने के लिए कभी लालायित नही दिखता। जेल में कैदियों के पास से पैसा, ड्रग्स, हथियार, मोबाइल आदि बरामद होते रहते हैं। थाने, अस्पताल आदि में छुट्टी कभी नहीं होती पर कोर्ट में छुट्टियां आवश्यकता से बहुत अधिक होती हैं। अभी तक 52 चीफ जस्टिस बन चुका हैं पर कोई भी पेंडिंग केसों की संख्या कम करने में सफल नहीं हो पाया। जमानत मिलने के बाद भी जेलों में कागजात काफी विलंब से पहुंचते हैं। डिक्री होने के बाद सालों तक उसका क्रियान्वयन नहीं होता। इसी स्थिति की भयावहता से आहत होकर सुप्रीम कोर्ट की एक पीठ को स्वयं ही कहना पड़ा कि यह न्याय का उपहास है। अब उसने हाई कोर्ट को निर्देश दिए हैं कि वह समय बद्ध योजना बनाकर काम करें और डिक्री के क्रियान्वयन को गति दें। यहां कालेजियम के माध्यम से भाई-भतीजावाद को शह दी जाती है।

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

पोस्ट

भ्रष्टाचार पर जीरो टालरेंस के सरकारी दावे कुछ और नहीं, बल्कि कोरा मजाक हैं। यदि इस प्रकार की नीति वास्तव में अपनाई गई होती तो कुछ आइएएस, आइपीएस और अन्य सरकारी बाबुओं के पास करोड़ों रुपये कैसे मिलते हैं? सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार इसलिए है, क्योंकि हमारे औसत नेता भ्रष्ट हैं।

विकास सारस्वत@VikasSaraswat

भारत के लोकायुक्त कार्यालय ने सात नई बीएमडब्ल्यू कारें खरीदने का फैसला किया है। अब देश में भ्रष्टाचार की खैर नहीं, क्योंकि ये कारें 'बहुत तेजी से दौड़ने में सक्षम हैं और वे करप्शन को धर दबोचेंगी।'

कमलेश सिंह@kamleshksingh

पटाखों पर नियंत्रण को लेकर अदालतों से लेकर पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठ रहे हैं। हमें यह समझना होगा कि जब अधिकांश लोग ही किसी कानून का पालन करने से किनारा करें तो कोई भी कानून प्रवर्तन एजेंसी उसमें कुछ खास नहीं कर सकती। कानून सामाजिक इच्छाशक्ति के सहयोग से ही कारगर होते हैं, किसी जबरन तरीके से नहीं।

अरुण बोथरा@arunbothra

जनपथ

वादा करने में नहीं करते नेता चूक,
झूठे-सच्चे सब करो औषधि बड़ी अचूक।
औषधि बड़ी अचूक इसी से जनता रीझै,
नेता रहा पिलाय आप यह अमृत पीजै।
है चुनाव का दौर समझिए कम को ज्यादा,
तेजस्वी ने आज किया है जमकर वादा!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए, डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय :0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 97

****

30 हजार रुपये मासिक वेतन पर कम्युनिटी मोबलाइजर को पक्की नौकरी देने का राजद नेता तेजस्वी यादव ने वादा किया है।

परिवार की सियासी पारी आगे बढ़ाने में आधी आबादी भी पीछे नहीं

दीनानाथ सहनी • जागरण

पटना : वर्तमान में बिहार में आधी आबादी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। पद्मश्री किसान चाची राजकुमारी देवी ने एक परिश्रमी महिला के तौर पर अलग पहचान बनाई हैं, वहीं अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज श्रेयसी सिंह 2020 में भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर उसी साल विधानसभा चुनाव में जमुई क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुईं। बिहार के दिग्गज नेता रहे दिग्विजय सिंह की बेटी श्रेयसी सिंह परिवार की सियासी पारी को आगे बढ़ा रही हैं। उनकी मां पुतुल देवी भी सांसद रह चुकी हैं। श्रेयसी सिंह सिर्फ उदाहरण मात्र नहीं हैं। यदि परिवार की सियासी पारी को आगे बढ़ाने में आधी आबादी की

श्रेयसी सिंह।

भूमिका को देखें तो महिलाएं पीछे नहीं हैं। कभी जिस विधानसभा क्षेत्र से माता-पिता, सास-ससुर, समधी और पति-देवर ने प्रतिनिधित्व किया, उसी क्षेत्र से चुनाव में जीत दर्ज कर आधी आबादी ने परिवार की सियासी विरासत को संभालने का काम बखूबी किया। 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में 26 महिलाएं विधायक चुनी गई थीं। इनमें से ऐसी 16 महिला विधायक रहीं, जो राजनीतिक परिवारों से ताल्लुक रखती हैं। 2025 के चुनाव में भी दर्जनभर महिलाएं राजनीतिक परिवारों से हैं और सियासी पारी को आगे बढ़ाने के लिए मैदान में उतरी हैं। विगत चुनाव में प्राणपुर विधानसभा से निर्वाचित विधायक निशा सिंह के पति बिनोद सिंह बिहार सरकार में मंत्री रहे हैं। फुलपरास विधायक शीला कुमारी उर्फ शीला मंडल के ससुर धनिक लाल मंडल जाने-माने राजनीतिज्ञ थे। राज्यपाल भी रहे। शीला अभी नीतीश सरकार में मंत्री भी हैं। हिसुआ की विधायक नीतू कुमारी के ससुर आदित्य सिंह पूर्व मंत्री रहे और हिसुआ सीट से कई बार विधायक चुने गए। अब उनकी बहु नीतू सियासी पारी को आगे बढ़ा रही हैं।

खानदानी विरासत संभालने को नई पारी की शुरुआत

मुजफ्फरपुर जिले के गायघाट विधानसभा क्षेत्र से 2010 में वीणा देवी विधायक रहीं। अब उनकी पुत्री कोमल सिंह गायघाट सीट पर जदयू के टिकट पर चुनाव लड़ रही हैं। उनकी मां वीणा देवी अभी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की सांसद हैं और वैशाली लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके पिता दिनेश प्रसाद सिंह जदयू के विधान पार्षद हैं। शिवानी शुक्ला लालगंज विधानसभा क्षेत्र से राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के टिकट पर उम्मीदवार हैं। वह अपने माता-पिता (पूर्व विधायक मुन्ना शुक्ला-अन्नु शुक्ला) की सियासी पारी को आगे बढ़ाने के लिए मैदान में हैं। परिहार विधानसभा क्षेत्र से राजद के ही टिकट पर चुनाव लड़ रहीं स्मिता पूर्वे गुप्ता अपने ससुर पूर्व मंत्री रामचंद्र पूर्वे की सियासी पारी को आगे बढ़ाने का मन बना चुकी हैं। उनके ससुर लंबे अरसे तक लालू-राबड़ी की सरकार में मंत्री रहे और वर्तमान में बिहार विधान परिषद के सदस्य हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री और मुजफ्फरपुर लोकसभा क्षेत्र से लंबे अरसे तक सांसद रहे कैप्टन जय नारायण प्रसाद निषाद की बहू रमा निषाद औराई सीट से भाजपा की उम्मीदवार हैं। उनके पति अजय निषाद भी मुजफ्फरपुर से दो बार भाजपा के सांसद रह चुके हैं।

बिहार में दूसरा चरण लेगा मांझी की परीक्षा

कुमार रजत • जागरण

जीतनराम मांझी •

- चार पर हम के सिटिंग विधायक, कुटुम्बा और अतरी में जीत की होगी तलाश
- मांझी की बहू और समधन भी लड़ रहीं चुनाव, राजद और कांग्रेस से होगा मुकाबला

पटना : बिहार विधानसभा चुनाव का दूसरा चरण एनडीए में जीतन राम मांझी की ताकत की परीक्षा लेगा। उनकी पार्टी हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) को छह सीटें मिली हैं। इन सभी सीटों पर दूसरे चरण में 11 नवंबर को मतदान है। इन छह सीटों में से अभी चार सीटें हम के खाते में हैं, जबकि राजद और कांग्रेस के पास एक-एक सीट है।

हम को गया की इमामगंज, बाराचट्टी, टिकारी एवं अतरी, जमुई की सिकंदरा और औरंगाबाद की कुटुम्बा सीट मिली है। इसमें अतरी की सीट हम के लिए नई है, जबकि बाकी पांच सीटों पर उसने पिछले बार भी चुनाव लड़ा था। इन छह सीटों में चार पर हम का राजद से सीधा मुकाबला है। वहीं कुटुम्बा सीट पर कांग्रेस, जबकि सिकंदरा की सीट पर हम के मुकाबले राजद और कांग्रेस दोनों ने प्रत्याशी उतारे हैं। इमामगंज में मांझी की बहू एवं विधायक दीपा मांझी के विरुद्ध राजद ने ऋतु प्रिया चौधरी को टिकट दिया है। बाराचट्टी में मांझी की समधन ज्योति देवी को राजद की तनुश्री मांझी चुनौती दे रही हैं।

अतरी में हम के रोमित कुमार के विरुद्ध राजद ने वैजयंती देवी को उतारा है। वहीं टेकारी में हम के प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक अनिल कुमार के विरुद्ध राजद के अजय दांगी हैं। औरंगाबाद की कुटुंबा सीट पर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष एवं वर्तमान विधायक राजेश राम के विरुद्ध हम ने ललन राम को उतारा है। गया की सिकंदरा सीट पर हम के विधायक प्रफुल्ल के विरुद्ध महागठबंधन के दो-दो प्रत्याशी हैं।

लौरिया से महागठबंधन उम्मीदवार 373 करोड़ की संपत्ति के मालिक

जासं, बेतिया (पश्चिमी चंपारण): बिहार में पश्चिमी चंपारण जिले की लौरिया विधानसभा क्षेत्र से महागठबंधन की ओर से वीआइपी के प्रत्याशी रणकौशल प्रताप सिंह 373 करोड़ की संपत्ति के मालिक हैं। इनके पास 2.58 करोड़ की कृषि योग्य भूमि है। पटना, बेतिया, बांका में इनके पास 57 प्लाट गैर कृषि योग्य भूमि है। 12 कामर्शियल बिल्डिंग हैं। पांच गाड़ियां हैं। 80 लाख का सोना और आठ लाख के हीरे हैं। इनके पास रायफल और पिस्टल भी है। इनकी पत्नी सलोनी सिंह व दोनों पुत्रियां श्रीजा सिंह और रिद्धि सिंह भी करोड़ों की मालकिन हैं।

रणकौशल प्रताप •

राजद के स्टार प्रचारक अनिल सहनी भाजपा में

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: राजद के विधानसभा चुनाव के स्टार प्रचारक और जदयू के पूर्व सांसद डा. अनिल कुमार सहनी बुधवार को भाजपा में शामिल हो गए। पूर्व विधायक आशा देवी ने भी भाजपा की सदस्यता ली। भाजपा मीडिया सेंटर में समारोह में केंद्रीय मंत्री और चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, बिहार प्रभारी विनोद तावड़े और यूपी के दारा सिंह चौहान ने इन सभी को भाजपा की सदस्यता दिलाई। डा. सहनी राजद से 2020 के चुनाव में कुढ़नी से विधायक बने थे।

केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ डा. अनिल कुमार सहनी (दाएं)।

बिहार में टिकट बंटवारे के फेर में फंसी कांग्रेस, पार्टी में सामने आया असंतोष

पुराने कांग्रेस नेता खुलकर उतरे विरोध में

सुनील राज • जागरण

- पुराने, अनुभवी नेता से लेकर जमीनी कार्यकर्ताओं तक नेतृत्व के खिलाफ बना रहे हैं माहौल
- प्रभारी अल्लावारू और अध्यक्ष राजेश राम व शकील अहमद खान के खिलाफ लोगों में गुस्सा

पटना : बिहार विधानसभा चुनाव में टिकट बंटवारे के बाद कांग्रेस में मचा घमासान थमने का नाम नहीं ले रहा। एक ओर बाहरी उम्मीदवारों को टिकट देने को लेकर नेता-कार्यकर्ता नाराज हैं तो दूसरी ओर संगठन का ढांचा समय पर न बनाए जाने को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। हर जिले में प्रदेश नेतृत्व के खिलाफ खेमेबंदी हो रही है। विरोध की बुलंद होती आवाज को देखते हुए केंद्रीय नेतृत्व ने बिहार में कुछ नेताओं को सक्रिय कर दिया है। इसी कड़ी में पार्टी के वरिष्ठ नेता और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बिहार पहुंचे हैं।

टिकट बंटवारा बना मुसीबत : बिहार कांग्रेस में कलह का सबसे बड़ा मुद्दा है टिकट। पार्टी ने चुनाव में दर्जनभर ऐसे लोगों को टिकट थमाए हैं जिनका कांग्रेस से संबंध नहीं है। ऐसे आरोप लगाए जा रहे हैं कि प्रदेश नेतृत्व में शामिल बड़े नेताओं ने पैराशूट (बाहरी) उम्मीदवारों से पैसे लेकर टिकट बांटे हैं। इससे पार्टी कार्यकर्ता और पुराने नेता आक्रोशित हैं।

प्रदेश और जिला कमेटियों का गठन न होने से भी गुस्सा: चुनाव के पहले तक प्रदेश और जिला कार्य समिति गठित न किए जाने को लेकर भी बिहार प्रभारी अल्लावारू और अध्यक्ष राजेश राम व विधानमंडल दल के नेता (सीएलपी) शकील अहमद खान के खिलाफ लोगों में गुस्सा है। एक वरिष्ठ नेता कहते हैं, 10 वर्ष से न तो प्रदेश कमेटी बनी न ही जिला कमेटियां। संगठन है नहीं और ऊपर से बाहरी उम्मीदवारों को टिकट लुटाकर चुनाव जीतना दिवास्वप्न के सिवा कुछ नहीं। पार्टी के एक वरिष्ठ नाराज नेता ने कहा कि बिहार कांग्रेस गहरे संकट में है। टिकट बंटवारे में खेल, संगठन का अभाव और शीर्ष नेतृत्व की चुप्पी ने कार्यकर्ताओं का मनोबल तोड़ दिया है। संगठन में नाराजगी से निपटना बड़ी चुनौती है।

2015 में अंतिम बार गठित हुई थी प्रदेश कार्यसमिति

कांग्रेस के पुराने नेताओं से मिली जानकारी के अनुसार वर्ष 2013 में जिस वक्त डा. अशोक चौधरी प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष थे उस वक्त प्रदेश कार्यसमिति का गठन किया गया। जिसके बाद 2015 में उन्होंने अपने कार्यकाल के अंतिम दिनों में दोबारा कमेटी का गठन किया। 2017 में कमेटी का कार्यकाल भी समाप्त हो गया। इसके बाद कई अध्यक्ष और प्रभारी बदले, लेकिन प्रदेश कार्य समिति या जिला समिति नहीं बनी।

राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव से उनके आवास पर चर्चा करते कांग्रेस नेता अशोक गहलोत। साथ में राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव • पीटीआई

महागठबंधन में एकजुटता की कोशिश, गहलोत बने सेतु

- लालू-तेजस्वी से मिले, आज हो सकती साझा प्रेस कान्फ्रेंस
- स्वीकार किया कि आठ-दस सीटों पर दोस्ताना संघर्ष संभव

राज्य ब्यूरो, जागरण. पटना : बिहार विधानसभा चुनाव के बीच सीट बंटवारे के साथ दोस्ताना संघर्ष को लेकर महागठबंधन में बढ़ी दरारों को पाटने की कोशिशें तेज हो गई हैं। पहल कांग्रेस की ओर से की गई है। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व ने राजद-कांग्रेस के रिश्तों में आई दूरी को कम करने का जिम्मा राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री और बिहार विधानसभा चुनाव पर्यवेक्षक अशोक गहलोत को सौंपा है। एक ओर कांग्रेस नेता अशोक गहलोत ने लालू-तेजस्वी से मुलाकात कर स्थिति को कंट्रोल करने की कोशिश की है तो दूसरी ओर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता केसी वेणुगोपाल ने भी तेजस्वी से फोन पर बातचीत की है। दोनों नेताओं की बातचीत की जानकारी नहीं मिल पाई।

आलाकमान के निर्देश पर गहलोत बुधवार को पटना पहुंचे। यहां आते ही उन्होंने सबसे पहले राजद प्रमुख और पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी और पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी से उनके आवास पर मुलाकात की। मुलाकात के बाद उन्होंने कहा आठ-दस सीटों पर दोस्ताना संघर्ष संभावित है, ऐसा हर प्रदेश में हर चुनाव में होता है।

महागठबंधन में कोई विवाद नहीं है। हमारा लक्ष्य एनडीए को सत्ता से बाहर करना है। एक प्रश्न पर कहा कि जिन भी बिंदुओं को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं उनका निराकरण होगा। गुरुवार को महागठबंधन की साझा प्रेस कान्फ्रेंस होगी उसमें सारी बातें साफ कर दी जाएंगी।

तेजस्वी का संविदाकर्मियों की नौकरी पक्की करने का वादा

- तेजस्वी ने कहा कि सरकार बनते ही जीविका दीदियों को तुरंत लाभ मिलने लगेगा
- घोषणा को जदयू के आधार वोट में विपक्ष की हिस्सेदारी बढ़ाने का माना जा रहा प्रयास

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: महागठबंधन समन्वय समिति के अध्यक्ष एवं विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने बुधवार को राज्य की एक करोड़ 40 लाख से अधिक जीविका दीदियों के लिए एकमुश्त लाभ का चुनावी वादा किया। सभी जीविका दीदियों को दो हजार रुपये मासिक भत्ता और उनके कम्युनिटी मोबलाइजर को 30 हजार रुपये के मासिक वेतन पर पक्की सरकारी नौकरी देने की घोषणा की है। बुधवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में तेजस्वी ने कहा कि महागठबंधन की सरकार बनते ही आउटसोर्सिंग एजेंसियों के माध्यम से सरकारी विभागों में काम कर रहे सभी संविदाकर्मियों की नौकरी पक्की कर दी जाएगी। महिलाओं को हर महीने ढाई हजार देने की घोषणा पहले कर चुके तेजस्वी ने मां-बेटी के नाम से दो नई योजनाओं की भी घोषणा की। इधर, भाजपा और जदयू ने तेजस्वी को गप मारने वाला और झूठ का सौदागर बताते हुए कहा है कि जनता को बरगलाने का उनका कोई भी चुनावी हथकंडा सफल नहीं होने वाला।

जीविका दीदियों के लिए की गई घोषणाओं को मुख्यमंत्री नीतीश और उनके दल जदयू के आधार वोट में विपक्ष की हिस्सेदारी बढ़ाने का प्रयास माना जा रहा है। मुख्यमंत्री ने हाल में सवा करोड़ जीविका दीदियों को कारोबार के लिए 10-10 हजार रुपये दिए हैं। तेजस्वी ने गृह मंत्री अमित शाह के बयान की चर्चा करते हुए कहा कि 10 हजार रुपया सीड मनी है और यह अगले कर्ज का ही हिस्सा है। तेजस्वी ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया कि इन बड़ी घोषणाओं के लिए धन कहां से आएगा। तेजस्वी ने बताया कि कम्युनिटी मोबलाइजर की संख्या डेढ़ से दो लाख के बीच होगी। जीविका दीदियों के अबतक के कर्ज का ब्याज सरकार देगी। दो वर्षों के लिए ब्याज मुक्त कर्ज दिए जाएंगे। उन्होंने सभी संविदाकर्मियों को सरकारी नौकरी देने का फार्मूला भी बताया।

तेजस्वी यादव •

> ये गप मारने वाले लोग हैं। इन्हें कुछ करना-धरना नहीं है। तेजस्वी यादव दो करोड़ 70 लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने का सपना दिखा रहे हैं, जबकि उनके माता-पिता के राज में बेरोजगारी बढ़ी और पलायन हुआ।
>
> – **सम्राट चौधरी**, उपमुख्यमंत्री, बिहार

> तेजस्वी झूठ के सौदागर हैं। जनता को बरगलाने का उनका कोई भी चुनावी हथकंडा सफल नहीं होने वाला। लालू परिवार की नीति हमेशा से लूट-खसोट वाली रही है। सत्ता से दूर रहने की बेचैनी के कारण अब वे लोग जनता को भ्रमित करने की कोशिश में जुटे हैं।
>
> – **उमेश सिंह कुशवाहा**, प्रदेश अध्यक्ष, जदयू

'बड़े-बड़े' चुनावी वादे कर मूर्ख बनाना बंद करें तेजस्वी : भाजपा

नई दिल्ली, प्रेट्र: भाजपा ने बुधवार को राजद नेता तेजस्वी यादव पर बड़े-बड़े चुनावी वादे करके बिहार के लोगों को मूर्ख बनाने का आरोप लगाया और प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी पर भी निशाना साधा।

पार्टी ने लोगों से 'महागठबंधन की चाल या किसी भी नई प्रयोगात्मक राजनीति' में फंसने के बजाय राजग के 'जांचे-परखे' नेतृत्व को अपना जनादेश देने का आह्वान किया। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं राज्यसभा सदस्य सुधांशु त्रिवेदी ने यादव के चुनावी वादों को एक 'क्रूर मजाक' करार दिया।

त्रिवेदी ने यहां भाजपा मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि उन्होंने वादा किया है कि वह हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देंगे। मौजूदा अनुमानों के अनुसार, बिहार की आबादी लगभग 13.5 करोड़ है। चुनावी वायदे के अनुसार जिन परिवारों के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाएगी उनकी संख्या लगभग 2.90 करोड़ होगी। उन्होंने कहा कि यदि उनका अनुमानित औसत वेतन 75,000 रुपये के आसपास होता है, तो इस मद में लगभग 29 लाख करोड़ रुपये व्यय आएगा। जबकि बिहार का वर्तमान बजट लगभग 3,17,000 करोड़ है।

उन्होंने कहा कि जब तेजस्वी यादव ने कहा कि 10 लाख से 20 लाख लोगों को नौकरी दी जायेगी, तो उनके मनोभाव को समझिए। ऐसा कहने से उनका मतलब था कि 10 लाख और 20 लाख रुपये में नौकरी दी जाएगी। जन सुराज पार्टी के उम्मीदवारों को भाजपा के वरिष्ठ नेताओं द्वारा धमकाए जाने के आरोप पर त्रिवेदी ने कहा कि जो लोग अपनी ही पार्टी में विश्वास पैदा नहीं कर पाए, वे जनता का भरोसा कैसे हासिल कर पाएंगे?

बंगाल में मतदाता सूची में 60 वर्षीय भी दर्ज करा रहे नाम

राज्य ब्यूरो, जागरण • कोलकाता: बंगाल में मतदाता सूची के विशेष विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के शुरू होने से पहले ही मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने के लिए लोगों में होड़ लगी है। देखा जा रहा है कि कोलकाता व इसके आसपास के इलाकों में मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने वालों में 60 वर्ष की उम्र वाले भी बड़े पैमाने पर शामिल हैं। जो लोग मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने जा रहे हैं, उनमें से 30 प्रतिशत की उम्र 45 से 60 वर्ष के बीच है।

भाजपा नेता व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राहुल सिन्हा ने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठिए, रोहिंग्या मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज कराना चाह रहे हैं। वरना ऐसा नहीं हो सकता कि 60 वर्ष बीत गए और मतदाता सूची में नाम दर्ज न हो। दूसरी ओर तृणमूल प्रवक्ता अरूप चक्रवर्ती ने इसका खंडन करते हुए दावा किया कि जो लोग मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज कराने जा रहे हैं, उनके पास वैध दस्तावेज, जन्म प्रमाणपत्र मौजूद हैं। अब तक कई लोग मतदान से कतराते रहे हैं इसीलिए उन्होंने उत्साह नहीं दिखाया है। अब उन्हें एसआइआर के नाम पर धमकाया जा रहा है इसीलिए वे नाम दर्ज कराने जा रहे हैं।

घुसपैठियों को नागरिक बना रही सरकार: भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य ने आरोप लगाया है कि ममता सरकार घुसपैठियों को फर्जी प्रमाणपत्र देकर नागरिक बना रही है। शमिक ने इंटरनेट मीडिया पर लिखा कि दार्जिलिंग जिले के खरीबाड़ी में फर्जी जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्र जारी होने की खबर चिंताजनक है। राज्य सरकार की प्रशासनिक उदासीनता और भ्रष्ट प्रबंधन के कारण सीमा पर इतनी भयावह स्थिति पैदा हुई है। दूसरी ओर तृणमूल के प्रदेश महासचिव कुणाल घोष ने कहा कि अगर कहीं कुछ हुआ है तो राज्य प्रशासन देखेगा कि ऐसा क्यों हुआ। विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया है कि उनके नंदीग्राम विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची में बांग्लादेशियों के नाम हैं, जबकि यह सीमावर्ती क्षेत्र नहीं है।

1000 बीएलओ को जारी किया नोटिस

राज्य ब्यूरो, जागरण • कोलकाता: मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) को लेकर बंगाल मे राजनीति गर्म है। इस बीच राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय ने बंगाल के लगभग 1000 बूथ लेवल अधिकारियों (बीएलओ) को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया है। सूत्रों के अनुसार इन सभी बीएलओ ने एसआइआर शुरू होने से पहले ही अपने कार्य से मुक्ति देने की मांग की है।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि संबंधित सभी बीएलओ ने निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी की बार-बार अपील के बावजूद ईआरओ-नेट पोर्टल पर अपने नाम दर्ज नहीं कराए थे। इसी को आधार बनाते हुए नोटिस जारी किए गए हैं। नोटिस में कहा गया है कि ऐसा न करना जानबूझकर की गई लापरवाही और कर्तव्य की गंभीर उपेक्षा है, जो जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 32 के उल्लंघन के बराबर है। कुछ दिन पहले ही राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय ने अपने सचिव विनोद कुमार को सूचित किया था कि कई जिला मजिस्ट्रेटों और जिला निर्वाचन अधिकारियों की रिपोर्ट से पता चलता है कि कई शिक्षक बीएलओ के नियुक्ति पत्र स्वीकार नहीं कर रहे हैं। उनसे नियुक्ति न चाहने का कारण बताने को कहा गया है।

कर्नाटक सरकार ने पथ संचलन में जाने वाले रसोइये को हटाया

बिदर (कर्नाटक), प्रेट्र : कर्नाटक सरकार ने बासवाकल्याण में पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावास में एक सहायक रसोइये को काम से हटा दिया है, क्योंकि उसने आरएसएस द्वारा आयोजित पथ संचलन में भाग लिया था।

यह कार्रवाई 20 अक्टूबर को वाट्सएप के माध्यम से जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी को प्राप्त एक शिकायत के बाद की गई। बासवाकल्याण तालुक के पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ने बिदर जिला श्रम सेवा बहुउद्देशीय सहकारी समिति के सचिव/मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के कार्यालय को पत्र लिखा, जिसमें कहा गया कि कुमार को ड्यूटी से हटा दिया जाए। पत्र में कहा गया, 'प्रमोद कुमार बासवाकल्याण के प्री-मैट्रिक बायज हास्टल में सहायक रसोइये के रूप में कार्यरत हैं।

देशव्यापी एसआइआर का पहला चरण बंगाल सहित कई राज्यों से होगा शुरू

- सभी राज्यों व केंद्रशासित प्रदेश के सीईओ की बुलाई बैठक
- बैठक के बाद आज आयोग कर सकता है इसका एलान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआइआर) को देशभर में शुरू करने का एलान अब गुरुवार को दो दिवसीय सीईओ कान्फ्रेंस खत्म होने के बाद कभी भी हो सकता है। चुनाव आयोग ने जो संकेत दिए हैं, उनमें पहले चरण में करीब दर्जनभर राज्यों से इसकी शुरुआत हो सकती है। इनमें बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम और पुडुचेरी प्रमुखता से शामिल होंगे, क्योंकि इन राज्यों में अगले वर्ष यानी 2026 के शुरुआत में ही विधानसभा चुनाव होने हैं। आयोग इन राज्यों में भी बिहार की तर्ज पर एसआइआर के बाद चुनाव का एलान करेगा।

एसआइआर की तैयारियों को लेकर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बुधवार को सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओ) के साथ चर्चा शुरू की है, जो 23 अक्टूबर यानी गुरुवार दोपहर तक चलेगी। इस बीच जो संकेत मिले हैं, उसके तहत आयोग की इसके बाद एक अहम बैठक होगी। जिसके बाद इसका एलान हो सकता है। इस दौरान पहले चरण के एसआइआर को हर हाल में मार्च, 2026 तक पूरा कर लिया जाएगा। इसके पूरा होने के बाद एसआइआर के अगले चरण की शुरुआत होगी। इसमें पहले चरण में छूटे सभी राज्य व केंद्र शासित प्रदेश शामिल होंगे। कान्फ्रेंस में निर्वाचन आयुक्त डा. सुखबीर सिंह संधु और डा. विवेक जोशी भी मौजूद थे। आयोग ने दो दिवसीय सीईओ कान्फ्रेंस की शुरुआत एसआइआर के दौरान अपनाई जाने वाली तकनीक को लेकर किए गए इंतजामों से की। साथ ही उन्हें बताया कि इस दौरान किस तरीके से एसआइआर के दौरान आगे बढ़ना है, इसका पूरा रोडमैप भी दिया गया, ताकि तय समयावधि में इसे पूरा किया जा सके।

100 रु. के लिए बिजली के टावर पर चढ़ा युवक, 23 घंटे बाद उतरा

जासं, सोनभद्र: दीपावली की रात एक युवक 100 रुपये के लिए घर से नाराज होकर 400 केवी के पावर ग्रिड टावर पर चढ़ गया। नीचे उतारने की कोशिश हुई तो ऊपर चढ़ने लगा। काफी मशक्कत के बाद 23 घंटे बाद मंगलवार शाम छह बजे वह टावर से नीचे उतरा। इस दौरान उस टावर की पांच घंटे लाइन कटनी पड़ी थी।

21 वर्षीय अर्जुन बहादुर सोमवार शाम बिजली के एक टावर पर चढ़ गया। युवक की मां रामकली ने बताया कि दीपावली की रात अर्जुन ने अपने पिता से 100 रुपये मांगे थे, पर उसे केवल 20 रुपये मिले, वह नाराज होकर टावर पर चढ़ गया है।

टीम चयन को कांग्रेस ने दिया धार्मिक रंग

शमा मोहम्मद •

- कांग्रेस प्रवक्ता शमा मोहम्मद ने कहा, सरनेम के चलते नहीं हुआ सरफराज खान का चयन
- भाजपा बोली, देश बंटवारे से पेट नहीं भरा, देश को बांटना अब बंद करे कांग्रेस

नई दिल्ली, आइएएनएस : कांग्रेस प्रवक्ता शमा मोहम्मद ने बुधवार को यह पूछकर विवाद खड़ा कर दिया कि क्या मुंबई के बल्लेबाज सरफराज खान को ''उनके सरनेम'' के कारण भारत ए क्रिकेट टीम में नहीं चुना गया। उन्होंने भारतीय टीम के कोच गौतम गंभीर पर भी निशाना साधा और कहा, 'हम जानते हैं कि इस मामले में उनका क्या रुख है। दरअसल, मंगलवार को जब राष्ट्रीय चयन समिति ने दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ दो प्रथम श्रेणी मैचों के लिए भारतीय टीम का चयन किया, तो उसमें खान का नाम नहीं था। पहला मैच 30 अक्टूबर से दो नवंबर तक खेला जाना है, जबकि दूसरा छह से नौ नवंबर तक खेला जाएगा।

शमा पर पलटवार करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा, 'यह महिला और उसकी पार्टी बीमार है। ये हमारी क्रिकेट टीम को भी सांप्रदायिक आधार पर बांटना चाहती हैं। उन्होंने पूछा कि क्या देश का बंटवारा करके मन नहीं भरा। उन्होंने कहा, 'उसी टीम में मोहम्मद सिराज और खलील अहमद खेलेंगे। भारत को सांप्रदायिक और जातिगत आधार पर बांटना बंद करो। शमा मोहम्मद ने मार्च में रोहित शर्मा की फिटनेस को लेकर आलोचना करके विवाद खड़ा कर दिया था। कांग्रेस द्वारा फटकार के बाद उन्हें अपना इंटरनेट मीडिया पोस्ट हटाना पड़ा था।

मेरे पिता अपने करियर के अंतिम चरण में : यतींद्र सिद्दरमैया

यतींद्र सिद्दरमैया •

- कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया के बेटे का महत्वपूर्ण बयान
- नवंबर के नजदीक आते ही मुख्यमंत्री बदलने पर चर्चा तेज
- उपमुख्यमंत्री के समर्थक उन्हें मुख्यमंत्री बनाने पर दे रहे जोर

बेलगावी (कर्नाटक), आइएएनएस : कांग्रेस शासित कर्नाटक में नवंबर के नजदीक आते ही मुख्यमंत्री बदलने पर चर्चा तेज हो गई है। इसी क्रम में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया के बेटे एमएलसी यतींद्र सिद्दरमैया ने एक महत्वपूर्ण बयान में कहा कि उनके पिता अपने राजनीतिक करियर के अंतिम चरण में हैं। यह बयान कर्नाटक में नेतृत्व परिवर्तन की अफवाहों और सत्ता-साझाकरण समझौते पर चर्चा के बीच महत्वपूर्ण हो गया है।

यतींद्र सिद्दरमैया ने बेलगावी जिले के रायबाग तालुक के काप्पालगुडी गांव में कणकदास की प्रतिमा के अनावरण समारोह में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, ''आज, मेरे पिता अपने राजनीतिक करियर के अंत में हैं। इस समय वैज्ञानिक और प्रगतिशील विचारों को अपनाने वालों के लिए लोक निर्माण विभाग के मंत्री सतीश जारकीहोली जिम्मेदारी लेंगे और नेतृत्व प्रदान करेंगे।'' यतींद्र ने कहा, ''मंत्री सतीश जारकीहोली उन सभी को मार्गदर्शन देने में भी अग्रणी होंगे जो कांग्रेस पार्टी के विचारधारा में विश्वास करते हैं। मंत्री सतीश जारकीहोली ने यह जिम्मेदारी ली है और मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि वह इस दिशा में अपने कार्य को जारी रखें।'' इन बयानों ने राज्य की राजनीतिक हलकों में बहस को जन्म दिया है, क्योंकि मुख्यमंत्री सिद्दरमैया ने स्पष्ट किया है कि वह अपनी अवधि पूरी करेंगे। हालांकि, उपमुख्यमंत्री और राज्य कांग्रेस अध्यक्ष डी.के. शिवकुमार के समर्थक विधायक जोर देकर कह रहे हैं कि शिवकुमार को मुख्यमंत्री बनने का अवसर दिया जाना चाहिए। वे दावा कर रहे हैं कि सिद्दरमैया और शिवकुमार के बीच मुख्यमंत्री पद के कार्यकाल को समान रूप से बांटने का एक सत्ता-साझाकरण फार्मूला है। जैसे-जैसे कांग्रेस-नेतृत्व वाली सरकार नवंबर में अपनी अवधि का आधा समय पूरा करती है, 'नवंबर क्रांति'' पर चर्चा कर्नाटक में तेज हो गई है।

****

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

लोक-लुभावन वायदे

बिहार विधानसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने के पहले से ही राज्य में सत्ता के दावेदार मुख्य गठबंधनों- राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) व महागठबंधन के बीच लोकप्रिय कार्यक्रमों व वायदों की होड़-सी लग गई थी। सत्तारूढ़ राजग सरकार ने चुनाव से ऐन पहले 26 सितंबर को 'मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना' की शुरुआत करके एक बड़ा दांव चल दिया था, जिसके तहत सूबे की लगभग सवा करोड़ महिलाओं के खाते में दस-दस हजार रुपये की पहली किस्त पहुंच गई थी, तो वहीं अब बिहार में महागठबंधन के सबसे बड़े चेहरे और राजद की तरफ से मुख्यमंत्री पद के प्रत्याशी तेजस्वी यादव ने एलान किया है कि उनकी सरकार सत्ता में आई, तो जीविका दीदियों की नौकरी पक्की की जाएगी और उन्हें 30,000 रुपये की मासिक तनख्वाह मिलेगी। साल 2006 में विश्व बैंक की मदद से बिहार ग्रामीण आजीविका मिशन का आरंभ हुआ था। इसका लक्ष्य ग्रामीण महिलाओं के छोटे-छोटे स्व-सहायता समूह बनाकर उनकी माली हैसियत को मजबूत बनाना था। यह कार्यक्रम किस कदर प्रभावी रहा, इसका अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि बिहार की लगभग एक करोड़, 40 लाख महिलाएं आज इस योजना से जुड़ी हैं। जाहिर है, वे अब एक बेहद मजबूत वोट-बैंक बन चुकी हैं। ऐसे में, इन कदमों के राजनीतिक निहितार्थ स्पष्ट हैं।

ऐसा नहीं है कि ये लोक-लुभावन योजनाएं व घोषणाएं पहली बार बिहार में लागू की गई हैं या प्रस्तावित की जा रही हैं। मध्य प्रदेश की लाड़ली बहन योजना, महाराष्ट्र की माझी लाडकी बहिण योजना, झारखंड की मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना पहले ही सत्तारूढ़ सरकारों के लिए फलदायी साबित हो चुकी हैं और अब बिहार में इसी तर्ज पर आधी आबादी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए दोनों तरफ से दांव चले जा रहे हैं। नीतीश सरकार 125 यूनिट तक बिजली मुफ्त कर चुकी है, बेरोजगार स्नातकों को दो साल तक एक-एक हजार रुपये बेरोजगारी भत्ते को मंजूरी दी जा चुकी है। बुजुर्गों, दिव्यांगों की पेंशन बढ़ा दी गई है, तो दूसरी तरफ तेजस्वी राज्य के हर उस घर के एक युवा को सरकारी नौकरी देने का वायदा कर रहे हैं, जिसका कोई सदस्य पहले से किसी सरकारी सेवा में नहीं है। कुल मिलाकर, दोनों पक्ष हर रोज नई-नई घोषणाएं करता जा रहा है, जो किसी गहन मंथन से अधिक त्वरित लाभ से प्रेरित जान पड़ती हैं।

बिहार में अभी दूसरे चरण का नामांकन खत्म ही हुआ है और चुनाव आयोग करीब 71 करोड़ रुपये बरामद कर चुका है। आखिर इससे क्या संकेत मिलता है?

निस्संदेह, किसी भी लोक-कल्याणकारी राज्य में राजनीतिक दलों के लिए हाशिये के समूहों की चिंता न सिर्फ उसका पहला कर्तव्य है, बल्कि किसी भी सरकार का यह मूल उद्देश्य होना चाहिए। मगर बिहार में सत्ता के दावेदार गठबंधनों को क्या अपने मतदाताओं के सामने यह स्पष्टता से नहीं रखना चाहिए कि वे अगले पांच वर्ष में शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगीकरण के क्षेत्र में ऐसा क्या-क्या करेंगे और इसके लिए संसाधन कहां से लाएंगे, जिससे यह प्रदेश पहली कतार में खड़ा हो सके? जाहिर है, ऐसा न करने के कारण ही जुमलेबाजी व धनबल पर उनका भरोसा अधिक है। गौर कीजिए, अभी दूसरे चरण का नामांकन खत्म ही हुआ है और चुनाव आयोग अब तक करीब 71 करोड़ रुपये बरामद कर चुका है। यूं तो हर चुनाव हरेक प्रदेश के लिए अहम होता है, मगर बिहार के मतदाताओं के लिए यह बेहद अहम घड़ी है, क्योंकि वे तरक्की के मेयार पर बहुत नीचे हैं। उन्हें लोक-लुभावन नीतियों की भीड़, राजनीतिक दलों के प्रलोभनों और परिवर्तनकारी सुचिंतित कार्यक्रमों के बीच चुनना है। इसलिए उनकी परीक्षा नेताओं से कहीं अधिक कठिन है!

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले

23 अक्तूबर, 1950

सामाजिक बुराई

वेश्यावृति की बीमारी सारे ही संसार में व्याप्त है। सभी देशों में इस सामाजिक बुराई को निर्मूल करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए अस्सी वर्ष से एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था काम कर रही है। इस संस्था की भारतीय शाखा ने नई दिल्ली में एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया है। यह सम्मेलन भारत की स्वास्थ्य मंत्रिणी श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर कर रही हैं और राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उसका उद्घाटन किया था।

इस सम्मेलन की चर्चा ने समाज की एक गंभीर बुराई की ओर ध्यान आकर्षित किया है। ...कहा जाता है कि रूस ने अपने देश से वेश्यावृत्ति को सर्वथा खत्म कर दिया है। वहां कोई भी वेश्यालय चलाने का साहस नहीं कर सकता। चीन की नई सरकार भी न केवल कानून बनाकर और पुरानी वेश्याओं को उपयोगी धन्धों में लगाकर, बल्कि स्त्री और पुरुषों की समानता को स्वीकार कर के वेश्यावृत्ति को खत्म करने की चेष्टा कर रही है। जो बात रूस में संभव हो सकती है, वही हमारे देश में क्यों नहीं संभव हो सकती?

हमारा देश अपनी नैतिकता और आध्यात्मिकता पर गर्व करता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने संयम और सदाचार पर बहुत बल दिया है। अतः हमारे देश को इस दिशा में सबसे आगे होना चाहिए, न कि सबसे पीछे। सरकार देश की राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं को हल करने का प्रयत्न कर रही है, किन्तु सामाजिक समस्याओं की ओर वह उपेक्षावृत्ति धारण नहीं कर सकती। यह सोचना बिल्कुल गलत होगा कि सामाजिक समस्यायें अपने आप हल हो जायेंगी। सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए देश में समाज-सेवकों की एक बहुत बड़ी सेना की आवश्यकता है। वेश्यावृत्ति जैसी सामाजिक बुराई से लड़ना मामूली काम नहीं है। उसके लिए बहुत अधिक साहस और दृढ़ता की जरूरत है। यह समस्या केवल कानून बनाकर ही हल नहीं की जा सकती। उसके लिए समाज के अन्तःकरण को जगाना होगा। जो चुपचाप इस सामाजिक बुराई को सहन कर रहा है।

लोग कहते हैं कि मानव जाति के इतिहास में कोई काल ऐसा नहीं बीता, जबकि वेश्यावृत्ति की बुराई कम या अधिक मात्रा में अस्तित्व में नहीं रही है। ...इस निराशावाद के हम सख्त विरोधी हैं।

अपना ही बोया काट रहे राष्ट्रपति ट्रंप

'नो किंग्स' विरोध-प्रदर्शन वही लोग कर रहे हैं, जो ट्रंप की नीतियों से खफा हैं और यह मानते हैं कि अपने दूसरे कार्यकाल में वह एक तानाशाह के रूप में उभरे हैं।

यहां स्कैन करें

अरविंद गुप्ता | पूर्व राजनयिक एवं डायरेक्टर, वीआईएफ

अमेरिका में राजनीतिक विभाजन कितना गहरा हो गया है, इसकी एक बानगी है ट्रंप प्रशासन के खिलाफ चल रहा विरोध-प्रदर्शन। बीते 18 अक्तूबर को देश भर में करीब 2,700 जगहों पर प्रदर्शन हुए, जिनमें माना जा रहा है कि 70 लाख अमेरिकियों ने शिरकत की। इन प्रदर्शनकारियों के निशाने पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप थे और वे 'नो किंग्स' के नारे लगा रहे थे, यानी अमेरिका में कोई राजा नहीं है।

'नो किंग्स' विरोध-प्रदर्शन वही लोग कर रहे हैं, जो राष्ट्रपति की नीतियों से खफा हैं और यह मानते हैं कि अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रंप एक तानाशाह के रूप में उभरे हैं। इनमें विरोधी पार्टी डेमोक्रेटिक के समर्थक भी हैं। उनकी नजर में रिपब्लिकन शासन में अमेरिका का लोकतंत्र कमजोर हुआ है और आप्रवासन नीति या 'शटडाउन' जैसे ट्रंप प्रशासन के फैसलों से देश की सेहत लगातार बिगड़ रही है।

गौरतलब है, सरकारी खर्च को कांग्रेस (संसद) की मंजूरी न मिल पाने के कारण वहां सरकारी सेवाएं ठप हो चुकी हैं और तमाम विभागों के लाखों लोग या तो बिना वेतन के काम कर रहे हैं या उनको जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया गया है, ताकि खर्च में कटौती की जा सके। इतना ही नहीं, स्वास्थ्य और शिक्षा के मद में भी खर्च घटाए गए हैं, साथ ही डेमोक्रेट सरकार के समय जो सुविधाएं लोगों को उपलब्ध थीं, उनमें भी कटौती की गई है। आलोचकों में नाराजगी इस बात को लेकर भी है कि ट्रंप ने ऐसे कई कार्यकारी आदेशों पर दस्तखत किए हैं, जो उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं आते और यह काम केवल कांग्रेस कर सकती है। जैसे, टैरिफ को बढ़ाना, जिसका असर महंगाई पर पड़ा है।

साफ है, ट्रंप के रुख को अमेरिका के लोग पसंद नहीं कर रहे। जून में भी इसी तरह से 'नो किंग्स' विरोध-प्रदर्शन हुए थे, हालांकि उसका दायरा सीमित था। लिहाजा, देखना अब यह है कि भविष्य में इस तरह के विरोध-प्रदर्शन किस दिशा में आगे बढ़ते हैं? इसका आकलन इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि ट्रंप समर्थक इसे 'हेट अमेरिका', यानी अमेरिका-विरोधी बता रहे हैं। खुद राष्ट्रपति ट्रंप ने एआई की मदद से एक वीडियो जारी किया है, जिसमें वह 'किंग ट्रंप' नामक लड़ाकू विमान में बैठे हुए हैं और प्रदर्शनकारियों पर इंसानी मल गिरा रहे हैं। यह अमेरिका में गहराते ध्रुवीकरण और राजनीतिक विभाजन का संकेत है। इसीलिए यह सवाल उठने लगा है कि बेशक अभी तक प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहे हैं और किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं हुई है, पर क्या आने वाले दिनों में भी यही स्थिति बनी रहेगी?

यहां यह भी याद रखना जरूरी है कि अमेरिका में विरोध-प्रदर्शनों की एक लंबी और गहरी परंपरा रही है। संविधान संशोधन 'एक' के माध्यम से यहां के हर व्यक्ति को यह अधिकार हासिल है कि वह अपनी मांग को लेकर लोगों को जुटा सकता है और विरोध का बिगुल बजा सकता है। वह अपनी बात सार्वजनिक तौर पर रखने के लिए स्वतंत्र है। यही कारण है कि पिछले दशक में यहां इस तरह के कई प्रदर्शन हुए। 21 मई, 2017 को राष्ट्रपति ट्रंप (पहले कार्यकाल) की नीतियों और बयानबाजियों के विरोध में महिलाओं ने एक लंबा मार्च निकाला था, जिसमें कहा जाता है कि 70 से 80 लाख प्रदर्शनकारी शामिल हुए थे। 'ब्लैक लाइव्स मैटर' भी इसी तरह का विरोध-प्रदर्शन रहा है। ट्रंप जब 2020 का राष्ट्रपति चुनाव हार गए थे, तब उनके समर्थकों ने भी जनादेश को नकारते हुए प्रदर्शन किया था और कुछ समय के लिए कैपिटल हिल तक को अपने कब्जे में ले लिया था।

बहरहाल, घटनाक्रमों से यही लगता है कि ट्रंप शायद ही अपनी नीतियों से पीछे हटेंगे। वह जिस तरह की मनमर्जी करते रहे हैं, वह यही बताता है कि आने वाले दिन तनावपूर्ण बने रह सकते हैं। वास्तव में, ट्रंप के समर्थकों का एक आधार है, जो 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' (अमेरिका को फिर से महान बनाएं) की वकालत करता है। इसमें वे लोग शामिल हैं, जो मानते हैं कि पिछली डेमोक्रेटिक सरकार के दौरान वे विकास की दौड़ में पीछे रह गए थे। उनकी आय कम है और वे रूढ़िवादी हैं। मुमकिन है, 'मागा' समर्थकों का यह आधार मौजूदा 'नो किंग्स' प्रदर्शन के विरोध में सड़कों पर उतर आए।

हालांकि, ट्रंप अपनी नीतियों से देश के भीतर ही हलचल नहीं मचा रहे, पूरी विश्व-व्यवस्था को अस्थिर बना रहे हैं। उनकी घरेलू नीतियां अमेरिका की विदेश नीति को भी प्रभावित करने लगी हैं। मसलन, उन्होंने अपने मागा आधार के किसानों को सुरक्षा देने और अमेरिकी फैक्टरियों के चीन चले जाने के कारण बढ़ी बेरोजगारी से मुकाबला करने के लिए टैरिफ का दांव खेला है। एच1-बी वीजा शुल्क में बेहिसाब वृद्धि भी इसी की देन है। 'यूएसएड' का मसला भी कुछ ऐसा ही है। राष्ट्रपति ट्रंप ने इस कार्यक्रम के लिए धन का आवंटन रोक दिया है, जिसके कारण कई देशों को दी जा रही मानवीय मदद थम गई है।

आखिर यह स्थिति कब तक बनी रह सकती है? एक अनुमान है कि मध्यावाधि चुनाव के बाद शायद हालात सुधर जाएं। दरअसल, अगले साल अमेरिका में 'हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स' और 'सीनेट' के चुनाव होने वाले हैं। फिलहाल इनमें रिपब्लिकन को बहुमत हासिल है, पर यदि इन मध्यावधि चुनावों में डेमोक्रेट जीतकर आते हैं, तो ट्रंप अपनी नीतियां बदलने को मजबूर हो सकते हैं। हालांकि, जिस तरह का रवैया वह अपनाते रहे हैं, एक तबका यह भी मान रहा है कि वह हारने के बाद टकराव ही अधिक मोल लेंगे?

जहां तक भारत की बात है, तो फिलहाल दोनों देशों के रिश्ते दबाव में हैं। टैरिफ और वीजा ऐसे मसले हैं, जिन पर नई दिल्ली की अपनी आपत्तियां हैं, लेकिन ट्रंप प्रशासन भारत की असहमतियों को लेकर कितना संजीदा है, यह स्पष्ट नहीं हो सका है। अमेरिका यदि अपनी आंतरिक चुनौतियों में और उलझता है, तो इन मसलों पर होने वाली बातचीत धीमी पड़ सकती है, जिसका नुकसान हमें उठाना पड़ सकता है। इसका एक अर्थ यह भी है कि अमेरिका में चल रहा विरोध-प्रदर्शन बेशक सीधे तौर पर हमें प्रभावित न कर रहा हो, लेकिन परोक्ष रूप से यह हमें नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसे में, हम कामना यही करेंगे कि अमेरिका के घरेलू हालात जल्द सुधर जाएं और विश्व व्यवस्था में वह पूर्ववत अपना योगदान देना शुरू करे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बीते बीस सालों में कमजोर ही हुआ आरटीआई कानून

यहां स्कैन करें

अंजलि भारद्वाज | वरिष्ठ सदस्य, एनसीपीआरआई

सूचना का अधिकार (आरटीआई) कानून स्वतंत्र भारत में लागू किए गए सबसे परिवर्तनकारी व सशक्त कानूनों में से एक रहा है। यह कानून 2005 में व्यापक जनांदोलनों के बलबूते अस्तित्व में आया और लोकतांत्रिक ढांचे के दायरे में सत्ता का नए सिरे से पुनर्गठन करने लगा। एक अनुमान के अनुसार, हर साल आरटीआई कानून के तहत लगभग 60 लाख आवेदन दायर किए जाते हैं, जिससे यह दुनिया में सबसे व्यापक इस्तेमाल वाला पारदर्शी जन-कानून बन गया है। इन्हीं सब कारणों से आरटीआई कानून 2011 में वैश्विक पारदर्शिता रैंकिंग में शीर्ष पर चला गया था।

भारत के इस जन-हितकारी कानून ने नागरिकों को सक्षम बनाया है कि वे सरकारों को जवाबदेह ठहरा सकें। शायद यही कारण है कि इस अधिकार का इस्तेमाल करने वालों को लगातार कटु प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ रहा है। पिछले छह वर्षों में इस कानून में दो बार नकारात्मक संशोधन हो चुके हैं- साल 2019 में और फिर 2023 में। पहले संशोधन में सूचना आयोगों की स्वायत्तता पर गहरा आघात किया गया। मूल कानून में सूचना आयोगों को अधिकार था कि वह संबंधित सरकारों को सूचना सार्वजनिक करने और कानून का उल्लंघन करने वाले अधिकारियों को दंडित करने के निर्देश दे सकता था। आरटीआई के कामकाज के लिए आयोगों की स्वतंत्रता को बनाए रखना जरूरी है।

सूचना का अधिकार लोकतांत्रिक जवाबदेही की नींव है। इसे कमजोर करने का कोई भी प्रयास नागरिकों के मौलिक अधिकार पर हमला है।

मगर 2019 के संशोधन में सभी सूचना आयुक्तों के कार्यकाल, वेतन और सेवानिवृत्ति के बाद के उनके लाभों के बारे में नियंत्रण केंद्र सरकार को सौंप दिया गया, जिससे उनकी स्वायत्तता बुरी तरह कमजोर हो गई। सरकारें लंबे समय से आयोगों की सूचना सार्वजनिक करने के आदेश देने संबंधी अधिकार पर नजर गड़ाए हुए थीं। उसका यह अधिकार सरकारों के लिए तब और खतरनाक साबित होने लगा, जब सरकारी विभाग और उसके अधिकारी गोपनीयता के नाम पर सूचना छिपना चाहते थे। इसलिए, बीते करीब एक दशक से एक भी आयुक्त की नियुक्ति अदालतों का दरवाजा खटखटाए बिना नहीं की गई है। इसी का नतीजा है कि आज बड़े पैमाने पर मामले लंबित हैं।

अगस्त 2023 में डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण (डीपीडीपी) कानून के पारित होने से लोगों के जानने के अधिकार को एक और झटका लगा। इस कानून ने आरटीआई कानून की धारा 8(1)(जे) में संशोधन करके सभी व्यक्तिगत सूचनाओं को सार्वजनिक करने की बाध्यता से मुक्त कर दिया। मूल प्रावधान के तहत, व्यक्तिगत जानकारी को केवल तभी रोका जा सकता था, जब उसका सार्वजनिक गतिविधि या सार्वजनिक हित पर कोई दुष्प्रभाव पड़ता हो, या उससे निजता का अनुचित उल्लंघन होता हो। डीपीडीपी संशोधन ने कानून के एक महत्वपूर्ण प्रावधान को भी कि, 'जो जानकारी संसद या विधानमंडलों को देने से इनकार नहीं किया जा सकता, उसे किसी भी व्यक्ति को देने से इनकार नहीं किया जाएगा', हटा दिया।

डीपीडीपी कानून ने लोगों की सूचना पाने की क्षमता को कम किया। संशोधित प्रावधानों का इस्तेमाल कर 'व्यक्तिगत जानकारी' की सुरक्षा के बहाने ऋण न चुकाने वालों के नाम, मतदाता सूची, महत्वपूर्ण निर्णयों में शामिल अधिकारियों की पहचान और यहां तक कि सार्वजनिक कार्यों को अंजाम देने वाले ठेकेदारों के नाम जैसे विवरणों को रोका जा सकता है। इसी क्रम में कानून के उपयोगकर्ताओं को भी नहीं बख्शा गया है। पिछले 20 वर्षों में भ्रष्टाचार और गलत कामों को उजागर करने वाले 100 से अधिक आरटीआई कार्यकर्ताओं की हत्या हुई है। हजारों पर हमले हुए, उन्हें धमकाया गया और झूठे मामलों में फंसाया गया।

देश में इस अनोखे पारदर्शिता कानून के दो दशक पूरे हो रहे हैं। इसे फिर से सशक्त बनाने की आवश्यकता आज जितनी महसूस की जा रही है, पहले कभी नहीं थी। सूचना का अधिकार केवल कानूनी अधिकार नहीं है, यह लोकतांत्रिक जवाबदेही की नींव है। इसे कमजोर करने का प्रयास, शासन और सत्ता में बैठे लोगों से सवाल करने के नागरिकों के मौलिक अधिकार पर आघात है। आगे का रास्ता यही है कि इस जनोपयोगी कानून को सामूहिक रूप से मजबूत करने के प्रयास किए जाएं।

(साथ में अमृता जौहरी)

मनसा वाचा कर्मणा

दिव्य स्नेह का दिवस

भारत व्रत, उपवास और त्योहारों का देश है। हर त्योहार संसार को कोई न कोई शुभ संदेश देता है। हर पर्व इंसान को नैतिकता का पाठ पढ़ाता है। हरेक व्रत भक्तों में शुद्ध व शुभ संकल्पों की पूर्ति करता है। हर उपवास उपासकों को ईश्वर के समीप ले जाता है।

भैया दूज का पर्व इन सभी विशेषताओं से युक्त है। पांच दिवसीय दीपोत्सव का यह अंतिम त्योहार है। यह कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाया जाता है। इसीलिए इसे यम द्वितीया भी कहते हैं। राखी के दिन भाई अपनी बहन की रक्षा का संकल्प करता है, तो भाई दूज पर बहन अपने भाई की दीर्घायु की कामना करती है। इसी दिन चित्रगुप्त जयंती भी मनाई जाती है।

भाई दूज के बारे में कई कथाएं प्रचलित हैं। कहते हैं, इस दिन मृत्यु के देवता यम अपनी बहन यमुना के आग्रह पर भोजन ग्रहण करने बहन के घर जाते हैं। बहन यमी बहुत खुश होती है और भाई यम का टीका-तिलक करके भव्य स्वागत करती है। स्वादिष्ट व्यंजनों से भाई को प्रसन्न करती है। तृप्त होकर यमराज यमुना को वर देते हैं कि इस दिन जो भी भाई अपनी बहन का आतिथ्य, टीका, तिलक, भोजन आदि स्वीकार करेगा, वह मृत्यु के भय से मुक्त होगा।

एक अन्य कथा के अनुसार, नरकासुर का अंत करने के बाद श्रीकृष्ण इसी तिथि को द्वारका पहुंचते हैं, तो नगर में बड़े हर्ष-उल्लास से उनका विजय-उत्सव मनाया जाता है। सबसे पहले बहन सुभद्रा तिलक, आरती और पुष्पहार के साथ उनका स्वागत करती है, मुख मीठा करती है और फिर भोजन भी कराती है। इन कथाओं की याद में आज भी भाई दूज पूरे उमंग और उत्साह से मनाया जाता है।

इसी दिन जीवात्माओं के कर्मों का हिसाब-किताब रखने वाले यमराज के मंत्री और कायस्थों के पूर्वज चित्रगुप्त भी पूजे जाते हैं। कथा के अनुसार, यम द्वितीया के दिन राजा के आदेश पर चित्रगुप्त सभी आत्माओं को नर्क की पीड़ा से मुक्त करते हैं। इसलिए इस दिन उनकी भी पूजा की जाती है। इन कथाओं का मर्म हमें शिक्षा, संयम और सुरक्षा का महत्व बताता है। इसलिए कथा के बाहरी रूप से ज्यादा उसके मर्म पर हमें ध्यान देना है। यमराज को सही अर्थ में समझना है।

भाई दूज के साथ आज पांच दिवसीय दीपोत्सव संपन्न हो जाएगा। राखी के दिन भाई अपनी बहन की रक्षा का संकल्प करता है, तो भाई दूज पर बहन, भाई की दीर्घायु की कामना करती है।

यम माने संयम और राज से आशय है, अपनी कर्मेंद्रियों पर राज करना। यम देवता हैं, यानी देने वाले हैं। क्या देते हैं? वह हमें अकाल मृत्यु के भय से मुक्ति देते हैं। कैसे? आत्म-संयम से कर्मेंद्रियों पर राज करना वह हमें सिखाते हैं। इस दिन यमराज वरदान देते हैं कि मानव जीवन और संबंधों में निःस्वार्थ प्रेम, पवित्रता, आत्म-संयम और भाईचारे की भावना को अपनाने से ही संपूर्ण स्वास्थ्य, सुरक्षा, सुख-शांति, समृद्धि और दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मा कुमारी चक्रधारी दीदी

राजनाथ सिंह | रक्षा मंत्री

लंबे समय तक नक्सलवाद हमारी आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती रहा। लेकिन आज नक्सली आत्मसमर्पण कर विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। जो क्षेत्र कभी 'रेड कॉरिडोर' के नाम से कुख्यात थे, वे अब 'ग्रोथ कॉरिडोर' में बदल चुके हैं।

अनुलोम-विलोम

पाक-अफगान संघर्ष

दक्षिण एशिया में इतना तनाव हो ही क्यों

पाकिस्तान और अफगानिस्तान में संघर्ष-विराम हो गया है, लेकिन जिस तरह के हालात पिछले दिनों बने, वे शोचनीय हैं। दक्षिण एशिया में संघर्ष के नए मोर्चे का खुल जाना कई तरह के संकेत दे रहा है। यह बता रहा है कि यहां का समीकरण अपने बदलाव के दौर से गुजर रहा है, जिस कारण संघर्ष का केंद्र बदलने लगा है। वैसे, यह कहने की जरूरत नहीं है कि पाकिस्तान इस क्षेत्र का एकमात्र ऐसा देश है, जो हालात बिगाड़ने में मुब्तिला रहता है। वह ऐसे-ऐसे तिकड़म अपनाता है कि स्थिति बिगड़ने लगती है और संघर्ष के मैदान गरजने लगते हैं।

दरअसल, अफगानिस्तान और पाकिस्तान में संघर्ष का इस तरह उभरना आश्चर्य तो पैदा कर रहा था, लेकिन इसकी पृष्ठभूमि पुरानी है, इसलिए अगर हम चाहते हैं कि दक्षिण एशिया में शांति बनी रहे, तो हमें कुछ अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। इनमें पाकिस्तान पर जिम्मेदारी कहीं अधिक है, क्योंकि उसकी गिनती ऐसे देशों में होती है, जो आतंकवाद को पालता-पोसता है। भारत में होने वाली आतंकी कार्रवाइयों में उसकी संलिप्तता किसी से छिपी नहीं है। यहां तक कि उसकी जमीन पर विदेशी तंजीमें भी पनाह पाती हैं। ऐसी सूरत में, वहां के हुक्मरानों को सबसे पहले अपने देश को स्वच्छ बनाना होगा। उन्हें तमाम आतंकी संगठनों पर नकेल कसनी होगी, फिर चाहे वे पाकिस्तान के हों या किसी अन्य देश के। इसके अलावा, उसे आतंकवाद का इस्तेमाल विदेश नीति के तौर पर करने से बचना होगा। उसे समझना होगा कि आतंकवाद का नुकसान खुद उसे ही उठाना पड़ रहा है। स्थिति यह है कि वह एक विफल देश बन चुका है और अपनी आर्थिक गतिविधियों के लिए विदेशी इमदादों का मुंह देखने को मजबूर है।

दक्षिण एशिया में स्थिरता का आना विश्व राजनीति के लिए भी काफी अहम है। वैसे भी, जब हम हिंद-प्रशांत की बात करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना ही होगा कि दक्षिण एशिया में अमन-चैन बना रहे। वैश्विक अर्थव्यवस्था की बेहतरी के लिए क्षेत्र का स्थिर बने रहना आवश्यक है। ऐसी सूरत में, यदि पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे देश आपस में उलझते हैं, तो उसके असर काफी दूर तक होंगे। पाकिस्तान ने यह भी आरोप लगाया था कि अफगानिस्तान को भारत परोक्ष रूप से मदद कर रहा है, जबकि हमारी नीति स्पष्ट रही है कि हम किसी अन्य देश के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देते। मगर चूंकि पाकिस्तान हमें अपना दुश्मन देश समझता है, इसलिए वह अपने ऊपर हुए हर हमले के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराता है। इस तरह की सोच को खत्म करने के लिए भी जरूरी है कि दक्षिण एशिया शांत रहे।

महिमा सिंह, टिप्पणीकार

हमें अफगानिस्तान का साथ देना चाहिए

अफगानिस्तान के साथ सीमा-विवाद उस समय का है, जब पाकिस्तान बना भी नहीं था। अफगानिस्तान का संस्थापक अहमदशाह अब्दाली 1757 में भारत पर आक्रमण करता है। उसने मुगलों को पराजित किया और लूटा। खबर पुणे पहुंची, तो मराठों के पेशवा बालाजी राव ने अपने भाई रघुनाथ राव को दिल्ली भेजा। राघोबा ने 11 अगस्त, 1757 को मुगलों पर आक्रमण कर दिया। यह मुगलों का स्थायी पतन था, जिसके बाद वे मराठों की कठपुतली बन गए। राघोबा ने दिल्ली के बाद पंजाब की ओर कूच किया, पहले लाहौर को अब्दाली से छीना, फिर पेशावर और अंत में अटक। अटक उस समय अंतिम किला था और आज का खैबर पख्तूनख्वा भारत-अफगानिस्तान के बीच विशाल बफर जोन था।

लेकिन यहां एक गलती हो गई, मराठा सैनिकों ने जब अफगानों को बाहर किया, तब कई मराठे अफगानिस्तान की सीमा में प्रवेश कर गए और भयावह मार-काट कर दी। राघोबा ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया कि ये उनके आदेश पर हुआ, मगर उन्होंने यह संदेश कंधार जरूर भेजा कि अटक से मराठा साम्राज्य, अर्थात भारत की सीमा आरंभ होगी। अब्दाली पंजाब का पश्चिमी हिस्सा भी चाहता था, उसने पंजाब के गवर्नर दत्ताजी सिंधिया को मरवा दिया और इसी के साथ मराठा-अफगान युद्ध शुरू हो गया, जो पानीपत तक गया। पानीपत में अब्दाली की जीत हुई और उसने पेशवा को संदेश भेजा कि अटक से नहीं, भिंड से मराठा साम्राज्य की सीमा होगी। मराठा मान गए, मगर सिख अड़ गए। सिखों ने पंजाब को अपने अधीन ले लिया और लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। सिखों ने पंजाब तो लिया ही, साथ ही आज का खैबर भी उनके क्षेत्र में आ गया। इन विवादों के बीच इसी खैबर के आगे अंग्रेजों द्वारा डुरंड रेखा खींची गई, जिसे अफगानिस्तान ने आज तक मान्यता नहीं दी।

अफगानिस्तान में कई गृह युद्ध हुए, मगर कोई भी दल हो, उसने खैबर और पश्चिमी पंजाब को अफगानिस्तान का ही हिस्सा माना है। 1965 और 1971 के युद्ध में अफगानिस्तान ने पाकिस्तान पर हमला करने का विचार भी किया था, जब तालिबान का शासन आया, तब भी यह सीमा-विवाद बना रहा। इस आग में घी का काम तब हुआ, जब तालिबान के दो धड़े हो गए, एक अफगानिस्तान में, तो दूसरा पाकिस्तान में। देखा जाए, तो अभी दो बर्बाद देश आपस में लड़ रहे थे। हमें अफगानिस्तान का ही साथ देना चाहिए, क्योंकि ये राघोबा वाली स्थिति का समर्थक है। अखंड भारत आज नहीं तो कल, बनेगा ही। हमें सिर्फ बदलती स्थिति को समझना है, न कि भावनाओं में बहना है।

परख सक्सेना, टिप्पणीकार

नए कौशल से खोलें कामयाबी की राह

पदोन्नति को ही कामयाबी नहीं समझना चाहिए। लंबी पारी खेलने के लिए नौकरीशुदा या उसकी तलाश कर रहे युवाओं को 'स्किल करंसी' पर फोकस करना होगा, न कि सिर्फ पदोन्नति पर। माना जा रहा है कि अगले 5 वर्षों में 44 फीसदी कर्मचारियों को रीस्किलिंग की जरूरत पड़ेगी। करियर विकास के लिए प्रमोशन के अलावा और क्या हैं तरीके और क्यों नए स्किल्स सीखना है जरूरी, बता रही हैं तृप्ति मिश्रा

बेंगलुरु की एक आईटी कंपनी में पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर नेहा शर्मा ने पांच साल तक एक ही कंपनी में जी-जान से काम किया, लेकिन प्रमोशन नहीं मिला। उन्हें लगा कि उनका करिअर थम गया है। उन्होंने हार मानने के बजाय हर साल एक नया स्किल सीखने का लक्ष्य तय किया। ऑनलाइन मंच से क्लाउड कंप्यूटिंग और डाटा एनालिटिक्स जैसे कोर्स किए और साथ ही कंपनी के भीतर अलग-अलग प्रोजेक्ट्स में अपनी इच्छा से हिस्सा लेना शुरू किया।

समय के साथ, नेहा की पहचान एक 'एक्सपर्ट प्रॉब्लम सॉल्वर' के रूप में बनने लगी। प्रमोशन भले न मिला हो, लेकिन स्पेशल प्रोजेक्ट्स अलाउंस और इंटरनेशनल असाइनमेंट्स से उनकी आय 40 फीसदी तक बढ़ गई। आज नेहा एक मजबूत ग्लोबल नेटवर्क बना चुकी हैं और टेक कॉन्फ्रेंस स्पीकर के रूप में खुद को स्थापित कर चुकी हैं। अपने इस सफर से वे संतुष्ट और आत्मविश्वास से भरी हुई हैं।

नेहा का जिक्र इसलिए, क्योंकि कामयाबी के मायने बदल गए हैं। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम और आईएलओ की रिपोर्ट बताती हैं कि करियर में आप कितने कामयाब हैं, इसकी पहचान अब पारंपरिक पदोन्नति से नहीं, बल्कि स्किल ग्रोथ और लचीलेपन से तय होगी।

कम हो रहे प्रमोशन

पीपुल मैटर्स रिपोर्ट 2024 कहती है कि भारत में 11 में से 10 उद्योगों में प्रमोशन की दर घटी है और आंतरिक भर्ती में करीब 8 फीसदी कमी आई है। इंडिया एम्प्लॉयमेंट रिपोर्ट के मुताबिक इसके पीछे एक बड़ा कारण यह है कि शिक्षा और नौकरी की मांग में भारी अंतर है। कई युवा वो पढ़ते हैं, जो नौकरी में काम नहीं आता। एक हालिया सर्वे के अनुसार, 80 फीसदी भारतीय पेशेवरों को लगता है कि उनकी डिग्री उनके वर्तमान काम के लिए पर्याप्त नहीं है।

अगर परंपरागत तरीके से करियर में आगे बढ़ना चाह रहे हैं, तो कुछ कारणों से आप लंबे समय तक प्रमोशन से दूर हो सकते हैं। जैसेः

- **सीमित पद :** कंपनियां 'फ्लैट हाइरार्की' मॉडल अपनाती हैं, इसमें मध्यम स्तर के या उच्च पदों की संख्या सीमित होती है। ऐसे में पदोन्नति के अवसर कम हो जाते हैं।
- **मंदी और कटौती :** ग्लोबल मंदी, अनिश्चितताओं और कॉस्ट-कटिंग की वजह से कंपनियां प्रमोशन और हायरिंग दोनों ही प्रक्रिया धीमी कर सकती हैं।
- **नए कौशल की कमी :** वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट 2024 के अनुसार, दुनियाभर के 60 फीसदी युवाओं में 'फ्यूचर स्किल्स' जैसे डाटा लिटरेसी, एआई टूल्स की जानकारी नहीं है। इन कमियों के कारण करियर में ठहराव आता है और लंबे समय तक पदोन्नति नहीं होती।
- **एआई और ऑटोमेशन का असरः** नई तकनीकों के आने से कई परंपरागत भूमिकाएं या तो बदल रही हैं या धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं। इससे पुराने काम में आगे बढ़ने की संभावना घट रही है।

पदोन्नति से आगे की सोचें

- **नए स्किल सीखें :** एआई, क्लाउड कंप्यूटिंग, डाटा एनालिटिक्स, ग्रीन टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में ऑनलाइन कोर्स करें। लिंक्डइन लर्निंग, कोर्सेरा और उडेमी जैसे मंच अब वैश्विक स्तर पर युवाओं के लिए नए स्किल सीखने का मुख्य साधन बन गए हैं।
- **अपना विस्तार करें :** कंपनी बदलना आसान नहीं होता। ऐसे में अलग विभाग में काम करने से नया अनुभव मिलता है। यह आपको 'बहुमुखी प्रतिभा से लैस पेशेवर' बनाता है, जो आज के अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए सबसे ज्यादा महत्व रखता है।
- **नेटवर्किंग बढ़ाएं :** वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम यूथ कम्युनिटी, यूनेस्को स्किल्स नेटवर्क और लिंक्डइन ग्लोबल ग्रुप से जुड़ें। नेटवर्किंग से इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स और बेहतर अवसर मिलते हैं। सोशल मीडिया और व्यावसायिक मंच पर अपने कौशल और उपलब्धियों को दिखाना आज की जरूरत है।
- **फ्रीलांसिंग और गिग इकोनॉमी :** Upwork, Fiverr और Toptal जैसे मंच पर दुनिया भर के लाखों युवा ग्लोबल प्रोजेक्ट्स से जुड़ रहे हैं। 2030 तक वैश्विक कार्यबल का 20 फीसदी हिस्सा गिग इकोनॉमी में होगा।

एक स्किल से कई मौके

अब लोग एक साथ अलग-अलग डोमेन यानी कार्यक्षेत्र में काम करके भी कामयाबी की ओर बढ़ रहे हैं। इसे गिग इकोनॉमी से तेजी मिली है। जैसे एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर प्रोडक्ट मैनेजर बन सकता है या एक पत्रकार डिजिटल कंटेंट स्ट्रैटेजिस्ट बन सकता है।

जॉब मार्केट के पसंदीदा स्किल

लिंक्डइन ग्लोबल स्किल रिपोर्ट की मानें, तो कम्यूनिकेशन, डिजिटल मार्केटिंग और एआई टूल्स सर्वाधिक मांग वाले स्किल्स हैं। वहीं यूनेस्को ग्लोबल एजुकेशन रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक 80 फीसदी नौकरियों के लिए डिजिटल और ग्रीन स्किल्स अनिवार्य होंगे।

'स्किल' बनाम 'प्रमोशन'

पियरसन की स्किल्स आउटलुक रिपोर्ट के अनुसार 88 फीसदी भारतीय पेशेवर मानते हैं कि आगे बढ़ने के लिए नए कौशल सीखने चाहिए। इनमें से 92 फीसदी को उनके नियोक्ताओं की ओर से भी इसका अवसर मिला। वहीं, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की रिपोर्ट कहती है, 'युवाओं को जीवन भर सीखने की आदत अपनानी चाहिए, ताकि करिअर में ठहराव न रहे।' एक अन्य ताजा सर्वेक्षण के मुताबिक लगभग 80 फीसदी जेन जी के पेशेवर वेतन से ज्यादा करिअर के विकास, मेंटरशिप और कौशल विकास को प्राथमिकता देते हैं।

विशेषज्ञ की राय

निमिष चतुर्वेदी
मैनेजिंग डायरेक्टर, कैलासा सेतु प्राइवेट लिमिटेड

प्रमोशन आज करियर में आगे बढ़ने का एकमात्र पैमाना नहीं रह गया है। ग्लोबल कंपनियां अब उन युवाओं को ज्यादा महत्व देती हैं, जो नए स्किल में दक्ष हों और आगे भी सीखने की इच्छा रखते हों। कामयाब होना है तो नौकरीशुदा या उसकी तलाश कर रहे युवाओं को 'स्किल करंसी' पर फोकस करना चाहिए, न कि सिर्फ पदोन्नति पर। आने वाले सालों में ग्रीन स्किल्स, डिजिटल स्किल्स और मल्टी-डोमेन की जानकारी ही तय करेंगे कि कौन-सा कर्मचारी ग्लोबल मार्केट में आगे निकलता है। जो इन स्किल्स को अपनाएंगे, वे अपने करिअर को प्रमोशन से आगे ले जाएंगे। उनका भविष्य भी सुरक्षित होगा।

जॉब/करियर

- बिहार कर्मचारी चयन आयोग ने इंटर स्तरीय पदों पर नियुक्ति के लिए आधिकारिक विज्ञापन जारी किया है। इसके तहत राजस्व कर्मचारी, पंचायत सचिव समेत अन्य पद भरे जाएंगे।

कुल पद : 23,175
अंतिम तिथिः 25 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : आधिकारिक वेबसाइट **bssc.bihar.gov.in** पर जाएं।

- रेलवे रिक्रूटमेंट सेल, नॉर्थ ईस्टर्न रेलवे, गोरखपुर में विभिन्न वर्कशॉप/यूनिट में अप्रेंटिस की भर्तियां की जाएंगी।

कुल पद : 1104
अंतिम तिथिः 15 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट है- **ner.indianrailways.gov.in**

- रेल इंडिया टेक्निकल एंड इकोनॉमिक सर्विस (रिट्ज) में सीनियर टेक्निकल असिस्टेंट के पद रिक्त हैं। योग्य अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

कुल पद : 600
अंतिम तिथिः 12 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : आधिकारिक वेबसाइट **rites.com** पर जाना होगा।

- ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड (ओएनजीसी) में अप्रेंटिस की रिक्तियां हैं। आवेदन ऑनलाइन करें।

कुल पद : 2623
अंतिम तिथिः 06 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट **ongcindia.com** पर जाएं।

- बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स में कॉन्स्टेबल (जनरल ड्यूटी) के पदों पर भर्ती के लिए आवेदन प्रक्रिया जारी है।

कुल पद : 391
अंतिम तिथिः 04 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट **rectt.bsf.gov.in** पर जाएं।

- पं. बी डी शर्मा यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज, रोहतक में सीनियर रेजिडेंट/ट्यूटर के पदों पर आवेदन का अवसर है।

कुल पद : 194
अंतिम तिथिः 07 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑफलाइन करना होगा। वेबसाइट है **uhsr.ac.in**

- बिहार तकनीकी सेवा आयोग ने डेंटल हाइजीनिस्ट के पदों पर आवेदन मांगे हैं।

कुल पद : 702
अंतिम तिथिः 10 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करना होगा। आयोग की आधिकारिक वेबसाइट **btsc.bihar.gov.in** पर जाएं।

- इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक, नई दिल्ली में एग्जीक्यूटिव के पद रिक्त हैं। स्नातक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

कुल पद : 348
अंतिम तिथिः 29 अक्तूबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : आधिकारिक वेबसाइट **ippbonline.com** पर जाना होगा।
(**नोट :** आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट से अपने स्तर पर जांच कर लें।)

भेजें अपना सवाल

करिअर या शैक्षिक कोर्स संबंधी कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें
nayiraheincareer@gmail.com

दूरस्थ माध्यम से न करें टेक्निकल कोर्स

एक्सपर्ट टिप्स

आशीष आदर्श
करिअर काउंसलर

■ मैं इस साल पीसीएम से 10+2 दे रही हूं और आगे बीएससी एग्रीकल्चर कोर्स दूरस्थ शिक्षा से करना चाहती हूं, ताकि किसी अन्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के लिए मुझे पूरा समय मिल सके। कृपया मार्गदर्शन करें। -प्रेरणा सिंह

आपको मालूम हो कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कई वर्ष पहले ही भारत में कुछ खास क्षेत्र से सम्बंधित तकनीकी व प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों को किसी भी विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संचालित करने पर पूरी तरह रोक लगा दी है।

देश में इंजीनियरिंग, एग्रीकल्चर साइंस, फिजियोथेरपी, मेडिसिन, डेंटल, नर्सिंग, फार्मेसी और आर्किटेक्चर क्षेत्रों से सम्बंधित कोई भी डिग्री या डिप्लोमा स्तर का पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संचालित नहीं हो सकेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने यह भी अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि जो भी संस्थान किसी भी नियम के अंतर्गत ऐसे पाठ्यक्रम यदि दूरस्थ शिक्षा से संचालित कर रहे हैं, वे गैर कानूनी हैं और उनकी डिग्रियों की कोई मान्यता नहीं होगी। आयोग ने यह निर्णय उक्त तमाम पाठ्यक्रमों में प्रैक्टिकल और इंटर्नशिप को देखते हुए लिया है।

अतः सही यही होगा कि आप बीएससी एग्रीकल्चर में दाखिले के लिए इंडियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च यानी आईसीएआर द्वारा आयोजित आईसीएआर एआईईईए (यूजी) प्रवेश जांच परीक्षा की तैयारी करें।

■ मैंने बीसीए किया है और अब आगे डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए करना चाहता हूं। कौन सा पाठ्यक्रम सही रहेगा? राजेन्द्र रस्तोगी

एमबीए करने का सही लाभ आपको तब मिल सकेगा, जब आपने यह पाठ्यक्रम देश के बेहतर संस्थानों में से किसी एक से किया हो। इससे जहां एक ओर आपको उस संस्थान की ब्रांडिंग का फायदा मिलता है, वहीं दूसरी ओर, एक बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर से आपकी जानकारी मजबूत होती है और आपको खुद को बेहतर तरीके से विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है।

एमबीए में हाल के कुछ वर्षों में आज के जॉब मार्केट को देखते हुए कई नए विशेषज्ञता विषय जोड़े गए हैं। इनमें से एक है डिजिटल मार्केटिंग। 2 वर्षीय एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग के पहले वर्ष में आप मैनेजमेंट स्किल्स जानते हैं, जबकि दूसरा वर्ष पूरी तरह डिजिटल मार्केटिंग विषयों पर आधारित होता है। इन विषयों में ईमेल मार्केटिंग, सर्च इंजन मार्केटिंग, स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट, मोबाइल मार्केटिंग, सोशल मीडिया, मार्केटिंग, एंटरप्राइज परफॉर्मेंस मैनेजमेंट, सस्टेनेबिलिटी मैनेजमेंट, फेसबुक व इंस्टाग्राम मार्केटिंग, ब्रांड प्लानिंग इत्यादि शामिल हैं। आज हर छोटी-बड़ी कंपनियों को ऐसे विशेषज्ञों की जरूरत होती है, जिनमें मैनेजमेंट स्किल्स के साथ डिजिटल बिजनेस को भी हैंडल करने की काबिलियत हो। इस पाठ्यक्रम के बाद जहां एक ओर आप किसी भी बड़ी से बड़ी कंपनी में जॉब कर सकते हैं, वहीं अपनी कंसल्टेंसी फर्म शुरू कर सकते हैं। कुल मिलाकर, यह पाठ्यक्रम बेहद संभावनाओं भरा है। अतः आप इसमें कैट, सी-मैट या जैट जैसी प्रवेश परीक्षा की तैयारी करें।

टिप्स

प्रोफाइल ऐसी बनाएं जो सबको पसंद आए

नौकरी में नए हैं, तो आपकी ऑनलाइन प्रोफाइल आपकी ताकत बन सकती है। ये अपने स्किल्स के बारे में बताने का बेहतर मंच होता है। इससे नए अवसरों की राह भी बनती है, बशर्ते कुछ बातें ध्यान रखें।

आज के जॉब मार्केट में अच्छे अवसरों पर पकड़ बनानी है, तो अच्छी ऑनलाइन प्रोफाइल बनाना जरूरी है। डिजिटल दुनिया में अब नियोक्ता भी ऑनलाइन जाकर आपके करियर बारे में जान लेना चाहते हैं। इसीलिए कुछ बातों को ध्यान में रखकर प्रोफाइल तैयार करें, ताकि वह सिर्फ दिखे नहीं, असर भी छोड़े। जैसे :

हेडलाइन और समरी : अपनी प्रोफाइल में सिर्फ जॉब टाइटिल न बताएं, अपनी पेशेवर खासियतों को भी बताएं। जैसे, सिर्फ सॉफ्टवेयर इंजीनियर भर लिख देना ठीक असर नहीं छोड़ेगा। 'सॉफ्टवेयर इंजीनियर, वेब एप स्पेशलिस्ट, टर्निंग कॉम्पलेक्स प्रॉब्लम्स इन टु क्लीन कोड' जैसा लिखना सही होगा। ताकि आपके काम की रेंज समझ में आए। समरी सेक्शन में 3 से 4 पंक्तियों में बताएं कि आपने क्या सीखा है और आपकी रुचि किस क्षेत्र में है। बढ़ा-चढ़ाकर न लिखें।

प्रोफाइल में दें इन्हें जगह : कोई ऑनलाइन कोर्स किया है या कॉलेज/पर्सनल प्रोजेक्ट पर काम किया है, तो उन्हें शामिल करें। कैनवा, एसईओ जैसे टूल्स, सॉफ्ट स्किल्स व टीमवर्क को भी जोड़ें।

जो सीखा, उसे दिखाएं : अनुभव सेक्शन में अनपेड इंटर्नशिप, फ्रीलांस काम या कॉलेज प्रोजेक्ट्स को शामिल करें और उपलब्धियों का उल्लेख करें। एजुकेशन सेक्शन में प्रासंगिक कोर्स और एक्स्ट्रा-करिकुलर एक्टिविटी भी बताएं। कोई ब्लॉग या पोर्टफोलियो है, तो उसका लिंक देना न भूलें।

लोगों से जुड़ें : इंडस्ट्री से जुड़े लोगों और साथियों से जुड़ें। काम से जुड़ी पोस्ट पर लाइक, कमेंट करें और खुद भी कुछ उपयोगी बातें साझा करें।

- साफ और पेशेवर फोटो लगाएं।
- प्रोफाइल का लिंक खास बनाएं।
- सहयोगियों से फीडबैक लें।
- करियर के बदलाव या ब्रेक को समझाएं।

फीचर डेस्क

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, मन में उतार-चढ़ाव भी रहेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य भी हो सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। मीठे खान-पान में रुचि बढ़ेगी। खर्च बढ़ेंगे।

वृष : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। क्रोध से बचें। अपनी और परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों की अधिकता रहेगी। पिता से आर्थिक सहयोग मिल सकता है।

मिथुन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि होगी।

कर्क : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। भवन सुख में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। भागदौड़ रहेगी। परिवार का साथ मिलेगा।

सिंह : मन में निराशा व असंतोष हो सकता है। मानसिक शांति बनाए रखने का प्रयास करें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव के साथ स्थान परिवर्तन हो सकता है।

कन्या : मन परेशान रहेगा। सेहत के प्रति सचेत रहें। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

तुला : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। रहन-सहन कष्टमय रहेगा।

वृश्चिक : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान रहेगा। सेहत का ध्यान रखें। नौकरी में बदलाव हो सकता है। परिवार से दूर दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

धनु : आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार के लिए परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

मकर : आशा-निराशा के भाव मन में हो सकते हैं। किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है। परिवार का साथ मिलेगा। संतान सुख में वृद्धि होगी। खर्चों में वृद्धि होगी।

कुंभ : मन परेशान हो सकता है। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। कारोबार के लिए यात्रा पर जा सकते हैं। लाभ में वृद्धि।

मीन : आशा-निराशा की मनोस्थिति हो सकती है। परिवार की समस्या परेशान कर सकती है। पिता का साथ मिलेगा। कारोबार के लिए यात्रा से लाभ मिल सकता है।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

23 अक्तूबर, गुरुवार, शक संवत्: 01, कार्तिक, सौर शक 1947, **पंजाब पंचांग :** 07, कार्तिक मास प्रविष्टे 2082 **इस्लाम :** 30, रबि-उल्सानी, 1447, **विक्रमी संवत** कार्तिक शुक्ल द्वितीया रात्रि 10.47 मिनट तक पश्चात तृतीया तिथि। विशाखा नक्षत्र रात्रि 04.51 मिनट तक, **चन्द्रमा** तुला राशि में रात्रि 10.06 मिनट तक।
सूर्य दक्षिणायन। शरद् ऋतु। दोपहर 01.30 मिनट से अपराह्न 03 बजे तक राहुकालम्। भाई दूज। यमद्वितीया। कमल दवात पूजन। विश्वकर्मा पूजन। शक कार्तिक प्रारंभ।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

फैक्ट्री में पिछले कुछ समय से दिक्कतें आ रही हैं, जब कि सबकुछ वास्तु के अनुसार ही किया है। कृपया कोई उपाय बताएं। – श्यामल लाल, कुरुक्षेत्र

- आपने सारा कच्चा माल उत्तर दिशा में रख दिया है, जो गलत दिशा है। इसे यहां से हटाकर दूसरी दिशा में रख दीजिए।
- तैयार माल दक्षिण पश्चिम दिशा में रख दिया है, जिसके कारण यह दिशा हल्की हो गई है। इस माल को आप उत्तर पश्चिम दिशा में उठवा कर रख दीजिए।
- फैक्ट्री में कुछ दिन लौंग एवं काली मिर्च को पानी में उबाल कर उस पानी का स्प्रे करें। दक्षिण पश्चिम दिशा में जो बड़ी खिड़की है उसे बंद करवाकर पश्चिम दिशा में खोल दें।

वर्ग पहेली : 8126

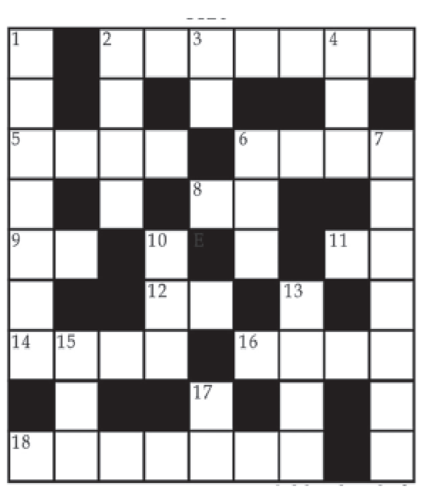

बाएं से दाएं
2. संभावित व्यय का पहले से ही अनुमान लगाना (4,3)
5. कुटिलता; धोखेबाजी (4)
6. नौ रस (4)
8. कलंकित; कलुषित; चरित्रहीन; दागदार; दोषयुक्त; लांछित (2)
9. केकड़ा; बारह राशियों में से चौथी राशि (2)
11. एक जाति, जिसके लोग श्मशान में रहकर मृतकों के शवों के लिए आग देते हैं; अंत्यावसायी; मीरासी (2)
12. अग्रहस्त; कर; पाणि; दस्ता; मूठ (2)
14. अनेक प्रकार से किया हुआ (4)
16. तमोगुण वाला; तमोगुण का कार्य (4)
18. अनुरक्त करना; प्रभावित करना (4,3)

ऊपर से नीचे
1. पूरी तरह से नियंत्रण रखना; लगाम कसना; वश में रखना (2,2,3)
2. विभाजन; हिस्सा बांटने का कार्य (4)
3. अलक; जुल्फ; बालों का गुच्छा (2)
4. गति; चाल; प्रवाह; संवेग; चलने का ढंग (3)
6. कीमती पत्थर; रत्न; मणि; नग (3)
7. तैयार करना; बात बनाना; राजी करना (4,3)
10. बसंत; शोभा; सौंदर्य; प्रफुल्लता (3)
13. किसी के दिमाग में कोई बात अच्छी तरह बैठाना (4)
15. कोमल; पतला; महीन; कनकना (3)
17. कोण; धार; पतला सिरा; पैना किनारा (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8125

1 ला	भ	2 प्र	द	■	3 स	■	4 उ	■
■	■	णा	■	5 ध	मा	के	दा	6 र
7 क	द	म	चू	म	ना	■	8 र	वा
ल	■	क	■	नी	■	9 स	■	ना
10 म	धु	र	ता	■	11 सा	म	यि	क
द	■	ना	■	12 धा	■	झ	■	र
13 वा	14 र	■	15 अ	व	स	र	पा	ना
16 त	ट	र	क्ष	क	■	ख	■	■
■	ना	■	र	■	17 अ	ना	मि	का

सुडोकू : 8108

*मध्यम

		1	6		5	3		
6	2						8	5
	4			9			6	
		6	8		7	2		
	8			2			7	
4	7						3	1
		2	5		3	6		

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8107

3	1	9	8	6	7	2	4	5
8	6	4	3	2	5	1	9	7
2	5	7	9	4	1	6	3	8
5	3	6	2	8	4	9	7	1
7	4	1	5	3	9	8	6	2
9	8	2	1	7	6	4	5	3
1	2	5	6	9	3	7	8	4
4	9	8	7	5	2	3	1	6
6	7	3	4	1	8	5	2	9

कल्पमेधा

बहुत से लोग अपने संगीत को सुने बिना ही जीते हैं और खत्म हो जाते हैं। वे उस पर गौर करने, कोशिश करने की हिम्मत नहीं करते।

– मैरी के एश

राहत का संदेश

करीब एक महीने पहले जब अमेरिका ने आप्रवासन नीति में एक बड़ा बदलाव करते हुए एच1बी वीजा और उसके लिए शुल्क में भारी फेरबदल कर दिया था, तभी से जमीनी स्तर पर उसके असर और खुद अमेरिका को प्रकारांतर से उससे होने वाले नुकसानों को लेकर आशंकाएं जताई जाने लगी थीं। हालांकि तब भी यह उम्मीद की गई थी कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बीते कुछ समय से अमेरिका के हित के नाम पर जिस तरह के फैसले कर रहे हैं, उसमें संभव है कि एच1बी वीजा के संबंध में घोषित नए नियमों की जटिलता और उसके व्यापक असर को देखते हुए फिर किसी बदलाव की गुंजाइश बने। जब एच1बी वीजा के लिए एक लाख डालर शुल्क लगाने की घोषणा हुई, तो उस पर खासा विवाद शुरू हो गया और इस फैसले के लिए दुनिया भर में ट्रंप की आलोचना होने लगी, तब इस फैसले में बदलाव करके कुछ राहत दी गई कि नया शुल्क नए आवेदकों के लिए होगा। यह वहां वर्षों या दशकों से रह रहे अन्य देशों के प्रवासियों लिए थोड़ी राहत की बात थी, लेकिन इसे लेकर कई आशंकाएं बनी रहीं कि आने वाले दिनों में इसका व्यवहार में कैसा असर पड़ेगा।

एक समस्या यह भी खड़ी हुई थी कि शुल्क की घोषणा तो कर दी गई, लेकिन उसमें किसी तरह की छूट आदि के बारे में स्पष्ट नहीं किया गया था। यही वजह थी कि इस नए नियम से प्रभावित होने वाले लोगों के बीच असमंजस की स्थिति बनी हुई थी। अब ट्रंप प्रशासन ने इस संबंध में कुछ बिंदुओं को स्पष्ट किया है कि किन्हें यह शुल्क देना होगा, उसे चुकाने की प्रक्रिया क्या होगी और इसमें छूट के लिए आवेदन कैसे किए जा सकेंगे। अमेरिकी नागरिकता तथा आव्रजन सेवा यानी यूएससीआइएस की ओर जारी नए दिशानिर्देशों के तहत यह शुल्क सभी आवेदकों को नहीं देना होगा। जिन आवेदकों ने अपनी स्थिति में बदलाव कराने या अमेरिका में प्रवास या अपनी वीजा अवधि बढ़वाने का आवेदन किया है, उन्हें भी यह अतिरिक्त शुल्क नहीं लगेगा। इस आदेश में एच1बी वीजा धारक के अमेरिका में आने-जाने पर प्रतिबंध नहीं है। इसका व्यवहार में असर इस रूप में सामने आएगा कि अगर कोई आवेदक किसी दूसरे वीजा, मसलन अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए एफ1वीजा, अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के लिए एल1वीजा पर अमेरिका में दाखिल होता है और वहीं रहते हुए एच1वीजा हासिल करता है, तो उसे नया अतिरिक्त शुल्क नहीं देना होगा।

इस नई घोषणा के बाद वहां एच1बी वीजा के दायरे में आने वाले एक बड़े वर्ग और खासतौर पर भारत से वहां गए लोगों के बीच काफी राहत महसूस की जा रही है। गौरतलब है कि इस वीजा के लिए सबसे ज्यादा भारत के ही लोग आवेदन करते हैं। पिछले वर्ष कुल स्वीकृत एच1बी वीजाधारकों में से सत्तर फीसद भारतीय मूल के कर्मचारी थे। यों भी, भारत से अमेरिका जाने वाले पेशेवरों की संख्या अन्य देशों के लोगों के मुकाबले ज्यादा है। दरअसल, यह समूचा विवाद अमेरिका में अन्य देशों से पहुंचे पेशेवरों से जुड़ा मसला है, जो स्थानीयता और अमेरिकियों के बीच अवसरों के मुद्दे से जोड़ दिया गया है। मगर समय के साथ खुली अर्थव्यवस्था के एक ढांचे के रूप में विकसित होती दुनिया में अमेरिका को उदार रुख अपनाते हुए एक ठोस नीति तक पहुंचना चाहिए। सिर्फ बाहरी माने जाने वाले लोगों पर शिकंजा कस कर या उन्हें बाहर करने का अभियान चला कर वह अमेरिकियों का भला नहीं कर सकता।

स्वच्छता का सवाल

यह विचित्र विडंबना है कि एक ओर सरकार पिछले कई वर्षों से स्वच्छता अभियान और हर जरूरी जगहों पर शौचालय की उपलब्धता के लिए विशेष कार्यक्रम चला रही है, इसमें बड़ी कामयाबी मिलने के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन हकीकत इससे अलग है। हाल ही में देश भर की अदालतों में शौचालयों की दशा पर उच्चतम न्यायालय में वस्तुस्थिति रपट दाखिल की गई। रपट के मुताबिक, इन अदालत परिसरों में शौचालयों की लगातार अस्वच्छ स्थिति वहां के सभी उपयोगकर्ताओं के मौलिक और सम्मान के अधिकारों का उल्लंघन है। रपट में कहा गया है कि यह सीधे तौर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता सुनिश्चित करने में नाकामी है। अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब अदालत परिसरों की यह स्थिति है, तो बाकी जगहों पर क्या दशा होगी। निश्चित रूप से अदालत परिसरों की यह तस्वीर अफसोसनाक है, लेकिन यह केवल यहीं तक सीमित नहीं है। यह भी देखने की जरूरत है कि क्या हर जरूरी जगह पर ऐसे स्वच्छ सार्वजनिक शौचालय मौजूद हैं, जिसका उपयोग करने में किसी को हिचक न हो।

सच यह है कि स्वच्छता अभियान के एक दशक बाद भी कई जगहों पर सार्वजनिक शौचालयों की कमी दिखती है। जिन जगहों पर शौचालय बनाए भी गए हैं, तो कई बार वहां की गंदगी देख कर लोग उनका इस्तेमाल नहीं करते। लंबी दूरी वाले मार्गों पर बहुत कम जगहों पर यह सुविधा है। हालत यह है कि जिन पेट्रोल पंपों पर शौचालय की सुविधा है, वहां केवल तेल लेने आए वाहनों में बैठे लोगों को ही उसके उपयोग की इजाजत दी जाती है। आम लोगों को कई बार मना कर दिया जाता है। यह निराशाजनक है कि खुले में शौच मुक्त वातावरण देने का वादा करने और इसके लिए अभियान चलाने वाली सरकार ने शौचालय बनाने के दावे तो किए, लेकिन उनकी साफ-सफाई के मानक नहीं तय किए। नतीजा यह कि इसकी समावेशी उपयोगिता का उद्देश्य ही हाशिये पर चला गया। दो साल पहले हुए एक सर्वेक्षण में कई लोगों ने माना था कि इन शौचालयों की दशा में कोई सुधार नहीं दिखता। सवाल है कि क्या केवल स्वच्छता का नारा देने भर से इसके उद्देश्य को हासिल किया जा सकेगा?

समावेशी विकास की राह की मुश्किल

वैश्विक खाद्य संकट पर 2025 की रपट के मुताबिक, दुनिया में 29.5 करोड़ लोग आज भी ऐसे हालात में जी रहे हैं, जहां उनके लिए एक वक्त का खाना भी जुटा पाना मुश्किल है। यह सोचने की बात है कि इक्कीसवीं सदी में भी करोड़ों लोग भूखे क्यों जीवन गुजारते हैं?

रवि शंकर

आजादी के कई दशक बाद भी भुखमरी खत्म नहीं हुई है। जबकि बीते करीब आठ दशक से देश इस समस्या को खत्म करने का प्रयास कर रहा है। फिर भी पूरी तरह सफलता नहीं मिली है। भले हम विकास के कितने भी दंभ भरें या यह कहें कि हमने तकनीक के मामले में कितनी सफलता हासिल कर ली है। मगर बहुत सारे लोगों के खाली पेट आज भी एक ऐसी सच्चाई है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। हालांकि भुखमरी की समस्या से केवल भारत ही नहीं जूझ रहा है, बल्कि दुनियाभर के लिए यह एक वैश्विक समस्या बन गई है। वैश्विक खाद्य संकट पर 2025 की एक रपट के मुताबिक, दुनिया में 29.5 करोड़ लोग आज भी ऐसे हालात में जी रहे हैं, जहां उनके लिए एक वक्त का खाना भी जुटा पाना मुश्किल है। यह विचारणीय है कि इक्कीसवीं सदी में भी करोड़ों लोग भूखे क्यों जीवन गुजारते हैं? जबकि हर दिन लगभग एक अरब थालियों के बराबर खाद्य सामग्री बर्बाद कर दी जाती है। यह एक सच्चाई है कि जब दुनिया तकनीक, अंतरिक्ष यात्रा और कृत्रिम मेधा (एआइ) के साथ नई ऊंचाइयों को छू रही है, तब भी करोड़ों लोगों को भरपेट भोजन नहीं मिल पा रहा है।

वर्तमान समय में प्रत्येक देश विकास के पथ पर आगे बढ़ने का दावा करता है। अल्पविकसित देश विकासशील देश बनना चाहते हैं, तो वहीं विकासशील देश विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होना चाहते हैं। इसके लिए वहां की सरकारें प्रयास भी करती हैं और विकास के संदर्भ में अपनी उपलब्धियां गिनाती हैं। यहां तक कि विकास दर के आंकड़े से यह अनुमान लगाया जाता है कि कोई देश किस तरह विकास कर रहा है और कैसे आगे बढ़ रहा है। जब कोई ऐसा आंकड़ा सामने आ जाए जो यह बताए कि अभी तो देश 'भूख' जैसी 'समस्या को भी हल नहीं कर पाया है, तब विकास के आंकड़े सवालों के घेरे में लगते हैं। यह कैसा विकास है जिसमें बड़ी संख्या में लोगों को भोजन भी उपलब्ध नहीं है। बड़ा सवाल है कि दुनिया में आधुनिक तकनीक एवं विज्ञान के सहारे जब भुखमरी के आंकड़े उजागर हो सकते हैं, तो ऐसी तकनीक क्यों नहीं विकसित होतीं जो भुखमरी को रोक सके। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस मसले पर गहराई से नजर रखने वाली संस्थाओं, विशेषज्ञों और प्रौद्योगिकी सहित उच्च स्तर की कई व्यवस्था मौजूद हैं, तो इसके दूरगामी हल के लिए ठोस नीतियां क्यों नहीं तैयार हो पातीं? क्यों नहीं भुखमरी पर नियंत्रण पाया जाता? जाहिर है यह समस्या लगातार गंभीर होती गई है।

हम अब भी दुनिया को भुखमरी, खाद्य असुरक्षा और कुपोषण से छुटकारा दिलाने के लक्ष्य की दिशा में वांछित रफ्तार से काफी पीछे हैं। दुनिया में स्वस्थ आहार तक पहुंच भी एक गंभीर मुद्दा है, जो दुनिया की एक बड़ी आबादी को प्रभावित कर रहा है। साफ है, भूख की समस्या को पूरी तरह समाप्त करने के लिए अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है। मगर गौर करने वाली बात यह है कि एक ओर घरों में रोज

रात का बचा हुआ खाना बासी समझ कर सुबह फेंक दिया जाता है, तो वहीं दूसरी ओर लाखों लोग ऐसे भी हैं जिन्हें एक वक्त का खाना तक नसीब नहीं होता। कमोबेश हर विकसित और विकासशील देश की यही कहानी है। दुनिया में पैदा किए जाने वाले खाद्य पदार्थों में से करीब

> **प्रत्येक देश विकास के पथ पर आगे बढ़ने का दावा करता है। अल्पविकसित देश विकासशील देश बनना चाहते हैं, तो वहीं विकासशील देश विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होना चाहते हैं। इसके लिए वहां की सरकारें प्रयास भी करती हैं और विकास के संदर्भ में अपनी उपलब्धियां गिनाती हैं। यहां तक कि विकास दर के आंकड़े से यह अनुमान लगाया जाता है कि कोई देश किस तरह विकास कर रहा है। कैसे आगे बढ़ रहा है? ऐसे में कोई आंकड़ा सामने आ जाए जो यह बताए कि अभी तो देश 'भूख' जैसी समस्या को भी हल नहीं कर पाया है, तब विकास के आंकड़े अधूरे लगने लगते हैं।**

आधा हर वर्ष सड़ कर बेकार हो जाता है।

भारत में भी केंद्र और राज्य सरकारें खाद्य सुरक्षा के लिए तमाम योजनाएं चला रही हैं। मगर इनका पूरा लाभ गरीबों तक अब भी नहीं पहुंच पाता है। यही वजह है कि बड़े पैमाने पर लोगों को खाना नसीब नहीं हो रहा है। यह विडंबना ही है कि देश में अन्न का भंडार होने पर भी बड़ी संख्या में लोग भुखमरी के शिकार होते हैं। अगर इसके कारणों की पड़ताल करें, तो केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय की कमी, अकुशल नौकरशाही, भ्रष्ट तंत्र और भंडारण क्षमता के अभाव जैसे कारक सामने आते हैं। यह सिलसिला लंबे समय से चल रहा है और सरकार इसका हल खोज पाने में असफल रही है। यह ऐसे देश की तस्वीर है जहां दुनिया के सबसे ज्यादा अमीर लोग रहते है, उनके पास इतना पैसा है कि पूरे देश में खुशहाली लाई जा सकती है, लेकिन गरीब जीने के लिए बुनियादी आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर सकता है। फिर भी यहां भुखमरी और गरीबी पर गौर करना जरूरी नहीं समझा जाता। यही वजह है कि सरकार की तमाम नीतियां सवालों के घेरे में आ जाती हैं। यह सरकार के विकास के तौर-तरीकों पर भी सवाल है। यह वस्तुस्थिति आर्थिक प्रगति का दावा करने वाले अब तक के सभी सरकारी दावों पर सवाल खड़ा कर रही है। विकास के इस भयावह असंतुलन को दूर करने के लिए नीतियों और प्राथमिकता में बदलाव की जरूरत है। भारत की यह विरोधाभासी छवि सोचने पर बाध्य कर देती है।

देश में भुखमरी मिटाने पर जितना धन खर्च हुआ, वह कम नहीं है। केंद्र सरकार के प्रत्येक बजट का बड़ा हिस्सा आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए आबंटित किया जाता है, लेकिन अपेक्षित परिणाम दिखाई नहीं पड़ते। ऐसा लगता है कि प्रयासों में या तो प्रतिबद्धता नहीं है या उनकी दिशा ही गलत है। ऐसे में भारत जो वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने का सपना देख रहा है, उसे सबसे पहले भूख पर विजय प्राप्त करनी होगी। यह सुनिश्चित करना होगा कि देश में एक भी व्यक्ति भूखा नहीं सोए। साथ ही उससे जुड़े अन्य पहलुओं पर भी समान रूप से नजर रखी जाए। खाद्यान्न सुरक्षा तभी संभव है, जब सभी लोगों को पर्याप्त, सुरक्षित और पोषक तत्त्वों से युक्त खाद्यान्न मिले।

भूख आज भी दुनिया के सामने सबसे बड़ी समस्या है। इसकी व्यापकता हर साल नए आंकड़ों के साथ हमारे सामने आती है, जिससे पता चलता है कि विश्वभर में भूख की समस्या कितनी गंभीर है। ऐसा नहीं है कि दुनिया के कई देशों में इसके लिए जरूरी संसाधनों की कोई कमी है। समस्या इच्छाशक्ति और सबसे ज्यादा आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण की है। आज हर देश विकास के पथ पर आगे बढ़ने का दावा करता है। अल्पविकसित देश विकासशील देश बनना चाहते हैं, तो वहीं विकासशील देश विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होना चाहते हैं। इसके लिए उनकी सरकारें प्रयास भी करती हैं और विकास के संदर्भ में अपनी उपलब्धियां गिनाती हैं। यहां तक कि विकास दर के आंकड़े से अनुमान लगाया जाता है कि कोई देश किस तरह विकास कर रहा है और कैसे आगे बढ़ रहा है? ऐसे में जब कोई आंकड़ा यह बताए कि अभी तो देश 'भूख' जैसी 'समस्या को भी हल नहीं कर पाया है, तब विकास के आंकड़े सवालों के घेरे में लगते हैं। यह कैसा विकास है जिसमें लोगों को भोजन भी उपलब्ध नहीं है?

रचनात्मकता की परिधि

दुनिया मेरे आगे

शिशिर शुक्ला

जीवन कल्पनाओं, विचारों और कर्मों की एक सतत श्रृंखला का दूसरा नाम है। निस्संदेह जीवन सीमित और अनिश्चित है, लेकिन इस सीमित यात्रा में ही हमें विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों, दशाओं, अवसरों और समस्याओं से भी परिचित होना पड़ता है। रचनात्मकता एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन को एक सुंदर आकार में ढालते हुए प्रगति की ओर अग्रसर करता है। रचनात्मकता का अर्थ है- कर्म या विचार को लेकर नवीनता उत्पन्न करने की क्षमता। किसी ऐसे विचार का सृजन करना, जो मौलिक हो और पूर्व में मौजूद न हो या फिर उस विचार की परिणति किसी ऐसे कर्म में कर देना, जो पहले घटित न हुआ हो, यह सब कुछ रचनात्मकता की परिधि के अंतर्गत आता है। रचनात्मकता कोई साधारण गुण नहीं है, बल्कि इसमें सामान्य को विशेष में रूपांतरित करने की असीम शक्ति होती है। रचनात्मकता हमें समस्याओं का सटीक समाधान खोजने में सहायता करती है और साथ ही जीवन को एक बेहतर नजरिए से देखने में सक्षम और समर्थ बनाती है।

वर्तमान समय कौशल और दक्षता का समय है और ये दोनों गुण बिना रचनात्मकता के विकसित नहीं हो सकते। रचनात्मकता एक ऐसी शक्ति है, जो विचारों को नया आकार देते हुए कला, साहित्य, विज्ञान या किसी बड़े सामाजिक परिवर्तन में रूपांतरित कर सकती है। हम जरा किसी दिन अपनी दिनचर्या पर गौर करें और रात्रि विश्राम के समय अपनी पूरे दिन की गतिविधियों का आकलन करते हुए यह विचार करें कि हमने आज क्या नया सोचा है, क्या नया सीखा है या क्या नया किया है। अगर इन सभी प्रश्नों का उत्तर हमारे अंतःकरण के द्वारा 'नहीं' के रूप में दिया जाता है, तो कहीं न कहीं हमारा जीवन सार्थकता से दूर जा रहा है। रचनात्मकता से विहीन जीवन पूर्णतया निरुद्देश्य और निरर्थक होता है। रचनात्मकता जीवन को नीरसता और नीरवता से बाहर निकाल कर अर्थपूर्ण तथा नादपूर्ण बनाती है। मनोविज्ञान के अनुसार, रचनात्मकता मानवीय बुद्धि का सर्वोच्च रूप है। यह विश्लेषणात्मक सोच, कल्पना, संवेदना और अनुभव का संगम है। अगर हम गंभीरता के साथ विचार करें तो निष्कर्ष यह निकलेगा कि हमारा जीवन भी प्रकृति की रचनात्मकता का ही परिणाम है। निश्चित रूप से ऐसे जीवन में, जो स्वयं रचनात्मकता से ही उत्पन्न हुआ है, रचनात्मकता का महत्त्व क्या और कितना होगा, इसे शब्दों में कदापि वर्णित नहीं किया जा सकता।

> **रचनात्मक लोग जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल ढालने में सक्षम और समर्थ होते हैं, क्योंकि उनके अंदर समस्या को अवसर तथा समाधान में रूपांतरित करने की असीम, अद्भुत क्षमता होती है। साहित्य, कला, विज्ञान और सामाजिक परिदृश्य- इन सबकी प्रगति की आधारशिला रचनात्मकता में ही निहित होती है।**

हमारे अंतर्मन में रचनात्मकता की भावना तभी उत्पन्न हो सकती है, जबकि हम पूर्णरूपेण स्वतंत्रता, तर्कशीलता और जिज्ञासा के भावों से ओतप्रोत हों। रचनात्मक व्यक्ति केवल बाहरी सफलता ही नहीं अर्जित करता, बल्कि आंतरिक संतोष भी प्राप्त कर लेता है। अपने भीतर कुछ विशिष्ट होने का भाव उसे आत्मविश्वास की अनुभूति प्रदान करता है, तनाव से मुक्ति देता है और उसके अंतस में जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।

रचनात्मक लोग जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल ढालने में सक्षम और समर्थ होते हैं, क्योंकि उनके अंदर समस्या को अवसर और समाधान में रूपांतरित करने की असीम तथा अद्भुत क्षमता होती है। साहित्य, कला, विज्ञान और सामाजिक परिदृश्य- इन सबकी प्रगति की आधारशिला रचनात्मकता में ही निहित होती है। रचनात्मकता नैतिकता और आध्यात्मिकता के साथ भी गहराई से संबद्ध होती है। ऐसे व्यक्ति के अंदर मानवीय मूल्य और सद्गुण उच्च स्तर तक विकसित हो जाते हैं। उसके व्यक्तित्व में अवगुणों के लिए कोई स्थान शेष नहीं रहता। संवेदनशीलता, सहिष्णुता और सकारात्मक दृष्टिकोण बिना रचनात्मकता के विकसित नहीं हो सकते। अपने अंदर रचनात्मकता का गुण विकसित करने के लिए हमें प्रत्येक वस्तु, स्थिति और परिस्थिति के संबंध में प्रश्न और जिज्ञासा से परिपूर्ण दृष्टिकोण निर्मित करना होगा। तर्कपूर्ण और पक्षपातरहित आकलन तथा मूल्यांकन हमें रचनात्मकता की ओर अग्रसर करते हैं।

अपने अंतर्मन को शांत अवस्था में रखते हुए हमें गहन चिंतन और अवलोकन के भाव के साथ जीवन को नवीन दिशा देने का प्रयास करना चाहिए। रचनात्मकता एक आत्मिक साधना है, क्योंकि इसके द्वारा अंतःकरण में छिपे हुए भाव और कौशल निखर कर बाहर आ जाते हैं। दूसरे शब्दों में अगर यह कहा जाए कि रचनात्मकता के माध्यम से हम आत्मसाधना करते हुए स्वयं से जुड़ने का एक सुअवसर प्राप्त करते हैं, तो इसमें कुछ गलत न होगा। रचनात्मकता जीवन में न केवल सौंदर्य का संचार करती है, बल्कि इसे नवीन दिशा और ऊर्जा भी देती है। यह व्यक्ति को जीवंत रखती है, समाज को प्रगतिशील बनाती है और मानवता को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाती है। अगर जीवन में रचनात्मकता न हो, तो वह महज एक छोटी सी दिनचर्या बनकर रह जाएगा। उस जीवन में न तो कोई उत्साह होगा और न ही उसका कोई अर्थ सिद्ध होगा। रचनात्मकता ही वह तत्त्व है, जो वास्तव में हमें जीवित होने का भाव अनुभव कराती है।

रचनात्मकता जीवन का शाश्वत भाव है। यह जीवन में विद्यमान ऐसी सृजनशील धारा है, जो निरंतर बहती रहती है। यह मनुष्य को यांत्रिक अस्तित्व से ऊपर उठा कर चेतन अस्तित्व की ओर ले जाती है। जिस क्षण हम शब्द, विचार या कर्म से किसी भी रूप में सृजन या रचना करते हैं, उसी क्षण हम जीवन के वास्तविक अर्थ को जीते हैं। रचनात्मकता का उद्देश्य है- अपने विचारों, कार्यों और संबंधों में जीवंतता का नवीन प्रकाश उत्पन्न करना। रचनात्मक व्यक्ति का जीवन केवल एक घटना मात्र नहीं होता, बल्कि एक सफल, सार्थक और सकारात्मक उत्सव की भांति होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि रचनात्मकता ही जीवन की आत्मा है और बिना इसके जीवन नितांत अर्थहीन है।

घटती सहिष्णुता

'संवाद के बजाय' (संपादकीय, 20 अक्तूबर) पढ़ा। दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे उच्च शिक्षण संस्थान हमेशा से विचार-विमर्श और संवाद की परंपरा के केंद्र रहे हैं। यहां छात्र और शिक्षक मिल कर देश, समाज और लोकतंत्र के सवालों पर चर्चा करते रहे हैं। मगर हाल के कुछ वर्षों में इन संस्थाओं की यह पहचान कमजोर पड़ती दिख रही है। सत्ता से जुड़े संगठनों और उनके नेताओं ने इन विश्वविद्यालयों के माहौल को बिगाड़ने, असहमति की आवाज को दबाने और शिक्षकों-छात्रों के बीच अविश्वास फैलाने का काम किया है। भीमराव आंबेडकर कालेज की अनुशासन समिति की बैठक के दौरान छात्र संघ की एक पदाधिकारी द्वारा शिक्षक के साथ दुर्व्यवहार न केवल अनुचित था, बल्कि यह शिक्षण संस्थान की गरिमा का भी अपमान था। किसी भी विवाद का हल संवाद से निकल सकता है, लेकिन हिंसक या अभद्र व्यवहार से नहीं। इस तरह की घटना पूरे छात्र समुदाय की छवि को धूमिल करती है। इससे न केवल शिक्षकों का सम्मान घट रहा है, बल्कि छात्रों के बीच वैचारिक सहिष्णुता भी कम हो रही है। विश्वविद्यालय वह स्थान होता है जहां प्रश्न पूछना, बहस करना और असहमति रखना सिखाया जाता है।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

लुभावने वादे

बिहार विधानसभा चुनाव धीरे-धीरे अपने चरम पर पहुंच रहा है। बिहार की राजनीति देश की राजनीति की दिशा तय करती है। जाति व्यवस्था भारतीय समाज का मूल आधार है। बिहार की राजनीति जातीय समीकरण पर टिकी हुई है, लेकिन 2009 और 2014 के लोकसभा चुनाव में मतदाताओं ने जातीय समीकरण से ऊपर उठ कर मतदान किया था। यह चुनाव मुख्य रूप से राजग और महागठबंधन के बीच होने की संभावना है। किसी भी राजनीतिक दल और नेता की असली परीक्षा चुनाव मैदान में होती है। चर्चित चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर भी अपनी नई पार्टी जन सुराज के साथ मैदान में उतरे हैं। दूसरों को चुनाव जिताने वाले प्रशांत के प्रदर्शन पर सभी की निगाहें हैं। मुख्य विपक्षी दल राजद अपने परंपरागत वोट के साथ दूसरी जातियों को साधने की कोशिश कर रहा है। इस चुनाव में भी लोक लुभावने वादों का इस्तेमाल खूब हो रहा है। जबकि जाति-धर्म और रेवड़ी संस्कृति से ऊपर उठ कर मतदान करना चाहिए।

– हिमांशु शेखर, गयाजी

लापरवाही का हासिल

'गहराता संकट' (संपादकीय, 22 अक्तूबर) पढ़ा। शीर्ष न्यायालय ने वायु और ध्वनि प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पारंपरिक पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया था, मगर हरित पटाखों को कुछ शर्तों के आधार पर बिक्री के लिए छूट दे दी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि विक्रेताओं और लोगों ने मनमानी की। यानी छूट देने से पहले ही निर्माताओं ने पूरी तैयारी कर रखी थी, क्योंकि हरित पटाखों की छूट के बाद निर्माताओं के पास इतना समय नहीं था कि वे भारी मात्रा में पटाखे तैयार कर पाते। सरकार और पुलिस को पता होता है कि पटाखा कहां और कितनी मात्रा में तैयार होते हैं! मगर क्या किसी बुराई को समाप्त करने का दायित्व सिर्फ सरकार या न्यायालयों का ही है, नागरिकों का नहीं? सभी जानते हैं कि दीपावली के बाद वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है। निराशाजनक तो यह है कि कई लोग सब कुछ जानते हुए भी हवा में जहर घोलते हैं।

– नरेंद्र, टोंक, मेरठ

शक्ति का गौरव

वैश्विक वायुशक्ति रैंकिंग के अनुसार, भारत अब वायुसेना के क्षेत्र में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी शक्ति बन चुका है। यह केवल संख्या का परिणाम नहीं है। उच्च तकनीक, आधुनिक हथियार और उत्कृष्ट प्रशिक्षण ने भारत को उच्च स्थान तक पहुंचाया है। चीन चौथे स्थान पर है, जबकि अमेरिका और रूस क्रमशः शीर्ष पर हैं। इस बड़ी सफलता के पीछे है देश की आत्मनिर्भरता, कठोर प्रशिक्षण और तकनीकी नवाचार। युद्धक विमान, ड्रोन, मिसाइल और आधुनिक हथियार भारत को विश्व मंच पर एक मजबूत शक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे केवल सुरक्षा ही सुनिश्चित नहीं हुई है, बल्कि युवाओं में देशभक्ति और आत्मविश्वास का भी संचार हुआ है। भारत अब न केवल अपनी सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहा है, बल्कि विश्व के सामने अपनी शक्ति, दृढ़ता और आत्मविश्वास भी प्रदर्शित कर रहा है।

– समराज चौहान, असम

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

तेजस्वी ने किया संविदा कर्मियों को स्थायी करने का वादा, भाजपा बोली–यह 'क्रूर मजाक'

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 अक्तूबर।

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव ने बुधवार को घोषणा की कि बिहार सरकार के विभिन्न विभागों में कार्यरत सभी संविदा कर्मियों और करीब दो लाख 'जीविका दीदियों' को शामिल सामुदायिक प्रेरकों (कम्युनिटी मोबिलाइजर) को महागठबंधन (इंडिया) की सरकार बनने पर स्थायी किया जाएगा। वहीं, भाजपा ने तेजस्वी यादव के बड़े-बड़े चुनावी वादे करके बिहार के लोगों को मूर्ख बनाने का आरोप लगाया। पार्टी ने यादव के चुनावी वादों को एक 'क्रूर मजाक' करार दिया।

पटना में अपने सरकारी आवास पर संवाददाता सम्मेलन में तेजस्वी यादव ने कहा कि अगर विपक्षी गठबंधन राज्य में सरकार बनाता है, तो उन 'जीविका दीदियों' को प्रति माह 30,000 रुपए का वेतन दिया जाएगा। साथ ही जिन 'जीविका दीदियों' ने ऋण लिया है, उनके ब्याज को माफ कर दिया जाएगा। बिहार सरकार द्वारा विश्व बैंक की सहायता से संचालित 'बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना' (बीआरएलपी) को स्थानीय स्तर पर 'जीविका' के नाम से जाना जाता है। इसका उद्देश्य ग्रामीण गरीबों का सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण करना है। इस परियोजना से जुड़ी महिलाओं को 'जीविका दीदी' कहा जाता है।

तेजस्वी ने कहा कि वर्तमान सरकार में जीविका दीदियों और संविदा कर्मियों के साथ लगातार शोषण और अन्याय हुआ है, लेकिन महागठबंधन की सरकार आने पर उन्हें सम्मानजनक वेतन, स्थायित्व और सामाजिक सुरक्षा दी जाएगी।
भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने बड़े-बड़े वादे करने के लिए राजद नेता की नीयत पर सवाल उठाए, जिसके लिए बिहार सरकार के वर्तमान बजट से कहीं अधिक धन की आवश्यकता होगी।

तेजस्वी यादव ने कहा कि वर्तमान सरकार में जीविका दीदियों और संविदा कर्मियों के साथ लगातार शोषण और अन्याय हुआ है, लेकिन महागठबंधन की सरकार आने पर उन्हें सम्मानजनक वेतन, स्थायित्व और सामाजिक सुरक्षा दी जाएगी। तेजस्वी ने कहा कि इन महिलाओं का वर्षों से 'शोषण और अन्याय' हुआ है, लेकिन अब न्याय का समय आ गया है। तेजस्वी ने कहा कि महागठबंधन की सरकार बनने पर 'माई-बहन योजना' के तहत महिलाओं को प्रति माह 2,500 रुपए, सालाना 30,000 रुपए और पांच साल में 1.5 लाख रुपए दिए जाएंगे। तेजस्वी ने बताया कि 'बेटी योजना' के तहत बेटियों को जन्म से लेकर आय अर्जन तक सहायता दी जाएगी, जबकि 'मां योजना' के तहत जिन महिलाओं के पास मकान नहीं है, उनके लिए मकान की व्यवस्था की जाएगी।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं राज्यसभा सदस्य सुधांशु त्रिवेदी ने दिल्ली में तेजस्वी यादव के चुनावी वादों को एक 'क्रूर मजाक' करार दिया और उन्होंने ऐसे बड़े-बड़े वादे करने के लिए राजद नेता की नीयत पर सवाल उठाए, जिसके लिए बिहार सरकार के वर्तमान बजट से कहीं अधिक धन की आवश्यकता होगी। त्रिवेदी ने कहा कि उन्होंने वादा किया है कि वे हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देंगे। मौजूदा अनुमानों के अनुसार, बिहार की आबादी लगभग 13.5 करोड़ है, जिन परिवारों के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाएगी उनकी संख्या लगभग 2.90 करोड़ होगी। इनका वेतन 30,000 रुपए से दो लाख रुपए तक होगा। उन्होंने कहा कि यदि उनका अनुमानित औसत वेतन 75,000 रुपए के आसपास आता है, तो इस मद में व्यय लगभग 29 लाख करोड़ रुपए आएगा, जबकि बिहार का वर्तमान बजट लगभग 3,17,000 करोड़ रुपए है।

मोहनिया से राजद प्रत्याशी श्वेता सुमन का नामांकन रद्द

उत्तर प्रदेश की निवासी होने का दावा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 अक्तूबर।

श्वेता सुमन ने आरोप लगाया कि उनका नामांकन भाजपा के दबाव में रद्द किया गया है। उन्होंने कहा, यह फैसला इसलिए लिया गया ताकि भाजपा प्रत्याशी संगीता कुमार की जीत सुनिश्चित हो सके।

बिहार विधानसभा चुनाव में बुधवार को विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' को उस वक्त झटका लगा जब निर्वाचन आयोग ने कैमूर जिले की मोहनिया विधानसभा सीट से राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रत्याशी श्वेता सुमन का नामांकन रद्द कर दिया। अधिकारियों ने बताया, आयोग ने पाया कि सुमन उत्तर प्रदेश की निवासी हैं, जबकि मोहनिया सीट (अनुसूचित जाति) के लिए आरक्षित है और ऐसे में दूसरे राज्य के व्यक्ति को आरक्षित सीट से चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं है।

श्वेता सुमन ने आरोप लगाया कि उनका नामांकन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेतृत्व के दबाव में रद्द किया गया है। उन्होंने कहा, यह फैसला इसलिए लिया गया ताकि भाजपा प्रत्याशी संगीता कुमार की जीत सुनिश्चित हो सके। उन्होंने आरोप लगाया, मेरे नामांकन को यह कहकर खारिज कर दिया गया कि मैं उत्तर प्रदेश की निवासी हूं और आरक्षित सीट से चुनाव नहीं लड़ सकती। मैं यहां पिछले 20 वर्षों से रह रही हूं। सुमन ने आरोप लगाया, यह भाजपा नेताओं के निर्देश पर काम कर रहे चुनाव अधिकारियों की मनमानी है। उन्होंने यह भी दावा किया, भाजपा प्रत्याशी ने अपना जाति प्रमाणपत्र नामांकन दाखिल करने के बाद प्रस्तुत किया था, फिर भी उनके कागजात स्वीकार कर लिए गए। राजद प्रत्याशी ने कहा, मैं निश्चित रूप से चुनाव अधिकारियों के इस पक्षपातपूर्ण रवैये के खिलाफ अदालत का दरवाजा खटखटाऊंगी।

नीरज चोपड़ा को लेफ्टिनेंट कर्नल का पद प्रदान किया गया

नीरज चोपड़ा को लेफ्टिनेंट कर्नल के मानद रैंक का प्रतीक चिह्न प्रदान करते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी।

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 अक्तूबर।

ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को बुधवार को लेफ्टिनेंट कर्नल का पद प्रदान किया गया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उन्हें दृढ़ता और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बताया। सिंह ने एक समारोह में प्रादेशिक सेना में सेवारत स्टार भाला फेंक खिलाड़ी को लेफ्टिनेंट कर्नल के मानद रैंक का प्रतीक चिह्न प्रदान किया। इस अवसर पर सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी और बल के कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

चोपड़ा 26 अगस्त 2016 को नायब सूबेदार के तौर पर भारतीय सेना में शामिल हुए थे और 2021 में उन्हें सूबेदार और 2022 में सूबेदार मेजर के पद पर पदोन्नत किया गया। नीरज चोपड़ा का जन्म 24 दिसंबर 1997 को हरियाणा के पानीपत के खांडरा गांव में हुआ था। उन्होंने तोक्यो ओलंपिक 2020 में एथलेटिक्स में पुरुषों की भाला फेंक प्रतियोगिता में भारत का पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया था। चोपड़ा ने 2024 में पेरिस ओलंपिक में रजत पदक और 2023 में विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन जारी रखा।

उन्होंने एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और डायमंड लीग स्पर्धाओं में भी कई स्वर्ण पदक जीते हैं। उनका 90.23 मीटर (2025 मीटर) का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ थ्रो भारतीय खेल इतिहास में मील का पत्थर है। चोपड़ा और उनके परिवार के सदस्यों से बातचीत करते हुए रक्षा मंत्री सिंह ने उन्हें दृढ़ता, देशभक्ति और उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत भारतीय भावना का प्रतीक बताया। सिंह ने कहा कि लेफ्टिनेंट कर्नल (मानद) नीरज चोपड़ा अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रीय गौरव के उच्चतम आदर्शों के प्रतीक हैं और खेल जगत और सशस्त्र बलों में पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

चीन से करार नहीं हुआ तो ट्रंप लगाएंगे 155% शुल्क

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 अक्तूबर।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का यह बयान व्हाइट हाउस में आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज के साथ एक महत्वपूर्ण खनिज समझौते पर हस्ताक्षर के बाद आया।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने धमकी दी है कि यदि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग वाशिंगटन के साथ 'निष्पक्ष व्यापार समझौते' पर नहीं पहुंचते हैं तो वे चीनी वस्तुओं पर 155 फीसद शुल्क लगा देंगे। ट्रंप ने चीन के लिए मांगों की एक सूची पेश की, जिसमें उन्होंने दुर्लभ मृदा, फेंटेनाइल और सोयाबीन को वार्ता की मेज पर बेजिंग के साथ संबोधित करने के लिए अपने शीर्ष मुद्दों के रूप में शामिल किया।

ट्रंप का यह बयान व्हाइट हाउस में आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज के साथ एक महत्वपूर्ण खनिज समझौते पर हस्ताक्षर के बाद आया। अमेरिकी राष्ट्रपति ने चीन को धमकी दी कि अगर उस समय तक कोई समझौता नहीं हुआ, तो वे एक नवंबर से उसके उत्पादों पर संभावित 155 फीसद शुल्क लगा देंगे। ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि चीन हमारा बहुत सम्मान करता है। वे शुल्क के रूप में हमें भारी मात्रा में पैसा दे रहे हैं। जैसा कि आप जानते हैं, वे 55 फीसद दे रहे हैं। यह बहुत अधिक पैसा है। बेजिंग को 155 फीसद शुल्क की चेतावनी देते हुए ट्रंप ने कहा कि चीन 55 फीसद शुल्क दे रहा है और अगर हम कोई समझौता नहीं करते हैं, तो एक नवंबर से 155 फीसद शुल्क देना पड़ सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि वे व्यक्तिगत रूप से चीन के साथ दोस्ताना संबंध रखना चाहते हैं, लेकिन चीन हमारे साथ वर्षों से बहुत कठोर रहा है क्योंकि हमारे पास ऐसे राष्ट्रपति थे जो व्यवसाय के दृष्टिकोण से होशियार नहीं थे। उन्होंने चीन और हर दूसरे देश को हमारा फायदा उठाने दिया। ट्रंप ने शुल्क को सिर्फ व्यापार का हथियार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का उपकरण बताया। उन्होंने याद दिलाया कि यूरोपीय संघ, जापान और दक्षिण कोरिया के साथ उनके पिछले व्यापार समझौते भी शुल्क पर आधारित थे, जिसके दम पर अमेरिका को अरबों डालर का राजस्व मिल रहा है। ट्रंप ने दावा किया कि इस शुल्क से अमेरिका को खरबों डालर मिल रहे हैं, जिनका उपयोग कर्ज चुकाने के लिए करेंगे। यह घोषणा ट्रंप की उस 'द्वितीय शुल्क' रणनीति को भी उजागर करती है, जो उन देशों को निशाना बनाती है जो परोक्ष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध में ऊर्जा व्यापार के माध्यम से रूस की मदद कर रहे हैं।

दशरथ मांझी के बेटे का आरोप, कांग्रेस ने टिकट देने का वादा तोड़ा

पटना, 22 अक्तूबर (भाषा)।

'माउंटेन मैन' के नाम से प्रसिद्ध दशरथ मांझी के बेटे भागीरथ मांझी ने बुधवार को आरोप लगाया कि उन्हें कांग्रेस की ओर से बिहार विधानसभा चुनाव के लिए टिकट नहीं दिया गया, जबकि पार्टी नेता राहुल गांधी ने उन्हें इसका आश्वासन दिया था।

भागीरथ मांझी ने कहा कि वह चार दिनों तक दिल्ली में रुके, जहां उन्होंने राहुल गांधी से मुलाकात की और आवश्यक दस्तावेज जमा किए, लेकिन अंततः उन्हें टिकट नहीं मिला। उन्होंने कहा, मैंने राहुल गांधी से विधानसभा चुनाव के लिए टिकट मांगा था। उन्होंने मुझे भरोसा भी दिया था।

वन क्षेत्र के मामले में विश्व स्तर पर नौवें स्थान पर पहुंचा भारत

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 अक्तूबर।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की रपट के अनुसार भारत कुल वन क्षेत्र के मामले में विश्व स्तर पर नौवें स्थान पर पहुंच गया है। वार्षिक वन क्षेत्र वृद्धि में अपना तीसरा स्थान भी बरकरार रखा है। पर्यावरण मंत्रालय ने कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत के बड़े पैमाने पर वनरोपण और आम लोगों की अगुआई में हुए वन संरक्षण प्रयासों की सफलता को दर्शाता है।

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि भारत का 10वें स्थान से नौवें स्थान पर पहुंचना सतत वन प्रबंधन और पारिस्थितिक संरक्षण के मामले में एक बड़ी उपलब्धि है। मंत्री ने कहा कि विशेष रूप से 'एक पेड़ मां के नाम' पहल के तहत वृक्षारोपण अभियानों में बढ़ती जन भागीदारी और बड़े पैमाने पर राज्य सरकारों के अभियानों ने इस प्रगति में योगदान दिया है। यादव ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि यह सभी भारतीयों के लिए बहुत खुशी की बात है। हमने वैश्विक स्तर पर वन क्षेत्र के मामले में नौवां स्थान प्राप्त किया है जबकि पिछली बार हम 10वें स्थान पर थे। वार्षिक वृद्धि के मामले में भी हमने वैश्विक स्तर पर अपना तीसरा स्थान बनाए रखा है। उन्होंने कहा कि यह बढ़ती जनभागीदारी एक हरित और टिकाऊ भविष्य के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दे रही है। यह उपलब्धि भारत सरकार की वन संरक्षण और संवर्धन के लिए योजनाओं एवं नीतियों तथा राज्य सरकारों द्वारा व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण प्रयासों के फलस्वरूप प्राप्त हुई है।

शाह के 61वें जन्मदिन पर प्रधानमंत्री समेत कई नेताओं ने दी बधाई

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 अक्तूबर।

नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने भी दी बधाई।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बुधवार को 61 वर्ष के हो गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू सहित कई अन्य प्रमुख नेताओं ने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी।

प्रधानमंत्री मोदी ने एक संदेश में कहा कि शाह ने भारत के आंतरिक सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने और यह सुनिश्चित करने के लिए सराहनीय प्रयास किए हैं कि प्रत्येक भारतीय सुरक्षा एवं सम्मान का जीवन जी सके। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि गृह मंत्री अमित शाह को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। जनसेवा के प्रति समर्पण की भावना और मेहनती होने के कारण उन्हें व्यापक रूप से सराहा जाता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप सदैव स्वस्थ एवं दीर्घायु रहें। शाह लगभग चार दशकों से प्रधानमंत्री के विश्वसनीय सहयोगी रहे हैं। भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने बधाई देते हुए कहा कि शाह का सार्वजनिक जीवन समर्पण और संगठनात्मक कौशल का अद्वितीय उदाहरण है। नड्डा ने कहा कि नक्सलवाद को खत्म करने के गृह मंत्री के अटूट संकल्प के कारण देश को नक्सल मुक्त बनाने की लड़ाई निर्णायक मोड़ पर पहुंच रही है। उन्होंने 'हैप्पी बर्थडे अमित शाह' टैगलाइन के साथ एक्स पर लिखा कि (भाजपा) संगठन के विस्तार से लेकर विचारधारा के सशक्तीकरण तक, आपने नई ऊंचाइयां प्रदान की हैं। मैं ईश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन की कामना करता हूं।

पेज 1 का बाकी

बिहार : गठबंधन को बचाने की कोशिश, आज हल की संभावना

लेकर स्थिति पूरी तरह साफ हो जाएगी। लालू प्रसाद से मुलाकात के बाद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने उम्मीद जताई कि नामांकन वापसी की अंतिम तिथि 23 अक्तूबर तक सभी मुद्दे सुलझा लिए जाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ सीट पर अगर दोस्ताना मुकाबला है तो यह इतनी बड़ी बात नहीं है। माना जा रहा है कि कांग्रेस आलाकमान ने गहलोत को गठबंधन सहयोगी के साथ सीट बंटवारे को लेकर पैदा हुए गतिरोध को दूर करने का जिम्मा सौंपा है। सीट बंटवारे पर पूर्ण सहमति नहीं बनने से बिहार में विपक्षी गठबंधन में संशय की स्थिति बनी हुई है। गहलोत ने कहा, महाराष्ट्र में हुई हार के बाद बिहार का विधानसभा चुनाव, विपक्षी गठबंधन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। माना जा रहा है कि कांग्रेस की ओर से तेजस्वी यादव को औपचारिक समर्थन न मिलने से राजद में असंतोष है। बावजूद इसके 'तेजस्वी सरकार' के नारे के साथ चुनावी अभियान जारी है।

बिहार की कुल 243 विधानसभा सीट में से राजद 143 और कांग्रेस 61 सीट पर चुनाव लड़ रही है। हालांकि, कम से कम पांच सीटों पर दोनों दलों के बीच 'दोस्ताना मुकाबला' होने जा रहा है। वहीं, तीन सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी गठबंधन सहयोगी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) से भी मुकाबला करेंगे। गहलोत ने पटना हवाई अड्डे पर एक सवाल के जवाब में कहा, पांच-दस सीटों पर दोस्ताना मुकाबला कोई बड़ी बात नहीं है। उन्होंने कहा, बिहार का चुनाव राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करेगा। यह जरूरी है कि समाज को विभाजित करने वाले और अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को बिहार में झटका लगे। बिहार की जनता समझदार है और इसका फैसला करेगी। कांग्रेस, राजद और वाम दलों के विपक्षी गठबंधन में सीट बंटवारे पर पूछे सवाल के जवाब में गहलोत और कृष्ण अल्लावरू ने कहा, गुरुवार को संयुक्त संवाददाता सम्मेलन होगा।

गहलोत ने निशाना साधते हुए कहा, राजग में जारी उथल-पुथल, हमारी तुलना में कहीं ज्यादा है। भाकपा (माले)लिबरेशन के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने घटक दलों के प्रत्याशियों के आमने सामने होने को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा, कुछ ऐसी सीटें हैं, जिनपर गुरुवार तक स्थिति साफ हो जाएगी। सभी घटक दल एकजुट हैं और विधानसभा चुनाव में इसका असर दिखेगा।

बिहार की 243 सदस्यीय विधानसभा के लिए मतदान दो चरणों में 6 और 11 नवंबर को होगा, जबकि मतगणना 14 नवंबर को की होगी। 11 सीट पर घटक दलों के प्रत्याशी आमने-सामने सीट बंटवारे को लेकर कांग्रेस, राजद और वामदलों के बीच जारी आंतरिक मतभेद की वजह से विपक्षी गठबंधन के घटक दलों के प्रत्याशियों के 11 विधानसभा सीट पर एक-दूसरे के खिलाफ चुनाव मैदान में उतरने की संभावना है। इनमें वैशाली, राजापाकर, रोसड़ा, बछवाड़ा, कहलगांव, बिहारशरीफ, नरकटियागंज, करगहर, गौड़ाबोराम, चैनपुर और सिकंदरा विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। हालांकि दूसरे चरण के लिए नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख पर समीकरण बदलने की भी संभावना जताई जा रही है।

चोकसी की भारत में निष्पक्ष सुनवाई न होने का जोखिम नहीं : अदालत

गिरफ्तारी वारंट को 'लागू होने योग्य' बताया था, जिसे अपील अदालत ने 17 अक्तूबर के अपने आदेश में बरकरार रखा है। सबूतों के अभाव से संबंधित तीसरे वारंट को बेल्जियम की अदालत ने स्वीकार नहीं किया था। अपील अदालत ने माना है कि चोकसी द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेज इस दावे की पुष्टि नहीं करते हैं कि वह एक राजनीतिक हस्तक्षेप का शिकार हो सकता है।

इसने कहा कि यह संबंधित पक्ष पर निर्भर है कि वह इस बात पर विश्वास करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करे कि प्रत्यर्पण के बाद दुर्व्यवहार का वास्तविक जोखिम है। चोकसी द्वारा दी गई इन दलीलों को खारिज करते हुए कि भारत में प्रत्यर्पित किए जाने पर मामले में निष्पक्ष सुनवाई नहीं हो सकती है, अपील अदालत ने माना कि उसके द्वारा प्रदान किए गए दस्तावेज इसे 'ठोस रूप से' साबित करने के लिए अपर्याप्त हैं। अदालत ने चोकसी के इस दावे को भी स्वीकार नहीं किया कि उसे भारतीय एजेंसियों द्वारा एंटीगुआ और बारबुडा से अगवा कर लिया गया था और डोमिनिका में प्रताड़ित किया गया था। अदालत ने कहा कि भगोड़े व्यवसायी द्वारा प्रस्तुत रेकार्ड इस बात का 'निर्णायक संकेत' नहीं देते हैं कि वह एंटीगुआ में भारतीय अधिकारियों के इशारे पर अपहरण का शिकार हुआ था।

अदालत के आदेश ने भगोड़े व्यवसायी को एक बड़ा झटका दिया, जो लंदन की जेल में बंद अपने भतीजे नीरव मोदी के साथ कथित तौर पर मिलीभगत करके पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) में हुए 13,000 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी के मामले में वांछित है। नीरव भी प्रत्यर्पण कार्यवाही का सामना कर रहा है। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआइ) ने अपने आरोप पत्र में कहा है कि 13,000 करोड़ रुपए में से अकेले चोकसी ने 6,400 करोड़ रुपए की हेराफेरी की है।

मामले की जानकारी रखने वाले अधिकारियों ने बताया कि अपील अदालत ने माना है कि भारत के अनुरोध पर बेल्जियम के अधिकारियों द्वारा चोकसी की गिरफ्तारी वैध थी। उन्होंने कहा कि यह आदेश चोकसी के प्रत्यर्पण की मांग करने वाले भारत के पक्ष में अहम है। हालांकि, चोकसी के पास बेल्जियम के उच्चतम न्यायालय में फैसले के खिलाफ अपील करने का विकल्प है। एक अधिकारी ने कहा, 'बेल्जियम में मेहुल चोकसी के खिलाफ चल रही प्रत्यर्पण कार्यवाही में यह भारत के लिए पहली सफलता है।'

उसके प्रत्यर्पण का पहला कानूनी रास्ता साफ हो गया है।' सबसे बड़े बैंक धोखाधड़ी में से एक को अंजाम देने में चोकसी की कथित भूमिका पर मजबूत दलीलें पेश करने में बेल्जियम के अभियोजकों को विदेश मंत्रालय और सीबीआइ के भारतीय अधिकारियों द्वारा सहायता मिली।

ट्रंप ने मोदी से की बात, कहा व्यापार और तेल पर हुई चर्चा

बाद संबंधों में तनाव आ गया है। मंगलवार को हुई बातचीत के बाद अपने वक्तव्य में ट्रंप ने भारत-अमेरिका संबंधों को 'प्रगाढ़' बताया। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'राष्ट्रपति ट्रंप आपके फोन करने और दिवाली की शुभकामनाएं देने के लिए धन्यवाद। रोशनी के इस पर्व पर दोनों महान लोकतंत्र दुनिया को आशा की किरण दिखाते रहें और आतंकवाद के सभी रूपों के खिलाफ एकजुट रहें।'

ट्रंप ने व्हाइट हाउस में संवाददाताओं को बताया कि उन्होंने और मोदी ने व्यापार मुद्दों पर चर्चा की। ट्रंप ने अपना यह दावा दोहराया कि भारत 'रूस से ज्यादा तेल' नहीं खरीदेगा। गत 16 सितंबर के बाद से मोदी और ट्रंप के बीच यह तीसरी फोन वार्ता थी। भारत की ओर से जारी एक बयान में कहा गया कि मोदी ने भारत-अमेरिका साझेदारी की स्थायी ताकत पर जोर दिया और आतंकवाद से लड़ने तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत की अटूट प्रतिबद्धता दोहराई। इसमें कहा गया है कि प्रधानमंत्री ने ट्रंप को 'दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं और प्रकाश के त्योहार के अवसर पर फोन काल' के लिए 'हार्दिक आभार' व्यक्त किया। ट्रंप ने संवाददाताओं से कहा, 'हमने व्यापार के बारे में बात की, हमने कई चीजों के बारे में बात की, लेकिन मुख्य रूप से व्यापार की दुनिया के बारे में। वे इसमें बहुत रुचि रखते हैं।'

हालांकि हमने कुछ समय पहले इस बारे में बात की थी कि पाकिस्तान के साथ कोई युद्ध नहीं होना चाहिए।' उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि इसमें व्यापार भी शामिल था, मैं उस समय इस बारे में बात कर पाया था और भारत और पाकिस्तान के बीच कोई युद्ध नहीं है। यह एक बहुत ही अच्छी बात है।' मोदी को एक महान व्यक्ति बताते हुए ट्रंप ने कहा कि वे बीते वर्षों में मेरे अच्छे मित्र बन गए हैं।नई दिल्ली में अधिकारिक सूत्रों ने बताया कि मंगलवार को फोन पर बातचीत के दौरान पाकिस्तान पर चर्चा नहीं हुई। ट्रंप ने एक बार फिर दावा किया कि भारत रूस से बहुत अधिक तेल नहीं खरीदेगा। एक सवाल के जवाब में ट्रंप ने कहा कि अमेरिका और भारत कुछ बेहतरीन समझौतों पर मिलकर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मैंने आज प्रधानमंत्री मोदी से बात की, जैसा कि मैंने पहले भी बताया, हमारे बीच बहुत अच्छे संबंध हैं।... वे (मोदी) रूस से ज्यादा तेल नहीं खरीदने जा रहे हैं। वे भी मेरी तरह चाहते हैं कि यह युद्ध खत्म हो। वे रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध का अंत देखना चाहते हैं। ट्रंप ने दावा किया, जैसा कि आप जानते हैं, वे बहुत ज्यादा तेल नहीं खरीदेंगे।

उन्होंने इसमें भारी कटौती की है, और वे इसे और भी कम कर रहे हैं। भारत द्वारा रूसी कच्चे तेल की खरीद को लेकर ट्रंप की टिप्पणी पर नई दिल्ली की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। पिछले सप्ताह ट्रंप ने दावा किया था कि प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे कहा है कि भारत रूस से कच्चा तेल खरीदना बंद कर देगा। ट्रंप की इस टिप्पणी के बाद, भारत ने कहा कि दोनों नेताओं के बीच ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई।

दिल्ली की हवा लगातार तीसरे दिन बहुत खराब, वायु गुणवत्ता सूचकांक 353 पर

भी 321 एक्यूआइ के साथ देश में नौवें स्थान पर रहा।भारत मौसम विज्ञान विभाग (आइएमडी) ने आने वाले दिनों में प्रदूषण बढ़ने का अनुमान जताया है। आइएमडी के वरिष्ठ वैज्ञानिक कृष्ण मिश्रा ने कहा कि हवा की दिशा पूर्व से पश्चिमी हो गई है, लेकिन गति कम बनी हुई है। रात के समय हवा लगभग धीमी बनी हुई है और दिन के समय इसकी गति केवल 5-7 किमी प्रति घंटे तक ही रहती है। उन्होंने कहा कि 27 अक्तूबर के आसपास एक कमजोर पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव की उम्मीद है, लेकिन इससे भारी बारिश या हवा की गति में वृद्धि होने की संभावना नहीं है।

केंद्र की वायु गुणवत्ता प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (ईडब्लूएस) के पूर्वानुमानों से संकेत मिलता है कि दिल्ली का एक्यूआइ शनिवार तक 'बेहद खराब' श्रेणी में बना रहेगा, जिसके बाद अगले छह दिनों तक यह 'खराब' और 'बेहद खराब' के बीच रह सकता है। सीपीसीबी के आंकड़ों से पता चला है कि 39 सक्रिय निगरानी केंद्रों में से तीन ने बुधवार शाम चार बजे प्रदूषण का स्तर 'गंभीर' दर्ज किया, जबकि 33 'बेहद खराब' श्रेणी में रहे।

बेटे संग सातवीं मंजिल से कूदी नर्स, दोनों की मौत

की कोशिश की थी। मंगलवार को शर्मिला के परिवार वाले इस मामले पर बात करने आए थे। पुलिस के मुताबिक, माता-पिता के वापस जाने के बाद, शर्मिला ने अपराह्न करीब साढ़े तीन बजे अपने तीन साल के बेटे युवान के साथ सातवीं मंजिल से छलांग लगा दी। दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस मौके पर पहुंची और महिला के परिजनों को सूचना दी। मृतका के भाई सुरेंद्र ने आरोप लगाया कि उसका बहनोई और उसके परिवार के सदस्य दहेज के लिए शर्मिला को परेशान करते थे जिसकी वजह से उसने यह कदम उठाया। पुलिस ने बताया कि शिकायत के बाद सेक्टर 10 ए थाने में रोहित और उसके परिवार के चार अन्य सदस्यों के खिलाफ बीएनएस की संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। जांच अधिकारी उपनिरीक्षक जगदीश कुमार ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है। हम कल पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप देंगे।

चिंतन

सोने के भाव में उतार चढ़ाव से उलझन बढ़ी

पीली धातु यानि सोने को हमेशा से ही सुरक्षित निवेश का साधन माना जाता रहा है। कहा जाता है कि सोना कभी धोखा नहीं देता। यह वित्तीय सुरक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्य भी जोड़ता है। सदियों से सोना चाहे आभूषण के रूप में हो, सिक्के के रूप में हो या डिजिटल संपत्ति के रूप में-निवेश रणनीतियों का एक प्रमुख घटक रहा है। जब भी अर्थव्यवस्था खराब होती है, निवेशक सोने की ओर दौड़ पड़ते हैं जैसे कि यह आखिरी सहारा हो। साथ ही, उच्च मुद्रास्फीति, बाजार में गिरावट और मुद्राओं के मूल्यह्रास के दौरान, सोने का मूल्य लचीला होता है या यहां तक कि अधिक हो जाता है। यही कारण है कि सोना उन लोगों के लिए एक पसंदीदा संपत्ति है जो आर्थिक पतन के खिलाफ अपनी संपत्ति को सुरक्षित रखना चाहते हैं। जब ट्रंप टैरिफ से दुनिया भर की अर्थव्यवस्था हिचकोले खाने लगी तो न केवल निवेशकों बल्कि दुनियाभर के बैंकों ने सोने में निवेश को उचित समझा और उत्पादन से ज्यादा सोने की खपत बढ़ गई। इसके चलते सोने के दाम आसमान पर पहुंच गए। सोने के साथ-साथ चांदी ने भी हवा से बातें करनी शुरू कर दी। हालांकि सोने को दीर्घ अवधि में सुरक्षित निवेश के मालिक रूप में जाना जाता है, लेकिन इसकी अल्पकालिक कीमतें बहुत अस्थिर हो रही हैं। सोने की कीमतें वैश्विक आर्थिक स्थितियों, केंद्रीय बैंक की नीतियों में उतार-चढ़ाव और भू-राजनीतिक घटनाओं से बहुत प्रभावित होती हैं। उन निवेशकों के लिए जो निवेश करना चाहते हैं तुरंत रिटर्न के मामले में, जब सोने की कीमत में उतार-चढ़ाव हो रहा है वो बहुत अप्रत्याशित है। दिवाली के बाद सोना-चांदी के दाम में भारी गिरावट आई है। सोना अपने ऑल टाइम हाई से 5,677 रुपये और चांदी भी रिकॉर्ड हाई से 25,599 रुपये सस्ती हो गई है। 22 अक्टूबर को 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 3,726 रुपये घटकर 1,23,907 रुपए के स्तर पर आ गया। इससे पहले 20 अक्टूबर को यह 1,27,633 रुपये पर था। वहीं 17 अक्टूबर को सोने ने 1,29,584 रुपये का ऑल टाइम हाई बनाया था। चांदी के दाम भी 10,549 रुपये घटकर 1,52,501 रुपये प्रति किलो पर आ गए हैं। इससे पहले चांदी 1,63,050 रुपये प्रति किलो थी। वहीं 14 अक्टूबर को चांदी 1,78,100 रुपये के ऑल टाइम हाई पर पहुंची थी। ऐसा माना जा रहा है कि दिवाली जैसे फेस्टिवल के बाद इंडिया में सोने-चांदी की खरीदारी का सिलसिला थम गया। इससे सोना-चांदी की डिमांड में कमी आई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी माहौल में कुछ नरमी दिख रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीन के शी जिनपिंग के बीच अगले हफ्ते मीटिंग होने वाली है। इससे ट्रेड वॉर की चिंता कम हुई है। माना जा रहा है कि दोनों ही मुलाकात के बाद टैरिफ वॉर में कमी आएगी। वहीं कुछ निवेशक मान रहे हैं कि सोने-चांदी की कीमतें ओवरबॉट जोन में पहुंच चुकी थीं। इसलिए, ट्रेंड फॉलोअर्स और डीलर्स ने बिकवाली शुरू कर दी है। इसके चलते सोने और चांदी के दाम हिचकोले ले रहे हैं। अब जो माहौल बना है, उससे उन निवेशकों में मायूसी है, जो सोने को तुरंत लाभ का निवेश मानकर चल रहे थे। हालांकि अभी भी सोना निवेश के विपरीत, सोना एक भौतिक, मूर्त संपत्ति जरूर बना हुआ है। कई निवेशक ऐसी संपत्ति के मालिक बनना पसंद कर रहे हैं। हां, लंबे निवेश के लिए ये फायदे का सौदा जरूर कहा जा रहा है। सरकारी नीतियों पर निर्भर वित्तीय साधनों के विपरीत, सोना निर्वात में रहता है और इसे बिना खराब हुए सालों तक संग्रहित किया जा सकता है, जो लाभ भी देता है।

अर्थव्यवस्था
सतीश सिंह

ऋण वितरण से विकास में आएगी तेजी

बैंकों की ऋण वृद्धि दर पिछले साल की तुलना में 11.4 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई, जबकि जमा वृद्धि दर 9.9 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई। इस दौरान 3.63 लाख करोड़ रुपये से अधिक राशि के ऋण वितरित किए गए, जबकि इससे पिछले पखवाड़े में ऋण के रूप में वितरित की गई राशि 1.02 लाख करोड़ रुपये थी। वहीं, इस अवधि के दौरान बैंकों में जमा वृद्धि राशि 5.51 लाख करोड़ रुपये थी। निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि त्योहारी सीजन, करों को युक्तिसंगत बनाने, राजकोषीय और मौद्रिक मोर्चों पर लिए गए नीतिगत निर्णयों से चालू वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में बैंकों के ऋण वितरण और आर्थिक गतिविधियों दोनों में तेजी आने के आसार हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अनुसार 20 सितंबर से 3 अक्टूबर के दौरान बैंकों की ऋण वृद्धि दर पिछले साल की तुलना में 11.4 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई, जबकि जमा वृद्धि दर 9.9 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई। इस दौरान 3.63 लाख करोड़ रुपये से अधिक राशि के ऋण वितरित किए गए, जबकि इससे पिछले पखवाड़े में ऋण के रूप में वितरित की गई राशि 1.02 लाख करोड़ रुपये थी। वहीं, इस अवधि के दौरान बैंकों में जमा वृद्धि राशि 5.51 लाख करोड़ रुपये थी।

गौरतलब है कि चालू वित्त वर्ष की जून तिमाही में ऋण वृद्धि दर 9.5 प्रतिशत रही थी, जो दूसरी तिमाही तक बढ़कर लगभग 11.4 0 प्रतिशत के स्तर तक पहुंच चुकी है। घरेलू क्रेडिट रेटिंग एजेंसी क्रिसिल के अनुसार भी बैंकों की ऋण वृद्धि दर में वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी छमाही के अंत तक 12 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच जाएगी। माना जा रहा है कि त्योहारी सीजन, सरकारी और नियामकीय उपायों और कॉरपोरेट कर्जदारों के बॉन्ड बाजार जैसी वैकल्पिक व्यवस्था से बैंक उधारी को पंख लगेंगे। हालांकि, निजी पूंजीगत व्यय की वृद्धि में थोड़ा वक्त लगेगा, क्योंकि निजी कंपनियों का विस्तार वैश्विक अनिश्चितताओं की वजह से अपेक्षित गति से नहीं हो पा रहा है। आम लोगों का बैंक जमा में योगदान भी विगत 5 सालों में 64 प्रतिशत से घटकर 60 प्रतिशत रह गया है, जिससे बैंकों के कासा डिपॉजिट में कमी आई है। ऐसी डिपॉजिट में ग्राहकों को कम ब्याज दिया जाता है, जिसके कारण यह बैंक के लिए मुफीद होती है। बहरहाल, इसके बाद भी बैंकों के पास उधारी में तेजी लाने के लिए पर्याप्त पूंजी उपलब्ध है। पिछले 3 सालों में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में कुल ऋण में वृद्धि दर घटकर 30 मई, 2025 को समाप्त हुए पखवाड़े में 8.97 प्रतिशत रह गई, जिसका प्रमुख कारण पूँजी की कमी और हाल ही में माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में बैंकों के गैर निष्पादित संपत्ति (एनपीए) राशि में इजाफा होने के कारण विशेष सतर्कता बरतना है।

इस क्षेत्र में सकल एनपीए चालू वित्त वर्ष के अंत तक बढ़कर 16 प्रतिशत होने का अनुमान है, जो पिछले वित्त वर्ष के 8.8 प्रतिशत से लगभग दोगुना है। इसलिए, बैंक परिसंपत्ति की गुणवत्ता को प्राथमिकता दे रहे हैं। साथ ही, वे अंडरराइटिंग मानकों को लगातार सख्त बना रहे हैं, ताकि एनपीए में वृद्धि न हो। कुल उधारी में वृद्धि की धीमी गति के कारण बकाया ऋण भुगतान अनुपात (एलडीआर) घटकर 78.9 प्रतिशत रह गया। इन्क्रीमेंटल एलडीआर भी 1 साल पहले के 98.9 प्रतिशत से घटकर 72.7 प्रतिशत रह गया। बता दें कि यह किसी बैंक के कुल ऋणों और उसकी कुल जमा राशि के बीच का अनुपात होता है, जो किसी बैंक की तरलता और वित्तीय सेहत को मापने के लिए एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

पिछले साल की समान अवधि में जमा वृद्धि की तुलना में ऋण वृद्धि काफी अधिक रही और इसमें 700 आधार अंकों का अंतर रहा, जिसके कारण बैंकिंग प्रणाली में एलडीआर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई. बैंकों में कुल जमा वृद्धि पिछले साल के मुकाबले 9.9 प्रतिशत की दर से बढ़ा, जो कुल ऋण वृद्धि दर से 100 आधार अंक अधिक था। इससे पहले मार्च 2022 में कुल ऋण

वृद्धि 9 प्रतिशत से नीचे रही थी। केंद्रीय बैंक के अनुसार बैंकिंग प्रणाली में कुल जमा राशि 231.7 लाख करोड़ रुपये थी, जबकि कुल ऋण 182.8 लाख करोड़ रुपये था। पिछले साल जुलाई महीने से ऋण वृद्धि में नरमी आई, जिसका प्रमुख कारण उधारी दर का अधिक होना था।स्थिति पर काबू पाने के लिए वर्ष 2025 में फरवरी महीने से अब तक रेपो दर में कुल 100 आधार अंकों की कटौती की गई है। फिर भी, फरवरी तक ऊंचे ब्याज दर के कारण कई कोर्पोरेट्सने विदेशों के ऋण पूंजी बाजार की तरफ रुख किया।

शीर्ष रेटिंग वाली कंपनियां तो अभी भी सस्ती दर पर उधारी पाने के लिए बैंकों के मुकाबले डेट पूंजी बाजार जैसे विकल्प को प्राथमिकता दे रहे हैं। विदेशों के ऋण पूंजी बाजार, वैसे वित्तीय बाजार हैं, जहाँ सरकार और कंपनियाँ विभिन्न देशों में निवेशकों को बॉन्ड और ऋण जैसे वित्तीय साधन बेचकर धन जुटाती हैं। इन बाजारों के माध्यम से, कंपनियां विस्तार के लिए पूंजी जुटा सकती हैं, जबकि निवेशक ब्याज के रूप में आय अर्जित कर सकते हैं। इस साल दीवाली में कारोबार पिछले साल के मुकाबले 25 प्रतिशत के उछाल के साथ 5.40 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया, जबकि सेवाओं में 65,000 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। यह आंकड़ा दर्शाता है कि इस साल भी हमनें चाइना मेड उत्पादों की जगह मेड इन इंडिया उत्पादों को तरजीह दी है। उल्लेखनीय है कि विगत वर्ष दीवाली में कारोबारियों का कारोबार 4.25 लाख करोड़ रुपये का हुआ था।फिलहाल, मामले में बैंक ऋण के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दीवाली में हुई बिक्री में बैंक उधारी का बड़ा योगदान रहा है, जिसका पता आगामी पखवाड़े में रिजर्व बैंक द्वारा जारी आंकड़ों से चलेगा।

केंद्र सरकार की सकारात्मक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर नीतियों से कर प्रणाली सरल, पारदर्शी और व्यापार-अनुकूल हुई है. जीएसटी और प्रत्यक्ष करों में सुधार से उपभोक्ता खर्च, निवेश, और आर्थिक गतिविधियों और विकास को बढ़ावा मिल रहा है। कर दरों को तर्कसंगत बनाने, अनुपालन को सरल करने और एक स्थिर कर नीति को लागू करने से भारत वैश्विक व्यापार और निवेश के लिए एक मजबूत केंद्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है. बाईस सितंबर से जीएसटी की नई दरें लागू हुई हैं, जिससे निरंतर बचत और व्यय को बढ़ावा मिल रहा है. आयकर के तहत भी नई कर व्यवस्था से मध्यम वर्ग को राहत मिली है. रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति से महंगाई काबू में आई है और रेपो दर में इस साल 100 आधार अंकों की कटौती से बैंकों ने खुदरा और कॉरपोरेट दोनों उधारकर्ताओं के लिए ऋण को सस्ता किया है, जिससे आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने में मदद मिल रही है।

केंद्रीय बैंक ने अर्थव्यवस्था में ऋण प्रवाह को बढ़ावा देने और बैंकिंग लागत को कम करने के के लिए हाल में कई सुधारों को भी अमलीजामा पहनाया है, जिनमें बैंकों को गैर-वित्तीय क्षेत्र की भारतीय कंपनियों के अधिग्रहण के लिए रकम मुहैया कराना, प्रतिभूतियों के एवज में ऋण एवं आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के वित्तपोषण की अधिकतम सीमा बढ़ाना और गृह ऋण और अन्य ऋणों पर जोखिम भार में बदलाव शामिल हैं। निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि त्योहारी सीजन, करों को युक्तिसंगत बनाने, राजकोषीय और मौद्रिक मोर्चों पर लिए गए नीतिगत निर्णयों से चालू वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में बैंकों के ऋण वितरण और आर्थिक गतिविधियों दोनों में तेजी आने के आसार हैं।

(लेखक एसबीआई में एजीएम हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

मंथन
प्रो. (डॉ.) भारत

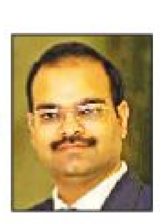

सभ्य समाज की अमृतधारा संवाद, संवेदना व संस्कार

आज के इस बदलते युग में, जहां सूचना और तकनीक ने दुनिया को एक क्लिक की दूरी पर ला दिया है, वहीं मनुष्य और मनुष्य के बीच का आत्मीय जुड़ाव कहीं खोता जा रहा है। संचार के साधन बढ़े हैं, पर संवाद की आत्मा क्षीण हो रही है। यह विडंबना हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती है। दरअसल, संवाद, संवेदना और संस्कार- ये तीन तत्व किसी भी सभ्य समाज की अमृतधारा हैं। इन्हीं के संतुलित संगम से एक सशक्त, मानवीय और विकसित भारत की आधारशिला रखी जा सकती है। लोकतंत्र का प्राणतत्व संवाद को लोकतंत्र की जीवनरेखा कहा जा सकता है। संवाद का अर्थ केवल बोलना नहीं, बल्कि सुनना, समझना और स्वीकारना भी है। यह विचारों के संघर्ष से नहीं, बल्कि उनके समन्वय से जन्म लेता है। जब व्यक्ति या समाज संवादहीन हो जाता है, तब संदेह, असहिष्णुता और विभाजन की दीवारें ऊँची हो जाती हैं। आज सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों ने अभिव्यक्ति के अनेक अवसर दिए हैं, परंतु सार्थक संवाद की संस्कृति पीछे छूट गई है। एक क्लिक में मत व्यक्त हो जाता है, पर मन का संबंध नहीं बन पाता। लोकतंत्र तभी फलता-फूलता है जब नागरिक एक-दूसरे की बात सुनने, समझने और उसमें सामंजस्य खोजने की क्षमता रखते हों। परिवार से लेकर संसद तक, हर स्तर पर संवाद का जीवंत रहना ही सामंजस्यपूर्ण समाज की पहचान है।संवाद हमें विचारों की विविधता को स्वीकारने की शक्ति देता है। असहमति को विरोध नहीं, बल्कि वैचारिक विस्तार के रूप में देखने की दृष्टि संवाद से ही आती है। मानवीयता की धारा संवेदना सभ्य समाज का हृदय है। यह वह आंतरिक ऊर्जा है जो हमें दूसरों के सुख-दुःख से जोड़ती है, हमें आत्मकेंद्रित होने से रोकती है और समाज के व्यापक हित की ओर प्रेरित करती है। संवेदनशील व्यक्ति न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग होता है, बल्कि दूसरों के अधिकारों की भी रक्षा करता है। आज जब उपभोक्तावाद और भौतिकता ने जीवन को यांत्रिक बना दिया है, तब संवेदना ही हमें मानव बनाए रखने का सबसे बड़ा साधन है। चाहे पर्यावरण संरक्षण की बात हो, सामाजिक न्याय की, लैंगिक समानता की या निर्धन वर्ग के उत्थान की—इन सबके केंद्र में संवेदना ही है। संवेदना के बिना हुआ विकास अधूरा है, क्योंकि उसमें मानवीय मूल्यों का स्पंदन नहीं रहता। संस्कृति की आत्मा संस्कार किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र हैं। वे केवल परंपराओं का पालन नहीं, बल्कि मूल्य आधारित जीवन का मार्गदर्शन हैं। संस्कार व्यक्ति को अनुशासन, सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता और करुणा की ओर प्रेरित करते हैं।

संस्कारित नागरिक ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। विद्यालय, परिवार और समाज मिलकर व्यक्ति में ऐसे संस्कारों का बीजारोपण करते हैं जो उसे कर्तव्यपरायण नागरिक बनाते हैं। आज जब नैतिक मूल्य चुनौतियों के दौर से गुजर रहे हैं, तब संस्कार ही वह दीपक हैं जो अंधकार के बीच भी मार्ग दिखाते हैं। भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण रहा है। यही कारण है कि हमारे गुरुकुलों से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक, शिक्षा को 'विद्या ददाति विनयम्' अर्थात विद्या विनम्रता देती है... के रूप में देखा गया। संस्कार विनम्रता और संयम के माध्यम से व्यक्तित्व को संतुलन प्रदान करते हैं। अमृतधारा का समन्वयः समरस समाज की आधारशिलासंवाद, संवेदना और संस्कार- तीनों स्वतंत्र नहीं, परस्पर पूरक हैं। संवाद हमें जोड़ता है, संवेदना हमें जगाती है और संस्कार हमें दिशा देते हैं। इन तीनों का प्रवाह समाज में जितना सशक्त होगा, उतनी ही उसकी समरसता गहरी होगी। आज के भारत को केवल आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक रूप से भी विकसित बनने की आवश्यकता है। तकनीकी प्रगति तभी सार्थक है जब उसमें मानवीयता की गंध बनी रहे। अगर संवाद की ऊष्मा, संवेदना की कोमलता और संस्कारों की दृढ़ता हमारे सामाजिक जीवन में पुनः स्थापित हो जाए, तो विभाजन की रेखाएं स्वतः मिट जाएंगी और समरसता का प्रवाह तीव्र हो उठेगा। भारतीय जीवन-दर्शन की पुनर्स्थापनासंवाद, संवेदना और संस्कार केवल शब्द नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन के तीन स्तंभ हैं। इनकी पुनर्स्थापना ही हमारे राष्ट्र के आत्मबोध की पुनर्जागृति है। आज जब विश्व दिशाहीनता से जूझ रहा है, तब भारत के पास वह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पूंजी है जो विश्व को नया मार्ग दिखा सकती है। यदि हर नागरिक इन तीनों मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात कर ले... संवाद से सहमति का पुल बनाए, संवेदना से करुणा का विस्तार करे और संस्कार से आचरण को उज्ज्वल बनाए तो भारत पुनः 'विश्वगुरु' के रूप में उभरेगा।

(लेखक पंजाब विवि चंडीगढ़ में वरिष्ठ प्रवक्ता हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

जीवन का विकास ऊर्ध्वगामी स्वरूप में होता है

संकलित
दर्शन

जिस प्रकार संपूर्ण जीवन का विकास ऊर्ध्वगामी स्वरूप में होता है, उसी प्रकार मनुष्यों का विकास भी प्रारंभिक मानवीय प्रतिभाओं से आरंभ होकर विकास की उच्चतर अवस्थाओं तक होता है। उनकी क्षमता एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में निरंतर और अधिकाधिक विकसित होती रहती है। संपूर्ण मानव जाति विकास एवं प्रतिविकास के चक्रों से गुजरती रहती है, जिन्हें शास्त्रों में युगों के नाम से संबोधित किया जाता है। उनका आरोहण और अवरोहण होता रहता है। इस समय हम एक ऐसे युग में हैं, जो आरोहण की अवस्था में है। दूसरे शब्दों में, वर्तमान काल में जन्म लेने वाले आत्माएं अपने दादा-दादी और परदादा-परदादी की अपेक्षा विकास की उच्चतर अवस्था में हैं।- आज के बच्चों को देखें, उनके अंदर स्वाभाविक रूप से यह भावना है-, 'नहीं, केवल किसी की त्वचा के रंग के कारण मेरे हृदय में उनके प्रति घृणा उत्पन्न नहीं होगी,' और इन बच्चों के हृदयों में एक अन्य प्रकार की मानवीय अज्ञानता के प्रति एक स्वाभाविक अस्वीकृति है, जिसमें संपूर्ण विश्व के सभी देशों में पुरानी पीढ़ियां दृढ़तापूर्वक विश्वास करती थीं। यह लगभग ऐसा है कि जैसे वे पहले से ही थोड़ी-बहुत तैयारी करके आते हैं। मेरे विचार से, जब आपकी आयु मेरी वर्तमान आयु के बराबर होगी, तो संभवतः आप और भी बहुत अधिक विकास को देखेंगे। तब आप पीछे मुड़कर देखेंगे और कहेंगे, 'ओह, उन पिछली पीढ़ियों के लोग ऐसे कैसे हो सकते थे?'

क्या भगवान का अस्तित्व है?

संकलित
प्रेरणा

एक बार एक व्यक्ति नाई की दुकान पर अपने बाल कटवाने गया। तभी नाई ने कहा- मैं भगवान के अस्तित्व को नहीं मानता और इसीलिए तुम मुझे नास्तिक भी कह सकते हो। तुम ऐसा क्यों कह रहे हो व्यक्ति ने पूछा। नाई ने कहा- बाहर जब तुम सड़क पर जाओगे तो तुम समझ जाओगे कि भगवान का अस्तित्व नहीं है। अगर भगवान होते, तो क्या इतने सारे लोग भूखे मरते? क्या इतने सारे लोग बीमार होते? व्यक्ति ने थोड़ा सोचा लेकिन वह वाद-विवाद नहीं करना चाहता था। नाई ने अपना काम खत्म किया और वह व्यक्ति नाई को पैसे देकर दुकान से बाहर आ गया। वह जैसे ही नाई की दुकान से निकला, उसने सड़क पर एक लम्बे-घने बालों वाले एक व्यक्ति को देखा जिसकी दाढ़ी भी बढ़ी हुई थी और ऐसा लगता था शायद उसने कई महीनों तक अपने बाल नहीं कटवाए थे। वह व्यक्ति वापस मुड़कर नाई की दुकान में दुबारा घुसा और उसने नाई से कहाः क्या तुम्हें पता है? नाइयों का अस्तित्व नहीं होता। नाई ने कहा- तुम कैसी बेकार बातें कर रहे हो? क्या तुम्हे मैं दिखाई नहीं दे रहा? मैं यहां हूं और मैं एक नाई हूँ। और मैंने अभी अभी तुम्हारे बाल काटे है। व्यक्ति ने कहा- नहीं! नाई नहीं होते हैं। अगर होते तो क्या बाहर उस व्यक्ति के जैसे कोई भी लम्बे बाल व बढ़ी हुई दाढ़ी वाला होता? नाई ने कहा- अगर वह व्यक्ति किसी नाई के पास बाल कटवाने जाएगा ही नहीं तो नाई कैसे उसके बाल काटेगा?

अंतर्मन

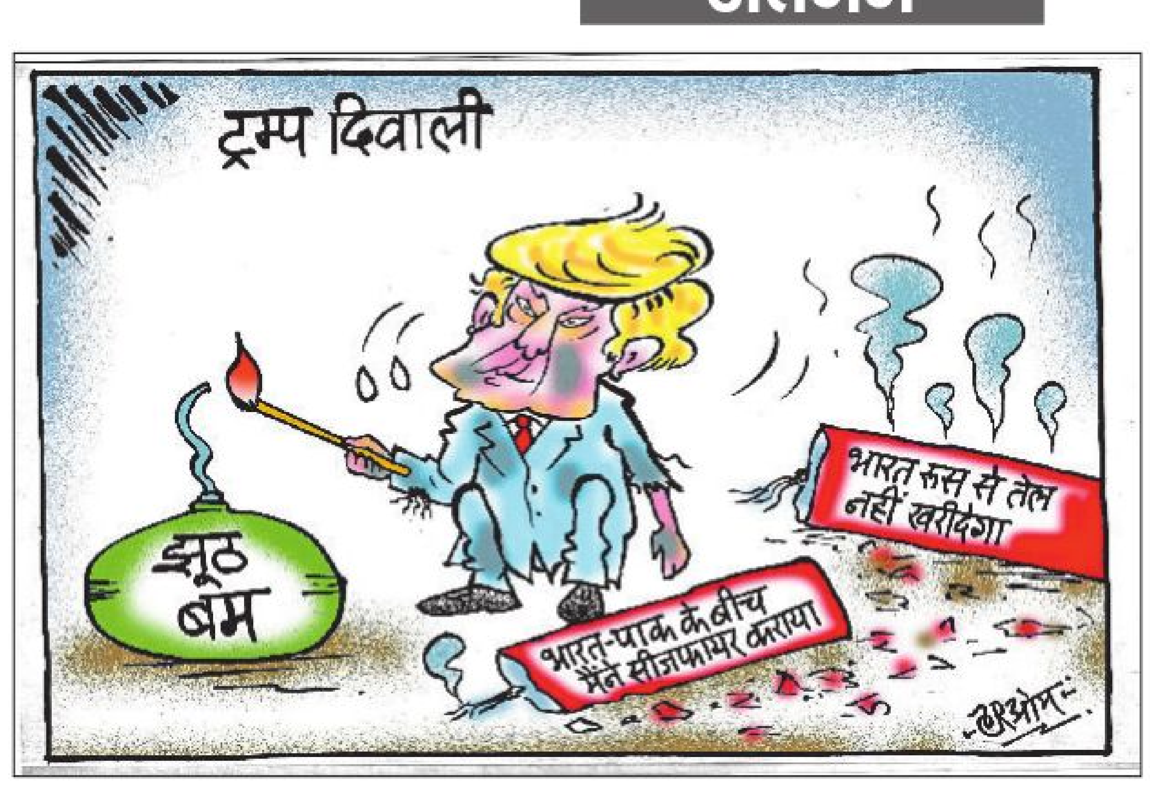

आज की पाती

शब्दों का अधूरा ज्ञान सोच की अधूरी उड़ान

आज के दौर में हमारी बोलचाल की भाषा एक अजीब से मिश्रण में बदल गई है आधी हिंदी, आधी अंग्रेजी। असल में यह हमारी भाषाई जड़ों को कमजोर कर रही है। बच्चे और युवा अब किसी भी भाषा में पूरी तरह निपुण नहीं रह गए हैं। वे न तो शुद्ध हिंदी बोल पाते हैं, न ही सटीक अंग्रेजी में अपने विचार रख पाते हैं। आज की पीढ़ी तकनीक में माहिर है, पर अपनी मातृभाषा के अंकों में उलझ जाती है। जब बच्चों से पूछा जाए कि 'चोवन' या 'इक्यावन' कौन सा अंक है, तो वे हिचकिचा जाते हैं। यह स्थिति केवल शिक्षा की नहीं, दिशा की कमी को भी दर्शाती है। हमें यह समझना होगा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि पहचान का दर्पण है। हमें इस आधी अधूरी भाषा के चलन को तोड़ना होगा। – *पीयूष जोशी, रायपुर*

करंट अफेयर

भारत की सौर परियोजना से 10 देशों की इमारतें रोशन

संयुक्त राष्ट्र में भारतीय दूतावास ने कहा है कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से प्रशांत क्षेत्र के 10 द्वीपीय देशों में 12 सार्वजनिक इमारतों को सौर ऊर्जा से रोशन किया। यह पहल 15 करोड़ अमेरिकी डॉलर के 'भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास साझेदारी कोष' के तहत कार्यान्वित की गई। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने मंगलवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि कोष 'हरित ऊर्जा समाधान'' पेश कर रहा है। प्रशांत महासागर के 10 देशों में 12 सार्वजनिक भवनों में सौर ऊर्जा प्रदान की गई है। परियोजना के तहत 74 स्थानीय तकनीशियनों को प्रशिक्षण दिया गया है।' संयुक्त राष्ट्र के दक्षिण-दक्षिण सहयोग कार्यालय (यूएनओएसएससी) ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि इस परियोजना के तहत 74 स्थानीय तकनीशियनों को प्रशिक्षित किया गया है, 16,500 से अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं और 25 वर्षों में लगभग 9,600 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन से बचने में मदद मिलेगी। यूएनओएसएससी ने अपनी वेबसाइट पर इस बात को रेखांकित किया कि कोष ने विकासशील दुनिया में, विशेष रूप से उन देशों में जहां नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों तक सीमित पहुंच है, स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ऑफ बीट

क्या सैन्य तरीके अपनाने से दो मिनट में नींद आ सकती है

अक्सर एक सलाह होती है सोने के लिए सेना में अपनाए जाने वाले तरीके को आजमाने की। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या इस सलाह से आम लोगों को फायदा होता है। सोशल मीडिया पर कई तरह की बातें कही जाती हैं, जिनमें यह दावा भी शामिल है कि इस तरीके को अपनाने से आपको केवल दो मिनट में नींद आ सकती है। यह बात सुनने में तो बहुत अच्छी लगती है। इस तरीके का उद्देश्य वातावरण की परवाह किए बिना सैन्यकर्मियों के शरीर को नींद के लिए तैयार करने में मदद करना है। इस पद्धति का पहला उल्लेख 'रिलैक्स एंड विन' नामक खेल पुस्तक में मिलता है। इससे जुड़ी जानकारियां स्रोत के आधार पर थोड़ी भिन्न हो सकती हैं। लेकिन तीन प्रमुख घटक समान रहते हैं– 'प्रोग्रेसिव मसल रिलेक्सेशन' (पीएमआर) : पीएमआर के जरिये शरीर की विभिन्न मांसपेशियों को सिकोड़कर शिथिल किया जाता है। इसकी शुरुआत चेहरे की मांसपेशियों से की जाती है और फिर कंधों, बाजुओं, छाती व पैरों की मांसपेशियों को आराम दिया जाता है। 'कंट्रोल्ड ब्रीदिंग' : इसमें सांस को धीमा और नियंत्रित किया जाता है और लंबी सांस छोड़ने पर जोर दिया जाता है।

ट्रेंड

'जोरे साहिब' के दर्शन

गुरु चरण यात्रा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी और माता साहिब कौर जी के महान आदर्शों से हमारा जुड़ाव और गहरा करे, यही कामना है। मैं उन क्षेत्रों के लोगों से आग्रह करता हूँ जहाँ यह यात्रा जाएगी, वे पवित्र 'जोरे साहिब' के दर्शन करने अवश्य आएँ।
- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

हितधारकों के साथ चर्चा

विकासात्मक मुद्दों पर कार्बी आंगलोंग के हितधारकों के साथ चर्चा की। यह क्षेत्र तेजी से विकास और युवाओं के लिए नए अवसरों के द्वार खोलने वाला है और हम यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं कि यह क्षेत्र शांतिपूर्वक समृद्ध हो।
- हिमंत बिस्वा सरमा, सीएम, असम

छठ स्थलों पर तैयारियां

राजधानी के विभिन्न इलाकों में छठ स्थलों पर तैयारियां तीव्र गति से चल रही हैं। तमाम व्यवस्थाएं उच्चतम मानकों पर सुनिश्चित की जा रही हैं। दिल्ली में इस बार छठ महापर्व केवल आस्था का नहीं, बल्कि अपनत्व, स्वच्छता और समरसता का महाउत्सव होगा।
- रेखा गुप्ता, सीएम, नई दिल्ली

इंडिया गठबंधन एकजुट

तेजस्वी यादव के साथ बेहद सकारात्मक मुलाकात हुई। बिहार में इंडिया गठबंधन पूरी तरह एकजुट है एवं मजबूती से चुनाव लड़ रहा है। कल महागठबंधन की प्रेस कॉन्फ्रेंस में पूरी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।
-अशोक गहलौत, पूर्व सीएम, राजस्थान

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

देश में ऑनलाइन बिक्री की त्योहारों पर निर्भरता घटी : रिपोर्ट

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

देश में ऑनलाइन खरीदारी की आदतें अब धीरे-धीरे त्योहारी मौसम पर कम निर्भर होती जा रही हैं लेकिन इस दौरान मोबाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स श्रेणियों में बिक्री अब भी सबसे अधिक हुई है। एक रिपोर्ट में यह निष्कर्ष पेश किया गया है। परामर्शदाता कंपनी रेडसीर की तरफ से जारी रिपोर्ट कहती है कि भारत का ऑनलाइन खुदरा क्षेत्र अब पूरे वर्ष में अधिक संतुलित मांग की राह पर बढ़ रहा है। इसके बावजूद मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी श्रेणियां अब भी वार्षिक त्योहारी उछाल पर निर्भर हैं।

■ ऑनलाइन खुदरा क्षेत्र अधिक संतुलित मांग की राह पर बढ़ रहा

मोबाइल-इलेक्ट्रॉनिक्स का वर्चस्व अब भी कायम

मोबाइल व इलेक्ट्रॉनिक्स ही बिक्री की रफ्तार तय करते हैं

रेडसीर ने कहा, "भारत का ऑनलाइन खुदरा परिदृश्य धीरे-धीरे संतुलित मांग वक्र की ओर बढ़ रहा है। लेकिन त्योहारों के दौरान अब भी मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स ही बिक्री की रफ्तार तय करते हैं।"

मोबाइल खंड में उतार चढ़ाव सबसे अधिक

रिपोर्ट के मुताबिक, मोबाइल खंड में त्योहारी मौसम से जुड़ा उतार-चढ़ाव सबसे अधिक है, जिसका 'मौसमी सूचकांक अंतराल' 1.7 रहा। वहीं इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद 1.3 के साथ दूसरे स्थान पर रहे। इन दोनों श्रेणियों की मांग सितंबर-अक्तूबर के महीनों में सबसे अधिक रहती है। मोबाइल फोन का मासिक सूचकांक 2.3 के करीब है जबकि इलेक्ट्रॉनिक्स का 2.0 के आसपास पहुंचता है।

पहली तिमाही में मांग सुस्त रहती है

रिपोर्ट कहती है कि विभिन्न ब्रांड को त्योहारी समय पर अपनी निर्भरता घटाने के लिए कैलेंडर वर्ष की पहली तिमाही जैसे सुस्त बिक्री समय में विशेष उत्पादों की पेशकश या प्रचार अभियान शुरू करने पर ध्यान देना चाहिए। राशन के सामान, सौंदर्य उत्पाद और व्यक्तिगत देखभाल वाली श्रेणियों को ऑनलाइन बिक्री के लिहाज से सबसे स्थिर बताया गया है क्योंकि इनमें सालभर मांग लगभग समान रहती है।

घरेलू साज सज्जा व फर्नीचर की त्योहारी मांग रहती है

यह कम मूल्य वाले, बार-बार खरीदे जाने वाले उत्पादों की विशेषता है। वहीं, घरेलू साज-सज्जा एवं फर्नीचर के साथ फैशन श्रेणियां मध्यम मौसमी प्रवृत्ति दिखाती हैं, जिनमें त्योहारी महीनों में उछाल तो आता है, पर इनमें उतार-चढ़ाव उतना अधिक नहीं होता है।

ऑनलाइन कारोबार त्योहारी मांग से बाहर निकल रहा

रेडसीर ने कहा कि भारत में ऑनलाइन खुदरा कारोबार धीरे-धीरे त्योहारों के समय की चरम स्थिति से बाहर निकल रहा है। भविष्य में वही कंपनियां बाजार की अग्रणी होंगी जो न केवल त्योहारी उच्च मांग को कुशलता से संभाल सकेंगी, बल्कि सुस्त महीनों में भी मांग पैदा कर सकेंगी।

खबर संक्षेप

ओरिएंट इलेक्ट्रिक का लाभ बढ़कर 12.06 करोड़ रुपए

नई दिल्ली। सीके बिड़ला समूह की कंपनी ओरिएंट इलेक्ट्रिक लि. (ओईएल) का वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में शुद्ध लाभ 15.51 प्रतिशत बढ़कर 12.06 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने कंपनी को पिछले वित्त वर्ष की जुलाई-सितंबर तिमाही में 10.44 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था।

हुंडई 2030 तक 45 हजार करोड़ रुपए करेगी निवेश

मुंबई। दक्षिण कोरिया की वाहन विनिर्माता हुंडई मोटर कंपनी के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) जोस मुनोज ने कहा कि कंपनी की भारतीय इकाई वित्त वर्ष 2029-30 तक 45,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। कंपनी का लक्ष्य भारत को वैश्विक स्तर पर अपना दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र बनाना है।

सात्विक ग्रीन एनर्जी को मिले 689.47 करोड़ रुपए के ऑर्डर

नई दिल्ली। सौर ऊर्जा समाधान उपलब्ध कराने वाली कंपनी सात्विक ग्रीन एनर्जी लि. को सौर पीवी मॉड्यूल की आपूर्ति के लिए 689.47 करोड़ रुपये के ऑर्डर मिले हैं। कंपनी ने कहा कि ये ऑर्डर कंपनी और उसकी अनुषंगी सात्विक सोलर इंडस्ट्रीज प्राइवेट लि. को मिले हैं।

एफपीआई ने अक्टूबर में अब तक डाले 6,480 करोड़ रुपए

नई दिल्ली। पिछले तीन माह तक लगातार निकासी के बाद एफपीआई अक्टूबर में अबतक भारतीय शेयर बाजार में शुद्ध रूप से 6,480 करोड़ रुपये डाले हैं। इसकी मुख्य वजह मजबूत वृहद आर्थिक कारक हैं। इससे पहले एफपीआई ने सितंबर में 23,885 करोड़ रुपये, अगस्त में 34,990 करोड़ रुपये और जुलाई में 17,700 करोड़ रुपये निकाले थे।

इलेक्ट्रॉनिक्स व सूचना मंत्रालय ने जारी किया आईटी नियम में संशोधन

डीपफेक, कृत्रिम सामग्री के बारे में सोशल मीडिया मंचों की जवाबदेही बढ़ाने का मसौदा पेश

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

कृत्रिम मेधा (एआई) से बनाए गए डीपफेक और कृत्रिम सामग्री से होने वाले नुकसान से उपयोगकर्ताओं को बचाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने आईटी नियम, 2021 में संशोधन का मसौदा पेश किया है। प्रस्तावित बदलावों का उद्देश्य 'एआई के जरिये कृत्रिम रूप से तैयार सामग्री' (सिंथेटिक कंटेंट) की स्पष्ट पहचान करना और बड़े सोशल मीडिया मंचों की जवाबदेही को बढ़ाना है।

अब गलत जानकारी पेश करना आसान:- मंत्रालय ने कहा कि जनरेटिव एआई टूल का इस्तेमाल बढ़ने से अब गलत जानकारी पेश करना और नकली वीडियो एवं ऑडियो क्लिप तैयार करना आसान हो गया है। ऐसी स्थिति में इन पर नियंत्रण पाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2021 में कुछ बदलावों का मसौदा पेश किया जा रहा है।

डीप फेंक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकता है:- मंत्रालय ने कहा, "हाल ही में डीपफेक वीडियो के बहुप्रचारित होने की घटनाओं ने दिखाया है कि जनरेटिव एआई की मदद से ऐसे व्यक्ति के कथन या कृत्य दिखाए जा सकते हैं जो वास्तव में उनके नहीं थे। ऐसा होने से गलत सूचना फैल सकती है, प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है, चुनावों को प्रभावित किया जा सकता है या धोखाधड़ी भी हो सकती है।"

पुष्टि के लिए तकनीकी उपाय अपनाने होंगे :- प्रस्तावित नियमों के तहत, 50 लाख या उससे अधिक उपयोगकर्ताओं वाले बड़े सोशल मीडिया मंचों को यह सुनिश्चित करना होगा कि अपलोड की गई सामग्री कृत्रिम तो नहीं है। इसकी पुष्टि के लिए तकनीकी उपाय अपनाने होंगे और इस सामग्री को प्रमुखता से चिह्नित करना अनिवार्य होगा।

सामग्री को परिभाषित करना होगा:- संशोधित नियमों में 'कृत्रिम रूप से निर्मित जानकारी' को ऐसी सामग्री के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसे कंप्यूटर के जरिये कृत्रिम या गणना-पद्धति (एल्गोरिद्म) के इस्तेमाल से निर्मित, संशोधित या वास्तविक लगने वाला रूप दिया गया हो।

पहचान चिन्ह डालना होगा

चिह्नांकन मानकों में वीडियो एवं ऑडियो संकेत शामिल होंगे, जो वीडियो सामग्री के कम-से-कम 10 प्रतिशत या ऑडियो कंटेंट की शुरुआती 10 प्रतिशत अवधि तक दिखाई या सुनाई देंगे। इसी तरह कृत्रिम सामग्री बनाने या संशोधित करने वाले मंच को स्थायी विशिष्ट मेटाडाटा या पहचान-चिह्न डालना होगा, जिसे हटाना या बदलना मना होगा।

टिप्पणी छह नवंबर तक भेजी जा सकती हैं

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कहा कि इन संशोधनों का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं में जागरूकता बढ़ाना, पहचान को सुनिश्चित करना और जिम्मेदारी तय करना है। इसके अलावा एआई प्रौद्योगिकी में नवाचार को भी प्रोत्साहित करना इसका मकसद है। इन नियमों के मसौदे पर सुझाव एवं टिप्पणियां छह नवंबर, 2025 तक भेजी जा सकती हैं।

नुकसान कम करने में मदद करेगी

सरकार का यह मसौदा प्रस्ताव वैश्विक स्तर पर ऐसे कृत्रिम एवं छेड़छाड़ कर बनाए गए वीडियो, तस्वीरों एवं ऑडियो को लेकर बढ़ती चिंता के बीच जारी किया गया है। इसके पीछे सोच यह है कि नियामकीय निगरानी से उपयोगकर्ताओं को नुकसान कम करने में मदद मिलेगी।

सीआईएसएफ यूनिट बीडीपी नंगल का आधिकारिक प्रेरण समारोह आयोजित

नंगल। आज एक गरिमापूर्ण कार्यक्रम में सीआईएसएफ यूनिट बीडीपी नंगल का आधिकारिक प्रेरण समारोह (**Induction Ceremony**) आयोजित किया गया, जो भाखड़ा बांध परियोजना (बी.डी.पी.) नंगल में सीआईएसएफ की औपचारिक तैनाती की शुरुआत का प्रतीक है। यह समारोह श्री नवज्योति गोगोई, आई.जी. सीआईएसएफ (उत्तरी क्षेत्र), श्री एम के यादव डी.आई.जी. सीआईएसएफ (उत्तरी जोन-II), और श्री मनोज त्रिपाठी, अध्यक्ष, बी.बी.एम.बी. की सम्मानित उपस्थिति से सुशोभित हुआ। इनके साथ ही सीआईएसएफ यूनिट बीडीपी नंगल के यूनिट कमांडर, श्री प्रतीक रघुवंशी, कमांडेंट भी उपस्थित थे। सीआईएसएफ और भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बी.बी.एम.बी.) के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया, जो इस महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में सहयोग और पारस्परिक प्रतिबद्धता की भावना को दर्शाता है। समारोह के दौरान, गणमान्य व्यक्तियों ने बीडीपी नंगल में सीआईएसएफ की तैनाती के रणनीतिक महत्व पर प्रकाश डाला और राष्ट्र के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा में सीआईएसएफ कर्मियों के व्यावसायिकता, अनुशासन और समर्पण की सराहना की। यह आयोजन धन्यवाद ज्ञापन और समूह संवाद के साथ संपन्न हुआ, जो भाखड़ा बांध परियोजना में बढ़ी हुई सुरक्षा और परिचालन दक्षता के एक नए अध्याय की शुरुआत का प्रतीक है।

भारतीय रेलवे द्वारा त्यौहारों के लिए व्यापक प्रबंध एवं विशेष तैयारियां, रिकॉर्ड 12,000 स्पेशल ट्रेनों का संचालन

नई दिल्ली। महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे, श्री अमिताभ ने गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं जायजा लिया। रेलवे द्वारा दीपावली, छठ पूजा और त्यौहारों को ध्यान में रखते हुए विशेष प्रबंध किए गए है। रेलवे द्वारा देश में रिकॉर्ड 12,000 स्पेशल रेल सेवाओं का विभिन्न गंतव्यों के लिए संचालन किया जा रहा है। इसी क्रम में उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा भी त्यौहारों पर अतिरिक्त यात्री भार को देखते हुए विभिन्न गंतव्य स्थानों के लिए 104 स्पेशल ट्रेनों के 968 फेरों का संचालन किया जा रहा है साथ ही 60 नियमित ट्रेनों में 175 अतिरिक्त डिब्बे जोड़े गए है। इसके साथ ही प्रमुख स्टेशनों पर भीड़ को नियंत्रित करने के विशेष प्रबंध किए गए है। उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अमिताभ ने त्योहारों के अवसर पर यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए दिनांक 22.10.25, बुधवार को गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और यात्री सुविधाओं एवं त्योहारों के अवसर पर की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

श्री अमिताभ ने गांधीनगर जयपुर स्टेशन पर स्थित रेलवे सुरक्षा बल के कंट्रोल रूम से यात्री सुरक्षा की मॉनीटरिंग के बारे में जानकारी प्राप्त की एवं आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। उन्होने स्टेशन परिसर, प्लेटफार्म, सफाई व्यवस्था एवं सेकंड एंट्री का निरीक्षण किया तथा यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही स्टेशन रीडेवलपमेंट कार्य के कारण यात्रियों को किसी तरह की परेशानी न हो इसके लिए भी दिशा निर्देश प्रदान किए। श्री अमिताभ ने बताया कि गांधीनगर जयपुर शहर का मुख्य स्टेशन है और शहर के मध्य में रहने वाले निवासी इस स्टेशन से यात्रा करते हैं।

इस बार दिवाली पर बिजली खपत में आई थोड़ी कमी

नई दिल्ली। देश में दिवाली के दिन बिजली की अधिकतम मांग या बिजली की सबसे ज़्यादा आपूर्ति इस बार पिछले साल की तुलना में थोड़ी कम रही, जिससे त्योहार के दौरान आम रुझान में गिरावट देखने को मिली। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, सोमवार को बिजली की अधिकतम मांग घटकर 180.14 गीगावाट रह गई, जो पिछले साल 31 अक्टूबर, 2024 को दिवाली के दिन अधिकतम मांग 182.87 गीगावाट थी।

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्पले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

जेएलआर को साइबर हमले से 1.9 अरब पाउंड का नुकसान

लंदन। टाटा मोटर्स के स्वामित्व वाली लक्जरी कार कंपनी जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) पर हाल में हुए साइबर हमले को ब्रिटेन का अब तक का सबसे नुकसानदेह साइबर हादसा माना जा रहा है।

इस हमले से ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को करीब 1.9 अरब पाउंड का नुकसान हुआ जबकि 5,000 से अधिक व्यवसाय प्रभावित हुए थे। ब्रिटेन में साइबर घटनाओं का स्वतंत्र मूल्यांकन करने वाले साइबर मॉनिटरिंग सेंटर (सीएमसी) ने जेएलआर साइबर हमले को तीसरे दर्जे की प्रणालीगत घटना के रूप में वर्णित किया है। सीएमसी पांच अंक के पैमाने पर साइबर हमलों को परखती है।

उत्तर रेलवे

अभिरुचि की अभिव्यक्ति (EOI)

शुद्धिपत्र

File No. No. 1C-MG/Electronic Lock/NMG Wagon (Part-1)

यह शुद्धिपत्र, विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित 'अभिरुचि की अभिव्यक्ति संख्या 3260/2025' के संदर्भ में जारी किया जाता है, जिसे पहले एक (01) वर्ष की अवधि के लिए 01 (एक) एनएमजी रेक पर, विभिन्न प्रकार के 12 ई–लॉक (06 ई–लॉक स्थायी रूप से दरवाजे पर फिट होने वाले प्रकार के और 06 ई–लॉक पैडलॉक प्रकार के) की आपूर्ति, स्थापना और रखरखाव की पायलट परियोजना के लिए 'अभिरुचि की अभिव्यक्ति' के लिए आमंत्रित किया गया था, अब तकनिकी कारणों से, शुधिपत्र के माध्यम से इसमे विभिन्न संशोधन किये गए हैं:

• अब यह अभिरुचि की अभिव्यक्ति, एक (01) वर्ष की अवधि के लिए 01 (एक) एनएमजी रेक पर **25 ई–लॉक्स (पैडलॉक प्रकार के)** की आपूर्ति, स्थापना और रखरखाव की पायलट परियोजना के लिए आमंत्रित की जाती है।

शेष अभिरुचि की अभिव्यक्ति उसी प्रकार रहेगी, जो अभिरुचि की अभिव्यक्ति संख्या 3260/2025 में प्रकाशित की गई थी। अभिरुचि की अभिव्यक्ति की विस्तृत जानकारी उत्तर रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट **www.nr.indianrailways.gov.in** पर उपलब्ध है। अभिरुचि की अभिव्यक्ति को जमा करने की अंतिम तिथि 29.10.2025 को 15:00 बजे तक है।

3271/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उदघोषणा

धारा 82 Cr.P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त नाम **परवीन कुमार पुत्रः** नेत्रपाल **पताः** जी–2/23, साई एन्क्लेव मोहन गार्डन, दिल्ली, ने **FIR No. 65/2011, U/s 411/34 IPC थानाः रणहोला, दिल्ली,** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है), और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **परवीन कुमार**, मिल नहीं रहा हैं और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **परवीन कुमार,** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा हैं)।

इसलिए इसके द्वारा उदघोषणा की जाती है कि **FIR No. 65/2011, U/s 411/34 IPC थानाः रणहोला, दिल्ली,** के उक्त अभियुक्त **परवीन कुमार,** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **26.11.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
श्री अंकित करण सिंह
एमएम–08 (पश्चिम), कमरा नंबर 30
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/14260/OD/2025
(Court Matter)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 सीआरपीसी/84 भा.न.स.स.देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **समीर उर्फ रहीस** पुत्र जलालुद्दीन शेख, निवासी- मकान नंबर 54, गली नंबर 03, खजूरी खास, दिल्ली ने **प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 417/21 धारा 380/457/34 भा.द.स, थाना करावल नगर, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है की किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह कह कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **समीर उर्फ रहीस** मिल नहीं रहा और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है की उक्त अभियुक्त **समीर उर्फ रहीस** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)। इस लिए इस के द्वारा उद्घोषणा कि जाती है की उक्त अभियुक्त **समीर उर्फ रहीस, प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 417/21 धारा 380/457/34 भा.द.स, थाना करावल नगर, दिल्ली** न्यायालय के समक्ष या मेरे समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **20.11.2025** को या उससे पहले हाजिर हो।

आदेश से
सुश्री इसरा ज़ैदी
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-04
कक्ष संख्या 64, चतुर्थ तल, उत्तर-पूर्व जिला
कड़कड़डूमा न्यायालय, दिल्ली

DP/14211/NE/2025

उत्तर रेलवे

ई–निविदा सूचना

उप. मु. सं. एवं दू. अभि. नि./सी.डब्लू., नई दिल्ली, भारत के राष्ट्रपति की तरफ से निर्धारित प्रपत्र पर सील्ड सिंगल पैकेट प्रणाली निविदा फार्म एस्टब्लिशड कॉन्ट्रेक्टर्स जिनके पास सीमिलर नेचर का कार्य का अनुभव है एवं जो संतोषजनक न्यूनतम एलिजिब्लिटी क्राइटेरिआ फुल फिल करते हैं, निम्नलिखित कार्य के लिए निविदा आमंत्रित कर रहा है।

1	कार्य का नाम एवं स्थान	"उत्तर रेलवे के फिरोजपुर मण्डल के तलवार–मुकेरियां सेक्शन की पठानकोट सिरे पर संयोजकता करने के लिए त्रिकोणीय व्यवस्था हेतु नई अतिरिक्त लाइन के सम्बन्ध में भंगाला स्टेशन पर इलेक्ट्रोनिक इंटरलॉकिंग के प्रावधान हेतु संबंधित ब्लॉक वर्किंग एवं दूरसंचार कार्य सहित सिग्नल एवं टेलीकॉम (आंतरिक एवं बाह्य) का कार्य।"
2	पूरा होने की अवधि	11 महीना (अनुबन्ध पत्र जारी होने की तिथि से)
3	कार्य की अनुमानित लागत	रु. 6.93 करोड़ (अनुमानित)
4	धरोहर राशि	रु. 4,96,500/– (रूपए चार लाख छियानबे हज़ार पाँच सौ केवल) (केवल ऑनलाइन जमा किया जाना है)
5	निविदा खुलने की तारीख एवं समय	निविदा कर्ता केवल ई–निविदा में भाग ले सकते हैं। निविदा दिनांक 17.11.2025 को 11:30 बजे तक IREPS की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर अपलोड करे। निविदा दिनांक 17.11.2025 को 11:30 बजे के बाद खोला जाएगा।
6	स्थान जहाँ से निविदा फार्म खरीदा जा सकता है	उपरोक्त ई– निविदा दस्तावेज – IREPS की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर दिनांक 24.10.2025 से 11:30 बजे दिनांक 17.11.2025 तक IREPS की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध रहेगा, दिनांक 03.11.2025 से 17.11.2025 को 11:30 बजे तक निविदा में भाग लेने के लिये निविदा डालने से पहले, निविदाकर्ता जो उपरोक्त वेबसाइट पर निविदा में भाग लेने के लिए इच्छुक हैं रजिस्टर होने की सलाह दी जाती है। निविदाकर्ता को आई टी अधिनियम 2000 के तहत क्लास सी.सी.ए. III डिजिटल प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा (अगर पहले से नहीं लिया है) उपरोक्त ई–निविदा की सभी नियम एवं शर्तें निविदा दस्तावेज में दी गई हैं। विस्तृत निविदा नोटिस का विवरण उपरोक्त कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर भी देखा जा सकता है।

संख्याः 178–सिग/सी.डब्लू./32/113 दिनांक: 22.10.2025 3274/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

राशिफल

मेष – मन प्रसन्न रहेगा, परन्तु बातचीत में सन्तुलित रहें। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान रहेंगे। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिल सकते हैं। तरक्की के योग हैं।

वृष – मन थोड़ा परेशान हो सकता है। माता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार के लिए विदेश जाना हो सकता है।

मिथुन – आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। कारोबारी कार्यों में सफलता मिलेगी, परन्तु परिश्रम भी अधिक रहेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क – वाणी में मधुरता रहेगी। किसी राजनेता से भेंट हो सकती है। नौकरी में कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। कार्यभार में वृद्धि हो सकती है।

सिंह – आत्मविश्वास भी बहुत रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। मीठे खानपान में रुचि बढ़ेगी। खर्च बढ़ेंगे। तरक्की का मार्ग प्रशस्त होगा।

कन्या – किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं। नौकरी में कार्यक्षेत्र में वृद्धि हो सकती है। भाइयों से मनमुटाव की स्थिति बन सकती हैं।

तुला – मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। कारोबार में सुधार होगा। कारोबार के विस्तार के लिए पिता से आर्थिक सहयोग मिल सकता है। शैक्षिक कार्यों में सफलता के योग हैं।

वृश्चिक – किसी मित्र से कारोबार का प्रस्ताव मिल सकता है। कारोबार से लाभ के अवसर भी मिल सकते हैं। यात्रा के सुखद परिणाम मिलेंगे।

धनु – आत्मविश्वास से लबरेज तो रहेंगे, परन्तु मन अशान्त भी हो सकता है। कारोबार की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी, परन्तु परिश्रम अधिक रहेगा।

मकर – संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। परिवार की समस्याएं परेशान कर सकती हैं। शैक्षिक कार्यों के लिए विदेश जा सकते हैं।

कुंभ – आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परन्तु मन में उतार-चढ़ाव भी रहेंगे। परिवार का साथ मिलेगा। सेहत का ध्यान रखें। व्यर्थ की चिंता परेशान करेंगी।

मीन – मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे, परन्तु आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। खर्च अधिक रहेगा। मित्रों से भेंट होगी।

शब्द पहेली - 6025

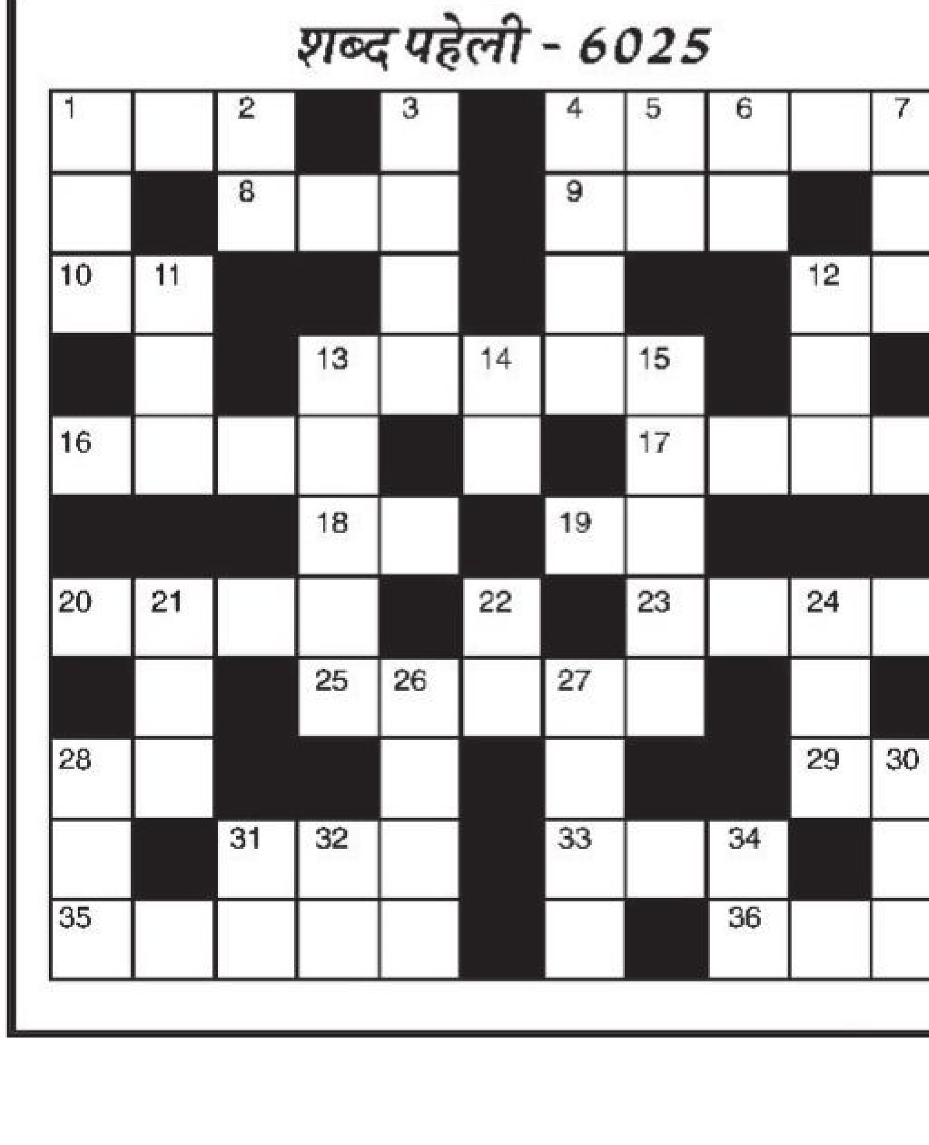

बाएँ से दाएँ
1. द्वेष, झगड़ा, रार-3
4. बुरकापोश-5
8. गागर, घड़ा-3
9. प्याऊ (उर्दू-3)
10. पैंदा, तला-2
12. बरस, वर्ष-2
13. सतत, लगातार-5
16. मजार, समाधि-4
17. उदारता, बड़प्पन-4
18. वायदा, कसम-2
19. महीना, माह-2
20. हमसफर-4
23. आदेश, आज्ञा-4
25. कहानी लेखक-5
28. गधा, गर्दभ-2
29. श्रवणेंद्रिय-2
31. बारिश, वर्षा-3
33. देवर्षि-3
35. दया करना-3,2
36. चिंतन

ऊपर से नीचे
1. कुपुत्र-3
2. अधिकार-2
3. सलाह, राय-4
4. अफसोस, खेद-4
5. शीतकालीन फसल-2
6. दलहन-2
7. ठंडा, सर्द-3
11. जिज्ञासा, उत्साह-3
12. बारिश का मौसम-3
13. धारावाही, अविराम, सीरियल-5
14. रीत, परंपरा-2
15. जीवनसाथी, हमराही-5
21. मोर-3
22. जल, नीर-2
24. पीहर-3
26. गजशाला, हाथी घर-4
27. करतब, करामात-4
28. उपभोग, खर्च-3
30. नेत्र, चक्षु, आंख-3
31. सवारी गाड़ी-2
32. रहन, गिरवी वस्तु-2
34. ताकत, जोर, बल-2

शब्द पहेली -6024 का हल

सूडोकु नवताल- 6035

★☆☆☆☆ सरल

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

MANGAL SEN ACHA, BANGALORE

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल- 6034 का हल

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1

उवाच “

बुधवार को पुलिस टीम पीसीआर वैन से गश्त कर रही थी। उसी दौरान सड़क किनारे तीन बच्चियां रोती हुई दिखाई दीं। पुलिसकर्मियों ने जब उनसे प्यार से बात की तो बच्चियों ने बताया कि वे घर से घूमने के लिए निकली थीं, लेकिन लौटते समय रास्ता भूल गईं। तीनों में से दो बच्चियों की उम्र करीब आठ साल और एक की सात साल बताई गई है। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए बच्चियों के घर का पता लगाने के लिए आसपास के लोगों से पूछताछ शुरू की : **मनोज सिंह, कोतवाली प्रभारी।**

कैपिटल ज़ोन

हाथरस शहरी केंद्र मास्टर प्लान-2041

विशेषज्ञ एजेंसी के चयन में अटका काम, अब बढ़ेगी टेंडर की तिथि

- **सिर्फ एक कंपनी ने किया आवेदन**
- **सासनी तहसील के 66 गांवों को विकसित करेगा प्रस्तावित मास्टर प्लान**

ग्रेटर नोएडा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। यमुना प्राधिकरण के हाथरस शहरी केंद्र के मास्टर प्लान-2041 की तैयारी फिलहाल रुक गई है। वजह यह है कि टेंडर प्रक्रिया में केवल एक कंपनी ने ही आवेदन किया है, जबकि चयन के लिए कम से कम तीन कंपनियों की भागीदारी जरूरी है। ऐसे में अब अथॉरिटी टेंडर की तिथि बढ़ाने जा रही है ताकि और कंपनियां भाग ले सकें।

मास्टर प्लान-2041 के तहत सासनी तहसील के करीब 66 गांवों को शामिल किया जाएगा। प्रस्तावित योजना लगभग 2,000 से 4,000 हेक्टेयर क्षेत्र में फैली होगी, जिसका अंतिम क्षेत्रफल परियोजना के प्रारंभिक चरणों में तय किया जाएगा। चयनित सलाहकार एजेंसी को मास्टर प्लान तैयार करने के लिए आठ महीने का समय दिया जाएगा, जिसमें राज्य सरकार की मंजूरी प्रक्रिया का समय शामिल नहीं होगा। अधिकारियों के अनुसार, हाथरस शहरी केंद्र को विनिर्माण, कृषि प्रसंस्करण, रसद और एमएसएमई विकास का प्रमुख हब बनाने की योजना है। यह क्षेत्र हाथरस जंक्शन से जुड़ी दो रेलवे लाइनों और बेहतर सड़क कनेक्टिविटी के कारण औद्योगिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। मास्टर प्लान में आवासीय, औद्योगिक और वाणिज्यिक जोनिंग, आंतरिक सड़कों, जलापूर्ति, बिजली, सीवेज, जल निकासी, स्वास्थ्य और मनोरंजन सुविधाओं जैसे बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही कृषि और खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, वस्त्र, धातु उत्पाद, मशीन टूल्स, विद्युत उपकरण और छोटे वाहनों के निर्माण से जुड़े उद्योगों के साथ चिकित्सा उपकरण निर्माण इकाइयों की भी स्थापना की जाएगी।

यमुना प्राधिकरण के ओएसडी शैलेंद्र भाटिया ने बताया कि आरएफपी में केवल एक कंपनी आई है। इसलिए तिथि बढ़ाने का निर्णय लिया गया है, ताकि अधिक एजेंसियां भाग ले सकें और प्रक्रिया पारदर्शी रहे। इस योजना से हाथरस को आगरा का एक सशक्त उपग्रह शहर बनाने का रास्ता साफ होगा, जिससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के औद्योगिक मानचित्र पर एक नई पहचान उभरने की उम्मीद है।

अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा ने जिम्स का किया दौरा

- **बैठक में सचिव ने जीआईएमएस में कैथ लैब और ट्रॉमा सेंटर की स्थापना के दिए निर्देश**
- **जिम्स को राज्य में मेडिकल टूरिज्म व हेल्थकेयर इनोवेशन का प्रमुख केंद्र बनने की संभावनाओं वाला संस्थान बताया**

ग्रेटर नोएडा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश शासन के अपर मुख्य सचिव (चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा) अमित कुमार घोष, आईएएस ने बुधवार को गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (जिम्स), ग्रेटर नोएडा में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक बैठक का संचालन किया। यह उनका जीआईएमएस के साथ पहला आधिकारिक दौरा था। बैठक निदेशक के बोर्ड रूम में आयोजित की गई, जिसमें राज्य के चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को सशक्त करने के लिए व्यापक योजनाओं पर चर्चा हुई। इस उच्च स्तरीय बैठक में अपर्णा यू, आईएएस, सचिव- चिकित्सा शिक्षा एवं महानिदेशक, चिकित्सा शिक्षा (डीजीएमई), डॉ. चन्दन सोनी, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, ब्रिगेडियर (डॉ.) राकेश गुप्ता, निदेशक, जीआईएमएस, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक (सीएमएस), चिकित्सा अधीक्षक, डीन (क्वालिटी) तथा मेडिकल इनक्यूबेशन सेंटर के सीईओ उपस्थित रहे। दौरे की शुरुआत ब्रिगेडियर (डॉ.) राकेश गुप्ता, निदेशक, जीआईएमएस ने संस्थान की उपलब्धियों के विस्तृत प्रस्तुतीकरण से हुई। उन्होंने चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में जीआईएमएस द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी दी। विशेष रूप से सुपर स्पेशलिटी ओपीडी, चिकित्सा नवाचार, कोविड-19, डेंगू और क्रिटिकल केयर जैसी चुनौतियों से निपटने में संस्थान की भूमिका को रेखांकित किया गया।

अपर मुख्य सचिव घोष ने जीआईएमएस टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए उत्कृष्ट कार्य जारी रखने का आह्वान किया। उन्होंने एनएबीएच और एनएबीएल मानकों के पालन के लिए संस्थान की प्रशंसा की और कहा कि इन गुणवत्ता मानकों को प्रदेश के अन्य सरकारी अस्पतालों में भी लागू किया जाना चाहिए ताकि मरीजों को समान स्तर की उत्कृष्ट सेवाएं मिल सकें। राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं को और सशक्त बनाने हेतु घोष ने जीआईएमएस में कैथ लैब और ट्रॉमा सेंटर की स्थापना के निर्देश दिए। साथ ही नर्सिंग कॉलेज की सीट क्षमता बढ़ाने और सरकारी अस्पतालों में डीएनबी कार्यक्रम प्रारंभ करने पर बल दिया, ताकि विशेष चिकित्सा शिक्षा को प्रोत्साहन मिल सके। मेडिकल एजुकेशन यूनिट के योगदान की भी सराहना की गई, जिसने शैक्षणिक उत्कृष्टता और फैकल्टी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आगामी नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के निकट स्थित होने के कारण, जीआईएमएस को राज्य में मेडिकल टूरिज्म और हेल्थकेयर इनोवेशन का प्रमुख केंद्र बनने की अपार संभावनाओं वाला संस्थान बताया गया। इसके अतिरिक्त, येलो फीवर वैक्सीनेशन सेंटर को स्वीकृति मिलना एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य उपलब्धि बताया गया और इसे प्रदेश के स्वास्थ्य अभियानों के माध्यम से व्यापक स्तर पर प्रचारित करने का सुझाव दिया गया।

यमुना प्राधिकरण की आवासीय योजना में छह आवंटी फंसे संकट में, बोर्ड करेगा अगला फैसला

- **16 अक्टूबर को खत्म हुई थी अंतिम तिथि**
- **एक माह की बढ़ाई गई मोहलत के बावजूद नहीं जमा हुई राशि**

ग्रेटर नोएडा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) की आवासीय स्कीम में अब भी छह आवंटियों पर कार्रवाई की तलवार लटक रही है। प्राधिकरण की ओर से जमा राशि के लिए अंतिम तिथि 16 अक्टूबर तय की गई थी, जो एक माह की अतिरिक्त मोहलत देने के बाद भी पूरी हो चुकी है। बावजूद इसके, छह आवंटियों ने अब तक भुगतान नहीं किया है। प्राधिकरण ने हाल ही में 200 वर्गमीटर के 276 आवासीय भूखंडों की स्कीम जारी की थी, जिसमें एकमुश्त राशि जमा करनी थी।

कई आवंटी बैंक फाइनेंस या अन्य कारणों से समय पर भुगतान नहीं कर पाए थे। इसको देखते हुए प्राधिकरण ने राहत देते हुए जमा करने की अवधि एक माह बढ़ाई थी। अब अंतिम तिथि भी बीत चुकी है। प्राधिकरण के ओएसडी शैलेंद्र भाटिया ने बताया कि इस मामले को अब बोर्ड की बैठक में रखा जाएगा। बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

रास्ता भटकीं तीन मासूम बच्चियों को पुलिस ने सुरक्षित घर पहुंचाया

- **बिसरख में गश्त के दौरान मिलीं तीन रोती हुई बच्चियां**
- **इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस की मदद से परिवार का पता लगाया**

ग्रेटर नोएड़ा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। बिसरख क्षेत्र में बुधवार को तीन मासूम बच्चियां रास्ता भटक गईं। सौभाग्य से बिसरख कोतवाली पुलिस ने गश्त के दौरान ये बच्चियां मिल गईं और समय रहते पुलिस ने उन्हें उनके परिवार से मिलवा दिया। कोतवाली प्रभारी मनोज सिंह ने बताया कि बुधवार को पुलिस टीम पीसीआर वैन से गश्त कर रही थी।

उसी दौरान सड़क किनारे तीन बच्चियां रोती हुई दिखाई दीं। पुलिसकर्मियों ने जब उनसे प्यार से बात की तो बच्चियों ने बताया कि वे घर से घूमने के लिए निकली थीं, लेकिन लौटते समय रास्ता भूल गईं।

तीनों में से दो बच्चियों की उम्र करीब आठ साल और एक की सात साल बताई गई है। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए बच्चियों के घर का पता लगाने के लिए आसपास के लोगों से पूछताछ शुरू की। इसके साथ ही इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस और तकनीकी मदद का इस्तेमाल कर उनके स्वजन का पता लगाया गया। थोड़ी ही देर में पुलिस ने बच्चियों के परिजनों से संपर्क कर उन्हें सुरक्षित उनके हवाले कर दिया।

राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट अपने पैतृक गांव पहुंचे

- **वैदपुरा गांव में गोवर्धन पूजा कर अपने स्वर्गीय पिता का किया याद**

ग्रेटर नोएडा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री व कांग्रेस नेता सचिन पायलट गोवर्धन पूजा करने के लिए अपने पैतृक गांव वैदपुरा ग्रेटर नोएडा पहुंचे। हर वर्ष सचिन पायलट अपने गांव आते हैं। इससे पूर्व नोएडा आगमन पर पूर्व महानगर नोएडा अध्यक्ष रामकुमार तवर के नेतृत्व में कांग्रेसियों ने डीएनडी फ्लाईओवर पर सचिन पायलट का जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर रामकुमार तंवर ने बताया कि सचिन पायलट का अपने गांव से खासा लगाव है। जब भी समय मिलता है विशेषकर गोवर्धन पर अपने पैतृक गांव आना नहीं भूलते। वे अपने पिताजी स्वर्गीय राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर भी हर वर्ष अपने पैतृक गांव पहुंचते हैं। जिला गौतमबुद्ध नगर के लोगों का सचिन पायलट से आत्मीयता का लगाव है।

रामकुमार तवंर ने कहा कि मेरे जैसे सैकड़ों नौजवान पार्टी कार्यकर्ताओं को सचिन पायलट ने हमेशा हाथ पकड़कर आगे बढ़ाने की कोशिश की है और राजस्थान में अनेकों युवाओं को विधायक एवं पार्टी संगठन में अहम जिम्मेदारी दिलाने का कार्य किया है। ग्रेटर नोएडा वैदपुरा गांव पहुंचने पर सचिन पायलट ने गोवर्धन पूजा किया, इस दौरान कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी के साथ आस-पास के स्थानीय लोग मौजूद रहे। इस दौरान गुर्जर समाज के लोगों ने सचिन पायलट का स्वागत किया।

सचिन पायलट ने गांव के बड़े बुजुर्गों के साथ बातचीत की और उनका आशीर्वाद भी लिया। सचिन पायलट के गांव में पहुंचने को लेकर गांव के युवाओं में उत्साह देखने को मिला। सचिन पायलट ने बच्चे व युवाओं को प्रोत्साहित किया।

ईशान कॉलेज के पास छठ पूजा पार्क बदहाल

- **छठ पूजा पार्क की दीवारें टूटी, हादसे का खतरा बढ़ा**
- **श्रद्धालुओं ने जताई नाराजगी, कहा जल्द हो मरम्मत**

ग्रेटर नोएड़ा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। ईशान कॉलेज के पास बने छठ पूजा पार्क में आज भूमि पूजन का कार्यक्रम हुआ। इस मौके पर लोगों ने देखा कि पार्क की हालत काफी खराब है। चारों तरफ की बाउंड्री वॉल जगह-जगह से टूटी हुई है और पूरी तरह जर्जर अवस्था में है। ऐसे में छठ पर्व के दौरान यहां पूजा करने आने वाली छठ व्रतियों के लिए खतरा बन सकता है।

अगर मरम्मत जल्द नहीं हुई तो किसी भी वक्त हादसा हो सकता है। छठ कमेटी के सदस्यों ने बताया कि उन्होंने काफी समय पहले ही प्राधिकरण को पार्क की मरम्मत, रंगाई-पुताई और साफ-सफाई के लिए अवगत कराया था, ताकि छठ पर्व से पहले सारी तैयारियां पूरी हो जाएं। लेकिन अब तक प्राधिकरण की ओर से कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इस लापरवाही को लेकर छठ कमेटी और स्थानीय लोगों में नाराजगी है।

लोगों का कहना है कि यह सबसे पुराना और प्रसिद्ध छठ पूजा पार्क है, जहां हर साल दूर-दूर से श्रद्धालु आकर छठ मैया की पूजा करते हैं।

एक्टिव सिटीजन टीम के सदस्य हरेन्द्र भाटी ने प्राधिकरण से अपील की है कि ईशान कॉलेज के पास स्थित इस छठ पूजा पार्क की सफाई, रंगाई-पुताई और बाउंड्री वॉल की मरम्मत का कार्य तुरंत शुरू कराया जाए, ताकि श्रद्धालु सुरक्षित और साफ वातावरण में छठ पूजा कर सकें।

छठ पूजा की तैयारी शुरू

छठ पूजा के लिए किया गया भूमि पूजन

- **25 अक्टूबर को नहाय खाय के साथ व्रत होगा शुरू**
- **28 उगते सूर्य को दिया जाएगा अर्घ्य**

ग्रेटर नोएड़ा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। बिहार व पूर्वांचल का प्रसिद्ध छठ पूजा की तैयारी शुरु हो गई है। छठ घाट की साफ सफाई के साथ व्यवस्थाएं ठीक करने का काम शुरु हो गया है। ग्रेटर नोएडा में कई स्थानों पर छठ का पवित्र व्रत मनाया जाता है। इस त्यौहार में बिहार व पूर्वांचल के लोगों के साथ स्थानीय लोग भी उत्साह के साथ हिस्सा लेते हैं। ग्रेटर नोएडा में आईईसी कॉलेज के सामने पार्क, डेल्टा-एक, नवादा मंदिर, अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा वेस्ट के कई सोसाइटी व पार्कों में छठ का पर्व मनाया जाता है। आयोजन समिति के लोग छठ पूजा की तैयारी शुरु कर दिए हैं। इसी क्रम में छठ पूजा सेवा समिति, ग्रेटर नोएडा के तत्वावधान में बुधवार को आईईसी कॉलेज के सामने स्थित तालाब संख्या-2 पर आगामी 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक आयोजित 'छठ पूजा' के लिए भूमि पूजन किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व असिस्टेंट कमिश्नर जी.पी. गोस्वामी एवं भाजपा के अन्नू पंडित ने सम्पन्न किया। समिति के अध्यक्ष मनोज पाण्डेय एवं महासचिव पुरूषोत्तम मिश्रा ने बताया कि 25 अक्टूबर को नहाय खाय, 26 को खरना, 27 अक्टूबर को संध्या अर्घ्य तथा 28 को ऊषा अर्घ्य के साथ कार्यक्रम समापन होगा। इस अवसर पर राहुल नम्बरदार, शिवम पाण्डेय, मनोज मावी, आशुतोष चौबे, प्रदेश उपाध्यक्ष लोजपा आदि लोग मौजूद रहे। इसी के साथ छठ पूजा सेवा समिति के लोग एमएलसी विधायक श्रीचंद शर्मा एवं डीजीसीए सिविल गौतमबुद्ध नगर नीरज शर्मा से मुलाकात कर छठ पूजा को भव्य और दिव्य बनाने के लिए चर्चा किया। इस दौरान मनोज पांडेय, पुरषोत्तम मिश्रा, हरेंदर दुबे, सुजीत तिवारी, आशुतोष चौबे, राकेश पांडेय, शिवम पांडेय, रविन्द्र साहनी, द्वारिका प्रसाद उपस्थित रहे।

भगवान श्री चित्रगुप्त महाराज का आज होगा पूजन अर्चन

ग्रेटर नोएडा, 22 अक्टूर (देशबन्धु)। भगवान श्री चित्रगुप्त महाराज का पूजन, हवन, भजन संध्या का आयोजन वैष्णव देवी मंदिर नवादा में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के बाद प्रसाद भंडारे का आयोजन धूमधाम से किया जा रहा है। कार्यक्रम का आयोजन 23 अक्टूबर गुरुवार को पूजन एवं हवन शाम 5-30 बजे किया जाएगा। इसके बाद संस्कृति कार्यक्रम शाम 7 बजे बजे से 8 बजे तक होगा।

जिसमें कायस्थ समाज के बच्चे अपनी प्रस्तुति देंगे। इसके बाद प्रसाद एवं भंडारे का आयोजन किया जाएगा। मीडिया प्रभारी रोहित प्रियदर्शन ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान चित्रगुप्त के पूजा का आयोजन किया जा रहा है। इस धार्मिक कार्यक्रम में सपरिवार पधारकर इसे सफल बनाने में समाज के लोग अपना योगदान दें और भगवान श्री चित्रगुप्त जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करें।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उतर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोन:- 0120-4270009

देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

शहर के सेक्टरों में धूमधाम से मनाया गया गोवर्धन पूजा

- **परिवार के साथ लोग शामिल होकर किया गोवर्धन पूजा व मनाया अन्नकूट उत्सव**

ग्रेटर नोएडा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। गोवर्धन पूजा का कार्यक्रम ग्रेटर नोएडा के विभिन्न सेक्टरों में धूमधाम से आयोजित किया गया, जिसमें लोगों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया। भागवत पुराण की उस घटना की याद दिलाता है जब कृष्ण ने वृन्दावन के ग्रामीणों को मूसलाधार बारिश से आश्रय प्रदान करने के लिए गोवर्धन पर्वत को उठाया था। गोवर्धन पूजा के लिए महिलाएं भगवान श्रीकृष्ण को गोबर और मिट्टी से चित्रित करती हैं। गोबर और मिट्टी से एक बड़ा परकोटा बनाया जाता है।

गोधूलि के समय दूध घी, खील, खिलोने व बतासे अर्पित करके पूजा की जाती हैं। परिवार के लोग इष्ट मित्रों के साथ इकट्ठा होकर पूरी-कचौड़ी-खीर का आनंद लेते हैं। इस उत्सव को अन्नकूट भी कहते हैं। मोटे अनाजों को मिला कर खिचड़ी बनाई जाती है और देसी घी से खाई जाती है। सेक्टर बीटा-एक में गोवर्धन पूजा में सरदार मनजीत सिंह, मुकेश शर्मा, हरेन्द्र भाटी, सुभाष चन्देल, टी पी सिंह, योगेन्द्र भाटी विजय सिंह, हर्ष भाटी, महेंद्र सिंह, मनोज कुमार आदि लोग शामिल हुए। इसी क्रम में श्री महाराजा अग्रसेन वैश्य सेवा समिति ग्रेटर नोएडा द्वारा दीपावली मिलन व गोवर्धन पूजा का कार्यक्रम विधिवत रूप से स्वर्ण नगरी स्थित श्री महाराजा अग्रसेन भवन में संपन्न हुआ। इस दौरान 20 फुट की गोवर्धन महाराज की प्रतिमा बनाई गई। समिति के अध्यक्ष सौरभ बंसल ने बताया समिति द्वारा अनेकों वर्षो से महाराज गोवर्धन का विराट स्वरुप बनकर समाज के सभी लोग एकजुट होकर सामूहिक रूप से पूजा करते हैं। इसी क्रम में इस वर्ष भी पूजा का आयोजन किया गया, जिसमें शहर के सभी अग्र बंधु उपस्थित रहे पूजा के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम में भगवान श्री राम भगवान श्री कृष्णा के भजनों पर केरल का विशेष नृत्य कथकली कथकली पर भी सुंदर प्रस्तुति को लोगों ने देखा और सराहा। इस अवसर पर मनोज गर्ग, ओम प्रकाश अग्रवाल, नवीन जिंदल, सर्वेश अग्रवाल, अरुण गुप्ता, राजेश गुप्ता, अमित गोयल, कपिल गुप्ता, गिरीश जिंदल, अनिल गुप्ता, मुकुल गोयल आदि लोग उपस्थित रहे। सेक्टर डेल्टा टू मंदिर में गोधन (गोवर्धन) पूजा का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ किया गया। इस अवसर पर सेक्टर के परिवारजन एकत्रित होकर भगवान गोवर्धन की पूजा-अर्चना में शामिल हुए। इस मौके पर मंदिर के सदस्य इलम सिंह, बिन्नू भाटी, आर. के. सिंह, टीपी राय, रविन्द्र भाटी, नरेश, सतेंदर तिवारी, देविंदर, ओमपाल, लीलूराम, वीरेंद्र आदि मौजूद रहे। ढ

वहीं आरडब्ल्यूए महासचिव आलोक नागर ने बताया कि गोधन पूजा हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जो प्रकृति, गौवंश और अन्नदाता के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रतीक है। उन्होंने सभी सेक्टरवासियों को गोवर्धन पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं भी दीं। इस मौके पर डीजीसी चरणजीत नागर, अध्यक्ष बॉबी भाटी, सतीश चंदीला, बॉबी नागर, रिंकू भाटी, सुमित आदि मौजूद रहे।

अजनारा होम्स की लिफ्ट में फंसे दो लोग

- **करीब 20 मिनट बाद सुरक्षित बाहर निकाले गए**
- **इंटरकॉम का तार टूटा होने से समय पर मदद नहीं पहुंच पाई**

ग्रेटर नोएड़ा, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। अजनारा होम्स सोसाइटी में बुधवार सुबह लिफ्ट में दो लोग फंस गए। करीब 20 मिनट तक लिफ्ट में फंसे रहने के कारण उनकी हालत खराब हो गई। सोसाइटी के निवासी गणेश दीक्षित ने बताया कि दो युवक किसी फ्लैट में काम करने के लिए एन टावर में गए थे। काम खत्म कर लिफ्ट में ऊपर से नीचे जाने के दौरान लिफ्ट अचानक 15वीं मंजिल पर अटक गई।

दोनों ने 5 मिनट तक लिफ्ट के गेट खुलने का इंतजार किया, लेकिन गेट नहीं खुला। इसके बाद उन्होंने सुरक्षा अलार्म बजाया, लेकिन कोई मेंटेनेंस कर्मचारी या सुरक्षा गार्ड मदद के लिए नहीं आय। लिफ्ट से चिल्लाने की आवाज सुनकर फ्लोर पर मौजूद लोग मदद के लिए पहुंचे। इसके बाद सभी ने मेंटेनेंस कार्यालय में जाकर फोन किया। तभी जाकर दोनों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। लोगों का आरोप है कि बिल्डर ने इंटरकॉम फोन का तार निकाल दिया था, ताकि कोई भी निवासी सीधे मेंटेनेंस से शिकायत न कर सके। इस कारण उस समय फोन नहीं मिल रहा था। मेंटेनेंस कार्यालय में जाकर तार दोबारा लगाया गया, तब फोन की घंटी बजने लगी। वहीं, स्टेट मैनेजर राजेंद्र ने कहा कि समय रहते दोनों लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया था। उन्होंने बताया कि इंटरकॉम का तार चूहे ने काट दिया था, जिसे तुरंत ठीक कर दिया गया। सभी लिफ्ट अब सही तरीके से चल रही हैं।

घर में घुसकर परिवार पर हमला, चार लोग घायल

दनकौर, 22 अक्टूबर (देशबन्धु)। दनकौर कोतवाली क्षेत्र के रीलखा गांव में रंजिश के चलते दो पक्षों में खूनी संघर्ष हो गया। इस दौरान चले-लाठी डंडे और पथराव में एक पक्ष के करीब चार लोगों को चोट आई है। जिनका सरकारी अस्पताल में इलाज चल रहा है। इस मामले में पीड़ित पक्ष ने करीब 8 लोगों को नामजद करते हुए पुलिस से शिकायत की है। पीड़ित पक्ष के विजय ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि मंगलवार की रात वह अपने घर में बैठे हुए थे। उसी दौरान पड़ोस के रहने वाले करीब 8 लोग रंजिश के चलते उनके घर में लाठी डंडे लेकर घुस गए। आरोप है कि पुरानी रंजिश के चलते आरोपियों ने पीड़ित और उनके परिवार के लोगों पर लाठी डंडे और पत्थर से हमला कर दिया। इस दौरान उनके पक्ष के 4 लोगों को चोट आई है। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी पक्ष पीड़ित परिवार को जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गया। घायल अवस्था में पीड़ित पक्ष ने कोतवाली पहुंचकर आरोपियों को नामजद करते हुए शिकायत की है। पुलिस का कहना है कि पीड़ित पक्ष की शिकायत ले ली गई है। जिसके आधार पर जांच कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, गुरूवार 23 अक्टूबर 2025
संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

कानून का इकबाल

सत्ता के नशे में आम आदमी के अधिकारों को कैसे कुचला जा रहा है इसका ताजा उदाहरण उत्तरप्रदेश के मेरठ से सामने आया है। मंगलवार को मेरठ के एक व्यापारी सत्यम रस्तोगी अपने मित्र के साथ रात को खाने पर एक होटल पहुंचे, जहां एक स्थानीय भाजपा नेता के साथ पार्किंग को लेकर उनका विवाद हुआ। जिसके बाद उस नेता ने व्यापारी को न केवल अपशब्दों से अपमानित किया, बल्कि जमीन पर नाक रगड़ कर माफी मंगवाई। इस पूरे वाकये का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, हालांकि इसे देखकर आम लोगों में नाराजगी और दुख का जो भाव व्यापक पैमाने पर उभरना चाहिए था, जो नजर नहीं आया। संभवत: जनता ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि सत्ता पर बैठे लोगों के करीबियों या पुलिस प्रशासन के पास यह ताकत है कि वह कानून अपने हाथ में लें, सही-गलत की परवाह न करके आम लोगों के साथ अपमानजनक व्यवहार करें। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। लोगों में अपने हक के लिए आवाज उठाने की हिम्मत होनी चाहिए। संविधान में यह हिम्मत मौलिक अधिकारों के तौर पर परिभाषित है। ये मौलिक अधिकार हरेक नागरिक को समानता, सम्मान और गरिमा का जीवन सुनिश्चित करते हैं। मगर ये अधिकार तभी कायम रहेंगे और अपना असर दिखाएंगे, जब जनता ही यह मान लेगी कि मेरठ जैसी घटनाएं तो आम हैं, तब तो मौलिक अधिकारों के कमजोर होने और उसके साथ संविधान के अप्रासंगिक होने के खतरे और बढ़ जाएंगे।

मेरठ का जो वीडियो वायरल हुआ, उसमें विकुल चपराणा नाम का भाजपा नेता पुलिस की मौजूदगी में व्यापारी सत्यम रस्तोगी से जमीन पर नाक रगड़वाते और गालियां देते देखा जा सकता है। यह वही भाजपा है जिसने प्रधानमंत्री की मां को कहे गए अपशब्द पर बिहार बंद करवाया था, और राहुल गांधी के रायबरेली आने पर रास्ता जाम कर उनका काफिला रोका था। प्रधानमंत्री की मां को जब अपशब्द कहे गए, तब राहुल गांधी वहां थे भी नहीं, फिर भी उनके खिलाफ जी भर के अपमानजनक टिप्पणियां की गईं। खुद नरेन्द्र मोदी इस मुद्दे को भुनाते हुए बात को छठी मईया तक ले गए। उन्हें लगता है कि इस तरह बिहार में भाजपा को चुनावी फायदा होगा। लेकिन स्त्री का अपमान या स्त्रियों के नाम पर कहे गए अपशब्द चुनावी लाभ-हानि से कहीं अधिक गंभीर मसला है। यह व्यक्ति की निकृष्ट मानसिकता को जाहिर करता है। मेरठ में विकुल चपराणा ने इसी मानसिकता का प्रदर्शन सत्यम रस्तोगी को अपशब्द कहने में किया। श्री रस्तोगी ने इस अपमान को बर्दाश्त किया, क्योंकि वहां खड़ी पुलिस भी इस तमाशे को देखती रही। पुलिस ने आम आदमी के अधिकार की रक्षा का अपना दायित्व पूरा नहीं किया। एक और वीडियो भी सामने आया है, जिसमें पुलिस अधिकारी ही व्यापारी पर माफी मांगने का दबाव बना रहे हैं। पीड़ित सत्यम रस्तोगी ने बताया कि मैंने सिर्फ पार्किंग मांगी थी, लेकिन मंत्री का नाम लेकर धमकी दी गई। एसआई साहब ने भी माफी मांगने को कहा, वरना कार जब्त हो जाएगी। इसलिए अपमान सहना पड़ा। इस बयान से जाहिर है कि पुलिस भी सत्ता के चाकर की तरह व्यवहार करने लगी है, जबकि उसे आम जन के रक्षक की तरह होना चाहिए।

बता दें कि भाजपा नेता विकुल खुद को ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर का भाई बताता रहा और हंगामा करता रहा। विकुल चपराणा ने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में बतौर छात्र नेता अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत पांच साल पहले की और जल्द ही गुर्जर समाज में अपनी पकड़ मजबूत की। इसके बाद विकुल चपराणा उत्तर प्रदेश सरकार के गुर्जर समाज से आने वाले ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर का करीबी बन बैठा। विकुल ने मेरठ, गाजियाबाद और आसपास के जिलों में गुर्जर समाज को एकजुट करने की मुहिम चलाई। कई बार भाजपा के कार्यक्रमों और अभियानों में उसे मंच साझा करते हुए भी देखा गया है। ऊर्जा मंत्री के दम पर विकुल की पंचायत चुनाव में प्रबल दावेदारी मानी जा रही है। लेकिन इस घटना ने हालात बदल दिए हैं।

घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ और कुछ लोगों ने इस मामले की आलोचना की, तो मेरठ के एसएसपी ने एसआई, हेड कांस्टेबल और एक कांस्टेबल को लाइन हाजिर कर दिया। वहीं केस दर्ज कर विकुल चपराणा को गिरफ्तार किया गया, हालांकि अब उसे जमानत भी मिल गई है। जिन डॉ. सोमेंद्र तोमर का नाम लेकर विकुल हंगामा कर रहा था, उन्होंने कहा कि योगी की सरकार है, इसमें जांच के बाद दोषी को सज़ा मिलेगी। उन्होंने ये भी कहा कि भाजपा बहुत बड़ी पार्टी है, समर्थक भी बहुत हैं, जो भी मामला है, उस पर पुलिस अपनी जांच कर रही है। मगर ये भी देखना होगा कि ऐसे हालात क्यों बने।

डॉ. तोमर का ये बयान भी अटपटा है, हालात चाहे जिस भी वजह से बिगड़े हों और झगड़ा किसी के भी कारण शुरु हुआ हो, फैसला करने का अधिकार अदालत का है और शुरुआती कार्रवाई करने का जिम्मा पुलिस का है। लेकिन इसमें तो पुलिस को तमाशबीन की तरह खड़ा किया गया था।

वैसे विकुल चपराणा पर भाजपा ने भी कार्रवाई की है। भारतीय जनता मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष तेजा गुर्जर की ओर से जारी पत्र में कहा गया कि विकुल चपराणा की मानसिकता और कृत्य भाजपा की विचारधारा के विपरीत हैं। हालांकि भाजपा के लिए मुश्किल अभी कम नहीं हुई है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भी एक्स पर लिखा है कि भाजपाई सत्ता के अहंकार में चूर होकर किसी को भी अपमानित करने से नहीं चूकते हैं। भाजपाई न भूलें, एक न एक दिन हर दंभ का अंत होता है।

जमानत पर बाहर आए विकुल चपराणा या उन जैसे सत्ता के दंभ में डूबे लोग आईंदा इस तरह आम लोगों के सम्मान पर प्रहार नहीं करेंगे, ऐसी आदर्श स्थिति तो तभी बनेगी जब सत्ता में ऊंचे पायदानों पर बैठे लोग अपने अधीनस्थों को कानून हाथ में लेने से रोकें और पुलिस को निजी सेवक बनाने की मानसिकता से बाज़ आएं। पुलिस प्रशासन को बाकायदा, बाइज्जत कानून का पालन करवाने दें, इसी से व्यवस्था कायम रहेगी, कानून का इकबाल कायम रहेगा।

उर्दू मीडिया के साथ भेदभाव में घिरी भाजपा

दुनियादारी

■ सर्वमित्रा सुरजन

पिछले सप्ताह इसी जगह महिला पत्रकारों के साथ हुए भेदभाव पर लिखने की जरूरत पड़ी थी और अब एक बार फिर ऐसा ही दूसरा विषय सामने आ खड़ा हुआ है। द वायर में फ़ैयाज़ अहमद वजीह की रिपोर्ट है कि दिल्ली की भाजपा सरकार किस तरह उर्दू पत्रकारों के साथ भेदभाव भरा सौतेला व्यवहार कर रही है। खास बात ये है कि भाजपा ने दीपावली जैसे बड़े त्योहार के अवसर पर अपनी संकुचित मानसिकता को जाहिर किया है। हिंदुस्तान में होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस केवल धर्मविशेष के त्योहार नहीं हैं, इनका अपना सामाजिक, सांस्कृतिक महत्व है। एक-दूसरे के घर जाकर त्योहार की खुशी मनाई जाती है। मिठाइयों, तोहफों से जीवन में नए उत्साह भरा जाता है। बाजारों में रौनक छा जाती है, लोग दिन भर के काम और थकान के बावजूद बाहर निकलते हैं और इस रौनक का आनंद लेते हैं। यह सब हिंदुस्तान में ही होता है, क्योंकि यहां का संविधान सारे धर्मों को एक बराबर मानता है। राजनैतिक दल भी इन त्योहारों का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व समझते हैं, इसलिए वे भी अपने स्तर पर सार्वजनिक मिलन समारोह आयोजित करते हैं। जो दल सत्ता में होता है, वह सरकार के जरिए विभिन्न तबकों के लोगों तक पहुंचता है, खासकर पत्रकारों से विचारों के आदान-प्रदान का यह अच्छा मौका होता है, इसलिए तकरीबन हर राज्य में सरकारें दीपावली मिलन, होली मिलन या नए साल पर भोज जैसा आयोजन करती हैं।

दिल्ली में भी अरसे से दीपावली मिलन पत्रकारों के लिए आयोजित किया जाता रहा है। इस बार 13 अक्टूबर को दिल्ली सरकार के सूचना एवं प्रचार निदेशालय ने अशोका होटल में 'दीपावली मंगल मिलन' कार्यक्रम रखा, जिसमें प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के साथ विशेष संवाद और बातचीत के लिए आमंत्रित किया था। इस समारोह में दिल्ली कैबिनेट के सारे मंत्री उपस्थित थे। लेकिन द वायर की रिपोर्ट के मुताबिक पिछली सरकारों की परंपरा को तोड़ते हुए उर्दू मीडिया से जुड़े किसी पत्रकार और उन उर्दू पत्रकारों को भी इस मिलन समारोह में नहीं बुलाया, जो लंबे समय से दिल्ली सरकार और भाजपा को कवर करते आ रहे हैं। शायद ये पहला मौक़ा था जब दिल्ली सरकार ने उर्दू मीडिया से दूरी बनाने की कोशिश की। पत्रकारों के बीच इसे अल्पसंख्यक विरोधी क़दम बताया जा रहा है, और इसे उर्दू और उर्दू वालों को छोटा दिखाने की कोशिश के तौर पर भी देखा जा रहा है।

बताया जा रहा है कि समारोह में शिरकत के लिए निमंत्रण डीआईपी निदेशक सुशील सिंह द्वारा वॉट्सऐप पर भेजा गया था। लेकिन क्या यह चुनिंदा पत्रकारों को ही भेजा गया या इसमें उर्दू पत्रकारों को जानबूझ कर दूर रखा गया, यह सवाल कायम है। इस आयोजन के बाद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कुछ तस्वीरों के साथ पोस्ट लिखी है कि आज दिवाली मंगल मिलन समारोह में हमारे मीडिया बंधुओं से आत्मीय संवाद का अवसर मिला। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्रीगण श्री प्रवेश साहिब सिंह जी, श्री आशीष सूद जी, श्री मनजिंदर सिंह सिरसा जी, श्री रविन्द्र इन्द्राज जी एवं श्री कपिल मिश्रा जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। मीडिया के सभी साथियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। जो तस्वीरें शेयर की गई हैं उनमें इलेक्ट्रानिक मीडिया के भाजपा की तरफ झुकाव वाले पत्रकार नजर आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि रेखा गुप्ता ने हरेक मेज पर जाकर पत्रकारों से चर्चा की। इस दौरान पत्रकारों ने मुख्यमंत्री के सामने अपनी चिंताएं भी रखीं और वरिष्ठ पत्रकारों ने दिल्ली में डीआईपी 'मान्यता समिति' के नवीनीकरण नहीं होने का मामला उठाया। लेकिन इन पत्रकारों ने इस बात को क्यों नहीं उठाया कि उर्दू मीडिया के उनके साथी इस आयोजन में नज़र क्यों नहीं आ रहे। खुद रेखा गुप्ता को यह बात खटकी क्यों नहीं कि उनके किसी आयोजन में उर्दू पत्रकारों को दूर क्यों रखा गया है। याद कीजिए यही सवाल तालिबान सरकार के विदेश मंत्री की प्रेस कांफ्रेंस के वक्त भी उठे थे कि तालिबान ने तो महिला और पुरुष में भेदभाव को जाहिर किया, लेकिन उनकी प्रेस कांफ्रेंस में आमंत्रित पुरुष पत्रकारों ने अपनी महिला साथियों के लिए आवाज क्यों नहीं उठाई। यही सवाल अब हिंदी, अंग्रेजी के पत्रकारों के लिए है कि उर्दू के उनके साथी पत्रकारों के साथ अगर भेदभाव हो रहा है, तो यह बात उन्हें खटक क्यों नहीं रही। क्या सरकार की तरफ से मिली दावत उनके नैतिक मूल्यों पर भारी पड़ चुकी है।

अगर भेदभाव को इतनी आसानी से समाज में जगह बनाने दी जा रही है, तो यह देश के लिए काफी खतरनाक बात है। वहीं पत्रकारों के लिए यह बड़ी शर्म की बात है कि वे जरा से फायदे के लिए अपने मूल्यों को गिरवी रख चुके हैं। वैसे बताया जा रहा है कि सरकार के इस क़दम से नाराज़ कई पत्रकारों ने दिल्ली सरकार के पीआर डिपार्टमेंट में इस मामले को मजबूती उठाने की बात कही है। दावा किया जा रहा है कि भाषा के स्तर पर ऐसे भेदभाव का यह पहला मामला है। लेकिन इस शिकायत का बेहतर असर तब होता, जब पत्रकार भेदभाव को अस्वीकार करते हुए इस आयोजन का बहिष्कार कर देते। अगर दिल्ली के पत्रकार ऐसा करने की हिम्मत दिखाते तो इसका बड़ा संदेश देश और दुनिया में जाता। मगर एक बार फिर यहां भाजपा की कुटिल नीति जीत गई।

> **इस समारोह में दिल्ली कैबिनेट के सारे मंत्री उपस्थित थे। लेकिन द वायर की रिपोर्ट के मुताबिक पिछली सरकारों की परंपरा को तोड़ते हुए उर्दू मीडिया से जुड़े किसी पत्रकार और उन उर्दू पत्रकारों को भी इस मिलन समारोह में नहीं बुलाया, जो लंबे समय से दिल्ली सरकार और भाजपा को कवर करते आ रहे हैं।**

इस मामले में कांग्रेस की प्रतिक्रिया अभी देखने नहीं मिली है। लेकिन आम आदमी पार्टी के नेता और पूर्व खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन ने भाजपा पर सांप्रदायिक राजनीति का आरोप लगाते हुए कहा है कि, 'उर्दू पत्रकारों के साथ सौतेला बर्ताव बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।' उन्होंने ये भी इल्ज़ाम लगाया कि इससे पहले उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उर्दू के ख़िलाफ़ बयानबाज़ी की थी, अब ऐसा लगता है कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता उनसे भी आगे निकलना चाहती हैं।'

वहीं उर्दू अख़बार 'हमारा समाज' के संपादक सादिक शेरवानी ने द वायर को बताया, 'दिल्ली की पिछली भाजपा सरकार के समय भी उर्दू मीडिया के साथ इस तरह का सुलूक नहीं किया गया था, बल्कि मदन लाल खुराना और सुषमा स्वराज उर्दू-प्रेमी समझे जाते थे। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं और ऐसा माना जाता है कि भाजपा हर वो काम करती है, जो उसके तुष्टीकरण की राजनीति को मज़बूत कर सकती है।' उन्होंने कहा, उर्दू 'सिर्फ़ मुसलमानों की ज़बान नहीं है, लेकिन भाजपा ऐसा संदेश देना चाहती है कि ये मुसलमानों की ज़बान है।'

सादिक यह भी कहते हैं कि अगर ये 'चूक' है तो कैसे मुमकिन है कि उर्दू मीडिया से जुड़े किसी भी पत्रकार को निमंत्रण नहीं मिला। अगर ये चूक होती तो किसी एक मीडिया संस्थान के पत्रकार तो इस समारोह में होते। 'हमारा समाज' से बात करते हुए वरिष्ठ पत्रकार संजय गोयल ने पूछा कि आख़िर उर्दू भाषा से जुड़े पत्रकारों की अनदेखी क्यों की गई, जबकि उर्दू दिल्ली की दूसरी आधिकारिक भाषा है।' श्री गोयल ने भी भाजपा की पिछली सरकारों को याद करते हुए कहा कि, '1993 से 1998 तक दिल्ली में पहली बार भाजपा सरकार बनी थी, जिसमें मदन लाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा और कुछ महीनों के लिए सुषमा स्वराज भी मुख्यमंत्री थीं, तब न सिर्फ सरकारी स्तर पर, बल्कि पार्टी स्तर पर भी उर्दू के साथ कभी कोई भेदभाव नहीं हुआ।'

'हिंदुस्तान एक्सप्रेस' से जुड़े पत्रकार फरहान यह्या ने द वायर को बताया, 'मैं 2007 से एक्रीडेटेड पत्रकार हूं, और इससे पहले जब शीला दीक्षित और अरविंद केजरीवाल की सरकारें थीं तो हमेशा दीपावली और दूसरे मौकों पर कभी ऐसा नहीं हुआ कि भाषा की बुनियाद पर पत्रकारों के साथ भेदभाव किया गया। पहली बार ऐसा हुआ है कि उर्दू के किसी सहाफ़ी को नहीं बुलाया गया।' वो कहते हैं, 'उर्दू पत्रकारों को इस बात का दु:ख नहीं है कि उन्हें क्यों नहीं बुलाया गया, बल्कि उन्हें इस बात से ठेस पहुंची है कि इस सरकार ने भाषा के नाम पर पत्रकारों को बांटने की कोशिश की है।' फरहान का दावा है कि 'बहुत जल्द उर्दू मीडिया से जुड़े पत्रकार दिल्ली के उपराज्यपाल से मुलाक़ात करेंगे।'

अगर उर्दू मीडिया के पत्रकार अपनी शिकायत दर्ज करवाते हैं, तो यह उनका हक है, लेकिन यहीं बाकी पत्रकारों पर सवाल खड़े होते हैं कि क्या हक की इस लड़ाई में वो उर्दू पत्रकारों के साथ खड़े रहेंगे। वरिष्ठ पत्रकार और लेखक मासूम मुरादाबादी ने बताया, 'सरकार का जो रवैया उर्दू के साथ है वही रवैया उर्दू के पत्रकारों और अखबारों के साथ भी है, मौजूदा व्यवस्था में उर्दू के लिए कोई जगह नहीं है। आम आदमी पार्टी की सरकार तक उर्दू अख़बारों को इश्तिहार मिलता था, वो अब नदारद है। ये पूर्वाग्रह और संकीर्णता है, और इनका जो एजेंडा है उसमें ये कोई हैरतअंगेज बात भी नहीं है।'

रेखा गुप्ता भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व के संरक्षण में इन आरोपों से निपटने में सक्षम हैं और हो सकता है कि ये मुद्दा कुछ दिनों में दब भी जाए। लेकिन समाज इस भेदभाव की अनदेखी करता रहेगा, तो खुद के पैरों पर कुल्हाड़ी मारेगा।

अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व न मिलना चिंता का सबब

हमारे देश में ऐसी परिस्थितियां पैदा हो रही हैं कि अल्पसंख्यक तबकों को न तो संसद में और न ही राज्य विधानसभाओं में उनकी आबादी के अनुरूप प्रतिनिधित्व मिल रहा है। इस समय बिहार में हो रहे विधानसभा चुनाव के लिए जो टिकिट बांटे जा रहे हैं उनमें लालू प्रसाद यादव की पार्टी आरजेडी, कांग्रेस और कुछ अन्य दलों ने बहुत कम मुसलमानों को टिकट दिए हैं।

बिहार, उत्तरप्रदेश और बंगाल ऐसे राज्य हैं जहां मुसलमानों की खासी आबादी है। इसे मद्देनजर राजनीतिक पार्टियों को वहां मुसलमानों को भी समानुपातिक सीट देनी चाहिए। एक जमाने में काफी संख्या में मुसलमान विधायक और सांसद बनते थे।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि मध्यप्रदेश विधानसभा में 10-12 मुसलमान विधायक रहा करते थे। मंत्रीपरिषद में भी मुसलमान रहते थे, वे स्पीकर भी बनते थे। गुलशेर अहमद मध्यप्रदेश की विधानसभा के सदस्य भी रहे और उसके स्पीकर भी। उन्होंने दोनों जिम्मेदारियां बहुत खूबसूरती से निभाई। मध्यप्रदेश की परंपरा इतनी गौरवशाली थी कि कई मुस्लिम विधायक और सांसद ऐसे निर्वाचन क्षेत्रों से चुने जाते थे जहां अल्पसंख्यकों की आबादी न के बराबर थी। न सिर्फ कांग्रेस उन्हें टिकट आवंटित करती थी बल्कि वहां के वोटर इतने समझदार थे कि मुसलमानों की आबादी कम होने के बाद भी वे मुसलमान उम्मीदवार को चुनते थे। ऐसे कई उदाहरण हैं। मेरे मित्र अजीज कुरैशी सीहोर से विधायक चुने गए थे, जहां मुसलमानों की आबादी बहुत कम थी। वे सांसद भी चुने गए। वे मध्यप्रदेश की मंत्री परिषद के कई बार सदस्य रहे। कुरैशी कई राज्यों के राज्यपाल भी रहे।

एल.एस. हरदेनिया

> **समस्या यह है कि न सिर्फ मुसलमानों को बल्कि एक दूसरी अल्पसंख्यक कौम ईसाईयों को भी प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है। पहले मध्यप्रदेश की विधानसभा में ईसाई सदस्य रहते थे। वे मंत्री भी बने और वे भी ऐसे स्थानों से चुने जाते थे जहां ईसाईयों की संख्या लगभग नगण्य होती थी। देश की एक बड़ी कौम को प्रतिनिधित्व नहीं मिलना हमारी राष्ट्रीय असफलता है। हमें इस बारे में सोचना पड़ेगा।**

अब यह गौरवशाली परंपरा समाप्त हो रही है। इस समय मध्यप्रदेश की विधानसभा में सिर्फ दो विधायक मुसलमान हैं। दोनों भोपाल से हैं। इसके पिछली विधानसभा में सिर्फ एक ही मुसलमान थे, वह थे भोपाल के पुराने शहर से चुने गए आरिफ अकील।

अभी एक केन्द्रीय मंत्री ने साफ कहा है कि हमें मुसलमानों के वोट नहीं चाहिए और मुसलमानों को उन्होंने नमक हराम बताया। इससे खराब गाली और क्या हो सकती है? यदि यही स्थिति बनी रही तो एक दिन ऐसा भी आएगा जब पूरे देश में एक भी सांसद या विधायक मुसलमान नहीं होगा। ऐसी स्थिति आने के पूर्व हमारे देश के नेतृत्व को कुछ सोचना चाहिए।

अल्पसंख्यक के नाम पर हमारे देश में केवल जैन भाईयों और सिक्ख भाईयों को प्रतिनिधित्व मिलता है, वो भी इक्का-दुक्का। जैनियों की जितनी संख्या है उसकी तुलना में उन्हें काफी ज्यादा प्रतिनिधित्व मिलता है। उससे हमें कोई शिकायत नहीं है। जैन एक संपन्न कौम है। जैनियों के अनुभव और उनकी बुद्धिमत्ता उल्लेखनीय है और देश के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

मगर समस्या यह है कि न सिर्फ मुसलमानों को बल्कि एक दूसरी अल्पसंख्यक कौम ईसाईयों को भी प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है। पहले मध्यप्रदेश की विधानसभा में ईसाई सदस्य रहते थे। वे मंत्री भी बने और वे भी ऐसे स्थानों से चुने जाते थे जहां ईसाईयों की संख्या लगभग नगण्य होती थी। देश की एक बड़ी कौम को प्रतिनिधित्व नहीं मिलना हमारी राष्ट्रीय असफलता है। हमें इस बारे में सोचना पड़ेगा।

कई देशों में अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व दिया जाता है। लंदन का मेयर मुसलमान है। केनडा की संसद में कई सिक्ख भाई हैं। अमेरिका में कई भारतवासी बसते हैं, जो सीनेट एवं हाउस ऑफ रिप्रिजेन्टेटिव्स के सदस्य हैं। यहां तक कि इन देशों में भारतीय हिन्दू गवर्नर भी हैं, जज भी हैं।

यहां भारत में न सिर्फ चुने हुए प्रतिनिधियों में बल्कि देश की अनेक संवैधानिक संस्थाओं में भी अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व कम होता जा रहा है। न्यायपालिका, विशेषकर उच्च न्यायालयों, में भी ऐसी ही स्थिति बनती जा रही है। जो भी हो, राजनीति में इसका उपाय क्या है? जब मतदाता उन्हें नहीं चुनेंगे तो फिर उनका प्रतिनिधित्व कैसे होगा।

मैं पाकिस्तान गया था। वहां की संसद की डेपुटी स्पीकर से मेरी मुलाकात हुई। उनसे मैंने पूछा कि आपके देश में बहुत सारे हिन्दू भाई रह रहे हैं जो आपके देश के विकास में योगदान दे रहे हैं और यदि वे चुनकर नहीं आते हैं आप क्या करती हैं? उन्होंने कहा कि यदि एक भी हिन्दू चुनकर नहीं आता तो हम उनको मनोनीत करते हैं। दुनिया में इस तरह के और भी देश होंगे जहां अल्पसंख्यक यदि चुनाव से प्रतिनिधित्व हासिल नहीं कर पाते तो उन्हें मनोनीत किये जाने का प्रावधान होगा। इतनी बड़ी आबादी-चाहे वह मुसलमानों की हो या ईसाईयों की, उनका देश की प्रगति में योगदान न हो यह कल्पना के बाहर की चीज है।

ईसाईयों ने हमारे देश के विकास में बहुत मदद की है। सारे देश में ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित स्कूल और अस्पताल हैं। वे परोपकार के बहुत सारे काम करते हैं। उनका एक भी प्रतिनिधि मध्यप्रदेश विधानसभा में न होना क्या चिंता की बात नहीं है? मेरी समझ में इस चिंतनीय स्थिति को देखते हुए हमारी संसद और विधानसभाओं को सोचना चाहिए कि अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व कैसे दिलाया जाए। क्या मनोनयन के जरिए? या आनुपातिक प्रतिनिधित्व के जरिए? या किसी और तरीके से? बिहार, बंगाल, उत्तरप्रदेश ऐसे राज्य हैं जहां मुसलमानों की संख्या काफी है। इन राज्यों में तो इस तरह का प्रबंध होना ही चाहिए। बिहार के चुनाव के बाद क्या स्थिति उभरकर आती है यह देखा जाना बाकी है। भले ही बड़े राजनैतिक दलों ने उन्हें पर्याप्त संख्या में टिकट न दिया हो, मगर यह देखा जाना बाकी है कि क्या वे किसी छोटी-मोटी पार्टी से या निर्दलीय उम्मीदवार के रुप में चुनकर आते हैं या नहीं। हमें इसका इंतजार करना होगा।

बिहार विधानसभा के नतीजों के दिन यह साफ हो जाएगा कि बिहार, जहां बहुत गौरवपूर्ण परंपराएं रही हैं, वहां के मतदाताओं ने इस चुनाव में क्या किया।

आपके पत्र

पर्यावरण प्रदूषण शुद्ध वायु और विकास में प्रतिद्वंदिता

लीजिए फिर से शीतकाल आ गया और इस समय सभी महानगरों समेत मध्य क्रम के बड़े शहरों में भी पर्यावरण प्रदूषण अपने चरम पर होता है। बच्चे तथा बूढ़े इसके सर्वाधिक शिकार होते हैं और पर्यावरण प्रदूषण के कारण हर वर्ष हजारों लोगों की मृत्यु हो जाती है। यह क्रम हर वर्ष का है लेकिन न तो आम जनता इसमें सावधानी बरतनी है और न ही शासन प्रशासन, यह प्रक्रिया लगातार बदस्तूर जारी रहती है। आइये इसकी वर्तमान स्थिति और पर्यावरण प्रदूषण से बचने के उपायों पर चर्चा करने का प्रयास करते हैं।

वर्तमान समय में पर्यावरण और वायु प्रदूषण का संकट भारत जैसे विकासशील देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में खड़ा है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु, चेन्नई, अहमदाबाद और हैदराबाद जैसे महानगर आज सांस लेने के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं। प्रदूषित हवा में नागरिकों की दिनचर्या घुटती जा रही है। दिल्ली, जो विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में गिनी जाती है, वहा २.५ का औसत स्तर 100 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से ऊपर दर्ज किया गया है — जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन की सीमा केवल 5 माइक्रोग्राम है। भारत में वायु प्रदूषण के कारण प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख लोगों की मृत्यु होती है, जो किसी मौन महामारी से कम नहीं।

राजधानी दिल्ली की वायु में अब वह ठंडक नहीं रही जो कभी यमुना किनारे के पेड़ों की छांव में महसूस होती थी। हवा में घुला धुआं और धूल अब बच्चे के खेलते फेफड़ों तक पहुंच चुका है। शहरी नागरिक अस्थमा, एलर्जी, ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों के कैंसर जैसी बीमारियों से जूझ रहे हैं। दिल्ली में अकेले 12 हज़ार से अधिक मौतें हर वर्ष वायु प्रदूषण से जुड़ी पाई गई हैं। यही नहीं, मुंबई और कोलकाता जैसे शहरों में भी प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। बेंगलुरु और हैदराबाद, जो कभी 'हरित नगर' कहे जाते थे, अब यातायात और औद्योगिक विस्तार की वजह से धुएं के बादलों में ढंके रहते हैं।

यह विडंबना है कि हमारे देश में पर्यावरण और राजनीति अब एक-दूसरे के विरोधी शब्द बन गए हैं। दिल्ली में प्रदूषण पर चर्चा संसद से लेकर सड़कों तक होती है, पर समाधान हाथ नहीं आता। केंद्र और राज्य सरकारें आरोप-प्रत्यारोप में उलझी हैं, जबकि हवा हर दल के मतदाताओं के फेफड़ों में समान रूप से प्रवेश कर रही है। यही स्थिति वैश्विक स्तर पर भी है — जहां जलवायु परिवर्तन को लेकर सैंकड़ों घोषणाएं होती हैं, वहीं धरातल पर वनीकरण और स्वच्छ ऊर्जा की गति बेहद धीमी है। आर्थिक विकास के नाम पर मनुष्य ने प्रकृति से जितना लिया, लौटाया बहुत कम। उद्योग, खनन, नदी, बांध और शहरीकरण ने धरती के संतुलन को तोड़ा। पर्वतों को काटा गया, नदियों को बांधा गया, जंगलों को उजाड़ा गया— और अब वही प्रकृति अपने मौन प्रतिशोध में जलवायु परिवर्तन के रूप में खड़ी है।

-संजीव ठाकुर

ललित सुरजन की कलम से

दीपावली पर सिलयारी व कोनी के संदेश

'दीपावली के साथ धूम-धड़ाका, चकाचौंध और पूजा-पाठ जुड़ा है, उसे थोड़ी देर के लिए नजरअंदाज कर दें तो फिर समझ में आता है कि यह त्यौहार भारत के सामाजिक जीवन में भौतिक प्रगति की कामना को, सुख-समृध्दि की आशा को व्यक्त करने का सबसे महत्वपूर्ण अवसर है। जिनके पास सब कुछ या काफी कुछ है, उनकी कोशिश होती है कि लक्ष्मी रूठ कर न जाएं और जिनके पास कुछ नहीं अथवा बहुत कम है वे मनाते हैं कि लक्ष्मी एक बार तो उनकी देहरी लांघ कर भीतर आ जाएं। गरज यह है कि सब अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार ऐश्वर्य की देवी को रिझाने में लगे रहते हैं। यह साल का एकमात्र अवसर होता है जब औसत भारतीय उस आडंबर का लबादा उतार देता है कि भारत भौतिकवादी नहीं, बल्कि आध्यात्मवादी समाज है। यह अलग बात है कि वह अपनी भौतिक इच्छा को भी कर्मकांड में लपेट कर पेश करता है।'

(देशबंधु में 31 अक्टूबर 2013 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2013/10/blog-post_30.html

पावन प्रसंग

भाई दूज: प्रेम और अपनापन बना रहे

दीवाली के बाद का शांत उजाला जब धीरे-धीरे घरों में उतरता है, तब आती है भाई दूज की सुबह — मिठास और ममता से भरी। बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाती हैं, आरती करती हैं और मन ही मन यह कामना करती हैं कि उनका भाई सदा सुखी रहे। बदले में भाई बहन को उपहार देता है और यह वादा कि जीवनभर उसका साथ निभाएगा। यह दृश्य जितना सरल लगता है, उतना ही गहरा भी है। क्योंकि यह सिर्फ एक तिलक नहीं, रिश्तों में भरोसे, सुरक्षा और प्रेम की लकीर खींचने का संस्कार है।

त्योहार अब सिर्फ़ रस्म नहीं, रिश्तों की परीक्षा बनते जा रहे हैं। सवाल यह है कि क्या हमारे दिलों में अब भी वही स्नेह बचा है? भाई दूज सिर्फ तिलक और मिठाई का त्योहार नहीं, बल्कि रिश्तों की वह डोर है जो समय की रफ़्तार में भी स्नेह का रंग बनाए रखती है पर बदलते दौर में जहां मुलाकातें वीडियो कॉल पर सिमट गई हैं और तिलक डिजिटल इमोजी बन गया है, वहां यह सवाल उठता है कि क्या रिश्तों की गर्माहट अब भी वैसी ही है? भाई दूज हमें याद दिलाता है कि प्रेम केवल परंपरा नहीं, आत्मीयता का अभ्यास है। यह त्योहार हमें अपने व्यस्त जीवन में अपनापन लौटाने का अवसर देता है। भाई दूज का पर्व केवल बहन की पूजा नहीं, बल्कि उस भावनात्मक संतुलन का प्रतीक भी है, जिसमें भाई सुरक्षा देता है और बहन संवेदना। दोनों एक-दूसरे की जरूरत बनकर रिश्तों के समाज का ढांचा खड़ा करते हैं। लेकिन आज की पीढ़ी में यह रिश्ता धीरे-धीरे औपचारिक होता जा रहा है। शहरों में बढ़ती व्यस्तता, प्रवास, और आत्मनिर्भर जीवनशैली ने भाई-बहन के रिश्तों को एक 'मौके की मुलाकात' बना दिया है।

जहां पहले भाई अपनी बहन के घर जाकर दिन भर का समय उसके परिवार के साथ बिताता था, अब वह मुलाकात कुछ मिनटों या वीडियो कॉल तक सीमित रह जाती है। बहनें भी अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, भावनात्मक रूप से मज़बूत हैं, और जीवन के हर फैसले खुद लेती हैं। यह बदलाव सकारात्मक भी है, क्योंकि अब बहनें सुरक्षा की मोहताज नहीं, बल्कि बराबरी के आत्मसम्मान की प्रतीक हैं। मगर इस बराबरी के दौर में भी रिश्तों की गर्माहट बने रहना जरूरी है।

त्योहारों का उद्देश्य ही यही होता है—रिश्तों को दोबारा गढ़ना, दूरी मिटाना। भाई दूज हमें हर साल यह याद दिलाती है कि रिश्तों का पोषण केवल खून से नहीं, व्यवहार से होता है। लेकिन आधुनिकता की रफ्तार ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हम भावनाओं को भी समय-सारिणी में बांधने लगे हैं। कभी-कभी लगता है कि त्योहारों की भी अपनी भाषा होती है, जो हमें वह सब याद दिलाती है जिसे हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भूल जाते हैं। भाई दूज की भाषा है—स्मृति और स्नेह की। यह पर्व हमें उस समय में ले जाता है जब हम बिना कारण किसी की परवाह करते थे, जब रिश्ते लेन-देन नहीं, जीवन का आधार थे। इस पर्व के बहाने हमें अपने भीतर झांकना चाहिए—क्या हम अब भी उतने ही आत्मीय हैं जितने बचपन में थे? अगर इस सवाल का उत्तर 'हां' है तो यह त्योहार जीवित है और अगर उत्तर 'न' है, तो हमें इसे फिर से जीवित करना होगा।

— डॉ. प्रियंका सौरभ

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

चर्चा में लोकपाल

यह वाकई हैरान करने वाली बात है कि भ्रष्टाचार निरोधक शीर्ष संस्था लोकपाल का जिक्र भ्रष्टाचार की शिनाख्त या भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय लग्जरी कारों की खरीद के मामले में सामने आया है. लोकपाल ने हाल ही में लगभग पांच करोड़ रुपये में सात लग्जरी बीएमडब्ल्यू कारों की खरीद के लिए टेंडर जारी किया है, जिसकी विपक्ष और भ्रष्टाचार विरोधी कार्यकर्ताओं ने तीखी आलोचना की है. बताया गया है कि इस खरीद का उद्देश्य संस्था के प्रत्येक सदस्य को, जिनमें अध्यक्ष समेत छह अन्य सदस्य शामिल हैं, एक-एक वाहन उपलब्ध कराना है. गौरतलब है कि लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम 2013 में बना और 2014 में लागू हुआ. लोकपाल में एक अध्यक्ष और अधिकतम आठ सदस्य होते हैं, जिनमें से आधे न्यायिक पृष्ठभूमि के होते हैं. जबकि इसके अध्यक्ष आमतौर पर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश या पूर्व प्रधान न्यायाधीश होते हैं. वर्ष 2019 में पहले लोकपाल की नियुक्ति हुई थी. विपक्षी पार्टियों का कहना है कि पांच करोड़ रुपये का टेंडर जारी करना फिजूलखर्ची का प्रदर्शन है, जो संस्था के मूल उद्देश्य को कमजोर करता है. विपक्ष का सवाल यह भी है कि इन कारों की खरीद के लिए जनता का पैसा क्यों खर्च किया जाये. दरअसल जिन कारों का टेंडर लोकपाल ने निकाला है, उनमें से एक कार की कीमत लगभग 70 लाख रुपये है. लोकपाल की यह खरीद इसलिए भी सवालों के घेरे में आयी है, क्योंकि इस संस्था का मकसद जनहित और पारदर्शिता से जुड़ा हुआ है. वरिष्ठ कांग्रेसी नेता पी चिदंबरम ने सवाल उठाया है कि जब सर्वोच्च न्यायालय के जज सरकारी सिडान कारों से काम चलाते हैं, तो लोकपाल जैसी संस्था को इतनी महंगी कारों की जरूरत क्यों है. इस टेंडर की आलोचना करने वालों में नीति आयोग के पूर्व सीइओ अमिताभ कांत भी हैं. उन्होंने लोकपाल से इस टेंडर को रद्द कर देश में बनी इलेक्ट्रिक कारें खरीदने की सलाह दी है. ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि टेंडर जारी किये जाने के बाद से लोकपाल के अब तक के कामकाज का मूल्यांकन भी शुरू हो चुका है और कहा जा रहा है कि इसने अब तक ज्यादातर छोटे-मोटे अधिकारियों के खिलाफ ही कार्रवाई की है. अगर यह सच है कि 2019 में गठन के बाद से लोकपाल को 8,703 आवेदन मिले हैं, जिनमें से केवल 24 मामलों की जांच हुई और छह अभियोजन स्वीकृत हुए, तो यही अपने आप में भ्रष्टाचार निरोधक इस शीर्ष संस्था के बारे में बताने के लिए काफी है.

हाल ही में लोकपाल ने करीब पांच करोड़ रुपये में सात लग्जरी बीएमडब्ल्यू कारों की खरीद का टेंडर जारी किया है, जिसकी आलोचना हो रही है. लोकपाल की यह खरीद इसलिए भी सवालों के घेरे में है, क्योंकि इस संस्था का मकसद जनहित और पारदर्शिता से जुड़ा हुआ है.

ट्रंप का रुख तय करेगा भारत से बेहतर रिश्ता

अनिल त्रिगुणायत
पूर्व राजनयिक
amb.trigunayat@gmail.com

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दीपावली के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी को फोन कर बधाई दी. इससे ऐसा लगता है कि वह भारत के साथ बेहतर रिश्तों के आकांक्षी हैं. लेकिन अभी तक उन्हीं की टिप्पणियों से रिश्तों में बाधा आयी है. हाल में उन्होंने फिर कहा था कि प्रधानमंत्री मोदी ने रूस से तेल आयात खत्म करने का उनसे वादा किया है. इस पर भारतीय विदेश मंत्रालय को प्रेस ब्रीफिंग कर इसका खंडन करना पड़ा था. बातचीत और आचरण में ट्रंप का जिम्मेदार रवैया ही भारत के साथ अमेरिकी रिश्तों को पटरी पर ला सकता है.

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दीपावली के अवसर पर व्हाइट हाउस में दीये जलाये और भारतीय समुदाय को दीपोत्सव की बधाई दी. इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी को उन्होंने टेलीफोन पर बधाई भी दी. ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी को महान बताते हुए उनसे अपनी मित्रता की बात कही और भी बताया कि उनके साथ व्यापार के मुद्दे पर बातचीत हुई है. दरअसल, भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते पर सहमति बनाने के लिए बातचीत चल रही है. ट्रंप का इशारा उसी तरफ रहा होगा. प्रधानमंत्री मोदी ने भी सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दीपावली की बधाई देने के लिए ट्रंप का आभार जताया और यह उम्मीद व्यक्त की कि दो महान लोकतंत्र आतंकवाद के सभी रूपों के विरुद्ध एकजुट रहेंगे.

इससे पहले मिस्र के शर्म अल शेख में हुए गाजा शांति सम्मेलन की बैठक में भी ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी की प्रशंसा की थी. तब उन्होंने पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के सामने ही भारत को एक महान देश कहते हुए मोदी को अपना खास दोस्त बताया था. लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ मुश्किल यह है कि अपने रुख से वह कब पलट जायें, इसका कुछ पता नहीं चलता. अपने अहंकार के आगे वह किसी को कुछ नहीं समझते. चूंकि प्रधानमंत्री मोदी ने गाजा शांति समझौते में ट्रंप की भूमिका की प्रशंसा की है, इस कारण भी ट्रंप के रुख में भारत के प्रति थोड़ी नरमी आयी है. अन्यथा वह यह कभी नहीं भूल सकते कि भारत-पाकिस्तान के बीच कथित संघर्षविराम कराने के उनके दावे का भारत ने लगातार खंडन ही किया है. यही नहीं, भारतीय उत्पादों पर टैरिफ का बोझ लाद देने के बाद नयी दिल्ली ने दुनिया के दूसरे देशों के साथ कारोबार बढ़ाने का रास्ता चुना. ट्रंप अब तक भारत पर 50 फीसदी टैरिफ लगा चुके हैं. इनमें से 25 प्रतिशत टैरिफ रेसीप्रोकल- यानी जवाबी टैरिफ है. जबकि शेष 25 प्रतिशत रूस से तेल खरीदने के लिए पेनल्टी है. भारत के साथ अमेरिका के रिश्तों में मुश्किल दरअसल यह है कि ट्रंप बार-बार जिस तरह झूठ या अर्धसत्य का सहारा लेते हैं, वह दोतरफा रिश्तों को बाधित ही ज्यादा करता है. भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्षविराम कराने के कथित दावे की तरह ट्रंप कई बार यह झूठा दावा कर चुके हैं कि भारत ने रूस से कच्चा तेल न खरीदने के बारे उन्हें आश्वस्त किया है. हाल ही में जब ट्रंप ने फिर यह बात कही कि प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे रूसी तेल न खरीदने का वादा किया है, तो भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने प्रेस बीफिंग में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के बीच कोई बातचीत नहीं हुई थी. यही नहीं, कच्चे तेल की खरीद की भारतीय नीति के बारे में सफाई देते हुए विदेश मंत्रालय ने कहा कि 'भारत तेल और गैस का बड़ा खरीदार है. जनता के हितों की रक्षा करना हमारी प्राथमिकता है और हमारी आयात नीतियां इसी मकसद को पूरा करती हैं.' ट्रंप के दावे के उलट भारत ने पिछले महीने, यानी सितंबर में कुल तेल आयात का 34 प्रतिशत रूस से मंगाया. यह जरूर है कि तेल आयात में विविधीकरण के तहत देश की सरकारी तेल कंपनियों ने रूस से तेल आयात में थोड़ी कटौती की है, लेकिन निजी रिफाइनरी कंपनियों ने रूसी तेल की खरीद बढ़ा दी है.

यह बात अमेरिका को भी पता है कि रूस से कच्चा तेल खरीद कर भारत तेल की वैश्विक कीमत को स्थिर रखने में मदद ही कर रहा है. इसके बावजूद ट्रंप ऐसी अनर्गल और निराधार बात बोल रहे हैं. जबकि सच्चाई यह है कि हाल के दौर में तेल खरीद में विविधीकरण के तहत भारत 17-18 देशों से कच्चा तेल खरीद रहा है. इस बीच अमेरिका से भी तेल की खरीद बढ़ी है. लिहाजा तेल खरीद की हमारी नीति पर सवाल उठाने का ट्रंप को कोई अधिकार नहीं है. यह भी स्पष्ट है कि रूस से तेल खरीदना अवैध या गैरकानूनी नहीं है, क्योंकि रूसी तेल पर किसी किस्म का प्रतिबंध नहीं है, हां, उस पर कैप लगा है. यानी उसकी कीमत तुलनात्मक रूप से कम है. असल में ट्रंप की खिसियाहट का एक बड़ा कारण यह है कि भारतीय उत्पादों पर टैरिफ का बोझ लाद दिये जाने के बावजूद नयी दिल्ली ने उनके सामने समर्पण नहीं किया. हम दूसरे देशों से अपने कारोबारी रिश्ते मजबूत कर रहे हैं. वाणिज्य मंत्रालय ने जो नया आंकड़ा जारी किया है, उसके मुताबिक, अप्रैल से सितंबर तक, यानी मौजूदा वित्त वर्ष की पहली छमाही में हमारा कुल निर्यात पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 18 अरब डॉलर अधिक रहा है. इस दौरान इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक सामान, औषधि, रसायन, रत्न एवं आभूषण तथा चावल के निर्यात में अच्छी वृद्धि देखी गयी, जबकि गैर पेट्रोलियम निर्यात पहली छमाही में 189.49 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो अब तक का सर्वाधिक आंकड़ा है. यानी ट्रंप द्वारा अड़ंगा लगाने के बावजूद भारतीय निर्यात बढ़ रहा है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का ही उदाहरण है.

अनर्गल बातें कहने के बजाय ट्रंप को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए. उनका आरोप है कि रूस से सस्ता तेल खरीद कर भारत यूक्रेन युद्ध को हवा दे रहा है और रूस की मदद कर रहा है. हकीकत यह है कि रूस से दोस्ती में ट्रंप खुद पीछे नहीं हैं. विगत अगस्त में ट्रंप ने अलास्का में पुतिन के साथ मुलाकात की थी. पर उस बैठक का कोई नतीजा नहीं निकला था. ट्रंप और पुतिन फिर हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में मिलने वाले थे. हालांकि ट्रंप ने यह कहते हुए बैठक टाल दी है कि वह पुतिन के साथ ऐसी बैठक नहीं करना चाहते, जो 'बेकार' साबित हो. लेकिन व्हाइट हाउस ने साथ ही यह भी कहा है कि दोनों नेताओं के बीच फोन पर 'अच्छी' बातचीत हुई और अब मुलाकात जरूरी नहीं है. एक तरफ ट्रंप पुतिन से दोस्ताना रिश्ते रखते हैं, दूसरी तरफ यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को खरी-खोटी सुनाते हैं. इससे तो यही साबित होता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति का झुकाव रूस की तरफ है. फिर वह यह आरोप कैसे लगा सकते हैं कि रूस-यूक्रेन युद्ध को भारत वित्तपोषित कर रहा है? देखने वाली बात यह भी है कि अमेरिका द्वारा बुडापेस्ट में होने वाली शिखर वार्ता रद्द कर देने के साथ ही रूस की तरफ से यूक्रेन पर हमले तेज हो गये हैं. यह साफ-साफ बताता है कि यूक्रेन युद्ध खत्म करने में ट्रंप कामयाब नहीं हो पा रहे. यह अजीब है कि अपनी विफलता छिपा कर अमेरिकी राष्ट्रपति दूसरों की आलोचना कर रहे हैं. बातचीत और आचरण में उनका जिम्मेदार रवैया ही भारत के साथ अमेरिकी रिश्तों को पटरी पर ला सकता है.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

ओलिंपिक का प्रवेश द्वार है कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी

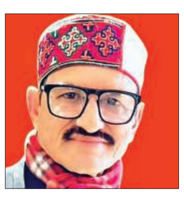

मीर रंजन नेगी
पूर्व अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी व प्रशिक्षक
mirranjan@gmail.com

मेरी नजर में, कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी मिलना भारत के बढ़ते आत्मविश्वास, क्षमता और प्रतिबद्धता का प्रतीक है. यह इस बात का भी संकेत है कि विश्व पटल पर खेलों के एक पावर हाउस के रूप में हम उभर रहे हैं. यह 2036 के ओलिंपिक की मेजबानी की दावेदारी की तरफ एक मजबूत कदम है.

कॉमनवेल्थ गेम्स की ग्लोबल गवर्निंग बॉडी के एग्जीक्यूटिव बोर्ड ने अहमदाबाद को 2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स के मेजबान शहर के तौर पर सिफारिश की है. इस सिफारिश पर औपचारिक मुहर 26 नवंबर को ग्लासगो में होने वाली कॉमनवेल्थ स्पोर्ट की जनरल असेंबली मीटिंग में लगेगी. इस तरह लगभग यह तय हो गया है कि 2030 में इस अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन का मेजबान भारत होगा. मेरी नजर में, इस खेल की मेजबानी मिलना, 2036 में ओलिंपिक की मेजबानी करने के भारत के प्रयासों का प्रवेश द्वार है. यह भारत के बढ़ते आत्मविश्वास, क्षमता और प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है. यह इस बात का भी संकेत है कि विश्व पटल पर खेलों के एक पावर हाउस के रूप में हम उभर रहे हैं. इससे ओलिंपिक की मेजबानी करने का हमारा जो सपना है, उसे एक नया आयाम मिलेगा, एक नयी दिशा मिलेगी. सच कहें, तो यह 2036 के ओलिंपिक की मेजबानी की दावेदारी की तरफ एक मजबूत कदम है.

कॉमनवेल्थ गेम्स में 70 से अधिक देश भाग लेंगे. इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह खेल प्रतिस्पर्धा काफी बड़े पैमाने पर आयोजित की जायेगी. ऐसे में इस खेल आयोजन को सफल बनाने के लिए जो भी व्यवस्था की जायेगी, वह उच्च स्तरीय होनी चाहिए, ठीक वैसी जैसी ओलिंपिक के दौरान होती है. इस तरह की खेल सुविधाएं- जिन्हें सस्टनेबल स्पोर्ट्स इकोसिस्टम कहते हैं- विशेषकर जो हमारे युवा वर्ग हैं, उन्हें खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा. इस इकोसिस्टम के तहत जब हमारे युवा खिलाड़ी तैयार होकर निकलेंगे, तो उन्हें बहुत लाभ मिलेगा. क्योंकि सच तो यही है कि अपने देश में बहुत कम जगह पर ही अंतरराष्ट्रीय स्तर की अवसंरचनाएं मौजूद हैं. दूसरी बात, जब भी इस तरह के आयोजन होते हैं, तो देश में खेलों को लेकर एक जुनून पैदा होता है और इससे देश की खेल संस्कृति को मजबूती मिलती है, जो अंततः बेहतर खिलाड़ियों के उभरने और सफल खेल आयोजन के रूप में परिणत होती है. उदाहरण के लिए, ओलिंपिक खेलों में जब सायना नेहवाल और पीवी सिंधु ने पदक जीते, तो देश की लड़कियों के बीच बैडमिंटन खेलने का माहौल बन गया. जबकि इससे पहले तक बैडमिंटन को लेकर लड़कियों के बीच इस तरह का जुनून नहीं था. जब देश में इतनी बड़ी अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा आयोजित की जायेगी, तो उम्मीद है कि उसके लिए तैयारियां भी उसी स्तर पर होंगी. इनसे अनगिनत लोगों को रोजगार तो मिलेगा ही, बड़ी संख्या में आगंतुकों के आने से अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी. हालांकि इसमें सरकार को बहुत पैसे खर्च करने पड़ेंगे, पर इससे देश की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी.

जहां तक खिलाड़ियों की बात है, तो अपने देश में, अपने लोगों के सामने खेलने का अपना अलग ही आनंद होता है. हालांकि, यह भी सच है कि जो होम टीम होती है, उसके अपने लाभ तो होते ही हैं, पर हानि भी होती है. अपने घर में खेलने का दबाव बहुत होता है. तो यहां आपको अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा और इसके लिए मानसिक मजबूती की जरूरत होगी. ऐसे में कोच व खिलाड़ी दोनों को मानसिक मजबूती के लिए काम करना होगा. कोच और खिलाड़ियों को प्रशिक्षण को लेकर भी पूरी सावधानी बरतनी होगी. आजकल ऐसी ट्रेनिंग होती है, जिसमें खिलाड़ियों के चोटिल होने का खतरा कई बार बहुत बढ़ जाता है. कई बार कोच अपने स्टूडेंट पर यह दबाव बनाते हैं कि वह थोड़ी देर और प्रैक्टिस कर ले, इस चक्कर में भी कई बार खिलाड़ी चोटिल हो जाते हैं. इससे उन्हें बचना होगा. इस तरह के आयोजन कोच के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं. इस दौरान उन्हें दूसरे अंतरराष्ट्रीय स्तर के कोच के साथ संवाद करने का अवसर मिलता है, उनके अनुभव से सीखने को मिलता है. यह एक कोच को दूसरे कोच की मानसिकता को समझने का भी अवसर होता है, जिसका लाभ उन्हें खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करते समय मिलता है. कॉमनवेल्थ गेम्स में अपने देश में खेलते हुए खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के खेल के तरीके, उनकी रणनीतियों को समझकर अपने खेल को बेहतर बना सकते हैं और ओलिंपिक जैसे खेलों के महाकुंभ में अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकते हैं. हालांकि एक तथ्य यह भी है कि जो खिलाड़ी कॉमनवेल्थ 2030 में खेलेंगे, उनमें से 70-80 प्रतिशत खिलाड़ी ओलिंपिक 2036 में नहीं खेल पायेंगे, क्योंकि उनकी उम्र अधिक हो चुकी होगी. लेकिन, जो युवा खिलाड़ी हैं, जो उभरते हुए खिलाड़ी हैं, वे निश्चित तौर पर इससे प्रेरित होंगे, उन्हें दूसरे देश के महान खिलाड़ियों से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलेगा.

यहां सरकार की जवाबदेही भी काफी बढ़ जाती है. समय पर उच्च स्तरीय अवसंरचनाओं का निर्माण करना कोई हंसी-खेल नहीं है. इसके लिए युद्धस्तर पर तैयारी करनी होगी. तैयारी में किसी तरह की कोई कमी न रहे, इसकी निगरानी करनी होगी. जब हम ऐसा करेंगे तभी जाकर सच्चे अर्थों में 2036 ओलिंपिक की मेजबानी की दावेदारी कर पाने में सक्षम हों पायेंगे, क्योंकि ओलिंपिक में 200 से अधिक देश भाग लेते हैं. इस आयोजन के लिए सुरक्षा व्यवस्था भी चाक-चौबंद होनी चाहिए. इसमें तनिक भी चूक देश की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला देगी.

(बातचीत पर आधारित)(फिल्म 'चक दे इंडिया' लेखक के जीवन पर आधारित है.)

देश दुनिया

दक्षिण-पूर्व एशिया में तेजी से कम हो रहा है तंबाकू का सेवन

तंबाकू का इस्तेमाल खत्म करने की कोशिश में दक्षिण-पूर्व एशिया सबसे आगे है. वर्ष 2010 के बाद से यहां तंबाकू के सेवन में भारी कमी आयी है. पहले यहां तंबाकू का प्रति व्यक्ति सेवन पूरी दुनिया में सबसे अधिक था, पर डब्ल्यूएचओ की नयी सूची में यह दूसरे स्थान पर आ गया है. अब यूरोप इस सूची में सबसे ऊपर है. इक्कीसवीं शताब्दी की शुरुआत में दक्षिण-पूर्व एशिया में 15 वर्ष या उससे अधिक आयुवर्ग में हर दो में से एक व्यक्ति तंबाकू का सेवन करता था. लेकिन बदलते रुझान के बीच अनुमान है कि 2030 तक यहां पांच में से केवल एक व्यक्ति ही तंबाकू का इस्तेमाल करेगा. वर्ष 2010 में डब्ल्यूएचओ ने आगामी 15 वर्षों में तंबाकू सेवन को 30 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य रखा था. अब तक केवल दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और अमेरिका ही इस लक्ष्य को हासिल करने की राह पर हैं. डब्ल्यूएचओ के ताजा आंकड़े बताते हैं कि तंबाकू के इस्तेमाल में हर जगह कमी आ रही है. वर्ष 2010 की तुलना में आज दुनिया में कम से कम 12 करोड़ कम लोग धूम्रपान करते हैं. दक्षिण-पूर्व एशिया में 50 प्रतिशत से अधिक धूम्रपान करने वालों ने यह लत छोड़ दी है. हालांकि, दुनिया की लगभग 20 प्रतिशत जनसंख्या अभी भी तंबाकू का सेवन करती है, और यह केवल सिगरेट तक ही सीमित नहीं है. इन उत्पादों में चबाने वाले तंबाकू और ई-सिगरेट भी शामिल हैं. आंकड़े बताते हैं कि घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जहां तंबाकू के सेवन में कमी आयी है, वहीं अधिक आय वाले देशों में तंबाकू उत्पादों के सेवन की दर धीमी गति से कम हो रही है. भारी गिरावट के बावजूद दक्षिण-पूर्व एशिया अब भी दुनिया के एक-चौथाई तंबाकू उपभोक्ताओं का घर है. यहां सिगरेट पीने वालों की संख्या में तो भारी गिरावट आयी है, परंतु बिना धुएं वाले उत्पादों, जैसे चबाने वाला तंबाकू, गुटखा आदि का इस्तेमाल काफी बढ़ा है.

Deutsche Welle

मैथ्यू वार्ड आगीयूस

बोधि वृक्ष

दूसरों के लिए जीना

हम ज्यादातर उन लोगों के दृष्टांत से प्रेरित होते हैं जिन्होंने दूसरों को बचाने के लिए अपना जीवन खतरे में डाल दिया. हम उन वीरों का सम्मान करते हैं जिन्होंने अपने देश के लिए प्राण त्याग दिये. संतों-महापुरुषों के अनुसार, सेवा हमारे जीवन के सबसे महान कार्यों में से एक है. पर ऐसा बहुत कम होता है कि एक आम मनुष्य को किसी दूसरे को बचाने के लिए अपने जीवन के त्याग का निर्णय लेना पड़े. हमारे दैनिक जीवन में ऐसे बहुत से मौके आते हैं, जब हम किसी दूसरे की सहायता अपने समय, धन, साधन या अपनी प्रतिभा द्वारा कर सकते हैं. सच्ची निष्काम सेवा के दायरे में परिवार के साथ-साथ सारी मानवता की सेवा करना भी शामिल है. सभी के लिए प्रेम की भावना और सबकी सहायता करना सदाचारी जीवन के गुणों में से एक है. सृष्टि में सिर्फ मनुष्य को ही दूसरों से प्रेम करने और सहायता करने का ईश्वरीय गुण मिला हुआ है, जिसे हम सहानुभूति कहते हैं. हमें यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि दूसरे चाहे अपने बारे में ही चिंतित हों, फिर भी हमें अपना दिल खोलकर दूसरों के दुख-दर्द में शामिल होना चाहिए. जब हम किसी की सहायता करते हैं, तब हमारा दिल विशाल होने लगता है और तभी हमें आंतरिक शांति, आनंद और खुशी की प्राप्ति होती है. दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने दूसरों की मदद करने के लिए स्वयं को समर्पित किया है. वैज्ञानिकों ने लोगों के जीवन को अधिक सुरक्षित और आरामदायक बनाने के लिए अनेक आविष्कार किये हैं. इसी तरह डॉक्टरों ने भी अनेक बीमारियों का इलाज करने के लिए अथक परिश्रम किया है. कुछ अन्य लोगों ने दूसरों की स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए अपनी जान दे दी. इसी प्रकार, कई संतों-महापुरुषों ने दूसरों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया. आइए! उन महान लोगों की तरह हम भी इस संसार में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में अपना योगदान दें और प्रभु द्वारा दी गयी अपनी क्षमता, ज्ञान और प्रतिभा का प्रयोग दूसरों की भलाई के लिए करें. तभी हम सही मायनों में दूसरों के लिए जियेंगे.

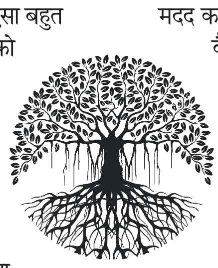

-संत राजिंदर सिंह जी महाराज

कुछ अलग

पर्यावरण की भलाई के लिए कदम

संतोष उत्सुक
टिप्पणीकार
santoshutsuk@gmail.com

इस साल खूब बारिश हुई. कई जगह तो पानी कहर बन कर बरसा. प्रशासन परंपरागत शैली में ध्वस्त, ड्रेनेज सिस्टम अस्त-व्यस्त और आम आदमी मजबूरन पस्त रहा. लापरवाही हमेशा की तरह तैरती रही. आपदा में भी अवसर खोजने की परंपरा बहती रही. शासन और प्रशासन जिम्मेदार लोगों से बार-बार आग्रह करता रहा, सामाजिक मीडिया और समाचार पत्रों में अपील करता रहा, पर मनुष्य का वातावरण और पर्यावरण के प्रति रुख बदलता नहीं दिखा.

भाषण देने वाले पूरे आत्मविश्वास के साथ कहते हैं कि वातावरण में जागरूकता लाकर ही जंगल बचाया जा सकता है और पर्यावरण तथा जमीन को सुरक्षित रखा जा सकता है. उन्हें ध्यान नहीं रहता कि समाज अब पहले जैसा नहीं रहा. पर्यावरण बचाने के लिए वृक्ष लगाने, पानी देने और रक्षा करने से ज्यादा आसान है आरामदायक जगह बैठक, बैनर, रैली और लंबा जुलूस निकालना. व्यावहारिक कर्म में विश्वास रखने वाले परिषद के अध्यक्ष, रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हैं. रैली में भाग लेने वाले नारे लगाने से पहले पानी, खाना, मौसमी फलों का भोग लगाते हैं. काफी पैसे तो टी शर्ट्स और उन पर 'वी लव अवर ग्रीन एनवायरनमेंट' छपवाने, दस्ताने और हरी टोपियां खरीदने में ही खर्च हो जाते हैं. ऐसी रैलियों में कुछ विशिष्ट लोग भी शामिल रहते हैं जिन्होंने पेड़ कटवाकर अवैध कॉलोनी का निर्माण करवाया है. ऐसे वातावरण में बेचारा पर्यावरण अपने संरक्षण के ख्वाब देखता रह जाता है. सूचनाओं के अंबार में फंसे अधिकांश नागरिक भली-भांति जानते, मानते और समझते हैं कि पर्यावरण बचाना, संवारना, संरक्षित और सुरक्षित करना बहुत जरूरी है. इस संदर्भ में यह सच हैरान करने वाला है कि लोग वातावरण को ही पर्यावरण समझ लेते हैं.

हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं कि पर्यावरण को बचाने के लिए जरूरी उपाय करें, लेकिन अपना कर्तव्य भूल जाते हैं. होना यह चाहिए कि हम दूसरों के सहयोग की चिंता छोड़ जो कर सकते हैं वह जरूर करें. घर में प्लास्टिक का आना तो हम निश्चित ही कम कर सकते हैं. पारिवारिक स्तर पर पानी का उचित प्रयोग कर कुछ पानी तो बचा ही सकते हैं. जितने भी पौधे घर में लगाने हों, मिट्टी के गमलों में लगा सकते हैं. प्लास्टिक के फूल की जगह इनडोर पौधे रख सकते हैं. सामान लाने के लिए कपड़े आदि का थैला प्रयोग करना जरा भी मुश्किल नहीं. 'रियूज, रिड्यूस, रिपेयर, रिसाइकिल और रिकवर' जैसे पांच नुस्खे अपनाकर जीवन के पांच तत्वों 'आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी' को लाभ तो पहुंचा ही सकते हैं. यह सहयोग पर्यावरण को मिलेगा, तो कुछ फायदा वातावरण को भी तो होगा.

आपके पत्र

खानपान का सही तरीका जरूरी

मनुष्य को ज्यादातर बीमारियां अनियंत्रित और अनियमित भोजन के कारण होती है. भूख नहीं लगने पर भी हम भोजन करते हैं. इससे पाचन तंत्र बिगड़ता है. जिस कारण हम कई और बीमारियों का शिकार हो जाते हैं. इसीलिए कहा गया है कि चालीस बार चबाना और पानी एक या दो घूंट कर पीना ही भोजन करने का सही तरीका है. इससे पाचन तंत्र पर दबाव कम होता है और हम स्वस्थ बने रहते हैं. हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है.

श्रीमय घोष, जमशेदपुर

प्रभात खबर का अनूठा प्रयास

बाल प्रभात और सुरभि जैसी पत्रिका बच्चों के जीवन में नयी ऊर्जा और रंग भरते हैं. इसने न केवल बच्चों को अपनी कला, लेखन, और रचनात्मकता प्रदर्शित करने का अवसर दिया है, बल्कि आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति की नयी राह भी दिखाई है. मोबाइल और सोशल मीडिया की दुनिया में गुम होते जा रहे बच्चों के लिए प्रभात खबर की यह कोशिश ताजा हवा के झोंके की तरह है. यह प्रयास बड़ों के दिलों में भी जगह बना चुकी है. इस अनूठे प्रयास के लिए प्रभात खबर का हृदयतल से आभार.

मनीष कुमार शर्मा, देवघर

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001 ■ **फैक्स करें :** 0651-2544006 ■ **मेल करें :** eletter@prabhatkhabar.in पर ■ ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है.

न्यूज अपडेट गोयल आर्थिक एवं व्यापारिक साझेदारी को सुदृढ़ बनाने के लिए जर्मनी जाएंगे

क्विक बाइट्स

भारतीय मोटर वाहन क्षेत्र में 4.6 अरब डॉलर के सौदे हुए : ग्रांट थॉर्नटन इंडिया

नयी दिल्ली. भारत के मोटर वाहन क्षेत्र ने जुलाई-सितंबर तिमाही में 4.6 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के 30 लेनदेन दर्ज किये. इसे टाटा मोटर्स के इवेको एसपीए के 3.8 अरब अमरीकी डॉलर के अधिग्रहण से बढ़ावा मिला. ग्रांट थॉर्नटन भारत ने बुधवार को यह जानकारी दी. 'ग्रांट थॉर्नटन भारत क्यू3 (तीसरी तिमाही) 2025 ऑटोमोटिव डीलट्रैकर' के अनुसार, सौदों की मात्रा पिछली तिमाही के समान रही लेकिन मूल्यों में तेजी से वृद्धि हुई. इसका मुख्य कारण टाटा मोटर्स द्वारा इवेको एसपीए का 3.8 अरब डॉलर में अधिग्रहण रहा, जो भारत के अब तक के सबसे बड़े मोटर वाहन लेनदेन में से एक है.

एनएचएआइ 23 राज्यों में फुटपाथ की स्थिति के बारे में आंकड़े जुटायेगा

नयी दिल्ली. भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) ने बुधवार को कहा कि वह यात्रियों के सफर के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों के विभिन्न हिस्सों की सड़क सूची और फुटपाथ की स्थिति के आंकड़ों के संग्रह, प्रसंस्करण और विश्लेषण के लिए 23 राज्यों में 20,933 किलोमीटर की दूरी तय करने वाले नेटवर्क सर्वेक्षण वाहन (एनएसवी) तैनात करेगा. एक सरकारी बयान के अनुसार, एनएसवी सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्र किये गये आंकड़े सड़क की स्थिति में कमियों को उजागर करेंगे, जिससे एनएचएआइ राष्ट्रीय राजमार्गों के बेहतर रखरखाव के लिए सुधारात्मक उपाय करने के लिए प्रेरित होगा. इस पहल को लागू करने के लिए, एनएचएआइ ने पात्र कंपनियों से बोलियां आमंत्रित की हैं.

रेडसीर की रिपोर्ट. ऑनलाइन खुदरा क्षेत्र की मांग पूरे साल स्थिर

त्योहारों पर ऑनलाइन बिक्री की निर्भरता में आयी कमी

एजेंसियां, नयी दिल्ली

देश में ऑनलाइन खरीदारी की आदतें अब धीरे-धीरे त्योहारी मौसम पर कम निर्भर होती जा रही हैं, लेकिन इस दौरान मोबाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स श्रेणियों में बिक्री अब भी सबसे अधिक हुई है. एक रिपोर्ट में यह निष्कर्ष पेश किया गया है. रेडसीर की रिपोर्ट कहती है कि भारत का ऑनलाइन खुदरा क्षेत्र अब पूरे वर्ष में अधिक संतुलित मांग की राह पर बढ़ रहा है. इसके बावजूद मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी श्रेणियां अब भी वार्षिक त्योहारी उछाल पर निर्भर हैं. रिपोर्ट के मुताबिक, मोबाइल खंड में त्योहारी मौसम से जुड़ा उतार-चढ़ाव सबसे अधिक है. इन दोनों श्रेणियों की मांग सितंबर-अक्तूबर के महीनों में सबसे अधिक रहती है. मोबाइल फोन का मासिक सूचकांक 2.3 के करीब है जबकि इलेक्ट्रॉनिक्स का 2.0 के आसपास पहुंचता है.

एफएमसीजी, सौंदर्य उत्पाद व पर्सनल केयर की बिक्री स्थिर

रिपोर्ट के अनुसार राशन के सामान, सौंदर्य उत्पाद और व्यक्तिगत देखभाल वाली श्रेणियों की ऑनलाइन बिक्री के लिहाज से सबसे स्थिर है क्योंकि इनमें सालभर मांग लगभग समान रहती है. यह कम मूल्य वाले, बार-बार खरीदे जाने वाले उत्पादों की विशेषता है. वहीं, घरेलू साज-सज्जा एवं फर्नीचर के साथ फैशन श्रेणियां मध्यम मौसमी प्रवृत्ति दिखाती हैं, जिनमें त्योहारी महीनों में उछाल तो आता है.

धीरे-धीरे त्योहारों के समय की स्थिति से बाहर निकल रहा रिटेल बिजनेस

रेडसीर ने कहा कि भारत में ऑनलाइन खुदरा कारोबार धीरे-धीरे त्योहारों के समय की चरम स्थिति से बाहर निकल रहा है. भविष्य में वही कंपनियां बाजार की अग्रणी होंगी जो न केवल त्योहारी उच्च मांग को कुशलता से संभाल सकेंगी, बल्कि सुस्त महीनों में भी मांग पैदा कर सकेंगी. रिपोर्ट कहती है, ऑनलाइन खुदरा मंचों को जरूरी क्षेत्रों की स्थिरता का उपयोग करके लगातार मांग बनाये रखनी चाहिए.

स्मार्टफोन बाजार में तीन प्रतिशत की वृद्धि : भारत का स्मार्टफोन बाजार कैलेंडर वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में सालाना आधार पर तीन प्रतिशत बढ़कर 4.8 करोड़ इकाई तक पहुंच गया. ओमडिया के नवीनतम शोध में यह जानकारी दी गयी है. रिपोर्ट के अनुसार, यह मामूली वृद्धि मुख्य रूप से जुलाई और अगस्त में नये स्मार्टफोन के बाजार में आने, खुदरा विक्रेताओं को दिये गये प्रोत्साहन और त्योहारी सीजन जल्दी शुरू होने के कारण हुई.

बॉन्ड आधारित म्यूचुअल फंड से सितंबर महीने में हुई 1.02 लाख करोड़ रुपये की निकासी

एजेंसियां, नयी दिल्ली

- अगस्त में इस फंड योजनाओं से 7,980 करोड़ रुपये की निकासी दर्ज की गयी थी
- जुलाई में 1.07 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया था
- बॉन्ड में निवेश करने वाली 16 में से 12 एमएफ श्रेणियों में शुद्ध निकासी दर्ज की

निश्चित आय वाले बॉन्ड आधारित म्यूचुअल फंड योजनाओं से सितंबर महीने में 1.02 लाख करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी हुई. इसकी बड़ी वजह संस्थागत निवेशकों की निकासी इसकी प्रमुख वजह रही. म्यूचुअल फंड उद्योग के निकाय एम्फी की तरफ से जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी गयी है. अगस्त में इन फंड योजनाओं से 7,980 करोड़ रुपये की निकासी दर्ज की गयी थी, जबकि जुलाई में 1.07 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया था. आंकड़ों के मुताबिक, पिछले महीने ऋण या बॉन्ड में निवेश करने वाली 16 में से 12 एमएफ श्रेणियों में शुद्ध निकासी दर्ज की गयी. इनमें लिक्विड फंड योजनाओं से 66,042 करोड़ रुपये, मनी मार्केट फंड से 17,900 करोड़ रुपये और बेहद कम अवधि वाले फंड से 13,606 करोड़ रुपये की निकासी शामिल है. मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया में विश्लेषक नेहाल मेश्राम ने कहा कि यह निकासी मुख्यतः सितंबर तिमाही के अंत की नकदी जरूरतों और अग्रिम कर भुगतान से जुड़ी संस्थागत निकासी का नतीजा है. बड़े पैमाने पर निकासी होने से ऋण आधारित फंड योजनाओं की प्रबंधन-अधीन परिसंपत्तियां (एयूएम) सितंबर अंत तक घटकर 17.8 लाख करोड़ रुपये रह गयी, जो अगस्त में 18.71 लाख करोड़ रुपये थीं.

यूको बैंक मार्च तक 150 और शाखाएं खोलेगा

नयी दिल्ली. यूको बैंक अपनी उपस्थिति और कारोबार का विस्तार करने के लिए अगले पांच माह में 150 और शाखाएं खोलने की योजना बना रहा है. देश भर में 3,322 शाखाएं हैं और 150 शाखाओं के जुड़ने से, चालू वित्त वर्ष के अंत तक इसका नेटवर्क बढ़कर 3,472 हो जायेगा. यूको बैंक के एमडी व सीइओ अश्विनी कुमार ने कहा कि बोर्ड ने मार्च तक 150 और शाखाएं खोलने को मंजूरी दे दी है.

इस बार दीपावली पर बिजली की खपत में आयी कमी

नयी दिल्ली. देश में दीपावली के दिन बिजली की अधिकतम मांग या बिजली की सबसे ज्यादा आपूर्ति इस बार पिछले साल की तुलना में थोड़ी कम रही, जिसके त्योहार के दौरान आम रुझान में गिरावट देखने को मिली. सरकारी आंकड़ों के अनुसार, सोमवार को बिजली की अधिकतम मांग घटकर 180.14 गीगावाट रह गयी, जो पिछले साल 31 अक्तूबर, 2024 को दीपावली के दिन अधिकतम मांग 182.87 गीगावाट थी. बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, सोमवार को देश की कुल बिजली खपत घटकर 396.5 करोड़ यूनिट रह गयी, जबकि एक साल पहले इसी दिन 406.2 करोड़ यूनिट बिजली की खपत दर्ज की गयी थी.

रिजर्व बैंक का स्वर्ण भंडार सितंबर तक 880 टन के पार

एजेंसियां, नयी दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक का स्वर्ण भंडार वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही में 880 टन के स्तर को पार कर गया. इस भंडार में केंद्रीय बैंक ने सितंबर के अंतिम सप्ताह में 0.2 टन सोना जोड़ा. भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) के ताजा आंकड़ों के अनुसार, 26 सितंबर, 2025 तक सोने का कुल मूल्य 95 अरब डॉलर था. बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच, हाल के महीनों में सुरक्षित निवेश माने जाने वाले सोने की मांग में वृद्धि हुई है. सितंबर में समाप्त छमाही में, रिजर्व बैंक ने 0.6 टन (600 किलोग्राम) सोना खरीदा. रिजर्व बैंक के नवीनतम बुलेटिन के अनुसार, सितंबर और जून में क्रमशः कुल 0.2 टन (200 किलोग्राम) और 0.4 टन (400 किलोग्राम) सोना खरीदा गया. रिजर्व बैंक के पास कुल स्वर्ण भंडार 2024-25 के अंत तक 879.58 टन था.

विश्व आर्थिक मंच ने केंद्र सरकार के साथ एआइ प्लेबुक पेश की

एजेंसियां, नयी दिल्ली

विश्व आर्थिक मंच ने भारत सरकार के सहयोग से छोटे एवं मझोले उद्यमों (एसएमइ) तथा कृषि के लिए बुधवार को एआइ प्लेबुक पेश की. साथ ही देश में एआइ के जिम्मेदार इस्तेमाल में तेजी लाने के लिए एक एआइ सैंडबॉक्स श्वेत पत्र भी जारी किया. विश्व आर्थिक मंच (डबल्यूइएफ) ने कहा कि इन्हें पेशेवर सेवा भागीदार बीसीजी एक्स के सहयोग से तैयार किया गया है. ये भारत में एआइ को जिम्मेदारी से समावेशी और बड़े पैमाने पर उपयोग करने के लिए कार्रवाई योग्य ढांचे, क्षेत्रीय खाके और परिवेश मॉडल प्रदान करते हैं. मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार अजय सूद ने कहा कि भारत की एआइ की यात्रा को इस बात से परिभाषित किया जाना चाहिए कि यह अंतिम छोर पर जीवन को कितनी गहराई से बदल रही है. विश्व आर्थिक मंच के प्रबंध निदेशक जेरेमी जुर्गेंस ने कहा कि कृषि एवं लघु व्यवसाय में एआइ को एकीकृत करने का भारत का प्रयास आर्थिक बदलाव के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है. बीसीजी के प्रबंध निदेशक एवं साझेदार गौरव जिंदल ने कहा कि एआइ तभी प्रभाव डालता है जब वह प्रयोग करने योग्य, किफायती और विश्वसनीय हो.

इंफोसिस : ₹18000 करोड़ के शेयर बायबैक में हिस्सा नहीं लेंगे नीलेकणि व सुधा मूर्ति

एजेंसियां, नयी दिल्ली

आइटी सेवा कंपनी इंफोसिस के प्रवर्तकों और प्रवर्तक समूह, जिनमें नंदन नीलेकणि और सुधा मूर्ति शामिल हैं, ने कंपनी के 18,000 करोड़ रुपये के शेयर बायबैक में भाग नहीं लेने का फैसला किया है. बुधवार को नियामकीय फायलिंग यह जानकारी दी गयी. शेयर बायबैक की घोषणा की तारीख तक प्रमोटरों के पास सामूहिक रूप से कंपनी की 13.05 प्रतिशत इक्विटी थी. कंपनी ने कहा कि कंपनी के प्रमोटर और प्रमोटर समूह ने 14, 16, 17, 18 और 19 सितंबर के अपने पत्रों के माध्यम से बायबैक में भाग नहीं लेने का इरादा व्यक्त किया है.

इंफोसिस ने कहा, प्रस्तावित बायबैक के अनुसार तथा बायबैक के प्रति प्रतिक्रिया के आधार पर कंपनी में प्रवर्तकों और प्रवर्तक समूह के मतदान अधिकार, जो सार्वजनिक घोषणा की तिथि तक 13.05 प्रतिशत है, में परिवर्तन हो सकता है. इंफोसिस के फाउंडर्स में कंपनी के सह-संस्थापक एनआर नारायण मूर्ति की पत्नी सुधा एन मूर्ति, बेटी अक्षता मूर्ति और बेटा रोहन मूर्ति शामिल हैं. इसमें कंपनी के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणी, उनकी पत्नी रोहिणी नीलेकणी और उनके बच्चे निहार और जाह्नवी नीलेकणी भी शामिल हैं. अन्य सह-संस्थापक और उनके परिवार भी कंपनी के फाउंडर हैं.

...पहले पेज से

चुनावी पिच पर बेटे-बेटियों...

मीनापुर से पूर्व मंत्री दिनेश कुशवाहा के बेटे अजय कुशवाहा, विभूतिपुर से पूर्व विधायक रामबालक सिंह की पत्नी रवीना कुशवाहा, बरबीघा से पूर्व विधायक आरपी शर्मा के बेटे डॉ पुष्पंजय को जदयू ने टिकट दिया है.

हम ने मां-बेटी व चाचा-भतीजा पर लगाया दांव : हम को एनडीए गठबंधन में छह सीटें मिली हैं. इनमें चार पर पार्टी ने परिवार के लोगों पर ही भरोसा जताया है. हम के संरक्षक व केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी की समधिन ज्योति देवी बाराचट्टी से और बहू दीपा कुमारी को इमामगंज से प्रत्याशी बनाया गया है. दीपा पार्टी के अध्यक्ष व मंत्री संतोष सुमन की पत्नी हैं. ज्योति देवी दीपा कुमारी की मां हैं. वहीं, टिकारी से पूर्व मंत्री अनिल कुमार को फिर से टिकट मिला है, जबकि अतरी से अनिल कुमार के भतीजे रोमित कुमार पर हम ने दांव खेला है. घोसी से जदयू उम्मीदवार ऋतुराज कुमार भी अनिल कुमार के भतीजा हैं.

उपेंद्र कुशवाहा ने पत्नी व मंत्री के भाई को उतारा : उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो) को भी एनडीए में छह सीटें दी गयी हैं. इनमें सासाराम सीट पर उपेंद्र कुशवाहा ने अपनी पत्नी स्नेहलता को टिकट दिया है, जबकि दिनारा से मंत्री संतोष सिंह के भाई आलोक कुमार सिंह को प्रत्याशी बनाया है. रालोमो से उजियारपुर प्रत्याशी प्रशांत पंकज के पिता पूर्व मंत्री राम लखन महतो हैं.

चिराग ने भांजे समेत कई राजनीतिक परिवारों को उतारा : चिराग पासवान ने अपनी पार्टी लोजपा (आर) से गोविंदगंज से राजू तिवारी को टिकट दिया है. राजू तिवारी पूर्व विधायक राजन तिवारी के भाई हैं. ब्रह्मपुर से प्रत्याशी हुलास पांडेय पूर्व विधायक सुनील पांडेय के भाई हैं और तरारी विधायक प्रशांत के चाचा हैं. इसके अलावा चिराग ने अपने भांजे सीमांत मृणाल को गरखा से प्रत्याशी बनाया है.

लेफ्ट व जन सुराज भी अछूते नहीं : भाकपा के राज्य सचिव रामनरेश पांडेय के बेटे राकेश कुमार पांडेय इस बार हरलाखी से चुनाव लड़ रहे हैं. जन सुराज ने पूर्व केंद्रीय मंत्री आरसीपी सिंह की बेटी लता सिंह को अस्थावां और मोरवा से जागृति ठाकुर को उम्मीदवार बनाया है. जागृति पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की पोती हैं.

राजद से इन राजनीतिक परिवारों के लोगों ने हासिल किया टिकट : राजद के प्रमुख चेहरे तेजस्वी प्रसाद यादव पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद व राबड़ी देवी के बेटे हैं. राजद ने शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा को रघुनाथपुर, शिवानंद तिवारी के बेटे राहुल तिवारी को शाहपुर, पूर्व मंत्री व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के बेटे अजीत सिंह को रामगढ़, पूर्व मंत्री कांति सिंह के बेटे ऋषि कुमार को ओबरा, जहानाबाद सांसद सुरेंद्र यादव के बेटे विश्वनाथ सिंह को बेलागंज से टिकट दिया है, जबकि बांका के जदयू सांसद गिरधारी यादव के बेटे चाणक्य प्रकाश रंजन को बेलहर से उतारा है. बोधगया से पूर्व सांसद राजेश कुमार के बेटे कुमार सर्वजीत, जहानाबाद से पूर्व सांसद जगदीश शर्मा के बेटे राहुल शर्मा, केवटी से पूर्व केंद्रीय मंत्री अली अशरफ फातमी के फराज फातमी, कुर्था से पूर्व मंत्री मुंद्रिका यादव के बेटे सुदय यादव, शिवहर से पूर्व मंत्री रघुनाथ झा के पौत्र नवनीत झा, परिहार से पूर्व मंत्री रामचंद्र पूर्वे की बहू स्मिता पूर्वे, जोकीहाट से पूर्व मंत्री तस्लीमुद्दीन के बेटे शाहनवाज आलम, उजियारपुर से पूर्व मंत्री तुलसी प्रसाद मेहता के बेटे आलोक मेहता, मोकामा से पूर्व सांसद सूरजभान सिंह की पत्नी वीणा देवी, लालगंज से पूर्व विधायक मुन्ना शुक्ला की बेटी शिवानी शुक्ला, गोविंदपुर से विधायक कौशल यादव की पत्नी पूर्णिमा देवी, नवादा से विधायक पूर्णिमा यादव के पति कौशल यादव को राजद ने उम्मीदवार बनाया है.

सहनी ने भाई को उतारा : गौड़ाबौराम से वीआइपी प्रमुख मुकेश सहनी ने भाई संतोष सहनी व बाबूबरही से पूर्व विधायक गुलाब यादव की बेटी बिंदु गुलाब यादव को प्रत्याशी बनाया है.

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम भी संभाल रहे विरासत : वहीं, कुटुंबा से कांग्रेस प्रत्याशी राजेश राम पूर्व मंत्री दिलकेश्वर राम के बेटे हैं, जबकि नरकटियागंज से कांग्रेस उम्मीदवार शाश्वत केदार पूर्व मुख्यमंत्री केदार पांडेय के पौत्र और पूर्व सांसद मनोज पांडेय के पुत्र हैं. वहीं, हिसुआ से पूर्व मंत्री आदित्य सिंह की बहू नीतू सिंह को कांग्रेस ने फिर उतारा है.

पत्नियों की जगह फ्रंट पर अब पति : गौड़ाबौराम सीट से भाजपा ने सुजीत कुमार सिंह को प्रत्याशी बनाया है. इस सीट से वर्तमान में उनकी पत्नी स्वर्णा सिंह विधायक हैं. मोकामा से अनंत सिंह जदयू से प्रत्याशी बनाये गये हैं. उनकी पत्नी मोकामा से राजद के टिकट पर 2020 में विधायक चुनी गयी थीं. इस बार अनंत सिंह एक बार फिर स्वयं लड़ रहे हैं.

झारखंड

लातेहार में राहुल सिंह गिरोह के पांच अपराधी हथियार समेत गिरफ्तार

वरीय संवाददाता, लातेहार

राहुल सिंह गिरोह के पांच अपराधियों को पुलिस ने हथियार के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है. गिरफ्तार अपराधियों में विश्वनाथ उरांव (इटकी रांची), संदीप यादव (घाघरा गुमला), फूलचंद खलखो (नगड़ी रांची), तुलसी मुंडा (बेड़ो रांची) व तनवीर अंसारी (रातू रांची) शामिल हैं. गिरफ्तार अपराधियों के पास से दो देसी पिस्टल, 5 जिंदा गोली और पांच मोबाइल फोन बरामद किया गया है. यह जानकारी पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव ने प्रेस वार्ता में दी.

एसपी ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि चंदवा थाना क्षेत्र के परसही डगडगी पुल स्थित टोरी रेलवे स्टेशन के पास रंजीत गुप्ता के कोयला लोडिंग के काम में लेवी वसूली के लिए राहुल सिंह गिरोह के कई अपराधी गोली चलाने और दहशत फैलाने की योजना बना रहे हैं. इस सूचना पर एसडीपीओ अरविंद कुमार के नेतृत्व में टीम का गठन कर वहां छापेमारी की गयी. इस दौरान पुलिस ने पांच अपराधियों को हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया. एसपी ने बताया कि विश्वनाथ उरांव (इटकी, रांची) का आपराधिक इतिहास रहा है.

गिरफ्तार अपराधियों में चार रांची जिला के रहनेवाले हैं

लेवी के लिए रंजीत गुप्ता के साइट पर फायरिंग की थी योजना

अपराधियों के बारे में जानकारी देते एसपी कुमार गौरव.

- **अपराधियों के पास से दो देसी पिस्टल, पांच गोली और पांच मोबाइल फोन बरामद किये गये**
- गिरफ्तार अपराधियों में विश्वनाथ उरांव (इटकी रांची), संदीप यादव (घाघरा गुमला), फूलचंद खलखो (नगड़ी रांची), तुलसी मुंडा (बेड़ो रांची) व तनवीर अंसारी (रातू रांची) शामिल

गुमला से पीएलएफआइ का उग्रवादी गिरफ्तार

घाघरा (गुमला). 15 वर्षों से फरार चल रहे हार्डकोर उग्रवादी सूरज उरांव को घाघरा थाना की पुलिस ने उसके गांव भैंसबथान से गिरफ्तार कर बुधवार को जेल भेज दिया. उसके खिलाफ लाल वारंट जारी था. घाघरा थानेदार पुनीत मिंज ने बताया कि सूरज उरांव के विरुद्ध घाघरा, गुमला व रायडीह थाना में हत्या, रंगदारी, आगजनी व आर्म्स एक्ट जैसे कई मामले दर्ज हैं. वह ग्राम मलगो में बुद्धदेव उरांव व अनिल उरांव की जमीन विवाद में हत्या, भैंसबथान बॉक्साइट माइंस में लेवी के लिए ट्रक जलाने, जिलिंगसिरा गांव में पुलिस बल पर फायरिंग, देवाकी खपराटोली स्थित पतरा में पुलिस राइफल बरामदगी में फरार, भैंसबथान माइंस मैनेजर रामप्रवेश यादव की गोली मार कर हत्या, ग्राम सारांगो पोखरा टोली में एतवा उरांव व तेंबो की हत्या समेत कई कांडों में संलिप्त रहा है.

कल्याणचक में रेल हादसा टला चोरों ने खोले 30 पेंड्रोल क्लिप

साहिबगंज/तीनपहाड़. मालदा रेल मंडल के साहिबगंज-तीनपहाड़ रेलखंड पर मंगलवार की रात कल्याणचक स्टेशन के पास रेल हादसा टल गया. अज्ञात चोरों ने डाउन लाइन के प्वाइंट के पास करीब 25 से 30 पेंड्रोल क्लिप खोलकर चोरी कर ली थी. समय पर जानकारी मिलने से सैकड़ों यात्रियों की जान बच गयी. बुधवार सुबह ट्रैकमैन नियमित निरीक्षण के दौरान जब पोल संख्या 198/34 से 198/37 के बीच पहुंचा, तो उसने देखा कि कई पेंड्रोल क्लिप गायब हैं. तत्काल सूचना स्टेशन प्रबंधक गोपाल साहा को दी गयी. उन्होंने फौरन उस ट्रैक से ट्रेनों का परिचालन रोक दिया. जांच के बाद ट्रैक की मरम्मत कर नयी क्लिपें लगायी गयीं, जिसके बाद ट्रेन परिचालन बहाल हुआ. इस दौरान साहिबगंज-हावड़ा इंटरसिटी एक्सप्रेस करीब 50 मिनट विलंब से गुजरी. आरपीएफ कमांडेंट कुल्लू ने बताया कि घटना गंभीर है. दोषियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जायेगा.

कोयला चोरों ने दो लोडिंग मुंशियों को पीटा, चक्का जाम

बाघमारा. ब्लॉक दो एबीओसीपी क्षेत्र में संचालित खेमका कैरियर आउटसोर्सिंग फेस से दिनदहाड़े कोयला चोरी कर रहे चोरों का विरोध करने पर चोरों ने नदखुरकी कोलडंप के मुंशी एक्रांत राम एवं जमुनिया कोलडंप के मुंशी मजिस्ट्रेट राय उर्फ मांझो को मारपीट कर घायल कर दिया. चोरों की संख्या 40-50 के आसपास थी. इसके विरोध में दोनों कोलडंप के मजदूरों एवं लोडिंग मुंशियों ने कोलियरी का चक्का जाम कर दिया. उससे छह घंटे तक उत्पादन एवं कोयले की ट्रांसपोर्टिंग बाधित रही. जीएम कुमार रंजीव ने लोडिंग मुंशियों के साथ वार्ता की और आश्वस्त किया कि कोलडंपों में मजदूरों को पूर्ण सुरक्षा दी जायेगी. इसके बाद मुंशियों ने जाम हटा लिया.

पूर्व मध्य रेल

ई–ऑक्शन सूचना

ई–ऑक्शन सूचना सं. Catg-DHN-20-25

भारत के राष्ट्रपति के ओर से मंडल रेल प्रबन्धक (वाणिज्य), पूर्व मध्य रेलवे, धनबाद द्वारा (05) वर्षों की अवधी के लिए धनबाद मंडल के अंतर्गत GMU और SMU के लिए A1, A, B, और D श्रेणी स्टेशन खान–पान सेवा के लिए ई ऑक्शन आमंत्रित किया जाना है। विस्तृत विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	ठेके का प्रकार	लॉट संख्या	स्टेशन	श्रेणी	पी. एफ. नं.	स्टाल नं.	सभी लॉट के लिए ई–नीलामी की तारीख और समय
1.	खान–पान सेवा	DHN-BRWD-GMU-53	बरवाडीह	अनारक्षित	01	03	03.11.2025,15:00 बजे से,
2.	खान–पान सेवा	DHN-LTHR-GMU-224	लातेहार	दिव्यांगजन	01	01	03.11.2025,15:00 बजे से,
3.	खान–पान सेवा	DHN-GMO-SMU-106	गुमोह	ओ.बी.सी. (महिला)	1/2	02	03.11.2025, 15:00 बजे से,
4.	खान–पान सेवा	DHN-DTO-SMU-145	डाल्टनगंज	एफ.एफ. डब्लू	01	06	03.11.2025, 15:00 बजे से,
5.	खान–पान सेवा	DHN-DHN-SMU-98	धनबाद	अल्प–संख्यक	01	01	03.11.2025,15:00 बजे से,
6.	खान–पान सेवा	DHN-LTHR-GMU-226	लातेहार	एस. टी.	01	03	03.11.2025, 15:00 बजे से,
7.	खान–पान सेवा	DHN-DHN-SMU-147	धनबाद	एस. सी. (महिला)	01	02	03.11.2025,15:00 बजे से,
8.	खान–पान सेवा	DHN-DTO-SMU-227	डाल्टनगंज	एस. टी. (महिला)	2/3	08	03.11.2025, 15:00 बजे से,

Catalogue No. : Catg-DHN-20-25, Website : www.ireps.gov.in

Note- : (1) The e-auction will be online on the IREPS (E-Auction leasing portal) on the prescribed date and time. (2) Desirous of participating in the e-auction shall pay Rs. 10000/- +GST (non-refundable) Online submission of one time registration is required and also having current account with State Bank of India (SBI) linked to IREPS, Payment/ Deduction of Security Deposit (EMD) online from the same account. (3) Complete information about the terms and conditions related to E-Auction is available in the E Auction leasing section of the IREPS portal (www.ireps.gov.in). (4) Railway Administration reseves the right to reject any or all the tenders without assigning any reason whatsoever.

पीआर/01184/डीएचएन/अभि./एन/25–26/88 मण्डल रेल प्रबन्धक (वाणिज्य)/पूमरे/धनबाद

दक्षिण पूर्व रेलवे – निविदा

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता/चक्रधरपुर द्वारा नीचे वर्णित निविदा सं. के तहत ई-निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं जिनके खुलने की नियत तिथि 12.11.2025 को 15.00 बजे है। इन निविदाओं के लिए मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं दी जाती है एवं ऐसा कोई मैनुअल प्रस्ताव प्राप्त होने पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। **क्रम सं., निविदा सूचना संख्या एवं कार्य का विवरण** निम्नानुसार हैं: **1. एसटी–सीकेपी–ओटी–25–26–71,** जारोली–पदापहाड़–डांगोवापोसी–बोलानीखदान–गुआ शाखाओं में टीटीआर (टीडब्ल्यूएस)–248 सेट के संबंध में एस एंड टी कार्य। **निविदा लागत:** रु.9,50,87,029.55, **बयाना राशि:** रु. 6,25,400/–, **2. एसटी–सीकेपी–ओटी–25–26–72,** राजखरसावां एस/ओ–मालुका शाखा में टीटीआर (टीडब्ल्यूएस)–248 सेट के संबंध में एस एंड टी कार्य। **निविदा लागत:** रु. 6,33,92,420.10, **बयाना राशि:** रु. 4,67,000/– **3. एसटी–सीकेपी–ओटी–25–26–73,** बंडामुंडा जंक्शन–राउरकेला, पानपोश–झारसुगुडा शाखा में टीआरआर (पी) के संबंध में एस एंड टी कार्य। **निविदा लागत:** रु.81,85,985.52, **बयाना राशि:** रु. 1,63,700/–, **4. एसटी–सीकेपी–ओटी–25–26–74,** राजखरसावां–नयागढ़, पदापहाड़–बोलानीखदान–गुआ शाखा में टीआरआर (पी) और सीटीआर (एस) के संबंध में एस एंड टी कार्य। **निविदा लागत:** रु.1,29,10,528.84, **बयाना राशि:** रु. 2,14,600/–, **5. एसटी–सीकेपी–ओटी–25–26–75,** राजखरसावां जंक्शन–पदापहाड़ शाखा में टीआरआर (पी) के संबंध में एस एंड टी कार्य। **निविदा लागत:** रु.1,10,30,746.90, **बयाना राशि:** रु. 2,05,200/–, **6. एसटी–सीकेपी–ओटी–25–26–76,** चक्रधरपुर मंडल के तहत पुराने एवं जीर्ण–शीर्ण सिग्नलों एवं पॉइंट मशीनों की बदली। **निविदा लागत:** रु.2,12,69,052/–, **बयाना राशि:** रु. 2,56,400/–, **कार्य समापन:** क्रम सं. 1, 2 एवं 6 प्रत्येक हेतु 12 माह और क्रम सं. 3, 4 एवं 5 प्रत्येक हेतु 15 माह। निविदा का विवरण वेबसाइट **http://www.ireps.gov.in** पर देखा जा सकता है। निविदाकार/बोलीदाता के पास क्लास–III डिजिटल सिग्नेचर सर्टिफिकेट रहना चाहिए एवं आईआरईपीएस पोर्टल के अधीन जरूर पंजीकृत रहें। केवल पंजीकृत निविदाकार/बोलीदाता ई–निविदा प्रणाली में भाग ले सकते हैं। ई–निविदा प्रपत्र निःशुल्क जारी किया जाएगा। **(PR-752)**

दक्षिण पूर्व रेलवे – निविदा

निविदा सूचना सं.: डीआरएमईएनजीजी आरएनसी–114–120–2025, भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, मंडल रेल प्रबंधक (इंजी), राँची–834003 के द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है: **क्रम सं., सूचना सं. एवं कार्य का नाम** निम्नानुसार हैं: **(1) डीआरएमईएनजीजीआरएनसी–114–2025,** एडीईएन/राँची के कार्यक्षेत्र में 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 1,50,14,928/–, **बयाना राशि:** रु. 2,25,100/–, **(2) डीआरएमईएनजीजी आरएनसी–115–2025,** एडीईएन/मुरी के कार्यक्षेत्र में मुरी–चाण्डिल की शाखा के लिए 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 1,50,07,480/–, **बयाना राशि:** रु. 2,25,000/–, **(3) डीआरएमईएनजीजी आरएनसी–116–2025,** एडीईएन/मुरी के कार्यक्षेत्र में मुरी–बरकाकाना की शाखा के लिए 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 1,20,00,640/–, **बयाना राशि:** रु. 2,10,000/–, **(4) डीआरएमईएनजीजी आरएनसी–117–2025,** एडीईएन/मुरी के कार्यक्षेत्र में मुरी–कोटशिला की शाखा के लिए 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 80,92,880/–, **बयाना राशि:** रु.1,61,900/– **(5) डीआरएमईएनजीजीआरएनसी–118–2025,** एसएसई/वर्क्स/बानो के कार्यक्षेत्र में 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए हटिया–ओरगा शाखा में किमी. 428/12 से किमी. 500/4 तक शाखा के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 96,24,480/–, **बयाना राशि:** रु.1,92,500/–, **(6) डीआरएमईएनजीजी आरएनसी–119–2025,** एसएसई/वर्क्स/बानो के कार्यक्षेत्र में 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए हटिया–ओरगा शाखा में किमी. 500/4 से किमी. 556/12 तक शाखा के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 98,50,640/–, **बयाना राशि:** रु.1,97,000/– **(7) डीआरएमईएनजीजीआरएनसी–120–2025,** एडीईएन/सेटलमेंट/हटिया के कार्यक्षेत्र में 30.09.2027 तक समाप्त अवधि के लिए विविध ब्रिज जोनल कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 1,40,30,600/–, **बयाना राशि:** रु. 2,20,200/–, **निविदा की अंतिम तिथि और समय:** दिनांक 10.11.2025 को 15.00 बजे (प्रत्येक हेतु)। निविदाकार ऑनलाइन निविदा करने के लिए वेबसाइट **www.ireps.gov.in** देख सकते हैं। **(PR-753)**

पूर्व मध्य रेल

ई–निविदा सूचना

ई–निविदा संख्या 236-DHN-2025-26

मंडल रेल प्रबंधक (अभियंत्रण)/पूर्व मध्य रेल/धनबाद द्वारा निम्नलिखित कार्य के निष्पादन के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है:–

1. कार्य का नाम, स्थान एवं समापन अवधि: धनबाद मंडल व.म.अभि./2/धनबाद के अधीन 01 (एक) कि. मी. कर्व लम्बाई के लिए ट्रक आधारित रेल गेज फेस ल्यूबरिकेटर (हायड्रोलिक टाइप– कुल 51 सेट) का आपूर्ति, इंस्टोलेशन, कमीशनिंग एवं संचालन। 66 (छियासठ) महीना। कार्य की लगभग लागत (रु में): ₹3,65,54,760/– ब्याने की राशि (रु में): ब्याने की राशि http://www.ireps.gov.in ई–निविदा बंद होने एवं खुलने की तारीख तथा समय: ई निविदा बंद होने की तारीख 12.11.2025 को 12:00 बजे तक। ई–निविदा खुलने की तारीख 12.11.2025 को 12:30 बजे से। वेबसाइट का विवरण: http://www..ireps.gov.in ई–निविदा के तहत मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं की जाएगी।

मंडल रेल प्रबंधक (अभियंत्रण)/ पूर्व मध्य रेल /धनबाद

पीआर/1186/डीएचएन/अभि./टी/25–26/28

पूर्व मध्य रेल

निविदा सूचना

बैच संख्या: 29/25 दिनांक: 17.10.2025

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक, पूर्व मध्य रेलवे द्वारा निम्नलिखित वस्तुओं की आपूर्ति के लिए ई–निविदा का आमंत्रण किया जाता है: (1) **निविदा संख्या:** – 07246019ए–आ रजीसी–जीआरएसपी, **संक्षिप्त विविरण:** रनिंग कॉन्ट्रैक्ट फॉर मैन्यूफैक्चर एण्ड सप्लाई ऑफ 6 एमएम थिक नायलॉन कॉर्ड, **मात्रा:** 2186 सेट, **निविदा खुलने की तिथि:** 10.11.25, **निविदा खुलने की समय:** 14:00, (2) **निविदा संख्या:** – 04254598ए, **संक्षिप्त विविरण:** नैरो जॉ अडेप्टर, **मात्रा:** 38280 नग, **निविदा खुलने की तिथि:** 10.11.25, **निविदा खुलने की समय:** 14:00, (3) **निविदा संख्या:** – 04254850, **संक्षिप्त विविरण:** यॉ डैम्पर, **मात्रा:** 752 नग, **निविदा खुलने की तिथि:** 10.11.25, **निविदा खुलने की समय:** 14:00, (4) **निविदा संख्या:** – 04250060, **संक्षिप्त विविरण:** सेट ऑफ कंट्रोल आम्स (फिनिशड) फॉर एलएचबी बोगीज, **मात्रा:** 129 सेट, **निविदा खुलने की तिथि:** 03.11.25, **निविदा खुलने की समय:** 14:00, (5) **निविदा संख्या:** – 08255008, **संक्षिप्त विविरण:** सप्लाई, इंस्टालेशन एण्ड कमीशनिंग ऑफ ईओटी क्रेन 25 टी, **मात्रा:** 1 नग, **निविदा खुलने की तिथि:** 17.11.25, **निविदा खुलने की समय:** 14:00, **नोट:** उपर्युक्त सभी निविदाएं ई–टेंडर हैं और सभी निविदाकारों से अनुरोध है कि वे अपनी बोलियां IREPS वेबसाइट www.ireps.gov.in के माध्यम से ऑनलाइन जमा करें। उपर्युक्त निविदाओं के सभी संशोधन भी केवल IREPS वेबसाइट पर ही ऑनलाइन प्रकाशित किए जाएंगे। उपर्युक्त निविदाओं और अन्य आपूर्ति निविदाओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया IREPS वेबसाइट देखें।

वरिष्ठ सामग्री प्रबंधक (कैरेज एण्ड वैगन)
पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

पीआर/1181/एचक्यू/एसटीओआरई/टी/25–26/40

राष्ट्रीय सहारा
पटना। बृहस्पतिवार • 23 अक्टूबर • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

जहां मन भय से मुक्त हो और सिर गर्व से ऊंचा उठे, जहां ज्ञान स्वतंत्र हो, वहीं सच्चा स्वर्ग बसता है।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप क्या शांति साधक !

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने क्या सचमुच शांति के रास्ते अपना लिए हैं अपने कार्यकाल ट्रंप 2.0 में कुछ ऐसा करना चाहते हैं जिससे लोग उन्हें महाशक्ति के रूप में नहीं बल्कि शांतिप्रिय महाशक्ति वाले देश के रूप में विश्व की मान्यता मिल जाए । लेकिन यह संभव होता नहीं दिख रहा है । हाल के दिनों में शांति के लिए दिए जाने वाले नोबेल पुरस्कार में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को नहीं चुना जाना एक बड़ा झटका लगा दिया। इतिहास गवाह है कि अमेरिका को महाशक्ति के रूप में विश्व जानता है । साथ ही हथियारों की खरीद-बिक्री के लिए और अपने अर्थ तंत्र को मजबूत करने के लिए अमेरिका ने छोटे-छोटे देशों में अस्थिरता पैदा कर, विरोधियों को साथ देकर युद्ध जैसे हालात पैदा किये हैं और बाद में उन देशों को हथियार भी बेचे हैं । हथियार बेचने वाला बड़ा सौदागर भी युगों तक अमेरिका जाना जाता रहा है । अमेरिका ने 2011 से 2020 के बीच सिर्फ सऊदी अरब को 51 अरब डलर से अधिक के हथियार बेचे थे । इस बार ट्रंप 2.0 में डोनाल्ड ट्रंप रास्ता बदलकर विश्व में शांति स्थापित करने को लेकर सक्रिय दीखते हैं । कई देशों में वर्षो से चल रहे युद्ध को समाप्त करने के लिए अमेरिका के प्रयास दिखाई देते हैं । अमेरिका को कुछ सफलता तो कुछ असफलता हाथ लगी हैं । डोनाल्ड ट्रंप ने अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए आजमाया टैरिफ वाला कार्ड इस बार इस्तेमाल किया है जिसमे ट्रंप का प्रयास कुछ हद तक सफल भी हुआ, लेकिन भारत पर थोपे गए ट्रैफिक ने ट्रंप को बैक फुट पर ला दिया।

पूरे विश्व में भारत देश ऐसा देश है जो शांतिपूर्ण विश्व और सर्वधर्म संभाव की भावना रखने वाला देश है । इन दिनों लगातार डोनाल्ड ट्रंप अपने शांति के प्रयासों के लिए विश्व में चर्चा में हैं । हालांकि हाल में हुए नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा ने डोनाल्ड ट्रंप को बड़ा झटका दिया है । इससे यह साफ झलकता हैं कि अमेरिका के शांतिप्रिय होने का प्रमाण पत्र अमेरिकी ही नहीं देते जबकि अबतक 7-8 देशों में युद्ध रोकने और शांति की बहाली करने के लिए राष्ट्रपति ट्रंप ने कई प्रयास किये हैं और अपने इन्हीं प्रयासों के चलते ही ट्रंप आशान्वित थे कि उन्हें ही इस बार का नोबेल शांति पुरस्कार मिलेगा मगर परिणाम उल्टा आया और विपक्षी नेता वेनेजुएला की लोकतंत्र समर्थक मारिया कोरिना मचाडो को नार्वेजियन नोबेल समिति ने नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित कर दिया । डोनाल्ड ट्रंप की हताशा को कम करने के लिए नार्वेजियन नोबेल समिति ने यह भी कह दिया की अगले वर्ष के लिए भी ट्रंप नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित होंगे, मतलब साफ है कि ट्रंप अपने विश्व शांति के प्रयास करते रहें, सफलता मात्र एक वर्ष दूर है ।

अगर देखा जाये तो विश्व शांति के लिए अमेरिका के प्रयास पहले भी हुए हैं । कई अमेरिकी राष्ट्रपतियों ने भी इसके लिए ऐसे ही प्रयास किये थे । प्रथम विश्व युद्ध के बाद वुडरो विल्सन के चौदह सूत्रीय कार्यक्रम और लीग अफ नेशंस की स्थापना की पहल शामिल है। राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने 1978 में इजराइल और मिस्र के बीच कैंप डेविड समझौते को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे एक स्थायी शांति संधि हुई। 1991 के मैड्रिड सम्मेलन ने इजरायल और अरब देशों को एक साथ लाया, लेकिन इसका परिणाम बैठक से अधिक कुछ नहीं निकला। जर्ज एच् डब्ल्यू बुश के प्रशासन ने भी शांति समझौते को आगे बढ़ाने की कोशिश की थी । हाल ही में डोनाल्ड ट्रंप के प्रयासों से अमेरिका ने इजरायल और हमास के बीच युद्ध को समाप्त करने के लिए एक 20-सूत्रीय योजना पेश की है, जिसमें युद्धविराम, बंधकों की रिहाई और गाजा के पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया । हालाँकि इन प्रयासों के बावजूद सफलता अब भी जैसी शांति होनी चाहिए वैसी शांति नहीं हुई । जबकि अमेरिका ने ईरान पर दबाव बनाने के लिए उसके परमाणु ठिकानों को भी स्वयं निशाना बनाया था । इजरायल-ईरान युद्ध में अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद अमेरिका के किरदार पर कई सवाल उठ गये । क्या अमेरिका स्थायी शांति का पक्षधर है या फिर श्फरएवर वरश् नीति के जरिए सामरिक वर्चस्व कायम करना चाहता है इजरायल-ईरान तनाव पैर अमेरिकी नीतियां साफ नहीं झलकती जिससे विश्व अमेरिका को लेकर दो खेमों में बंटा नजर आता है । कोई 'साम्राज्यवादी राज्य' बताते हैं, तो कोई वैश्विक शक्ति संतुलन की रणनीति का मात्र हिस्सा मानते हैं। ऐसे में रणनीतियां अमेरिका की विश्वसनीयता को कठघरे में खड़ा करती है।

किसी भी राष्ट्र के लिए क्यों आवश्यक है 'एक राष्ट्रभाषा'

किसी भी व्यक्ति अथवा समाज से संवाद और अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए 'भाषा' का होना अनिवार्य है। हमारे आदि-पुरुषों में से जिस महापुरुष ने इसकी खोज की और इसका विकास किया, निस्ससंदेह वे

अपने युग के महानतम वैज्ञानिक रहे होंगे। मैं जब भी इस विषय पर चिंतन करता हूँ, तो रोमांचित हो उठता हूँ और उन सभी अज्ञात महात्माओं के चरणों में मेरा मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है। मैं उस कल्पना-मात्र से सिहर जाता हूँ कि यदि भाषाएँ विकसित नहीं हुई होती तो मानव-जीवन कैसा होता लिपि विकसित नहीं होती तो लिखित संवाद और अभिव्यक्तियाँ किस प्रकार होती क्या उस तरह नहीं, जैसे पशु-पक्षी अथवा अन्य जीव करते हैं! केवल संकेत की भाषा!और उसे भी, सबको समझना क्या इतना सरल होता

मैंने आलेख के शीर्षक-प्रश्न के उत्तर के अन्वेषण के क्रम में उपरोक्तकिंतु अति संक्षिप्त भूमिका का आश्रय इस लिए लिया कि हम इसके महव को ठीक और तात्विक रूप से, समझ पाएँ। हम सभी जानते हैं कि संवाद के लिए भाषा अनिवार्य है। संवाद इस लिए अनिवार्य है कि हम एक दूसरे से इसी माध्यम से जुड़ते हैं। एक दूसरे को समझते हैं। भाषा के अभाव में हम संवाद नहीं कर पाते। इस कारण जुड़ नहीं पाते। अनेक प्रकार से निकट का संबंध रख कर भी, हम अलग और पराए बने रह जाते हैं।

भारतवर्ष संसार की सबसे प्राचीन जीवित सभ्यता और विराट संस्ति-संपन्न राष्ट्र है। हमारी दृष्टि आदि-काल से समावेशी रही है। संकीर्णता हमारे संस्कार में नहीं। हमी ने संसार को मनुष्यता का अर्थ समझाया था और यह भी बताया कि समस्त वसुधा 'एक कुटुम्ब' है। इस आलेख में 'विश्व एक कुटुम्ब' के विषय को स्थगित रखते हुए 'राष्ट्र एक कुटुम्ब' पर केंद्रित होकर चलते हैं।

हर एक राष्ट्र को अवश्य ही एक कुटुम्ब होना ही चाहिए। यही भावना किसी राष्ट्र को एक सूत्र से जोड़ती है। यही राष्ट्रीय भावना है। किंतु यह भावना संपूर्ण राष्ट्र में विस्तार और स्थान का सृजन कैसे करेगी, यदि देश की कोई एक भाषा नहीं हो यह सत्य है, जो सुंदर भी है कि भारत अनेक संस्तियों, विचारों, दर्शन और भाषाओं का अद्‌भुत संगम-स्थल है। इसकी संस्ति समावेशी और सबको अपनाने और सम्मान देने के उदात्त दर्शन और चिंतन पर आधारित है। यही चिंतन और दर्शन हमारी एकता की धुरी है। यही हमें बल और ेह की ऊर्जा प्रदान करता है।

पूर्व काल में हम और भी सशक्त, समर्थ और संगठित थे। प्राचीन भारत, जब यह आर्यावर्त अथवा ईलावर्त के रूप में जाना जाता था, वह लगभग संपूर्ण एशिया था। तब हमारी एक भाषा, संस्कृत संपूर्ण आर्यावर्त को ही नहीं, अपने आध्यात्मिक-वैज्ञानिक ज्ञान से संपूर्ण विश्व को मनुष्य बना रही थी। वह हमारा स्वर्णिम-काल था। तब भी अनेक भाषाएं और बोलियाँ थीं, किंतु संस्कृत को राष्ट्र की भाषा का स्थान था। इसलिए हम भावनात्मक और विचारों के स्तर पर अभिन्न थे, क्योंकि हम आपस में त्वरित संवाद करने में सफल थे। हमें कोई शत्रु मति-भ्रष्ट नहीं कर सकता था। हमारी अखंडता हमारी कुशल संवाद-चेतना और एक भाषा के कारण तोड़ी नहीं जा सकती थी। इसीलिए हम निरंतर समृद्ध होते गए और आनन्द का मार्ग प्रशस्त किया, क्योंकि, हम आध्यात्मिक थे, प्रत्येक मनुष्य ही नहीं प्राणी-मात्र और प्रति से भी एकत्व करने में सक्षम थे। यहां तक कि हमने परमात्मा से भी एकत्व का मार्ग (विधि) ढूंढ लिया था और उस सर्वतोभावेन आनंद के महास्रोत से जुड़ने में सफल हो गए थे।

मध्य-काल में हम पर बाह्य शक्तियों ने अनेक आक्रमण किए। आरम्भ में ये आक्रमणकारी, जो वास्तव में लुटेरे थे, हमारी भौतिक संपदा को लूट ले जाते रहे। किंतु आगे चलकर वैसे ही आक्रमण कारियों के निरन्तर आघात से हम कमजोर होते गए। उनका संगठित प्रतिकार नहीं कर सके। टुकड़ों में बँटने लगे। छोटी बड़ी अनेक राज-सत्ताएं स्थापित हुईं। सबकी अपनी व्यवस्था और अपनी बोलियां और भाषाएं भी अलग-अलग होती चली गई। धीरे-धीरे संस्त का व्यवहार कम होता गया और वह हमारी पुस्तकों और कर्मकाण्डों तक सिमट कर रह गई।

राजभाषा, वस्तुतः राजा की भाषा होती है। अर्थात शासन करने वाला जिस भाषा में संवाद करता है, वही राज-भाषा होती है, और वही प्रजा की भी, अर्थात जनता की भाषा हो जाती है। जब प्रायः पूरे देश में, मुगलों का शासन स्थापित हुआ, वहां राजकीय भाषा फारसी हो गयी। क्योंकि वही शासक की भाषा थी। इसीलिए मुगल-शासन-काल में ज्ञानार्जन की भाषा और सरकार से संवाद की भाषा फारसी हो गयी। शिक्षा का महव समझने वाले लोगों ने फारसी का अध्ययन आरंभ किया। क्योंकि यह अपरिहार्य था।

फिर जब अंग्रेजों ने भारत पर अपना आधिपत्य जमा लिया तो अंग्रेजी देश की राजकीय भाषा हो गयी। क्योंकि यह राजा (शासक) की भाषा थी। किंतु फारसी और अंग्रेजी का भारत में अलग-अलग प्रभाव रहा। फारसी ने राजभाषा का स्थान तो अवश्य लिया था, किंचित स्तर पर भारतीय आस्थाओं और दर्शन को भी प्रभावित किया, किंतु उसने, भारत के उन मूल्यों का नाश नहीं किया, जिनसे भारत की आत्मा जुड़ी हुई है। किंतु अंग्रेजों ने अंग्रेजी के माध्यम से, हमारी मान्यताओं और मूल्यों पर निर्ममता से प्रहार किया और हमारी नीव को झकझोर कर रख दिया। भारत के आत्मबल (आध्यात्मिक-शक्ति) को तोड़कर, भारतीयों को संस्कार-विहीन बनाने, निष्ठाहीन और चरित्र-हीन बनाने की मैकाले-शिक्षा-पद्धति को हम पर थोपा गया। महात्मा गांधी इस भयानक षडयंत्र को समझ गए थे। इसीलिए उन्होंने कहा था कि ष्भले अंग्रेज कुछ दिन और भारत में रह लें, किंतु अंग्रेजी को देश से अविलंब विदा की जानी चाहिए!

यह दुर्भाग्य है कि अंग्रेज तो आजसे वर्ष पूर्व चले गए, किंतु अंग्रेजी आज तक देश पर राज कर रही है। यह अंग्रेजी माध्यम से उत्पन्न किए गए काले-अंग्रेजों के कुचक्रों का परिणाम है, जिसे भारत के लोग समझ नहीं पा रहे हैं। भारत के ये काले-अंग्रेज, जिन्होंने अपने अग्रेंज आचार्यो से स्वार्थ और घृणा का ज्ञान अर्जित किया है, नहीं चाहते हैं कि भारत के लोग आपस में कभी संवाद कर सकें। यदि सभी भारत-वासी, संवाद स्थापित करने में सफल रहे, तो उन्हें कौन पूछेगा उनकी चालें फिर सफल कैसे हो पाएँगी

किंतु भारत के लोगों को यह सोचना पड़ेगा कि जब कोई अंग्रेज भारत का राजा नहीं है, तो अंग्रेजी देश की राज-भाषा क्यों बनी हुई है। जब संसार का सारा देश अपनी भाषा में पढ़ता, लिखता और शासन करता है, तो फिर यह भारत अभी तक भाषायी गुलाम क्यों बना हुआ है देश की स्वतंत्रता के वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात भी देश में, देश की कोई एक भाषा इतनी विकसित नहीं हो पायी, कि उसे देश की राष्ट्रभाषा बनायी जा सके क्या यह समस्त भारत वासियों के लिए वैश्विक-लज्जा का विषय नहीं है विद्वानों ने कहा है कि जिस राष्ट्र की अपनी भाषा नहीं होती, वह गूंगा होता है। तो क्या भारत गूँगा नहीं है

भारत की एक राष्ट्र-भाषा हो, इस विचार का विरोध करने वाले लोग, इस महव को जानते हुए भी, केवल अपने राजनैतिक लाभ के लिए विरोध करते हैं और यह दलील देते हैं कि उससे देश की अन्य प्रांतीय भाषाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पर क्या वे नहीं जानते, कि भारत जैसे अभिशप्त कुछ अपवाद को छोड़कर, संसार के सभी राष्ट्रों की अपनी एक राष्ट्र-भाषा है। और, संसार में कोई भी एक राष्ट्र ऐसा नहीं है, जहां केवल एक ही भाषा हो। सभी देशों में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ है। फिर भी वहाँ कोई न कोई देश की 'एक राष्ट्र भाषा' है। अपने पड़ोसी देश चीन को ही लें, जहां की राष्ट्र-भाषा मंदारिन है। लेकिन वहाँ भी अनेक भाषाएं हैं, जो अलग-अलग क्षेत्रों में बोली जाती हैं, तथा उन भाषाओं को कोई भी क्षति मंदारिन के राष्ट्रभाषा बनने से नहीं हुई है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बना दिए जाने से अहिन्दी प्रदेशों के लोगों को हिन्दी सीखनी पड़ेगी, जो एक बोझ होगी। उनसे यह पूछा जाना चाहिए कि क्या वे अंग्रेजी नहीं सीखते। इस देश के किस प्रांत, किस स्थान या किस शहर की मातृ-भाषा अंग्रेजी है, जो उसके पुरखे बोलते आए हैं यदि अंग्रेजी सीखी जा सकती है, तो हिन्दी क्यों नहीं कमसेकम यह तो अपने राष्ट्र की भाषा है। एक अत्यंत सरल, मनोहर और वैज्ञानिक भाषा, जिसमें वही पढ़ा जाता है, जो लिखा जाता है। जैसा लिखा जाता है, ठीक वैसा ही पढ़ा जाता है। अंग्रेजी की तरह नहीं, कि लिखते हैं - 'बुट' और पढ़ते हैं 'बट'। इसीलिए भारत के सभी भाषा-वैज्ञानिकों ने हिन्दी को सबके लिए सहज ग्राह्य बताते हुए, इसे भारत की राष्ट्रभाषा बनाए जाने की बात करते रहे हैं। विद्वानों ने माना है कि संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने और एक सुदृढ़ प्रेमबंधन स्थापित करने में, हिन्दी सर्वथा सक्षम है।

संपूर्ण भारतवर्ष को इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए। भारतवर्ष के सभी प्रबुद्ध और आमजन इस विचार से सहमत भी हैं। क्या उत्तर,क्या दक्षिण, क्या पूरब क्या पश्चिम, संपूर्ण भारतवर्ष में यह आम स्वीकृति है कि हिन्दी को देश की अवश्य ही संपर्क-भाषा होनी चाहिए। और यह स्थित तभी बनेगी, जब यह देश की राष्ट्र-भाषा घोषित होगी। इसके समक्ष बाधक तव देश के किसी भी क्षेत्र की जनता नहीं, केवल और केवल आधार हीन और स्वार्थी राजनेता हैं, जो आज भी काले अंग्रेजों की मानसिकता से उबर नहीं पाए हैं। उन्हें भी इस ष्टि से विचार करना चाहिए कि हिन्दी को अंग्रेजी का विकल्प बनाया जा रहा है, देश की किसी अन्य भाषा का नहीं।

विदेश की कोई भाषा, उनके देश की रानी बनी हुई है, विवशता बनी हुई है, यह तो उनके लिए भी क्या कम लज्जा का विषय है। हमें इस दृष्टि से भी विचार करना चाहिए कि उत्तर के लोग दक्षिण में जाकर परायापन का बोध करें और दक्षिण के लोग उत्तर में, तो क्या यह भी कम दुखदायी है क्या उन लोगों को ऐसा नहीं लगता कि वे पराए देश में आ गए हैं। अपने ही देश के लोगों को, अपने ही देश में कहीं अन्यत्र जाने पर संवाद करने में बाधा हो, परायापन का बोध हो, क्या यह चिंता का विषय नहीं होना चाहिए यदि चीन में भी ऐसा ही होता तो क्या वे सभी आपस में बात कर पाते क्या उन्हें भी दुभाषिए का सहारा नहीं लेना पड़ता आज चीन की भाषा मंदारिन संख्या की दृष्टि से संसार की सबसे बड़ी भाषा है, तो इसका कारण यही है कि वह चीन की राष्ट्रभाषा है राष्ट्रभाषा होने के कारण ही, चीन का प्रत्येक नागरिक यह भाषा जनता, समझता और बोलता-लिखता है। इसीलिए तो वह संसार में प्रथम स्थान पर है। यदि हिन्दी भारत की राष्ट्र-भाषा बना दी गयी रहती, तो क्या यह स्थान हिन्दी को नहीं मिला होता

इसी प्रकार संविधान निर्माण के समय लिपि को लेकर भी एका की बात उठी थी। अनेक लोग थे जो यह चाहते थे कि हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा और राष्ट्र-लिपि देवनागरी हो जाए। लिपि को लेकर पिछली सदी के महान संत और भाषा विज्ञानी विनोबा भावे की राय थी कि देवनागरी लिपि का बहुलांश में उपयोग हो। वे भाषा-भाषी भी जिनकी लिपियाँ अलग-अलग हैं, पट्टिकाओं पर, मील के पत्थरों पर, देवनागरी लिपि का प्रयोग करें। जितना अधिक हो सके देवनागरी का प्रयोग करें। उससे यह होगा कि देवनागरी जानने वाले सभी लोग उन भाषाओं को भी पढ़ने लगेंगे और प्रयत्न कर समझने भी लगेंगे। इससे अनेक भाषाओं का ज्ञान होगा और इन भाषाओं के शब्दों के प्रयोग भी अन्य भाषाओं में होने लगेंगे। इससे अन्य भाषाएँ भी समृद्ध और विस्तृत होंगी। उनका चतुर्दिक विकास होगा।

किंतु यह सब कुछ तभी संभव होगा, जब सकारात्मक विचार वाले सभी लोग एक जुट हों, उन विचारों को एक स्वर दें, जिनसे भारत एक, सुढ़ और समृद्ध हो! पहली चेष्टा इस रूप में की जा सकती है कि संपूर्ण भारत, संकीर्ण राजनैतिक स्वार्थ का त्याग कर राष्ट्र-हित में, 'एक राष्ट्र, एक राष्ट्र भाषा और एक राष्ट्र-लिपि' का दीर्घ स्वर दे और भारत की सरकार से मांग करे कि विना विलम्ब किए हिन्दी को राष्ट्र-भाषा घोषित करे, जिससे कि हम वैश्विक-लज्जा के कलंक से मुक्त हो सकें। स्वार्थी तत्वों के दुष्प्रचार के कारण शंका में पड़े लोगों को समझाया जाए कि इससे भारत की किसी भी अन्य भाषा के हित पर कोई संकट नहीं आएगा।

प्रांतों में, प्रांतीय-भाषा को राजभाषा (प्रांतीय सरकारों की) बनायी जाए। प्रांतीय सरकारें हिन्दी को दूसरी राजभाषा भी बनाए तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। बस इतना हो कि संपूर्ण भारतवर्ष हिन्दी पढ़े। कम से कम हिन्दी में संवाद करने के योग्य हो जाए। अपनी भाषा के मूल्यवान ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद करने में सक्षम हो जाए, हिन्दी के उपयोगी ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद कर सके तो और अच्छा हो। तब भारत एक ऐसे दिव्य एकत्व को प्राप्त करेगा, जिसमें झांक कर संसार के दूसरे राष्ट्र भी अपने को धन्य समझेंगे। एक बार फिर भारत विश्व गुरु होगा और संपूर्ण वसुधा को कुटुम्ब बनाने भी सफल होगा।

डॉ. अनिल सुलभ
अध्यक्ष, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन

मतदान-महादान : सफल लोकतंत्र की बुनियाद है मतदान

मुद्दा | **डॉ. नीतू कुमारी नवगीत**

बिहार को लोकतंत्र की जननी माना जाता है। वज्जि संघ से जिस व्यवस्था की शुरुआत हुई, वह सारी दुनिया में शासन की सबसे विश्वसनीय व्यवस्था साबित हुई । बिहार एक बार फिर अपने सबसे मौलिक संवैधानिक अधिकार 'मतदान के अधिकार' का प्रयोग करने जा रहा है, जो विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत देश की विशिष्ट पहचान है। हर बार जब चुनाव होते है.चाहे संसद के हों, राज्य विधानसभा के हों या स्थानीय निकायों के, लोकतंत्र की भागीदारी की ऊर्जा फिर से जीवंत हो उठती है।

जैसे-जैसे बिहार 2025 के विधानसभा चुनावों की ओर बढ़ रहा है, राज्य के लोग एक निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं। यह केवल सीटों की लड़ाई नहीं हैय बल्कि शासन, विकास और जन-जवाबदेही की दिशा तय करने का अवसर है। वह भी ऐसे राज्य में जो भारत के सबसे ऊर्जावान और युवा राज्यों में से एक है।

हमारे विशाल और विविधतापूर्ण लोकतंत्र में हर व्यक्ति का वोट अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की कई विधानसभा क्षेत्रों में जीत का अंतर कुछ सौ मतों का ही रहा है। हर नागरिक की भागीदारी से ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया निष्पक्ष, सशक्त और विश्वसनीय बनती है।

भारत के चुनाव आयोग ने आधिकारिक रूप से घोषणा की है कि बिहार विधानसभा चुनाव 2025 दो चरणों में संपन्न होंगे। पहले चरण में 121 विधानसभा क्षेत्रों में 6 नवंबर 2025 को, जबकि शेष 122 सीटों पर 11 नवंबर 2025 को मतदान होगा। यह महत्त्वपूर्ण लोकतांत्रिक प्रक्रिया 14 नवंबर 2025 को संपन्न होगी। इस दौरान 7.4 करोड़ से अधिक पंजीकृत मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने का अवसर मिलेगा, जिससे न केवल राज्य का भविष्य तय होगा बल्कि भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया की प्रभावशीलता और जीवंतता भी सुनिश्चित होगी।

चुनाव आयोग ने मतदाता सूची की सटीकता, पारदर्शिता और समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए विशेष गहन पुनरीक्षण किया है। यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक योग्य नागरिक, चाहे वह किसी भी लिंग, क्षेत्र या सामाजिक पृष्ठभूमि से हो, अपने मताधिकार का निष्पक्ष रूप से प्रयोग कर सकें। निर्वाचन आयोग की स्वीप आइकॉन के रूप में सभी मतदाताओं से मेरी अपील है कि वे मतदान दिवस से पहले वोटर हेल्पलाइन ऐप या नेशनल वोटर्स पोर्टल पर अपनी जानकारी अवश्य जांच लें।

मतदान में भागीदारी है भारतीय लोकतंत्र की धड़कन

भारत के लोकतंत्र की मजबूती केवल पंजीकृत मतदाताओं की संख्या से नहीं, बल्कि उन लोगों की संख्या से मापी जाती है जो वास्तव में मतदान करने आते है। 2019 के आम चुनाव ऐतिहासिक रहे, क्योंकि उस समय भारत ने 67.4 प्रतिशत की दर से रिकॉर्ड मतदान दर्ज किया था। वहीं 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में लगभग 57 प्रतिशत मतदान हुआ, जो उत्साहजनक और भविष्य में अधिक भागीदारी के संकेत देने वाला रहा।

मतदान केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि एक कर्तव्य भी है। यह केवल कानूनी ही नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। जब भी कोई नागरिक मतदान करने का निर्णय लेता है, वह लोकतांत्रिक भावना को दोहराता है और निर्णय-प्रक्रिया में अपनी हिस्सेदारी निभाता है। इसके विपरीत, न डाला गया हर वोट एक गंवाया हुआ अवसर है। ऐसी आवाज जो उस व्यवस्था में कभी नहीं सुनी जाती, जो हर आवाज को सुनने के लिए बनी है!

हम सबको लोकतंत्र की मजबूती के लिए अपनी आवाज बुलंद करनी है।

एक वोट का महत्व बहुत अधिक है। भारत में कई बार ऐसे उदाहरण देखे गए है, जब कुछ ही वोटों ने पूरे निर्वाचन क्षेत्र का नतीजा बदल दिया और कई बार तो सरकार के गठन को भी प्रभावित किया।

कल्पना कीजिए, किसी निर्वाचन क्षेत्र में दो उम्मीदवारों के बीच केवल 200 वोटों का अंतर है। यही छोटा सा अंतर तय कर सकता है कि कौन उम्मीदवार जीतेगा, कौन-सी नीतियां लागू होंगी, और किस प्रकार की सरकार बनेगी। लोकतंत्र की असली ताकत उस एक परिवार या व्यक्ति में निहित है जो मतदान करने का निर्णय लेता है।

बिहार, अन्य भारतीय राज्यों की तरह, हाल के वर्षों में कड़े चुनावी मुकाबलों का साक्षी रहा है। यहां मतदाताओं की भागीदारी का सीधा प्रभाव विकास की प्राथमिकताओं, बजट आवंटन और स्थानीय विकास पर पड़ता है। यदि नागरिक बड़ी संख्या में मतदान करेंगे, तो यह सुनिश्चित होगा कि बनने वाली सरकार वास्तव में जनता की इच्छा को प्रतिबिंबित करे।

आपके लिए आपके मतदान का महत्व

मतदान केवल इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) पर बटन दबा नहीं है, यह आपकी आवाज, चयन, और लोकतंत्र के प्रति आपकी प्रतिबद्धता की घोषणा है। हर वोट में यह ताकत होती है कि वह सरकार की दिशा और राष्ट्र के भविष्य को प्रभावित कर सके। यह सशक्तिकरण का प्रतीक है, क्योंकि हर वोट यह

संदेश देता है कि हर नागरिक महत्वपूर्ण है। उसकी राय शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और कल्याण जैसी नीतियों को दिशा देती है। मतदान करके नागरिक महसूस करते है कि वे न केवल इस देश के मालिक है, बल्कि उसके निर्णयों में भागीदार भी है।

उत्तरदायित्व भी मतदान का स्वाभाविक परिणाम है, क्योंकि जब अधिक संख्या में नागरिक मतदान करते है, तो जनप्रतिनिधियों को यह अहसास रहता है कि उनके कार्यो और प्रदर्शन पर सजग और सक्रिय मतदाताओं की नजर है।

लोकतंत्र के मूल में मतदान एक समानता का कार्य है। मतदान लोकतंत्र की धड़कन है। यह हर नागरिक को, चाहे वह किसी भी वर्ग, जाति या पृष्ठभूमि से हो, समान अधिकार देता है कि वह भविष्य की दिशा तय करने में समान रूप से भाग ले सके। उच्च मतदान की प्रतिशतता विकास की निरंतरता को बढ़ावा देता है, इसका मतलब यह है कि सरकार की नीतियाँ नागरिकों की चिंताओं और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है, विशेषकर उन मुद्दों में जो उच्च प्राथमिकता के है, जैसे बुनियादी ढांचा, महिला सुरक्षा, शिक्षा, और रोजगार।

अंततः, मतदान की प्रक्रिया एक प्रभावी राष्ट्र-निर्माण का साधन है, जो लोकतंत्र को सु.ढ़ करती है, पारदर्शिता को बढ़ाती है और ऐसी शासन व्यवस्था निर्मित करती है जो वास्तव में भारतीय नागरिकों की सामूहिक इच्छा को दर्शाती है।

पीछे न छूटे कोई मतदाता

चुनाव आयोग के सतत प्रयासों के माध्यम से मतदान सभी नागरिकों के लिए सुलभ और समावेशी बन गया है। आयोग अपने प्रमुख कार्यक्रम सिस्टमेटिक वोटर्स एजुकेशन एंड इलेक्टोरल पार्टिसिपेशन (एसवीईईपी) के जरिए जागरूकता पैदा करता है कि लोकतंत्र में सभी मतदाताओं द्वारा मतदान और भागीदारी करना कितना आवश्यक है। यह अभियान स्कूल, कॉलेज, कार्यस्थल और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचता है। पहली बार वोट करने वाले मतदाताओं की भागीदारी पर विशेष ध्यान दिया जाता है और युवा पीढ़ी को यह समझने में मदद की जाती है कि देश के भविष्य में किस प्रकार योगदान दे सकते है। इसी तरह, महिला मतदाताओं को सुरक्षित, आत्मविश्वासी और सशक्त महसूस कराने पर जोर दिया जाता है, ताकि वे बिना किसी रोक-टोक के मतदान कर सकें।

आयोग विकलांग नागरिकों के लिए भी समावेशिता सुनिश्चित करता है, जैसे कि मतदान केंद्रों पर रैंप की व्यवस्था, ब्रेल से सुसज्जित ईवीएम, और डाक मतपत्र उपलब्ध कराना। वरिष्ठ नागरिकों के लिए, कुछ विशेष परिस्थितियों में घर पर मतदान की सुविधा भी प्रदान की जा रही है, ताकि प्रक्रिया आसान हो सके। इन सभी पहलों का मूल लक्ष्य सरल लेकिन शक्तिशाली है. कोई मतदाता पीछे न छूटे।

युवा मतदाता, बड़ी ताकत- बिहार का भविष्य

भारत की सबसे बड़ी ताकत इसकी युवा आबादी है। भारत की कुल आबादी में से 65 प्रतिशत से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु के है, और बिहार भारत के सबसे युवा राज्यों में से एक है। युवा मतदाता परिवर्तन, नवाचार और जीवंतता के प्रेरक होते है।

युवा नीति निर्धारण की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाते है, जो उनके जीवन को प्रभावित करती है.चाहे वह शिक्षा सुधार हो, रोजगार के अवसर, जलवायु परिवर्तन, या डिजिटलीकरण। प्रत्येक छात्र मतदाता भी लोकतंत्र को अधिक जिम्मेदार और बेहतर बनाने में योगदान देता है।

जागरूक और नैतिक मतदान की शक्ति

लोकतंत्र केवल भागीदारी से नहीं, बल्कि सूचित भागीदारी से फलता-फूलता है। मतदाताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे मतदान से पहले उम्मीदवारों, उनकी योग्यताओं और घोषणापत्रों की जानकारी प्राप्त करें।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है मतदान की नैतिकता. मतदान बिना किसी पक्षपात, प्रलोभन या दबाव के किया जाना चाहिए। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हर नागरिक की ईमानदारी पर निर्भर करता है। जब मतदाता सचेत और जागरूक होकर अपने अधिकारों का प्रयोग करते है, तब लोकतंत्र केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि राष्ट्रीय मूल्य बन जाता है।

मतदान दिवस : लोकतंत्र का उत्सव

भारत में सभी चुनावों को लोकतंत्र का उत्सव कहा गया है। यह जनता की सामूहिक इच्छा का उत्सव है, क्योंकि नागरिक अपने भविष्य के बारे में निर्णय ले रहे होते है।

मतदान दिवस पर करोड़ों मतदाता, मतदान अधिकारी, सुरक्षा कर्मचारी और स्वयंसेवक मिलकर सुचारू, पारदर्शी और सुरक्षित चुनाव सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत करते है। राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर बिहार के गाँवों तक, हर मतदान केंद्र लोकतांत्रिक भारत की एक मिसाल बन जाता है।

चुनाव आयोग निष्पक्ष, समावेशी और पारदर्शी मतदान प्रक्रिया का उपयोग करता है, जो भारत में चुनावी प्रक्रियाओं में वैश्विक विश्वास को भी पुनः पुष्टि करता है।

मतदान राष्ट्र के प्रति कर्तव्य

मतदान केवल एक अधिकार नहीं है, बल्कि अपने समुदाय और अपने राष्ट्र के प्रति एक कर्तव्य भी है। हर नागरिक के मतदान करने से लोकतंत्र की नींव और मजबूत होती है।

इतनी बड़ी संख्या में आपकी भागीदारी यह मजबूत संदेश देती है कि भारत में लोकतंत्र मृत, कमजोर या निष्क्रिय नहीं है। अपने मित्रों, परिवार और सहकर्मियों को मतदान के लिए प्रेरित करके, आप उस आंदोलन में शामिल हो रहे है जो लोकतंत्र को सजीव और समावेशी बनाए रखता है।

एक राष्ट्र, एक आवाज, एक वोट

भारत का लोकतंत्र अपनी विशालता, पारदर्शिता और समावेशिता के कारण पूरी दुनिया में सराहा गया है। इसकी असली ताकत इसके नागरिकों की भागीदारी में निहित है।

जैसे-जैसे बिहार अपने 2025 विधानसभा चुनावों के लिए तैयार हो रहा है, प्रत्येक नागरिक का वोट भारतीय लोकतंत्र की व्यापक कहानी में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय निभाएगा। यह कहानी है विविधता में एकता, निर्णयों में समानता, और भागीदारी में शक्ति की।

हर बार जब आप मतदान करते है, आप केवल एक प्रतिनिधि का चुनाव नहीं कर रहे होते, बल्कि राज्य और देश के भविष्य को आकार दे रहे होते है। एक वोट शायद छोटा लगे, लेकिन जब यह करोड़ों वोटों में बदल जाता है, तो यह पूरे राष्ट्र का आंदोलन बन जाता है।

जब दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में फिर से मतदान और रंगे हुए अंगुलियों के साथ उत्साह देखने को मिलता है, तो याद रखेंरू आपका वोट आपकी आवाज है। आपकी आवाज आपकी ताकत है। इसे समझदारी से इस्तेमाल करें। गौरव के साथ भाग लें और लोकतंत्र को मजबूत बनाएं!

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
• राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड प्रेस, मौजा-दरियापुर, पुलिस स्टेशन-शाहपुर, दानापुर, पटना से मुद्रित तथा चतुर्थ तल, सहारा इण्डिया विहार, बोरिंग रोड क्रासिंग, पटना से प्रकाशित। । स्थानीय संपादक - संजय त्रिपाठी *।
पटना कार्यालय- 3911448/417/454/422, फैक्स : 2535935,2520760 विज्ञापन-3911455/434, प्रसार- 3911451/428
वर्ष - 20, अंक 6810
आर.एन.आई. सं. -बीआईएचएचआईएन/2006/18082 Postal Reg. No. : R-10/NP-50/06-07
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु उत्तरदायी

दरख्त से गिरता हुआ हर पत्ता हमें ज़िंदगी के बारे में सीख देता है कि अंत कोमल हो सकता है, और बदलाव खूबसूरत हो सकता है
हर्ष गोयनका@hvgoenka

वह बदलाव लाएं जो आप देखना चाहते हैं, वह प्रकाश देखें जो आप बनना चाहते हैं, अंधकार, अन्याय, घृणा और दुष्प्रचार को दूर भगाएं में आपके स्वास्थ्य, खुशी और उस शांति के लिए प्रार्थना करती हूं जिसके आप हकदार हैं... शुभ दिवाली
संगीता रेड्डी@drsangitareddy

संक्षिप्त खबरें

ऋण व अग्रिम में बढ़ोतरी

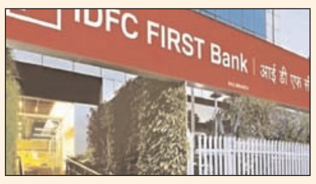

नई दिल्ली। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के ऋण और अग्रिमों में सालाना आधार पर 94% वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि आवास ऋण, वाहन ऋण, उपभोक्ता ऋण, बिज़नेस बैंकिंग, एमएसएमई ऋण और थोक ऋण में हुई वृद्धि के कारण रही। 30 सितम्बर, 2025 तक माइक्रोफाइनेंस पोर्टफोलियो में सालाना 41.6% की कमी दर्ज की गई। 30 सितम्बर, 2024 को जहां एमएफआई पोर्टफोलियो बैंक की कुल वित्तपोषित परिसंपत्तियों का 5.6% था, वहीं यह घटकर 2.7% रह गया। वित्त वर्ष 26 की दूसरी तिमाही में बैंक द्वारा जारी क्रेडिट काड्र्स की संख्या 40 लाख तक पहुंच गई। बैंक के एमडी व सीईओ वी. वैद्यनाथन ने कहा, 'एमएफआई व्यवसाय में जो दबाव था, वह पूरी तरह से एमएफआई उद्योग की समस्या थी और अब यह कम होता दिख रहा है।

'देहात' का 'ग्रेट गेहूं महोत्सव'

नई दिल्ली। एग्रीटेक कंपनी 'देहात' ने ग्रेट गेहूं महोत्सव का दूसरा सीजन लांच कर दिया है। इस स्कीम के तहत कुल 2001 विजेता किसानों को देहात के रिसर्च गेहूं बीज की खरीदारी पर बालेरो, ट्रैक्टर, बुलेट समेत कई आकर्षक उपहार दिये जाएंगे। इस अवसर पर देहात के सह संस्थापक व सीओओ श्याम सुंदर सिंह ने कहा, 'पिछले सीजन जिस तरह किसानों ने देहात पर अपना विश्वास जताकर स्कीम में भाग लिया वह काबिले तारीफ है। हमने 'ग्रेट गेहूँ महोत्सव' के विजेताओं को ट्रैक्टर व ऑल्टो कार जैसे इनाम दिए। पिछले रबी सीजन के दौरान चलायी गयी इस स्कीम में देश भर के 1.5 लाख से अधिक किसानों ने भाग लिया था। जिसमें से 2,001 विजेता किसानों को विशेष इनामों से सम्मानित किया गया था। स्कीम का सबसे बड़ा इनाम भोपाल के जितेंद्र मीना (गब्बर) के नाम रहा।

फैब इंडिया का छठ संग्रह

नई दिल्ली। फ़ैबइंडिया ने स्वर्णिम छठ पूजा कलेक्शन पेश किया है। इस कलेक्शन में हस्तनिर्मित कपड़े और बारीक हस्तकला शामिल हैं। खूबसूरत रंगो का सुन्दर मेल इस कलेक्शन को और भी शानदार बनाता है, जो पारिवारिक समारोहों, त्योहारी अनुष्ठानों और उपहार के रूप में आदर्श विकल्प है। यह कलेक्शन पूरे परिवार के लिए एक शानदार फेस्टिव रेंज प्रस्तुत करती है। महिलाओं के लिए इसमें सुंदर साडी, कुर्ता और दुप्पटा शामिल हैं, जिन्हें नाजुक कढ़ाईदार और गोल्ड से सजाया गया है। पुरुषों के लिए इस कलेक्शन में गहरे लाल और गहरे मैजेंटा शेड्स में क्लासिक कुर्ता और जैकेट उपलब्ध हैं। वही बच्चों के कलेक्शन को कम्फर्ट और सुंदरता को ध्यान में रख के तैयार किया गया है जिसमे हलके और हवादार फैब्रिक्स का इस्तेमाल किया गया है।

एसबीआई एमएफ की नई पहल

नई दिल्ली। एसबीआई म्यूचुअल फंड निवेशक शिक्षा एवं जागरुकता पहल पेश की है। इस पहल में निवेशकों को कई गुर बताए गए हैं। इसमें बताया गया है कि गोल्ड में स्मार्ट तरीके से निवेश कैसे करें। अनिश्चितता और बाजार मंदी में अपने पोर्टफोलियो की सुरक्षा कैसे करें। इसके अलावा मुद्रास्फीति के प्रभाव से कैसे बचें व विविधीकरण के जरिये कैसे लाभ उठाएं आदि के बारे में भी बताया गया है। इसमें यह भी बताया गया कि सुविधाजनक निवेश कैसे किया जा सकता है। इसमें कहा गया है कि सुरक्षित और शुद्ध गोल्ड फंड्स और गोल्ड ईटीएफ भंडारण की चिंताओं को समाप्त करते हैं। 24 कैरेट गोल्ड द्वारा समर्थित, 99.99% शुद्धता के साथ-पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित करता है।

एसओएस विलेज का करार

नई दिल्ली। महिला एवं बाल विकास विभाग और एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेजेस इंडिया ने ऐतिहासिक पांच वर्षीय साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत दिल्ली सरकार की स्पॉन्सरशिप योजना को एसओएस इंडिया के कुटुंब देखभाल कार्यक्रम के माध्यम से संयुक्त रूप से लागू किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य अभिभावक विहीन 350 बच्चों की समग्र देखभाल और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह समझौता महिला एवं बाल विकास विभाग, जीएनसीटी दिल्ली की निदेशक, मिताली नामचूम, आईएएस, और एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेजेस इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सुमंता कर, के बीच नई दिल्ली स्थित विभाग मुख्यालय में हस्ताक्षरित किया गया।

देश के स्मार्टफोन बाजार में दर्ज की गई तीन फीसद की वृद्धि

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत का स्मार्टफोन बाजार कैलेंडर वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में सालाना आधार पर तीन प्रतिशत बढ़कर 4.8 करोड़ इकाई तक पहुंच गया। ओमडिया के नवीनतम शोध में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार, शुरुआती गति के बावजूद, लाभ एक मजबूत वर्ष के अंत तक बरकरार रहने की संभावना नहीं है।

ओमडिया के अनुसार, यह मामूली वृद्धि मुख्य रूप से जुलाई और अगस्त में नए स्मार्टफोन के बाजार में आने, खुदरा विक्रेताओं को दिए गए प्रोत्साहन और त्योहारी सीजन जल्दी शुरू होने के कारण हुई, जिससे कंपनियों ने पहले ही माल भेजना शुरू कर दिया।

ओमडिया ने एक बयान में कहा कि भारत का स्मार्टफोन बाजार 2025 की तीसरी तिमाही में सालाना आधार पर तीन प्रतिशत बढ़कर 4.8 करोड़ इकाई तक पहुंच गया। ओमडिया के प्रमुख विश्लेषक संयम चौरसिया ने कहा, 'चूंकि बाजार में स्वाभाविक मांग कम थी, इसलिए तीसरी तिमाही की बिक्री मुख्य रूप से दुकानों और वितरकों को दिए गए प्रोत्साहनों के जरिये बढ़ी, न कि ग्राहकों की सामान्य खरीदारी से।'

ओमडिया के अनुसार, विवो (आईक्यूओओ को छोड़कर) ने 97 लाख इकाई (20 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी) के साथ बाजार में अपनी बढ़त बढ़ा दी, जबकि सैमसंग 68 लाख इकाई (14 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी) के साथ दूसरे स्थान पर रहा। उसके बाद शाओमी तीसरे स्थान पर रही, जिसने ओप्पो (वनप्लस को छोड़कर) को थोड़े से अंतर से पीछे छोड़ दिया, दोनों विक्रेताओं ने 65 लाख इकाई की बिक्री की। छोटे शहरों की वजह से हुई वृद्धि के साथ, 49 लाख इकाई के साथ एप्पल शीर्ष पांच में वापस आ गई।

चौरसिया ने बताया कि एप्पल ने तीसरी तिमाही में भारत में अब तक का सबसे ज्यादा बिक्री दर्ज किया और 10 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की।

इंडिगो शुरू करेगी मुंबई से मदीना की दैनिक उड़ान

नई दिल्ली (वार्ता)।

विमान सेवा कंपनी इंडिगो मुंबई से सऊदी अरब के धार्मिक शहर मदीना के लिए 15 नवंबर से सीधी दैनिक उड़ान शुरू करेगी।

एयरलाइंस ने बताया कि इस नये रूट के लिए बुकिंग शुरू हो गयी है। वह इस मार्ग पर एयरबस ए320 विमान का परिचालन करेगी। मुंबई से सीधे मदीना को जोड़ने वाली यह पहली उड़ान होगी।

इंडिगो सऊदी अरब के चार शहरों जेद्दाह, रियाद, दम्माम और मदीना के लिए सप्ताह में 150 से अधिक उड़ानों का परिचालन पहले से कर रही है।

एआई से बने डीपफेक के प्रति तय होगी सोशल मीडिया की जिम्मेदारी

■ इलेक्ट्रानिक्स एवं आईटी मंत्रालय ने पेश किया नियमों में संशोधन का मसौदा

नई दिल्ली (भाषा)।

कृत्रिम मेधा (एआई) से बनाए गए डीपफेक और कृत्रिम सामग्री से होने वाले नुकसान से यूजर्स को बचाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने आईटी नियम, 2021 में संशोधन का मसौदा पेश किया है।

प्रस्तावित बदलावों का उद्देश्य 'एआई के जरिये कृत्रिम रूप से तैयार सामग्री' (सिंथेटिक कंटेंट) की स्पष्ट पहचान करना और बड़े सोशल मीडिया मंचों की जवाबदेही को बढ़ाना है। मंत्रालय ने कहा कि जनरेटिव एआई टूल का इस्तेमाल बढ़ने से अब गलत जानकारी पेश करना और नकली वीडियो एवं ऑडियो क्लिप तैयार करना आसान हो गया है। ऐसी स्थिति में इन पर नियंत्रण पाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2021 में कुछ बदलावों का मसौदा पेश किया जा रहा है।

मंत्रालय ने कहा, 'हाल ही में डीपफेक वीडियो के बहुप्रचारित होने की घटनाओं ने दिखाया है कि जनरेटिव एआई की मदद से ऐसे व्यक्ति के कथन या कृत्य दिखाए जा सकते है जो वास्तव में उनके नहीं थे। ऐसा होने से गलत सूचना फैल सकती है, प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है, चुनावों को प्रभावित किया जा सकता है या धोखाधड़ी भी हो सकती है।' प्रस्तावित

नियमों के तहत, 50 लाख या उससे अधिक उपयोगकर्ताओं वाले बड़े सोशल मीडिया मंचों को यह सुनिश्चित करना होगा कि अपलोड की गई सामग्री कृत्रिम तो नहीं है। इसकी पुष्टि के लिए तकनीकी उपाय अपनाने होंगे और इस सामग्री को प्रमुखता से चिह्नित करना अनिवार्य होगा।

संशोधित नियमों में 'कृत्रिम रूप से निर्मित जानकारी' को ऐसी सामग्री के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसे कंप्यूटर के जरिये कृत्रिम या गणना-पद्धति (एल्गोरिद्म) के इस्तेमाल से निर्मित, संशोधित या वास्तविक लगने वाला रूप दिया गया हो। चिह्नांकन मानकों में वीडियो एवं ऑडियो संकेत शामिल होंगे, जो वीडियो सामग्री के कम-से-कम 10 प्रतिशत या ऑडियो कंटेंट की शुरुआती 10 प्रतिशत अवधि तक दिखाई या सुनाई देंगे। इसी तरह कृत्रिम सामग्री बनाने या संशोधित करने वाले मंच को स्थायी विशिष्ट मेटाडाटा या पहचान-चिह्न डालना होगा, जिसे हटाना या बदलना मना होगा।

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कहा कि इन संशोधनों का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं में जागरूकता बढ़ाना, पहचान को सुनिश्चित करना और जिम्मेदारी तय करना है। इसके अलावा एआई प्रौद्योगिकी में नवाचार को भी प्रोत्साहित करना इसका मकसद है। इन नियमों के मसौदे पर सुझाव एवं टिप्पणियां छह नवंबर, 2025 तक भेजी जा सकती है।

दुबई इस्लामिक बैंक का एआई नवाचार के लिए एचसीएल से करार

नई दिल्ली (वार्ता)।

दुबई इस्लामिक बैंक (डीआईबी) ने अपने कार्यप्रणाली में कृमि बुद्धिमत्ता (एआई) को शामिल करने के लिए भारत की अग्रणी सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी एचसीएल टेक्नोलॉजीज के साथ करार किया है।

एचसीएल टेक्नोलॉजीज ने बुधवार को शेयर बाजार को बताया कि दुनिया के पहले इस्लामिक बैंक ने जीआईटेक्स ग्लोबल 2025 में इस साझेदारी की घोषणा की है। इसका लक्ष्य अपने ग्राहकों को व्यक्तिगत स्तर पर खास अनुभव प्रदान करना, निर्णय लेने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना, प्रक्रियाओं में सुधार और जोखिम तथा अनुपालना ढांचे को मजबूती प्रदान करना है। डीआईबी के मुख्य परिचालन अधिकारी ओबैद अल शमसी ने कहा कि बैंक के लिए नवाचार हमेशा से उसके उद्देश्य और जिम्मेदारी का हिस्सा रहा है। एचसीएल से साथ यह साझेदारी एआई आधारित भविष्य को साकार करेगी।

रिजर्व बैंक का स्वर्ण भंडार 880 टन के पार

नई दिल्ली (एजेंसियां)। भारतीय रिजर्व बैंक का स्वर्ण भंडार वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही में 880 टन के स्तर को पार कर गया। इस भंडार में केंद्रीय बैंक ने सितंबर के अंतिम सप्ताह में 0.2 टन सोना जोड़ा। भारतीय रिजर्व बैंक के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, 26 सितंबर, 2025 तक सोने का कुल मूल्य 95 अरब डॉलर था। हालांकि केंद्रीय बैंक के विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार दूसरे सप्ताह गिरावट देखी

गई, लेकिन स्वर्ण भंडार लगातार पांचवें सप्ताह बढ़ा है। यह दिखाता है कि केंद्रीय बैंक अब विदेशी मुद्रा से ज्यादा सोने पर भरोसा कर रहा है और लगातार स्वर्ण भंडार बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। इसमें कुछ योगदान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोने की कीमतों में जारी तेजी का भी है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 26 सितंबर को समाप्त सप्ताह में 2.334 अरब डॉलर घटकर 700.236 अरब डॉलर रह गया। इसमें विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 4.393 अरब डॉलर घटकर 581.757 अरब डॉलर पर आ गई।

भिलाई जेपी सीमेंट के विरुद्ध दिवाला कार्यवाही का NCLT ने दिया आदेश

नई दिल्ली (भाषा)।

राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) ने कर्ज में डूबे समूह जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड की अनुषंगी कंपनी भिलाई जेपी सीमेंट के खिलाफ 45 करोड़ रुपये की चूक के लिए दिवाला कार्यवाही शुरू करने का निर्देश दिया है।

एनसीएलटी की कटक पीठ का यह निर्देश कंपनी के परिचालन ऋणदाता सिद्धगिरि होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा दायर याचिका स्वीकार किए जाने के बाद आया है। सिद्धगिरि होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड पर भिलाई जेपी सीमेंट को कोयले की आपूर्ति के एवज में 45 करोड़ रुपये बकाया थे। एनसीएलटी की दो सदस्यीय पीठ ने एक अंतरिम समाधान पेशेवर (आईआरपी) भी नियुक्त किया जिसने कंपनी के निदेशक मंडल को निलंबित कर दिया है। साथ ही दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) के प्रावधानों के तहत कंपनी को बिक्री, दीवानी मुकदमों आदि के माध्यम से परिसंपत्तियों पर ऋण स्थगन के तहत संरक्षण प्रदान किया है।

एनसीएलटी के सदस्य दीप चंद्र जोशी और बनवारी लाल मीणा की पीठ ने कहा, 'हम यह मानने के लिए इच्छुक हैं कि एक बकाया परिचालन ऋण, एक चूक मौजूद है और तदनुसार वर्तमान आवेदन, भिलाई जेपी सीमेंट के सीआईआरपी शुरू करने के लिए दिवाला एवं दिवालियापन नियम, 2016 के नियम छह के साथ संहिता की धारा नौ के तहत अनुमति दी जाती है और कॉर्पोरेट देनदार को स्वीकार किया जाता है।' भिलाई जेपी सीमेंट अपने परिचालन ऋणदाता सिद्धगिरि होल्डिंग्स से नियमित रूप से कोयला खरीद रही थी। हालांकि सितंबर 2021 और जून 2022 के बीच 2,000 मीट्रिक टन (प्रत्येक) कोयले के तीन खरीद आदेशों (जिनकी कुल मात्रा 6,000 मीट्रिक टन थी) को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया।

क्रय आदेशों के अनुसार, प्रत्येक का भुगतान भिलाई जेपी सीमेंट को आपूर्ति के 15 दिन बाद करना था। आपूर्तिकर्ता ने इस अवधि के दौरान कई 'बिल' बनाए और सीमेंट निर्माता ने मांग का केवल एक आंशिक भुगतान किया। अंततः इसने 22 जून 2024 को आईबीसी के तहत कुल 45.40 करोड़ रुपये की राशि का एक वैधानिक मांग नोटिस भेजा, जिसमें 30.08 करोड़ रुपये मूलधन के लिए और 15.32 करोड़ रुपये 24 प्रतिशत की दर से ब्याज के तौर पर मांगे गए थे जिसका भुगतान न किए जाने का दावा किया गया। कंपनी से कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर सिद्धगिरी होल्डिंग्स ने आईबीसी की धारा नौ के तहत एक याचिका दायर करते हुए एनसीएलटी का रुख किया था।

एयरटेल के निदेशक भार्गव ने दिया इस्तीफा

नई दिल्ली (वार्ता)।

अग्रणी दूरसंचार कंपनी भारती एयरटेल के निदेशक (कस्टमर एक्सपेरियंस) शिवन भार्गव ने बुधवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है और तीन-चार महीने बाद वह कंपनी के वरिष्ठ प्रबंधन का हिस्सा नहीं रहेंगे।

श्री भार्गव ने भारती एयरटेल लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शाश्वत शर्मा के नाम सौंपे अपने इस्तीफे में लिखा है कि वह "संगठन के बाहर अपने पेशेवर लक्ष्यों की तलाश" के लिए उत्सुक हैं, और इसलिए पद छोड़ रहे हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन क्षमता बढ़ेगी

■ 40 गीगावाट से अधिक की परियोजनाओं के लिए बिजली खरीद करार जल्द

नई दिल्ली (भाषा)।

नवीकरणीय ऊर्जा की 40 गीगावाट से अधिक परियोजनाएं बिजली खरीद समझौतों पर हस्ताक्षर होने की अंतिम प्रकिया में है जिसके पूरा होने पर देश की गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली उत्पादन क्षमता जल्द ही 300 गीगावाट तक पहुंच जाएगी। बुधवार को आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई।

भारत की गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित क्षमता 30 सितंबर तक 256 गीगावाट थी जिसमें 50 गीगावाट बड़ी पनबिजली और 8.78 गीगावाट परमाणु ऊर्जा शामिल है। बयान के अनुसार, 40 गीगावाट से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं बिजली खरीद समझौतों, बिजली बिक्री समझौतों पर हस्ताक्षर करने और पारेषण संपर्क सुनिश्चित करने के उन्नत चरणों में हैं। अतिरिक्त परियोजनाओं से देश की कुल गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली उत्पादन क्षमता लगभग 300 गीगावाट हो जाएगी।

फ्लेक्सिबल ऑफिस मार्केट का सबसे बड़ा हब बनेगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत आने वाले वर्षों में एशिया-प्रशांत क्षेत्र के अन्य बाजारों को पीछे छोड़ते हुए फ्लेक्सिबल ऑफिस का सबसे बड़ा हब बनने की ओर अग्रसर है। यह बात माइएचक्यू बाय एनारॉक ने अपनी रिपोर्ट 'भारत में फ्लेक्स ऑफिस बाजार 2025' में कही है।

रिपोर्ट के अनुसार भारत के कॉर्पोरेट और स्टार्टअप्स की नई पसंद फ्लेक्सिबल वर्कस्पेस अब केवल लागत कम करने का विकल्प नहीं रहा, बल्कि यह आधुनिक कॉर्पोरेट और स्टार्टअप रणनीतियों का एक मजबूत हिस्सा बन गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि 2025 तक फ्लेक्सिबल वर्कस्पेस भारत की कुल कमर्शियल रियल एस्टेट लीज़िंग में लगभग 20% की हिस्सेदारी बना लेगा। आईटी व बीएफएसआई जैसे सेक्टर्स फ्लेक्सिबल ऑफिस की मांग को तेज़ी से बढ़ा रहे है।

फ्लेक्सिबल ऑफिस की कुल मांग का 40% इस क्षेत्र से आता है, जो पारंपरिक ऑफिस लीजिंग 32% से काफी अधिक है। बीएफएसआई सेक्टर ने 2023 से 2025 के बीच अपनी हिस्सेदारी को 4.5% से बढ़ाकर 10% कर लिया है। कॉर्पोरेट डील्स में उछाल औसत डील साइज 2023 में 25 सीटों का था, जो 2025 में बढ़कर 53 सीटों तक पहुंच गया है। भारत के फ्लेक्सिबल ऑफिस स्टॉक का 31% भाग बेंगलुरु में है। हैदराबाद, पुणे और मुंबई शहर की 12% हिस्सेदारी है। हैदराबाद का गाचीबोवली और फाइनेंशियल डिस्ट्रिक्ट, पुणे का बनेर और हिंजेवाड़ी, और मुंबई का बीकेसी और नवी मुंबई इस बढ़त को आगे बढ़ा रहे हैं।

रिपोर्ट में कहा गया कि एनसीआर की हिस्सेदारी 26% है। एनसीआर में गुरुग्राम सबसे आगे 10 प्रतिशत है। नोएडा और दिल्ली भी तेजी से उभर रहे हैं। माइएचक्यू के सीईओ उत्कर्ष कवात्रा ने कहा फ्लेक्सिबल वर्कस्पेस अब सिर्फ लागत बचाने का तरीका नहीं है, बल्कि यह आधुनिक कॉर्पोरेट योजनाओं का अभिन्न हिस्सा बन गया है।

बांड आधारित म्यूचुअल फंडों से एक लाख करोड़ की निकासी

नई दिल्ली (भाषा)।

निश्चित आय वाले बांड आधारित म्यूचुअल फंड योजनाओं से सितंबर महीने में 1.02 लाख करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी हुई। बड़े संस्थागत निवेशकों की निकासी इसकी प्रमुख वजह रही।

म्यूचुअल फंड उद्योग के निकाय एम्फी की तरफ से जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। अगस्त में इन फंड योजनाओं से 7,980 करोड़ रुपये की निकासी दर्ज की गई थी जबकि जुलाई में 1.07 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया था।

आंकड़ों के मुताबिक, पिछले महीने ऋण या बांड में निवेश करने वाली 16 में से 12 एमएफ श्रेणियों में शुद्ध निकासी दर्ज की गई। इनमें लिक्विड फंड योजनाओं से 66,042 करोड़ रुपये, मनी मार्केट फंड से 17,900 करोड़ रुपये और बेहद कम अवधि वाले फंड से 13,606 करोड़ रुपये की निकासी शामिल है।

मॉर्निंग स्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया में विश्लेषक नेहाल मेश्राम ने कहा कि यह निकासी मुख्यतः सितंबर तिमाही के अंत की नकदी जरूरतों और अग्रिम कर भुगतान से जुड़ी संस्थागत निकासी का नतीजा है।

बड़े पैमाने पर निकासी होने से ऋण आधारित फंड योजनाओं की प्रबंधन-अधीन परिसंपत्तियां (एयूएम) सितंबर अंत तक घटकर 17.8 लाख करोड़ रुपये रह गई, जो अगस्त में 18.71 लाख करोड़ रुपये थीं।

वहीं, इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं में सितंबर महीने के दौरान 30,421 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ, जो अगस्त के 33,430 करोड़ रुपये से नौ प्रतिशत कम है।

बलिप्रतिपदा के मौके पर बंद रहे शेयर और मुद्रा बाजार

मुंबई (वार्ता)।

महाराष्ट्र में बलिप्रतिपदा के मौके पर बुधवार को शेयर बाजार और मुद्रा बाजार बंद रहे।

कारोबारियों ने बताया कि बलिप्रतिपदा के अवसर पर बुधवार को शेयर और मुद्रा बाजारों में अवकाश रहा। इससे पहले मंगलवार को दिवाली के मौके पर बाजार बंद रहे थे, हालांकि शेयर बाजार में एक घंटे का मुहूर्त कारोबार हुआ था, जिसमें बीएसई का सेंसेक्स और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 बढ़त के साथ नए रिकॉर्ड स्तर पर बंद हुए।

कारोबारियों ने बताया कि गुरुवार से बाजार में नियमित कामकाज होगा।

व्यापार चुनौतियों के खिलाफ 'ग्लोबल साउथ' को एक स्वर में बोलना चाहिए: गोयल

- बहुपक्षीय संस्थाओं, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और देशों के बीच विश्वास की भारी कमी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : भारत ने बुधवार को विकासशील और अल्प विकसित देशों से शुल्क बाधाएं, एकतरफा पर्यावरणीय प्रतिबंध और सेवा क्षेत्र में आने वाली रुकावटों जैसी वैश्विक व्यापार से जुड़ी चुनौतियों के समाधान के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया। जिनेवा में आयोजित संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (अंकटाड) के 16वें सत्र को संबोधित करते हुए वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि अब समय आ गया है कि 'ग्लोबल साउथ' अपनी साझा चिंताओं पर एकजुट होकर आवाज उठाए। उन्होंने कहा कि इस समय दुनिया अस्थिर स्थिति में है, जहां वैश्विक व्यापार प्रणाली कई तरह की अनिश्चितताओं, चुनौतियों और अस्पष्टताओं से घिरी हुई है। गोयल ने कहा कि हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं जहां बहुपक्षीय संस्थाओं, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और देशों के बीच विश्वास की भारी कमी है। हमें हर दिन कई गंभीर और जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि नियम-आधारित व्यापार प्रणाली में लोगों का भरोसा कमजोर हो रहा है। बाजार से इतर प्रथाएं बढ़ रही हैं। मुक्त व्यापार में शुल्क और गैर-शुल्क अड़चनें आ रही हैं। साथ ही आपूर्ति श्रृंखला का अत्यधिक केंद्रीकरण भी एक बड़ी समस्या बन गई है। चाहे वह उत्पादन स्तर पर हो या कभी-कभी मांग के स्तर पर।''

गोयल ने यह भी बताया कि जब विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई थी, तब विकासशील और अल्प विकसित देशों को जो विशेष और अलग तरह की सुविधाएं दी गई थीं, उनमें अब ढील दी जा रही है।

जेएलआर पर साइबर हमले से अब तक 1.9 अरब पाउंड का नुकसान

लंदन, (भाषा) : टाटा मोटर्स के स्वामित्व वाली लक्जरी कार कंपनी जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) पर हाल में हुए साइबर हमले को ब्रिटेन का अब तक का सबसे नुकसानदेह साइबर हादसा माना जा रहा है। इस हमले से ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को करीब 1.9 अरब पाउंड का नुकसान हुआ जबकि 5,000 से अधिक व्यवसाय प्रभावित हुए थे। ब्रिटेन में साइबर घटनाओं का स्वतंत्र मूल्यांकन करने वाले साइबर मॉनिटरिंग सेंटर (सीएमसी) ने जेएलआर साइबर हमले को तीसरे दर्जे की प्रणालीगत घटना के रूप में वर्णित किया है। सीएमसी पांच अंक के पैमाने पर साइबर हमलों को परखती है।

अर्थजगत

गेहूं के भाव में नरमी का रुख

नई दिल्ली, (एनएनएस): गत माह शुरुआत में तेजी के बाद गेहूं का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर होने से मंडियों में उपलब्धि बरकरार रही दूसरी ओर केंद्रीय पूल में भी इस बार 300 लाख मैट्रिक टन के करीब खरीद होने से चौतरफा मंडियों के कारोबारी बिकवाल आ गए हैं। इस वजह से बाजार काफी नीचे आ गया है। गत वर्ष इन दोनों मिल क्वालिटी गेहूं के भाव 2870/2880 रुपए प्रति क्विंटल के बीच चल रहे थे, जो इस समय 2810/2820 रुपए रह गए हैं।

मुर्गी दाना : डी-राइसब्रान 1400/1450, मक्की यूपी 2250/2300, मक्की ग्राइंडिड 2300/2350, सोया 3650/3700, एमसीपी 6150, डी-खल मूंगफली 2700/2900, डी-सूरजमुखी 2200/2250.

मुर्गी अंडा : (रुपया/सैकड़ा): (रुपया/सैकड़ा): दिल्ली (ट्रे सहित) 570, हैदराबाद 540, विजयवाड़ा 560, गोदावरी 528, चेन्नई 590, मुम्बई 605, नमक्कल 525, बंगलौर 580, पुणे 601, अहमदाबाद 590, कानपुर 595, मैसूर 583, पंजाब-टी 562, रायपुर 565, सूरत 600, बरवाला 541, अजमेर 551, भोपाल 575, इंदौर 565, जबलपुर 570, कोलकाता 580, चित्तूर 583, ब्रह्मांपुर 560, लुधियाना 542, नागपुर 580, मुजफ्फरपुर 600, पटना 600, रांची 605, वारंगल 542, प्रयागराज 595, लखनऊ 600, वाराणसी 600

दिल्ली सब्जी एवं फल मंडी : आलू (50 किलो): यूपी 500/750, चिपसोना 600/725, पंजाब &, प्याज (40 किलो): राजस्थान 200/360, महाराष्ट्र 340/520, पुणे 400/600, मध्य प्रदेश 360/600, अलवर &, लहसुन (प्रति किलो): राजस्थान 25/60, यूपी 20/50, पंजाब 20/60, हिमाचल 60/120, अदरक नया (किलो): बंगलौर 60/65, दिमापुर 45/50, टमाटर (25 किलो): बंगलौर 500/550, सोलन &, महाराष्ट्र 600/650, रतलाम 600/650, नींबू (किलो) महाराष्ट्र 25/30, हरी सब्जियां (किलो): बैंगन 20/40, पालक 20/30, धनिया पत्ता 150/180, मटर 100/160, शिमलामिर्च 70/80, मूली 15/25, भिन्डी 20/40, खीरा 20/40, हरीमिर्च 30/60, फूलगोभी 40/80, गाजर 20/40, फल: केला (क्विं) 800/1300, अनार (9 किलो): महाराष्ट्र 600/1000, गुजरात 500/800, जामुन (किलो) &, लीची (किलो)&, तरबूज (किग्रा) &, अंगूर सोलापुर (10 किलो)750/800.

विदेशी फल : सेब (10 किलो): यूएसए 2000/2600, न्यूजीलैंड (18 किलो) 3600/5300, तुर्की (18 किलो) 3000/3500, अफगानिस्तान (10 किलो)&, अमरूद (1 किलो): थाईलैंड 200/250, इमली (किलो): थाईलैंड 300/350, अंगूर (6.5 किलो): चीन 1200/2300, किवी (10 किलो): ईरान 500/2200, इटली (10 किलो) 1800/2600, खजूर (6 किलो): ईरान 700/1300, क्राउन (किलो) &, कीमिया 100/350, इराक (10 किलो)&, लीची (10 किलो): थाईलैंड 2000/4000, आम (किलो): थाईलैंड &, खरबूजा (किलो): थाइलैंड 600/800, संतरा साऊथ अफ्रीका (10 किलो) 1800/2000, ग्रे-फ्रूट (15 किलो) इजिप्ट 1000/1300, नाशपाती (14 किलो) अफ्रीका 1800/3600, पलम चाइना (8 किलो) 700/900, ईरान (8 किलो)400/600, अनार (10 किलो) अफगानिस्तान 400/700.

गाजीपुर सब्जी मंडी : आलू (50 किलो) यूपी 550/650, चिपसोना 650/725, पंजाब &, प्याज (40 किलो): राजस्थान &, नासिक 400/600, एमपी 480/600, टमाटर (कैरेट): महाराष्ट्र &, यूपी देशी &, हिमाचल &, महाराष्ट्र 500/550, बंगलौर 600/650, मटर फली (किलो) 100/120, फूल गोभी 50/60, हरी मिर्च 45/50, नींबू 25/30, टिण्डा 45/50, शिमला मिर्च 70/75, गाजर &, पत्ता गोभी 40/70, अदरक 60/70.

मछली एवं मुर्गा : ब्रायलर (किलो)80/85, लेयर (20 नग) 2075/2100, पैरेंट (किलो) 85/90, मछली (किलो): सुरमई 560/590, सिंघाड़ा छोटा 300/310, बड़ा 420/430, रोहू 225/250, मल्ली 250/330, रीवर सोल 330/350, आल सोल 160/170, पंगास 115/130, झींगा: (किलो) जम्मू 520/530, ए-350/360, बी-330/350, सी-340/350, डी-&, छोटा 250/260, पाम्फ्रैट (250 ग्राम): सफेद 640/650, काला 235/250

पान पत्ता : पान पत्ता: बंगला (200 पान) 80/130, देशी (200 पान) छोटी पत्ती 220/400, मीठा (800 पान) 1600/2200, बनारसी सफेद (170 पान) 250/480, बनारसी हरा (140 पान) 80/120

फूल मंडी : गाजीपुर: विदेशी फूल (10 पीस): आर्किड 350/400, ऑर्नियेंटल लिली 375/400, एशियाटिक लिली 375/380, हेलिकोर्निआ 300/325, कटफ्लावर (10 पीस): जरवेरा 260/280, एंथोरियम (प्रति पीस) 225/250, कार्नेशन (20 पीस) 310/340, डचरोज (20 पीस) 315/340, ग्लेडियस (20 पीस)315/350, रजनीगंधा (50 पीस)300/350, सुपर गुलाब (100 पीस)300/350, मोगरा &, (प्रति किलो): गुलाब 100/150, गेंदा 40/50 जाफरी &, गुलदाउदी 100/120.

कल क्या होगा?

शुक्रवार कार्तिक सुदी तृतीया को बासमती चावल, सोयाबीन, सरसों, सूरजमुखी, बिनौला व इनके तेल, देशी चना, राजमा चित्रा, तुवर, शर्मिली, मसूर, गुड़, लौंग, गोला, हल्दी, अमचूर, कलौंजी, इमली, चीनी, काजू, निकिल, लोहा-इस्पात में लाभ तथा गेहूं, जौ, जई, ढैंचा, मक्की, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, मटर, काबुली चना, रुई, जस्ता, टिन, बादाम, जावित्री, दालचीनी, जायफल, अजवायन, बड़ी इलायची, धनिया, जीरा, सौंफ, खांडसारी, सोना-चांदी, कॉपर, पीतल में हानि की संभावना है। भाग्यांक 3-4-5-9 है। यात्रा विचार- पूरब दिशा की ओर 10.13 बजे पूर्वाह्न से पहले यात्रा शुभ होगी।

इन्फोसिस के प्रवर्तकों ने 18,000 करोड़ रुपये की शेयर पुनर्खरीद से खुद को अलग किया

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) इन्फोसिस के प्रवर्तकों और प्रवर्तक समूह ने कंपनी के 18,000 करोड़ रुपये के शेयर वापस खरीदने की प्रक्रिया में भाग नहीं लेने का फैसला किया है। इनमें नंदन एम. नीलेकणि और सुधा मूर्ति शामिल हैं।

कंपनी बुधवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि शेयर पुनर्खरीद की प्रक्रिया (बायबैक) की घोषणा तक प्रवर्तकों के पास कंपनी में कुल 13.05 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। इन्फोसिस ने कहा कि कंपनी के प्रवर्तक और प्रवर्तक समूह ने 14, 16, 17, 18 और 19 सितंबर, 2025 के अपने पत्रों के माध्यम से इसमें (बायबैक में) भाग नहीं लेने का इरादा व्यक्त किया है।''कंपनी सूचना के अनुसार कि प्रस्तावित प्रक्रिया को मिलने वाली प्रतिक्रिया के आधार पर कंपनी में प्रवर्तक और प्रवर्तक समूह के वोटिंग अधिकार (जो सार्वजनिक घोषणा की तिथि तक 13.05 प्रतिशत हैं) बदल सकते हैं। इन्फोसिस के प्रवर्तकों में कंपनी के सह-संस्थापक एन. आर. नारायण मूर्ति की पत्नी सुधा एन. मूर्ति, बेटी अक्षता मूर्ति और बेटा रोहन मूर्ति शामिल हैं। इसमें कंपनी के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणी, उनकी पत्नी रोहिणी नीलेकणी और बच्चे निहार एवं जान्हवी नीलेकणी भी शामिल हैं। अन्य सह-संस्थापक और उनके परिवार भी कंपनी के प्रवर्तक हैं।

रिजर्व बैंक का स्वर्ण भंडार सितंबर तक 880 टन के पार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : भारतीय रिजर्व बैंक का स्वर्ण भंडार वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही में 880 टन के स्तर को पार कर गया। इस भंडार में केंद्रीय बैंक ने सितंबर के अंतिम सप्ताह में 0.2 टन सोना जोड़ा। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, 26 सितंबर, 2025 तक सोने का कुल मूल्य 95 अरब डॉलर था।

बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच, हाल के महीनों में सुरक्षित निवेश माने जाने वाले सोने की मांग में वृद्धि हुई है। सितंबर में समाप्त छमाही में, रिजर्व बैंक ने 0.6 टन (600 किलोग्राम) सोना खरीदा।

मुख्यमंत्री नायब ने भगवान श्री विश्वकर्मा दिवस पर की पूजा-अर्चना, समस्याएं सुनीं

चंडीगढ़, राजेश जैन (पंजाब केसरी): मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने आज भगवान विश्वकर्मा दिवस के अवसर पर अपने निवास स्थान ' संत कबीर कुटीर' पर भगवान विश्वकर्मा की पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर पुष्प अर्पित उनको नमन किया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहनलाल बडोली भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री सैनी ने प्रदेशवासियों को विश्वकर्मा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और कहा कि भगवान विश्वकर्मा सृजन, परिश्रम और कौशल के प्रतीक हैं। उन्होंने समाज को शिल्प, निर्माण और निपुणता के माध्यम से प्रगति का मार्ग दिखाया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने शिल्पकार बंधुओं के जीवन में सुख, शांति और खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आरंभ की गई 'प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना' पारंपरिक शिल्पकारों और हस्तशिल्पियों के कौशल को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए हरियाणा सरकार ने भी राज्य में कई ऐसी योजनाएं लागू की हैं।

उत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

वरिष्ठ मंडल वि. अभि./क. वि., डी. आर. एम. ऑफिस, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्न कार्य हेतु खुली निविदायें आमंत्रित करते हैं।

1	**कार्य का नाम व स्थान :** ओएचई/टीकेडी एवं ओएचई/एफडीबी के अधिकार क्षेत्र में टीआरडी परिसंपत्तियों की विश्वसनीयता में सुधार के संबंध में विविध कार्य।
2	**अनुमानित लागत :** रु. 1,44,05,409.78/-
3	**बयाना राशि :** रु. 2,22,000/-
4	**ई-निविदा ऑनलाइन जमा करने की अवधि :** 03.11.2025 (10.30 बजे) से 17.11.2025 (15.00 बजे तक)
5	**ई-निविदा समापन की अंतिम तथा ई-निविदा खुलने की तारीख और समय :** 17.11.2025 (15.00 बजे)
6	**निविदा छपाई की लागत :** 07041032
7	**वेबसाइट विवरण जहां निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है :** www.ireps.gov.in

सं.: 23-क.वि.-नई दिल्ली-2025-26 दिनांक: 21.10.2025 3266/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

अभिरुचि की अभिव्यक्ति (EOI)

शुद्धिपत्र

File No. No. 1C-MG/Electronic Lock/NMG Wagon (Part-1)

यह शुद्धिपत्र, विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित 'अभिरुचि की अभिव्यक्ति संख्या 3260/2025' के संदर्भ में जारी किया जाता है, जिसे पहले एक (01) वर्ष की अवधि के लिए 01 (एक) एनएमजी रेक पर, विभिन्न प्रकार के 12 ई-लॉक (06 ई-लॉक स्थायी रूप से दरवाजे पर फिट होने वाले प्रकार के और 06 ई-लॉक पैडलॉक प्रकार के) की आपूर्ति, स्थापना और रखरखाव की पायलट परियोजना के लिए 'अभिरुचि की अभिव्यक्ति' के लिए आमंत्रित किया गया था, अब तकनिकी कारणों से, शुधिपत्र के माध्यम से इसमे विभिन्न संशोधन किये गए हैं:

- अब यह अभिरुचि की अभिव्यक्ति, एक (01) वर्ष की अवधि के लिए 01 (एक) एनएमजी रेक पर **25 ई-लॉक्स (पैडलॉक प्रकार के)** की आपूर्ति, स्थापना और रखरखाव की पायलट परियोजना के लिए आमंत्रित की जाती है।

शेष अभिरुचि की अभिव्यक्ति उसी प्रकार रहेगी, जो अभिरुचि की अभिव्यक्ति संख्या 3260/2025 में प्रकाशित की गई थी। अभिरुचि की अभिव्यक्ति की विस्तृत जानकारी उत्तर रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट **www.nr.indianrailways.gov.in** पर उपलब्ध है। अभिरुचि की अभिव्यक्ति को जमा करने की अंतिम तिथि 29.10.2025 को 15:00 बजे तक है। 3271/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

गुमशुदा की तलाश

सीमा देवी

आम जनता को सूचित किया जाता है कि यह महिला (फोटो में दर्शाई गई है) नामः **सीमा देवी, पत्नीः राजीव, निवासीः मकान संख्या 14/22, गली संख्या 3, सालापुर खेड़ा, बिजवासन, नई दिल्ली**, दिनांक **19.10.2025 को सुबह 11:00 बजे** से अपने घर से लापता है। इस संबंध में **DD No.73A दिनांक 20.10.2025** के तहत **थाना कापसहेड़ा, दक्षिण-पश्चिम जिला, नई दिल्ली-110097** गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

उनका शारीरिक विवरण इस प्रकार है:-

लिंगः महिला, **उम्रः** 22 वर्ष, **कदः** 5'4", **रंगः** गोरा, **चेहराः** गोल, **बनावटः** सामान्य, **पहनावाः** पीले रंग का सूट सलवार।

स्थानीय पुलिस द्वारा लापता महिला का पता लगाने के लिए गंभीर प्रयास किए गए हैं लेकिन अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। यदि किसी को इस महिला के बारे में कोई जानकारी हो तो कृपया निम्नलिखित को सूचित करें।

फोन नंबरः 011-24368638, 011-24368641 | फैक्स नंबरः 011-24368639 |
ईमेल आईडीः cic@cbi.nic.in | वेबसाइटः https://cbi.nic.in

थानाध्यक्ष
थाना कापसहेड़ा, नई दिल्ली-110097
DP/14216/SW/2025 **फोन : 7065036226, 9717825903**

गुमशुदा/अपहृत की तलाश

कृपा बोर्न

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक लड़की (फोटो में दर्शायी गई) जिसका नाम **कृपा बोर्न पुत्री बिंजारा बोथ, निवासी पंचायत टोमडेल, गांव-सिंको, पोस्ट रोबकेरा, थाना गोइकेरा, सिंको गोइलकेरा, पश्चिमी सिंहभूम, गोइकेरा, झारखंड** जो दिनांक **10.10.2025, दोपहर 02:40 बजे, सीए अपार्टमेंट, पश्चिम विहार, दिल्ली** से लापता/अपहृत हो गई है। इस संदर्भ में एक एफआईआर नं./डीडी नं. **74ए, दिनांक 11.10.2025 को थाना पश्चिम विहार पूर्व, ज़िला बाहरी, दिल्ली** में रिपोर्ट दर्ज है। स्थानीय पुलिस ने इस लड़की का पता लगाने के लिए गंभीर प्रयास किए लेकिन अब तक कोई सुराग नहीं मिला है। जिसका हुलिया नीचे दिया गया है:-

लिंगः स्त्री, **आयुः** 21 वर्ष, **कदः** 5' 0" फीट, **रंगः** काला, **चेहराः** गोल, **शरीरः** पतला, **पहनावाः** बैंगनी रंग की टी-शर्ट, बल्यु रंग की लेगिंग और सफेद रंग की चप्पल पहनी है।

यदि किसी को इस गुमशुदा लड़की के बारे में कोई जानकारी मिले तो निम्नलिखित पते पर सूचित करें:-

थाना प्रभारी
थानाः पश्चिम विहार पूर्व, दिल्ली
फोनः 011-25263471
मोबाइलः 7065036131

वेबसाइटः **http://cbi.nic.in**
ई-मेलः **cic@cbi.gov.in**
टेली. न.: **011-24368638/24368641**
फैक्स नं.: **011-24368639**
DP/13870/OD/2025

छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग
कार्यालय मुख्य अभियंता
महानदी गोदावरी कछार, रायपुर (छ.ग.)
ई-प्रोक्युरमेंट निविदा सूचना

eProcurement Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

(प्रथम आमंत्रण)

सिस्टम निविदा क्र. **177855**/निविदा सूचना क्र. 09/वलेलि/2025-26,कवर्धा दिनांक 17 10:2025

निम्नलिखित कार्यों के लिए दिनांक **07.11.2025 17:30** तक ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं-

कार्य का नाम- कबीरधाम जिले के विकास खण्ड बोडला की छीरपानी जलाशय परियोजना के राम्हेपुर वितरक नहर आर.डी. 0 मी. से 4650 मी. सिल्हाटी माईनर क्र. 01 आर. डी. 0 मी. से 1230 मी. सिल्हाटी माईनर क्र. 02 आर.डी. 0 मी. से 1680 मी. बघर्रा माईनर आर.डी. 0 मी. से 780 मी. रान्हेपुर माईनर राइट साइड आर. डी. 0 मी. से 2040 मी., राम्हेपुर माईनर लेफ्ट साइड आर.डी. 0 मी. से 3270 मी. का जीर्णोद्धार एवं सीमेंट कांक्रीट लाईनिंग, संरचनाओं का मरम्मत तथा 34 नग फाल, 01 नग डी.सी. 05 नग माईनर हेड 01 नग व्ही. आर.बी. के निर्माण के साथ कोलाबा पाईप फिक्सिंग कार्य।

अनुमानित लागत- रु. 677.22 लाख

अन्य विवरण एवं विस्तृत निविदा छत्तीसगढ़ शासन की ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in पर दिनांक **24.10.2025** समय 17:31 बजे से देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं।

नोटः निविदा में भाग लेने हेतु ठेकेदारों को ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाईट https://eproc. cgstate.gov.in पर नामांकित/पंजीयन तथा लोक निर्माण विभाग की एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत ठेकेदार को उपयुक्त श्रेणी में पंजीयन कराना अनिवार्य है।

-हस्ता./-, कार्यपालन अभियंता
जल संसाधन संभाग, कवर्धा, जिला कबीरधाम (छ.ग.)
कृते मुख्य अभियंता महागदी गोदावरी कछार
G-252604280/7 **जल संसाधन विभाग, रायपुर छ.ग.**

उत्तर रेलवे

नीलामी सूचना सं०- अक्टूबर-2025/01

अक्टूबर 2025 माह के लिए ई-नीलामी का एक **अतिरिक्त दौर (छठा)** फेरस स्क्रैप, नॉन-फेरस स्क्रैप, अन्य विविध स्क्रैप, खराब हो चुके लोको, कोच और वैगन, स्क्रैप रेल और अन्य स्क्रैप पी. वे सामग्री आदि के निपटान हेतु आयोजित किया जाएगा। प्रयुक्त लेड एसिड बैटरियाँ/प्रयुक्त तेल/अपशिष्ट तेल आदि केवल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में पंजीकृत पुनर्चक्रणकर्ताओं को ही बेचे जाएँगे। नीलामी कार्यक्रम इस प्रकार है।

'अक्टूबर-2025' के लिए अतिरिक्त दौर (6वें दौर) के लिए ई-नीलामी तिथियां'

क्र. सं०	नीलामी करने वाला डिपो/डिवीज़न	नीलामी प्रारंभ समय	6वें दौर के लिए ई-नीलामी तिथि
1.	आलमबाग/लखनऊ 0522-2451257	10:00 AM	31
2.	शकुरबस्ती 011-27015387	10:00 AM	31
3.	वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक/लखनऊ 0522-2234756	10:00 AM	31
4.	वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक/फिरोजपुर 01632-244154	10:00 AM	31
5.	वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक/अम्बाला 0171-2611203	10:00 AM	31
6.	वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक/मुरादाबाद 0591-2413141	10:00 AM	31
7.	वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक/दिल्ली 011-23365311	10:00 AM	31

नोटः 1. नीलामी में बेचे जाने वाले सामग्री का विवरण **www.ireps.gov.in** पर दिये कैटलॉग पर उपलब्ध होंगे । 2. इच्छुक खरीददार उपरोक्त वर्णित सामग्री को नीलामी के पूर्व नामित स्थान पर कार्य दिवस में देख सकते हैं। 3. पूर्व नीलामी में बेचे गये सामग्री का विवरण **www.nr.railnet.gov.in** पर उपलब्ध है। 4. ई-नीलामी में भाग लेने के लिए, क्रेता को ireps पर रजिस्टर्ड होना अनिवार्य है। ई-नीलामी की विस्तृत जानकारी, रजिस्ट्रेशन एवं अन्य नियम व शर्तों के लिए कृपया रेलवे वेबसाइट **www.ireps.gov.in** देखें। 5. अन्य सभी तिथियां, कार्यक्रम और नियम व शर्तें पूर्व सूचना संख्या 'अक्टूबर-2025'के अनुसार ही रहेंगी।

संख्याः 117-एस/सेल/ऑक्शन प्रोग्राम/2025-26 दिनांकः 21.10.2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ 3269/25

दशकों तक गोलियों की गूंज के बाद बस्तर में अब बदल रही तस्वीर

- शांति बहाली की दिशा में सरकार के बढ़ रहे कदम, नक्सलवाद खत्म होने की कगार पर

रायपुर, आशीष शर्मा(पंजाब केसरी): छत्तीसगढ़ में दशकों से जल रहा बस्तर अब शांति बहाली की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ा रहा है। कई वर्षों के संघर्ष के बाद अब बस्तर में उजाले की किरण नजर आने लगी है। वहीं मार्च 2026 तक नक्सलवाद को खत्म करने के टारगेट की उल्टी गिनती भी शुरू हो चुकी है। सरकार के संवाद अभियान और नक्सली पुनर्वास नीति के अलावा सुरक्षा बलों की आक्रामक रणनीति से लेकर लगातार हो रहे आत्मसमर्पण अभियान ने नक्सलवाद को कमजोर किया है। इधर बस्तर के आईजी सुंदर राज की माने तो नक्सली विरोधी अभियान कभी खत्म नहीं होगा लेकिन नक्सली अगर आत्म समर्पण कर मुख्य धारा में लौटना चाहते हैं तो सरकार इसका स्वागत करती है। सरकार ने बातचीत का रास्ता अभी खुला रखा है। इधर राज्य के गृह मंत्री विजय शर्मा ने यह घोषणा करते हुए भरोसा दिलाया है कि सरकार आत्म समर्पण करने वालों को सेफ कॉरिडोर देगी। उन्हें किसी भी तरह का खतरा नहीं होगा। यह घोषणा ही अब बस्तर की तस्वीर बदल रहा है। हाल ही में अब तक के सबसे ज्यादा 210 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया था। इसमें नक्सली नेता रूपेश समेत कई नक्सली कैडर के सदस्य शामिल थे। सरकार ने इनका स्वागत करते हुए इन्हें सुरक्षित जीवन के साथ पुनर्वास की सुविधा उपलब्ध कराई है। बस्तर में बीते एक माह से एक भी गोली नहीं चली है। यही बस्तर की नई तस्वीर की खुद गवाही दे रहा है। बदलते बस्तर के साथ अब यहां दहशत जैसी स्थिति नहीं है। संवाद और आत्मसमर्पण की शुरुआत हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि बीते 23 सितंबर को ही नारायणपुर जिले के जंगल में अंतिम बार मुठभेड़ हुआ था। यहां लगभग सवा दो करोड़ रुपए के इनामी नक्सली केंद्रीय नेता रहे गुडसा उसेंडी मारे गए थे।

रीको ने सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र में फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्पलेक्स का निर्माण कराया

जयपुर, (बनवारी कुमावत) : औद्योगिक क्षेत्र सीतापुरा में रीको द्वारा 4,167 वर्गमीटर पर फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्पलेक्स (Plug & Play) का निर्माण किया गया है। रीको की राज्य में यह इस तरह की पहली परियोजना है जिसमें उद्यमियों को लाइसेंस फीस पर मॉड्यूल्स का ऑनलाइन आवंटन होगा जिसका मुख्य उद्देश्य उद्यमियों को शीघ्र इकाई की स्थापना के लिये रेडी टू मूव मॉडयूल्स उपलब्ध कराना है। इस योजना की अनुमानित लागत रूपये 25 करोड़ में से भारत सरकार द्वारा एमएसई-सीडीपी योजना के अन्तर्गत कुल 10.23 करोड़ का अनुदान स्वीकृत किया गया।

इस फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्पलेक्स में मॉड्यूल के साथ-साथ प्रशासनिक कार्यालय, बैंक, प्रशिक्षण कक्ष, सभा कक्ष एवं कैंटीन, मालवाहक तथा यात्री लिफ्ट इत्यादि की सुविधाओं का निर्माण भी किया गया है। इस बिल्डिंग में कुल 33 मॉड्यूल (भूतल-3, प्रथम-10, द्वितीय-10 एवं तृतीय-10) का निर्मित किये गये है, जिनमें सभी में पेन्ट्री की सुविधा हेतु निर्मित क्षेत्रफल भी बनाया गया है। रीको द्वारा फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्पलेक्स (Plug & Play) में रेडी टू मूव मॉडयूल्स सुविधा के अंतर्गत सूक्ष्म उद्योगों जिनका टर्नओवर 05 करोड़ से अधिक ना हो, को गारमेन्ट एण्ड अपैरल उद्योग के लिए विभिन्न क्षेत्रफल 1236 से 1566 वर्गफीट का बिल्टअप स्पेस उपलब्ध करवाया जायेगा, जिससे वे अपना उद्योग तत्काल शुरू कर सकेंगे।

इस कॉम्पलेक्स में सूक्ष्म उद्यमियों को (जिनका टर्नओवर 05 करोड़ से अधिक ना हो) को रूपये 18/- प्रति वर्गफीट से लाइसेंस फीस के आधार पर मॉड्यूल्स को ई-बिडिंग के माध्यम से प्राप्त दरों पर लाईसेंस आधार पर 01 से 07 वर्ष की अवधि के लिये आवंटित किया जावेगा। इस हेतु रीको द्वारा पृथक से एक पोर्टल बनाया गया है, जिसे दिनांक 24.10.2025 से प्रारम्भ किया जा रहा है।

व्यापारियों को शादियों के सीजन में 5 लाख करोड़ रुपए के बिजनेस की उम्मीद

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दीपावली पर रिकॉर्ड बिक्री हासिल करने के बाद, व्यापारियों को आने वाले त्योहारी सीजन में करीब 5 लाख करोड़ रुपए का बिजनेस होने का अनुमान है। यह जानकारी इंडस्ट्री बॉडी कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) की ओर से दी गई। व्यापारियों का ध्यान अब शादी के सीजन पर केंद्रित हो गया है, जो 1 नवंबर को देवउठनी एकादशी के बाद शुरू होगा और 14 दिसंबर तक जारी रहेगा।

कैट के अनुमान के मुताबिक, इस अवधि के दौरान पूरे भारत में लाखों शादियां होने की उम्मीद है, जिससे बाजारों में दीपावली जैसी रौनक लौट आएगी। कैट के राष्ट्रीय महासचिव प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि दीपावली के बंपर कारोबार के बाद, व्यापारी अब शादियों के सीजन की तैयारी में पूरी तरह जुट गए हैं।

दीपावली के बाद पर्यटन स्थलों पर जाम की स्थिति

हल्द्वानी, संजय तलवाड़ (पंजाब केसरी): दीपावली पर्व के दौरान हल्द्वानी शहर समेत आस-पास के इलाकों में जाम की समस्या ने आम जनता की परेशानी बढ़ा दी। त्यौहार बीतने के बाद पर्वतीय पर्यटन स्थलों की ओर पर्यटकों का भारी जमावड़ा लगा, जिससे प्रमुख पर्यटन स्थलों पर भारी ट्रैफिक जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस कारण न केवल पर्यटक बल्कि स्थानीय लोग भी घंटों जाम में फंसे रह गए। हल्द्वानी शहर में दीपावली के दौरान यातायात व्यवस्था बेहद खराब रही। पुलिस-प्रशासन की अनदेखी और बाजार में व्यापारियों की मनमानी के कारण सड़कों पर अतिक्रमण बढ़ गया। व्यापारियों ने सड़कों तक सामान फैला दिया, जिसके कारण गाड़ी पार्किंग की जगह न रह गई और कई जगह फड़-रेहड़ी वालों को भी सड़कों पर कब्जा दे दिया गया। इससे बाजार में खरीदारी करने आने वाले नागरिकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

12 राशियां और आपका दिन

Forecast for 23 October 2025
By: Dr. Prem Kumar Sharma
(Astrologer, Palmist, Numerologist & Vastu Consultant)
Email: psharma@premastrologer.com,
Url: http://www.premastrologer.com
Contact: Panchkula: +91-172-2562832, 2572874
Delhi: +91-11-47033152/40532026

मेष ARIES (21 मार्च - 20 अप्रैल) भारी भोजन की बजाय हल्की डाइट लेने की कोशिश करें। त्योहारों के खर्चों के लिए अलग बजट तैयार करना बेहतर रहेगा। वर्कप्लेस पर जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं, टाइम मैनेज करें। **लकी नंबर : 18, लकी कलर : पर्पल**

वृषभ TAURUS (21 अप्रैल - 20 मई) क्रेडिट कार्ड पर बहुत अधिक निर्भर न रहें। आज ऑफिस में ओवरटाइम करना पड़ सकता है। घरेलू कार्यों में सभी सदस्य अपना योगदान दें। आपके प्रयासों से पार्टनर के चेहरे पर मुस्कान आएगी। **लकी नंबर : 17, लकी कलर : डार्क ग्रे**

मिथुन GEMINI (21 मई - 21 जून) शाम को थोड़ी सुस्ती महसूस हो सकती है। खर्चों के साथ-साथ कमाई में भी इजाफा होगा। सभी टास्क समय पर पूरे करने से सीनियर्स खुश होंगे। **लकी नंबर : 1, लकी कलर : रेड**

कर्क CANCER (22 जून - 22 जुलाई) परिवार के साथ मिलकर पूजा-पाठ या अनुष्ठान करेंगे। रिश्तों में पार्टनर के पर्सनल स्पेस का ध्यान रखें। बहुत अधिक तला-भूना खाने की बजाय पौष्टिक डाइट लें। **लकी नंबर : 9, लकी कलर : मैरून**

सिंह LEO (23 जुलाई - 23 अगस्त) पॉज़िटिव एनर्जी से दिनभर एक्टिव महसूस करेंगे। धीरे-धीरे पुराने कर्ज चुकाने से राहत मिलेगी। मन लगाकर काम करने से मुश्किल काम भी आसानी से हो जाएंगे। **लकी नंबर : 22, लकी कलर : गोल्डन**

कन्या VIRGO (24 अगस्त - 23 सितंबर) ज्यादा खाना खाने से पाचन में दिक्कत हो सकती है। बोनस या इन्सेंटिव पर ज्यादा निर्भर न रहें। ऑफिस में सीनियर्स की मदद से काम का बोझ कम होगा। बच्चों को अच्छी सीख देने से वे और समझदार बनेंगे। **लकी नंबर : 11, लकी कलर : येलो**

तुला LIBRA (24 सितंबर - 23 अक्टूबर) आकर्षक स्कीम में बहुत सोच-समझकर ही पैसा लगाएं। आपके आइडिया सभी लोगों को प्रभावित करेंगे। परिवार के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। **लकी नंबर : 2, लकी कलर : सिल्वर**

वृश्चिक SCORPIO (24 अक्टूबर - 22 नवंबर) ज्यादा मजबूरी न हो तो पैसे उधार लेने से बचें। अपनी प्रतिभा से सभी टीम मेंबर्स को प्रभावित करेंगे। घर में पुराने रीति-रिवाज़ों को निभाते रहना ज़रूरी है। **लकी नंबर : 4, लकी कलर : ग्रीन**

धनु SAGITTARIUS (23 नवंबर - 21 दिसंबर) ऑफिस में टीम मीटिंग थोड़ी बोरिंग लग सकती है। घर के शांत माहौल में पॉजिटिविटी महसूस होगी। जंक फूड की क्रेविंग्स को कंट्रोल में रखने की जरूरत है। **लकी नंबर : 6, लकी कलर : पीच**

मकर CAPRICORN (22 दिसंबर - 21 जनवरी) बिजी शेड्यूल के कारण थकान महसूस हो सकती है। भरोसेमंद लोगों को भी सोच-समझकर ही पैसे दें। नौकरीपेशे लोगों को आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। **लकी नंबर : 8, लकी कलर : क्रीम**

कुंभ AQUARIUS (22 जनवरी - 19 फरवरी) डेस्क जॉब करने वाले लोग बीच-बीच में स्ट्रेचिंग करें। किसी समझदार की सलाह वित्तीय मोर्चे पर काम आएगी। वर्कप्लेस पर आपके द्वारा लिए गए फैसलों से अच्छे परिणाम मिलेंगे। परिवार के लिए कुछ स्पेशल करने का मन करेगा। **लकी नंबर : 5, लकी कलर : बेज**

मीन PISCES (20 फरवरी - 20 मार्च) डीप ब्रीदिंग करने से मानसिक तनाव दूर होगा। घर में बच्चों के साथ खेल-कूद में समय बीतेगा। पैसे का लेन-देन करते समय अधिक सावधानी बरतें। प्रोफेशनल फ्रंट पर पहचान बनाने में थोड़ा समय लग सकता है। **लकी नंबर : 7, लकी कलर : सैफ्रॉन**

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

प्रतिभा पलायन रुकेगा ?

भारत से वैज्ञानिकों व शोधार्थियों का पलायन रोकने के लिए केन्द्र सरकार ऐसी नीतिगत योजना की शुरूआत कर रही है जिससे विदेशों में जाकर बसे विज्ञान व टैक्नोलॉजी के प्रतिष्ठित लोग वापस आ सकें। भारत में उन्हें सभी शोध सुविधाएं देने की भारत सरकार की योजना है। साथ ही भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों में इस क्षेत्र के विद्वानों को वापस लाने के लिए भी सरकार ऐसी नीति बना रही है जिससे भारत के विश्वविद्यालयों में वे शिक्षण कार्य कर सकें। भारत भूला नहीं है कि किस प्रकार साठ के दशक में प्रसिद्ध वैज्ञानिक हर गोविन्द लाल खुराना की उपेक्षा हुई थी और अमेरिका जाकर बसने के बाद उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार जीता था। भारत से विज्ञान व टैक्नोलॉजी के क्षेत्र से पलायन रोकने की सरकार की पक्की योजना बन रही है। भारतीय विश्वविद्यालयों में उच्च श्रेणी के शिक्षकों की भारी कमी है अतः भारत सरकार चाहती है कि इस क्षेत्र के जो विशेषज्ञ भारतीय मूल के हैं वे वापस आकर अपनी सेवाएं दे सकें। उनकी सुख-सुविधा के लिए सरकार ऐसी विशद नीति पर काम कर रही है जिसमें वेतन से लेकर अन्य शोध सुविधाओं की उच्च गुणवत्ता को उपलब्ध कराया जा सके। मगर यह सब कुछ इस वजह से किया जा रहा है कि अमेरिका की मौजूदा ट्रम्प सरकार अपने प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों को दी जानी वाली मदद में कटौती कर रही है और उनकी आर्थिक व शैक्षणिक स्वायत्तता को सीमित कर रही है।

इस सिलसिले में भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय ने शिक्षा मन्त्रालय के उच्च शिक्षा विभाग, विज्ञान व टैक्नोलॉजी विभाग तथा बायोटेक्नोलॉजी विभाग के साथ उच्च मन्त्रणा की है जिससे नई नीति की रूपरेखा तैयार की जा सके। इस नीति के तहत विदेशों में बसे भारतीय वैज्ञानिकों व प्रोफेसरों को भारत आकर अपनी सेवाएं देने के लिए प्रेरित किया जायेगा। भारत में कहने को हजारों विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थान भी हैं परन्तु विश्व के 100 प्रथम उच्च शिक्षण संस्थानों में इनकी गिनती नहीं होती है। भारत के विश्वविद्यालयों में योग्य प्राध्यापकों की कमी इस वजह से महसूस की जाती है कि योग्यतम व्यक्ति विदेश चले जाते हैं। भारतीय छात्र भी उच्च शिक्षा पाने की गरज से विदेशों में बड़ी संख्या में जाते हैं। विदेशों के विश्वविद्यालयों में भारतीय शिक्षकों को बेहतर वेतन व अन्य सुविधाएं प्राप्त होती हैं जिनका मुकाबला भारत नहीं कर सकता मगर ऐसे शिक्षकों के लिए बेहतर तन्त्र की स्थापना करके उन्हें अपने देश की सेवा करने के लिए प्रेरित जरूर कर सकता है। ऐसी ही हालत विज्ञान के क्षेत्र में शोधार्थियों की हैं। अतः भारत सरकार देश में व्याप्त लाल फीता शाही को तोड़कर शोधार्थियों के लिए प्रेरक वातावरण तैयार करना चाहती है। विश्वविद्यालयों की प्रतिष्ठा इस पैमाने से नापी जाती है कि उनमें किस स्तर के शिक्षक पढ़ाई कराते हैं। इसी प्रकार शोधार्थियों की भी समस्या है। इन्हें भी भारत में अनुकूल वातावरण पाने के लिए नौकरशाही के दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं जिसकी वजह से वे विदेशों में पलायन कर जाते हैं। अतः सरकार नीति बना रही है कि विदेशों में जाकर काम कर रहे प्रतिष्ठित शोधार्थियों को भारतीय संस्थानों जैसे आईआईटी आदि में अच्छे पदों पर रखा जाये व तदनुसार वेतन भी नियत किया जाये। नई योजना के तहत सरकार विज्ञान व टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में कम से कम 12 ऐसे संकायों का चयन करेगी जिनमें उच्च प्रतिभायुक्त वैज्ञानिकों की आवश्यकता होती है। इसमें इंजीनियरिंग व गणित भी शामिल हैं क्योंकि रणनीतिक रूप से राष्ट्रीय क्षमता बढ़ाने के लिए यह जरूरी है। जाहिर है कि एक ओर जब अमेरिका जैसे देश में हारवर्ड विश्वविद्यालय सरीखे शिक्षण संस्थानों की आर्थिक व शैक्षणिक स्वतन्त्रता समाप्त की जा रही है और ट्रम्प प्रशासन इसे दी जाने वाली लाखों डालर की मदद में कटौती कर रहा है तो अमेरिका से यूरोपीय देशों में पलायन बढ़ सकता है। इसी को ध्यान में रखकर यूरोपीय देशों ने अपने उच्च शिक्षण संस्थानों की स्वायत्तता को मजबूत करने की घोषणा की है। इसके मद्देनजर विदेशों में कार्यरत भारतीय मूल के उच्च शिक्षकों व शोधकर्ताओं को वापस भारत बुलाने की नीति पर तेजी से काम हो रहा है। हाल ही में इस बाबत यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उरेसिला वांडेर लेयन ने कहा था कि सभी यूरोपीय देश अपने यहां शैक्षणिक स्वायत्तता को इस तरह मजबूत करेंगे कि इसे अपने कानून का हिस्सा बना डालेंगे।

दूसरी तरफ चीन भी विदेशों में बसे अपने वैज्ञानिकों व विदेशी प्रतिष्ठित शोधार्थियों को स्वदेश बुलाने के लिए भारी खर्चा कर रहा है। जबकि ताईवान जैसे छोटे देश ने भी छह नये शोधार्थी केन्द्र खोलने की घोषणा की है। बेशक भारत के कई संस्थान विदेशों में कार्यरत प्रतिष्ठित शिक्षाविदों को लघुकालिक तौर पर भारत में काम करने के लिए उकसा रहे हैं परन्तु इससे भारत की वह जरूरत पूरी नहीं होती जिसकी उसे दीर्घकालिक तौर पर आवश्यकता है। हालांकि भारत सरकार का विज्ञान व टैक्नोलॉजी विभाग विदेशी प्रतिभाओं के साथ लघुकालिक सहयोग कार्यक्रम 2016 से चला रहा है मगर इसके परिणाम ज्यादा उत्साहवर्धक नहीं हैं। इसकी एक वजह यह है कि भारत में वेतन व सुविधाएं वैश्विक स्तर के मुकाबले बहुत थोड़ी हैं। भारत में जहां एक प्रोफेसर को 38 हजार डालर प्रतिवर्ष की आय होती है वहीं अमेरिका में उसकी आय एक लाख 30 हजार डालर से लेकर दो लाख डालर प्रति वर्ष की होती है जबकि चीन में उसका वेतन एक लाख डालर वार्षिक का पड़ता है। अतः इस तरफ सबसे ज्यादा ध्यान दिये जाने की जरूरत है।

दूसरी तरफ चीन भी विदेशों में बसे अपने वैज्ञानिकों व विदेशी प्रतिष्ठित शोधार्थियों को स्वदेश बुलाने के लिए भारी खर्चा कर रहा है। जबकि ताईवान जैसे छोटे देश ने भी छह नये शोधार्थी केन्द्र खोलने की घोषणा की है। बेशक भारत के कई संस्थान विदेशों में कार्यरत प्रतिष्ठित शिक्षाविदों को लघुकालिक तौर पर भारत में काम करने के लिए उकसा रहे हैं परन्तु इससे भारत की वह जरूरत पूरी नहीं होती जिसकी उसे दीर्घकालिक तौर पर आवश्यकता है। हालांकि भारत सरकार का विज्ञान व टैक्नोलॉजी विभाग विदेशी प्रतिभाओं के साथ लघुकालिक सहयोग कार्यक्रम 2016 से चला रहा है मगर इसके परिणाम ज्यादा उत्साहवर्धक नहीं हैं।

लोकतंत्र के बड़े-बड़े संस्थान

"नाम बड़े दर्शन छोटे" यह लोकोक्ति
आजकल चलन में पाते हैं,
जब भ्रष्टाचार निरोधक तंत्र ही
भ्रष्टाचार के नए रास्ते अपनाते हैं,,
देश के हालात तब और भी गंभीर हो जाते हैं,
जब दिखावे की चपेट में लोकतंत्र के बड़े-बड़े संस्थान आते हैं...।।"

गीता पाढा

मर्यादाएं
चन्द्रमोहन
संपादक : वीर प्रताप
chander_m@ hotmail.com
BLOG: chandermohan.net

पाकिस्तान बनाम तालिबान और हमारी मजबूरी

जब से अफ़ग़ानिस्तान के विदेश मंत्री मौलवी अमीर खान मुत्तकी भारत की छह दिन की यात्रा कर लौटें हैं पाकिस्तान बहुत छटपटा रहा है। काबुल और कंधार पर हवाई हमले हो चुके हैं और सीमा पर झड़पों में दोनों तरफ का बहुत नुक्सान हुआ है। पाकिस्तान के तड़पने का कारण ढूंढना भी मुश्किल नहीं है। तालिबान उनकी पैदाइश है। उसे पाकिस्तान के उत्तर-पूर्व के मदरसों में तैयार किया गया। पाकिस्तान उन्हें अपने लड़के कहता रहा, पर यह लड़के अब बड़े हो चुके हैं, आज़ाद हो चुके हैं और अपने पूर्व मेहरबान के खिलाफ लड़ाकू बन चुके हैं।

उन्होंने पाकिस्तान की कठपुतली बनने से इंकार कर दिया है। अफगानिस्तान से सोवियत यूनियन और बाद में अमेरिका को भगाने में पाकिस्तान ने तालिबान की बहुत मदद की थी। 2021 में जब अमेरिका वहां से निकला तो पाकिस्तान बम-बम था। काबुल में 'इस्लामिक एमिरेट ऑफ अफगानिस्तान' की स्थापना के बाद सबसे पहले पहुंचने वालों में पाकिस्तान की कुख्यात आईएसआई का प्रमुख था, तब पाकिस्तान समझने लगा था कि उसे 'स्ट्रैटेजिक डैप्थ' अर्थात रणनीतिक गहराई मिल गई। सोचा था कि वह तालिबान का इस्तेमाल भारत के विरुद्ध करेगा। इंग्लैंड के अखबार द इकॉनिमिस्ट ने भी तब लिखा था कि अफगानिस्तान पर तालिबान का कब्जा भारत के लिए रणनीतिक धक्का और तीखी मानहानि है", पर अब उसी तालिबान के विदेश मंत्री भारत का सफल दौरा कर लौटे हैं। भारत सरकार ने भी घोषणा कर दी कि काबुल में हमारे टैक्निकल मिशन को अपग्रेड कर दूतावास का दर्जा दिया जा रहा है। मुत्तकी के भारत आगमन के कुछ घंटों के बाद ही पाकिस्तान ने तहरीक-ए-तालिबान-पाकिस्तान (टीटीपी) के काबुल ठिकानों पर हमले कर दिए जिसका जवाब तालिबान ने पाकिस्तान की सीमा चौकियों पर हमले कर दिए। दोनों के बीच तीखी सैनिक भिड़न्त हुई, जिसमें कई सौ लोग मारे गए। दोहा में दोनों तरफ से शान्ति वार्ता के बाद युद्ध विराम हो गया, पर देखना है कि यह कितना कायम रहता है। दिलचस्प है कि जिस तालिबान को पाकिस्तान भारत के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहता था उसी पर पाकिस्तान के रक्षा मंत्री खव्वाजा आसिफ आरोप लगा रहे हैं कि यह "प्राक्सी ऑफ इंडिया" अर्थात भारत का प्रतिनिधि है। खव्वाजा आसिफ की शिकायत है कि "तालिबान के सारे फ़ैसले दिल्ली में बनकर आ रहे हैं। मुत्तकी साहिब एक हफ्ता वहां बैठे रहे। क्या प्लान ले कर आए?" अर्थात पाकिस्तान और अफगानिस्तान के रिश्तों का पहिया पूरा घूम गया है। पाकिस्तान तालिबान पर यह आरोप भी लगा रहा है कि अफगानिस्तान टीटीपी का इस्तेमाल पाकिस्तान के अंदर आतंकी घटनाओं के लिए कर रहा है। अपने विदेश नीति के लक्ष्य पूरे करने के लिए पाकिस्तान ने आतंक का सहारा लिया था, पर वही हथियार आज उनके ख़िलाफ इस्तेमाल किया जा रहा है। हिलेरी क्लिंटन का कथन जो उन्होंने पाकिस्तान के बारे कहा था याद आता है कि अगर आप सांप पालोगे तो जरूरी नहीं कि वह पड़ोसियों को ही डंसेंगे, वह आप को भी डंस सकते हैं। पाकिस्तान के अंदर आतंकी हमलों के कारण गम्भीर संकट खड़ा हो रहा है। कट्टरवादी संगठन तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान (टीएलपी) सरकार के खिलाफ लगातार प्रदर्शन कर रहा है। वर्तमान सरकार को इज़राइल समर्थक समझा जा रहा है। अक्तूबर के मध्य में पाकिस्तान की सेना ने लाहौर से 30 किलोमीटर दूर मुरीदके पर हमला कर दिया। टीएलपी का दावा है कि कई सौ लोग मारे गए। कई प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि सेना द्वारा नरसंहार किया गया। कई वीडियो में सड़कों पर बिखरी लाशें नजर आती हैं। संख्या कुछ भी हो सेना और रेंजर्स द्वारा अपने ही लोगों पर हमला कोई सामान्य घटना नहीं है। सेना का दावा है कि 'कई सौ आतंकवादी' पकड़े गए। अगर सचमुच देश के अंदर आतंकियों की इतनी संख्या है तो पाकिस्तान की आंतरिक स्थिरता को भारी खतरा है।

पाकिस्तान को कई जगहों पर विरोध और बग़ावत का सामना करना पड़ रहा है। अफगानिस्तान का नेतृत्व सदा ही पाकिस्तान के इरादों के प्रति खबरदार रहा है। तालिबान के एक संस्थापक मुल्ला अब्दुल सलम ज़ैफ ने अपनी जीवनी में पाकिस्तान के बारे लिखा है कि वह "दो मुंह वाला देश है...आईएसआई अफगानिस्तान में उस तरह फैल गई है जैसे इंसान के शरीर में कैंसर फैलता है"। दोनों के बीच तनाव की भी पृष्ठभूमि है जिसके केन्द्र में दोनों इस्लामी देशों का इतिहास है। अफगानों ने कभी भी अंग्रेजों द्वारा दोनों देशों के बीच खींची गई डूरंड रेखा को स्वीकार नहीं किया। अफगानिस्तान में हमारे पूर्व राजदूत विवेक काटजू के अनुसार पठान जो दक्षिणी और पूर्वी अफगानिस्तान तथा उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान में फैले हुए हैं, 2640 किलोमीटर डूरंड सीमा को "ऐतिहासिक ज़ख्म" मानते हैं जो विभाजन अंग्रेजों ने जबरदस्ती करवाया का मतलब था कि पठान भी विभाजित हो गए। बड़ी संख्या अफगानिस्तान में है, पर पाकिस्तान में भी पठानों की संख्या मामूली नहीं हैं जिनमें फैला असंतोष वहां अस्थिरता पैदा कर रहा है। अफगानिस्तान की समस्या है कि वह पूरी तरह से घिरा हुआ देश है जो पाकिस्तान, ईरान और सेंट्रल एशियन रिपब्लिक पर पारगमन के लिए निर्भर है। वह चाहते हैं कि पाकिस्तान वाघा के रास्ते भारत के साथ व्यापार की इजाज़त दे, पर पाकिस्तान ने भारत के साथ उनका व्यापार रोक दिया है। इससे अफगानिस्तान में पाकिस्तान से नाराजगी और बढ़ गई है। पाकिस्तान में पठानों और बाक़ी जातियों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मतभेद है। पंजाबी उन्हें पसंद नहीं करते और पठान पंजाबियों को बर्दाश्त नहीं करते। पाकिस्तान ने खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में पठानों को शासन देने की कोशिश की है, पर उनका इस्लामाबाद के साथ टकराव चलता रहता है। पाकिस्तान की बड़ी शिकायत है कि अफगान 'एहसान फरामोश' है। पाकिस्तान समझता है कि उसने सोवियत यूनियन के समय अफगान जेहाद की मदद की थी, नहीं तो वह सोवियत के आधीन हो जाते। लाखों अफगान शरणार्थियों को पाकिस्तान में पनाह दी गई।

अमेरिका को वहां पराजित करने के लिए भी तालिबान की मदद की गई। पर अफगान कहते हैं कि दोनों सोवियत यूनियन और अमेरिका को निकालने में उन्होंने क़ुर्बानी दी है और पाकिस्तान उन्हें अपने हित के मुताबिक इस्तेमाल करता रहा है। वह यह भी शिकायत करते हैं कि पाकिस्तान में उनके लोगों के साथ सही बर्ताव नहीं किया जा रहा। और इस सब के बीच 'इंडिया एंगल' है। पाकिस्तान भारत और अफगानिस्तान की दोस्ती बर्दाश्त नहीं कर सकता। अतीत में भारत ने अफगानिस्तान में बहुत काम किया है। कई परियोजनाएं शुरू की हैं जिनको पाकिस्तान अविश्वास से देखता है। अब फिर दोनों में सामान्य होते रिश्ते पाकिस्तान को बुरी तरह चुभ रहे हैं। इसीलिए झल्लाकर काबुल और कंधार पर हवाई हमले किए गए हैं। पाकिस्तान ने अफगान इतिहास नहीं पढ़ा। न रूसी और न ही अमेरिका ही उन्हें अधीन कर सके हैं। अफगानियों को लड़ना आता है। वह किसी का दुमछल्ला बनने को तैयार नहीं। अफगान लोगों के साथ हमारा बहुत पुराना भावनात्मक सम्बंध रहा है। फ़िल्म काबुलीवाला में इसका मार्मिक चित्रण किया गया है। खान अब्दुल गफ्फार खान ने आज़ादी के समय उन्हें अलग करने के लिए कांग्रेस के नेतृत्व को कभी माफ नहीं किया था, पर तालिबान के साथ वह रिश्ता नहीं रहा। यही कारण है कि मुत्तकी की भारत यात्रा की यहां आलोचना भी हुई है। कड़वी सच्चाई है कि तालिबान एक कट्टर प्रतिगामी इस्लामी जमात है जो आज भी औरतों को घरों में क़ैद रखती है। काबुल में रहे हमारे पूर्व राजदूत जयंत प्रसाद ने बताया है कि "अफगानिस्तान के सार्वजनिक जीवन से महिलाएं ग़ायब हो गईं हैं"। ऐसा शासन हमारा स्थाई दोस्त नहीं हो सकता। तालिबान वह है जो भारत नहीं है। जावेद अख्तर ने मुत्तकी को "दुनिया के सबसे बुरे आतंकी गुट का प्रतिनिधि" बताया है और तालिबान को "मुस्लिम नाज़ी" कहा है। मुत्तकी ने भी उस समय विवाद खड़ा कर लिया जब दिल्ली में अपने पत्रकार सम्मेलन में महिलाओं को नहीं बुलाया। देश में शोर मचने पर दूसरे पत्रकार सम्मेलन में महिलाओं को बुलाया गया पर वह अफगानिस्तान में महिलाओं की दयनीय हालत पर लोगों का ध्यान ले गए जहां वह शिक्षा से महरूम रखी जाती है और अकेले घर से निकलना उनके लिए मुश्किल है। दिसम्बर 1999 का इंडियन एयरलाइंस की उड़ान 814 वाला घटनाक्रम भी भुलाया नहीं जा सकता है जब अपहरण कर जहाज़ को कंधार ले जाया गया था और मसूद अज़हर जैसे आतंकवादियों को वहां तालिबान ने पाकिस्तान को सकुशल सौंप दिया था। 2001 में तालिबान ने बमियान स्थित विशाल दो बुद्ध प्रतिमाओं (115फुट और 174 फुट) को विस्फोटक से उड़ा दिया था।

मुल्ला ओमर ने इन्हें इस्लाम विरोधी बताया था। गुफाओं में ख़ाली जगह इनकी धर्मांध मानसिकता बताती है। सही कहा गया है कि दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। इस सिद्धांत पर चलते हुए ही मुत्तकी को यहां बुलाया गया और सम्बंध सामान्य करने की कोशिश हो रही है। पर हमारे में और उनमें कुछ भी साझा नहीं, उसके सिवाय कि दोनों पाकिस्तान से परेशान है। तालिबान कोई नायकों की जमात नहीं है जैसा कुछ क्षेत्र प्रस्तुत कर रहे हैं। तालिबान को अधिक से अधिक हम अपनी अस्थायी मजबूरी कह सकते हैं।

बंदी सिखों की रिहाई पर राजनीति कब तक?

सिख सियासत
सुदीप सिंह
newsreporter.2008@gmail.com

हमारे देश का कानून यह कहता है कि किसी भी कैदी की सजा पूरी होने के बाद उसे एक दिन भी जेल में नहीं रखा जा सकता मगर बड़ी ही हैरानी की बात है कि आज भी देश के अलग-अलग राज्यों की जेलों में कई ऐसे सिख कैदी बन्द हैं जिनकी सजाएं पूरे हुए भी कई कई साल बीत चुके हैं पर वह अभी भी जेल से रिहाई के लिए सरकारों के रहमो करम पर हैं, और सरकारें इनकी रिहाई करके अपने बहु गिनती वोट बैंक को नाराज नहीं करना चाहती। इतना ही नहीं इनमें उन पंथक पार्टियों के लोग भी शामिल हैं जो लम्बे समय तक जब सत्ता पर काबिज रहे और उस समय अगर वह चाहते तो इनमें से कई सिख कैदी जिन्हें बन्दी सिख कहा जाता है उनकी रिहाई हो सकती थी मगर उस समय उन्होंने भी बन्दी सिखों को रिहाई दिलाने के बजाए अपने वोट बैंक को ध्यान में रखा और आज वही लोग इस मुद्दे पर खुलकर राजनीति कर पंथक वोटरों के दिलों में फिर से अपनी जगह बनाने में लगे हैं, अगर राजनीतिक स्वार्थों को दरकिनार कर सिख नेताओं ने बंदी सिखों की रिहाई के लिए सही मायने में कुछ किया होता तो शायद आज देश और राज्यों की सरकारें भी उनकी रिहाई के बारे में अपनी सोच में बदलाव कर सकती थी। वोट बैंक की राजनीति के चलते आज देश के हालात ऐसे बन चुके हैं कि कई मामलों में सजायाफ्ता मुजरिम जिन पर बलात्कार, हत्या जैसे गंभीर मामले दर्ज हैं फिर भी उन्हें कई बार पैरोल दे दी जाती है, इतना ही नहीं उल्टा उन्हें सुरक्षा तक सरकारें मुहैया करवाती हैं वहीं दूसरी ओर अनेक सिख कैदी जिनकी सजाएं खत्म हुए 25 से 30 साल बीत चुके हैं मगर उन्हें अभी तक एक बार भी पैरोल नहीं दी गई जो कि दर्शाता है कि इस देश में व्यक्ति की पैरवी के मुताबिक कानून कार्य करता है। हम यह नहीं कहते कि किसी भी कैदी को उसके किए की सजा ना मिले मगर किसी के साथ भी बिना वजह सौतेला व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। यह भी माना जा सकता है निश्चित तौर पर इन कैदियों के द्वारा कोई न कोई अपराध अवश्य ऐसा किया होगा जिसके चलते उन्हें कठोर कैद हुई पर अब अगर उन्होंने सजा पूरी ली है तो निश्चित तौर पर उनका हक बनता है कि उन्हें रिहाई मिलनी चाहिए।

बंदी छोड़ दिवस के मौके पर दिल्ली में पिछले कुछ सालों से सिख जत्थेबंदियों के द्वारा बंदी सिखों की रिहाई की मांग को लेकर दिल्ली के तिहाड़ जेल के बाहर अरदास की जाती है पर यह शायद उनके द्वारा अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन हासिल करने मात्र तक ही सीमित है क्योंकि इसका कोई असर सरकारों पर होने वाला नहीं है। बेहतर होगा आज जो सिख नेता जिनकी सरकारों में अच्छी पैठ है उन्हें चाहिए कि वह सरकारों से संवाद कर बंदी सिखों की रिहाई के मसले को उठाएं जिसके बाद हो सकता है कि इनमें से कुछ कैदियों की रिहाई संभव हो सके।

जत्थेदार कुलदीप सिंह गढ़गज को मिलने लगी मान्यता : श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंह साहिब ज्ञानी कुलदीप सिंह गड़गज जिन्हें ज्ञानी हरप्रीत सिंह के स्थान पर मार्च महीने में श्री अकाल तख्त साहिब का कार्यकारी जत्थेदार नियुक्ति किया गया था। मगर उनकी ताजपोशी के दौरान उन मर्यादाओं की पालना नहीं की गई जो कि जत्थेदार की नियुक्ति के समय जरुरी होती हैं इसलिए उनकी नियुक्ति पर कई तरह के सवाल खड़े होने लगे और उन्हें विवादित जत्थेदार तक कहा गया। मगर अब धीरे-धीरे सिख संगत उन्हें पूर्ण सम्मान के साथ जत्थेदार कबूलने लगी है। बीते दिनों तख्त पटना साहिब नतमस्तक होने के दौरान पटना की संगत और प्रबन्धकों ने भी उनका पूरा सम्मान किया। पंजाब की कुछ निहंग जत्थेबंदियों के द्वारा भी उन्हें दस्तार भेंट कर उनकी जत्थेदारी पर मोहर लगा दी गई है। उम्मीद लगाई जा रही है कि आने वाले दिनों में अन्य संस्थाए भी जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज की कार्यशैली और उनके मिलनसार स्वभाव को देखते हुए उन्हें जत्थेदार कबूल कर लें। वैसे देखा जाए तो जत्थेदार के पद पर ऐसे व्यक्ति को ही बिठाया जाना चाहिए जो कि राजनीति से दूर हटकर धार्मिक जिम्मेवारियों का वहन करे अन्यथा देखा जाता है कि जत्थेदार की पदवी मिलते ही लोग राजनीतिक लोगों की कठपुतली बनकर फैसले लेने लगते हैं जिसका नुकसान पंथ को झेलना पड़ता है। बीबी मनदीप कौर बख्शी की माने तो कौम को लम्बे अरसे के बाद कुलदीप सिंह गड़गज के रुप में ऐसा जत्थेदार मिला जो कि अपनी जिम्मेवारी का बाखूबी निर्वाह करने के साथ ही एक आम सिख की भान्ति सेवा कार्यों में भी रुची रखता हो। जत्थेदार गड़गज को संगत अक्सर श्री दरबार साहिब में पानी पिलाने, लंगर सेवा, जोड़ाघर में सेवा करते देखती है, जो कि पहले के जत्थेदारों से अलग हटकर है। यह भी देखा जा रहा है कि उनके द्वारा पंथ में एकजुटता के भी निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

सिखी सरूप की खातिर नौकरी ठुकराई : सिख धर्म में अनेक ऐसी मिसाल मिलती हैं जहां व्यक्ति विशेष ने अपने प्राणों की आहूती तक दे डाली, महिलाओं ने अपने बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करवाकर उनका गले में हार डाला मगर सिखी सरुप को नहीं त्यागा। वरना आज तो फैशन के दौर में फंसकर सिख युवक युवतियां स्वयं अपने केशों से छेड़छाड़ करने लगे हैं पर आज के समय में कुछ सिख ऐसे बचे हैं जिनके लिए गुरु की बख्शिश सिखी स्वरुप सर्वोपरि है, उसके लिए वह किसी भी चीज का त्याग करने में पीछे नहीं हटते। इन्हीं में से एक हैं मिलाप सिंह चहल जिन्हें अमेरिका की मरीन कॉर्प्स ट्रेनिंग में सिर्फ इसलिए प्रवेश नहीं दिया गया क्योंकि उन्होंने अपने बाल और दाढ़ी नहीं कटवाई, जो कि सिख पहचान और आस्था के पवित्र प्रतीक हैं। सालों के इंतज़ार और संघर्ष के बाद, एक संघीय अदालत ने फैसला सुनाया कि मरीन कॉर्प्स सिखों को उनकी धार्मिक आस्था के प्रतीकों को बनाए रखने के कारण प्रवेश से वंचित नहीं कर सकती। सिख धर्म आध्यात्मिक भक्ति और निःस्वार्थ सेवा जिसमें सत्य की रक्षा और दूसरों की सुरक्षा शामिल है, दोनों सिखाता है। मगर वहीं बीते दिनों अमरीकी राष्ट्रपति के फैसले ने मिलाप सिंह चाहल जैसे गुरसिख अफसरों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं जो सिखी सरुप में रहते हुए फौज की नौकरी करने के इच्छुक हैं अब यां तो उन्हें फौज की नौकरी छोड़नी पड़ेगी यां फिर अपने केशों और दस्तार का त्याग कर नौकरी करनी होगी मगर उम्मीद की जाती है कि आने वाले दिनों में संसार भर में सिख समुदाय के लोग एकजुट होकर अमरीकी राष्ट्रपति पर दबाव बनाकर उन्हें इस फैसले को वापिस लेने के लिए मजबूर कर देंगे।

गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के प्रति लोगों में जागरुकता कैसे हो : इतिहास इस बात की गवाही भरता है कि गुरु तेग बहादुर जी की शहादत की बदौलत ही हिन्दू धर्म कायम है मगर अफसोस कि चंद लोग ही हैं जिन्हे इस इतिहास की जानकारी सही से हो वरना 99 प्रतिशत लोग आज भी गुरु तेग बहादुर जी और उनके दिए हुए बलिदान से अन्जान हैं।

लोगों मे जागरुकता लाने के उदेश्य से तख्त पटना साहिब कमेटी के द्वारा बिहार सरकार की मदद से शहीदी जागृति यात्रा निकाली जो कि 17 सितम्बर को तख्त पटना साहिब आरंभ हुई थी और देश के अलग अलग राज्यों से होकर श्री आनंदपुर साहिब में समाप्त होगी। इसी प्रकार एक यात्रा शिरोमणि कमेटी के द्वारा निकाली गई और भी देश के अलग-अलग राज्यों से सिख जत्थेबंदियों के द्वारा यात्राए निकाली जा रही है। समाज सेवी जसबीर सिंह धाम की सोच है कि जब तक पंथ में एकजुटता नहीं होती जितनी मर्जी यात्राएं निकालें, कार्यक्रम करें उसका कोई लाभ होने वाला नहीं है। सबसे पहले सिख पंथ के नेताओं को बिना किसी पार्टीवाद के एकजुट होना होगा और उसके बाद अगर वह प्रचार की लहर चलाएंगे तो निश्चित तौर पर उसका असर दिखाई देगा। पहल सिख समुदाय को ही करनी होगी तभी अन्य जत्थेबंदियां, राजनीतिक पार्टियां या सरकारें सहयोग कर इस मुहिम को आगे बढ़ा सकती हैं मगर अफसोस कि आज सिखों में ही कुछ लोग हैं जिन्हें गुरु जी को हिन्द की चादर कहने में दिक्कत हो रही है, पहले उन्हें अपनी सोच को बदलना होगा।

10 वर्षीय केबीसी प्रतियोगी को ट्रोल करना उचित नहीं

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): सोशल मीडिया पर, दफ्तरों की बहसों में और ड्राइंग रूम की बातचीत में नफरत भरी बातें कही जा रही हैं। इस नफरत का निशाना अप्रत्याशित रूप से 10 साल का एक बच्चा है जिसे "कौन बनेगा करोड़पति" में आने के बाद "घमंडी", "असभ्य" और "बद्तमीज" करार दिया गया और उसकी बदनामी उसकी उम्र के साथ कतई न्याय नहीं करती।केबीसी की 'हॉट सीट' पर गुजरात के लड़के इशित भट्ट का आत्मविश्वास से भरपूर होना, मेजबान अमिताभ बच्चन से नियमों को न दोहराने के लिए कहना, पूरा प्रश्न सुनने से पहले ही उत्तर दे देना, तथा बीच वाक्य में ही टोक देना- ये सब तीखी चर्चा का विषय बन गया।

क्या यह खराब पालन-पोषण है? क्या यह एक होशियार लड़के की स्वाभाविक ढीठता है? क्या इसे नजरअंदाज कर देना चाहिए, आखिरकार वह बच्चा ही तो है, या इस पर ध्यान देना चाहिए?सवाल तेजी से और तीखे अंदाज में उठाए जा रहे हैं, जिससे पांचवीं कक्षा का यह छात्र एक 'ट्रेंडिंग टॉपिक' (चर्चा का विषय) बन गया है। भट्ट द्वारा कथित तौर पर लिखा गया एक माफीनामा, जिसे एक वीडियो के साथ उसके इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया गया था, खूब चर्चा में रहा। और फिर उसे यह संदेश देते हुए हटा दिया गया कि वह अकाउंट मौजूद ही नहीं है।विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर लड़के की तस्वीर के साथ कई फर्जी अकाउंट भी बनाए गए थे।सभी बातें एक परेशान करने वाली भीड़ की मानसिकता की ओर इशारा करती हैं, जिसमें यह चिंता व्यक्त की जाती है कि ट्रोलिंग और सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा करने की ऐसी घटनाओं का बच्चे पर प्रारंभिक अवस्था में ही दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है।

विशेषज्ञों के अनुसार, वास्तविकता जटिल है, जो बदलती पालन-पोषण शैली, स्कूल संस्कृति और बच्चों के आज के व्यवहार और अभिव्यक्ति के तरीके से प्रभावित होती है जिसमेंदो मिनट में ही यह फैसला हो जाता है कि वह असभ्य है। पारिवारिक चिकित्सक मैत्री चंद ने बताया, "लेकिन ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी"। उन्होंने कहा कि लोग बच्चे के बात करने के तरीके, हाव-भाव और प्रतिक्रियाओं को "एकतरफा तरीके" से आंक रहे हैं। उन्होंने कहा, "अशिष्टता और अहंकार का एक सांस्कृतिक आधार होता है - ये सांस्कृतिक रूप से मानदंड हैं। और मेरा मतलब सिर्फ देश-वार संस्कृति से नहीं है। यह पारिवारिक संस्कृति, सामुदायिक संस्कृति या यहां तक कि स्कूल की संस्कृति भी हो सकती है।"

छत्तीसगढ़ के आठ वर्षीय विराट अय्यर ने भी 2023 में इसी तरह से खेल खेला - बच्चन के प्रश्न पूरा करने से पहले ही उसने उत्तर दे दिया। भट्ट के विपरीत, जो बिना कुछ जीते घर चले गए, अय्यर 1 करोड़ रुपये के अंतिम प्रश्न तक पहुंचे, लेकिन गलत उत्तर देने के बाद 3.20 लाख रुपये लेकर घर चले गए।

जैसा कि चंद का मानना है, इस पीढ़ी के बच्चे ऐसे माहौल में बड़े हो रहे हैं जो उन्हें मुखर होने और अपनी राय रखने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करता है।चंद ने कहा, "स्कूल आलोचनात्मक सोच को पहले से ही सिखाते हैं, जो बहुत अच्छी बात है। हमारी पीढ़ी में हमने इसे मास्टर स्तर पर ही सीखा।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रेस, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

सफदरजंग अस्पताल में मरीज की मौत, तीमारदारों का हंगामा

डॉक्टरों से बदसलूकी और हमला करने का आरोप

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। सफदरजंग अस्पताल की इमरजेंसी में मरीज की मौत से नाराज तीमारदारों ने जमकर हंगामा किया। आरोप है कि डॉक्टरों से बदसलूकी और उनपर हमला किया गया। इसके विरोध में बुधवार को करीब चार घंटे से अधिक समय तक इमरजेंसी सेवा ठप रही। मामले में रिपोर्ट दर्ज होने के बाद शाम को इमर्जेंसी का संचालन शुरू हो पाया।

दोपहर करीब तीन बजे क्रॉनिक किडनी डिजीज की बीमारी से जूझ रहे मरीज को उपचार के लिए लाया गया था। इस बीच मरीज की मौत हो गई। इसके बाद अस्पताल में मरीज के तीमारदारों ने जमकर हंगामा किया। तीमारदार डॉक्टरों के साथ बदसलूकी करने लगे और एक डॉक्टर को मुक्का मारने का प्रयास किया गया। इसके बाद इमर्जेंसी में कार्यरत रेजिडेंट डॉक्टरों ने इमरजेंसी सेवा बंद रखने का फैसला किया। हालांकि डॉक्टरों की ओर से दावा किया गया है कि अत्यधिक गंभीर मरीज को उपचार दिया गया।

हमले के विरोध में चार घंटे से अधिक समय तक बंद रही इमरजेंसी सेवा

अस्पताल की इमरजेंसी सेवा के ठप होने से मरीज भी हैरान-परेशान दिखे। डॉक्टरों के बढ़ते विरोध को देखते हुए अस्पताल के वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। रेजिडेंट डॉक्टरों को मनाने की कोशिश की। लेकिन डॉक्टर संस्थागत मुकदमा दर्ज कराने की मांग पर अड़े थे।

अस्पताल की आरडीए में महासचिव डॉ आयुष राज ने बताया कि मरीज को क्रॉनिक किडनी डिजीज ग्रेड-4 था। मरीज की हालत बहुत गंभीर थी। मरीज उम्रदराज था। मरीज की इमरजेंसी में मौत हो गई। उसके बाद परिजनों ने डॉक्टरों के साथ बदसलूकी की। इस मामले में मुकदमा दर्ज होने के बाद शाम सात बजे इमरजेंसी सेवा बहाल हो गई।

मुठभेड़ में बदमाश की गोली से इंस्पेक्टर घायल, जवाबी कार्रवाई में दबोचा गया

द्वारका जिला के सेक्टर-3 इलाके में मंगलवार रात दो राउंड फायरिंग

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। द्वारका जिला के सेक्टर-3 इलाके में मंगलवार रात हत्या की वारदात को अंजाम देने के बाद से फरार बदमाश को पुलिस ने सेक्टर-3 में घेर लिया। पुलिस को देखते ही ऋषभ नाम के बदमाश ने फायरिंग कर दी। गोली एंटी नारकोटिक्स सेल के इंस्पेक्टर सुभाष चंद के हाथ में लगी। जवाबी कार्रवाई में ऋषभ की टांग में गोली लगी और पुलिस ने उसे दबोच लिया। उसके पास से पुलिस को एक पिस्टल, दो कारतूस और दो खोखे मिले।

द्वारका जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश के एटा जिला के गांव जैठरा निवासी ऋषभ उर्फ ऋतिक उर्फ डांसर ने अपने साथियों के साथ 17 अगस्त की रात बिंदापुर इलाके में कुलदीप नाम के बदमाश की हत्या कर दी थी। वारदात के बाद से वह फरार था। पुलिस ने छानबीन के दौरान पंवन उर्फ पंजाबी और एक अन्य युवक को गिरफ्तार किया। पूछताछ में पता चला कि ऋषभ लोकल बदमाशों के संपर्क में है और बड़ी वारदात को अंजाम देने की तैयारी में है।

सांकेतिक

बिंदापुर इलाके में 17 अगस्त को हुई हत्या में था शामिल

लोकल पुलिस, एंटी नारकोटिक्स सेल और एएटीएस मुखबिर से उसके सेक्टर तीन आने का पता चला। घायल बदमाश को इंदिरा गांधी अस्पताल जबकि इंस्पेक्टर सुभाष को वेंकटेश्वर अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अमन विहार में फायरिंग का आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली। रोहिणी जिला के अमन विहार इलाके में 21 अक्तूबर की रात फायरिंग करने के आरोप में पुलिस ने आशु चौधरी (46) नाम के व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने एक देसी पिस्टल, कारतूस बरामद किए। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 109(1) बीएनएस और आर्म्स एक्ट की धारा 25/27 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

जिला पुलिस उपायुक्त राजीव रंजन ने बताया कि वरुण उर्फ करण (30) भाई के साथ दोस्त के घर गए थे, जहां आशु चौधरी को झगड़ते देखा। वरुण ने जब बीच-बचाव की कोशिश की, तो आशु ने गुस्से में उसके पैर पर गोली दाग दी। घायल वरुण को संजय गांधी मेमोरियल अस्पताल ले जाया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। सूचना पर पहुंची थाना अमन विहार पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से आशु को गिरफ्तार किया। ब्यूरो

अपराध संक्षेप

दो बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

नई दिल्ली। उत्तर पश्चिम जिला की फॉरनर सेल की महिंद्रा पार्क थाना पुलिस ने दिल्ली में अवैध रूप से रह रहे दो बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान टापोश बिस्वास उर्फ नंदनी (37 वर्ष) और मोहम्मद मेहदी हसन सजल उर्फ लीमा (21 वर्ष) के रूप में हुई है। उनके पास से दो मोबाइल फोन और अन्य दस्तावेज बरामद किए गए हैं। जिला पुलिस उपायुक्त भीष्म सिंह सिंह ने बताया कि दोनों ट्रांसजेंडर हैं और कई महीनों से दिल्ली में रह रहे थे। ये दोनों दिन में भीख मांगते थे और रात में आपत्तिजनक गतिविधियों में शामिल रहते थे।विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय के सहयोग से दोनों के निर्वासन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। ब्यूरो

जुआ खेलने के आरोप में 12 लोगों को पकड़ा

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की बाहरी जिले की पुलिस ने बुधवार को विभिन्न इलाकों में गश्त अभियान के दौरान जुआ खेलने में शामिल 12 आरोपियों को गिरफ्तार किया। जुए के लिए दांव पर रखे गए हजारों रुपये नकद, जुआ से संबंधित वस्तुओं व अन्य सामान उनके कब्जे से बरामद किया गया है। पुलिस ने इस सामान को जब्त कर लिया है। राम लीला पार्क से दो आरोपी, सुल्तान पुरी थाने की पुलिस ने बी-2 पार्क के पास जुआ खेल रहे दो आरोपियों को पकड़ा। राज पार्क थाना पुलिस ने मंगोलपुरी के सी-ब्लॉक के पार्किंग क्षेत्र से दो, नांगलोई इलाके से भी दो संदिग्धों को पकड़ा गया। रेल नीर प्लांट क्षेत्र से भी दो आरोपी दबोचे गए। ब्यूरो

मादक पदार्थों की तस्करी में दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। पुलिस की अपराध शाखा ने मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले एक गिरोह का पर्दाफाश कर दो तस्करों सहरोज खान और मोहम्मद फैसल उर्फ हैदर को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से 203 ग्राम हेरोइन/स्मैक जब्त की गई है। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त हर्ष इंदौरा ने बताया कि शाखा में तैनात एएसआई रणधीर सिंह को दो ड्रग सप्लायरों के बारे में सूचना मिली कि वह दिल्ली-एनसीआर में हेरोइन/स्मैक की सप्लाई कर रहे हैं। 18 अक्तूबर को दोनों वेस्ट गेट मॉल, राजौरी गार्डन, दिल्ली के पास किसी व्यक्ति को हेरोइन की खेप देने आएंगे। इंस्पेक्टर अनिल मलिक ने यहां घेराबंदी कर सहरोज खान व उसके साथी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी कक्कड़ मोहल्ला, तिलहर, जिला शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश निवासी सहरोज खान और सतरगंज मोहल्ला, तिलहर, जिला शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश निवासी मोहम्मद फैसल उर्फ हैदर अली ने खुलासा किया है कि अरशद नाम के एक व्यक्ति के निर्देश पर हेरोइन की सप्लाई कर रहे थे। ब्यूरो

पापा बस जल्दी घर पहुंच रहा हूं...बेटा नहीं आया, आई अनहोनी की खबर

बेटे अनुराग के आखिरी शब्द अब भी पिता के कानों में गूंज रहे, अज्ञात ने कुछ देर बाद दी हादसे की खबर

शुजात आलम

नई दिल्ली। पापा, बस घर पहुंच रहा हूं... देर रात बेटे अनुराग के इन शब्दों के बाद जो हुआ, उसने पूरे परिवार की दुनिया उजाड़ दी। कुछ ही घंटों बाद पिता के फोन पर आई एक अनजान कॉल से खुशहाल परिवार में मातम छा गया। मंगलवार रात जीटी करनाल रोड पर हुए बुलेट हादसे में अनुराग, मोहित और सुमित की मौत हो गई। नांगलोई के रहने वाले तीनों बचपन के दोस्त थे।

अनुराग के पिता गोपाल शर्मा ने करीब 11:45 बजे बेटे को कॉल कर घर आने के लिए कहा था। बेटे के यही आखिरी शब्द अब भी पिता के कानों में गूंज रहे हैं। आधी रात को परिवार भागा-भागा जीटी करनाल रोड पहुंचा तो वहां पुलिस के अलावा भीड़ जमा थी। उस समय तक घायल अनुराग, मोहित और सुमित वहीं पड़े थे। परिवार का आरोप है कि पुलिस तीनों को समय पर अस्पताल भेजती तो शायद उनकी जान बच जाती।

मौसा धीरज मिश्रा ने बताया कि अनुराग परिवार के साथ गली नंबर-18, शिवराम पार्क, नांगलोई में रहता था। परिवार में पिता गोपाल शर्मा के अलावा मां किरन शर्मा और छोटा भाई देव शर्मा है। अनुराग रोहिणी की एक कंपनी में सॉफ्टवेयर डेवलपर की नौकरी कर रहा था। पिता प्राइवेट नौकरी करते हैं। मंगलवार को वह पंजाबी बाग जाने की बात कहकर घर से निकला था। इसके बाद वह मुरथल कैसे पहुंचा परिवार को इसकी जानकारी नहीं है। बेटे की मौत के बाद गोपाल और उनकी पत्नी किरन का रो-रोकर बुरा हाल है।

मोहित परिवार के साथ एच-ब्लॉक, कुंवर सिंह नगर, नांगलोई में रहता था। पिता पूरनचंद की 4 साल पहले मौत हो गई थी। परिवार में दो शादीशुदा बहनें हैं। मोहित किराए के मकान में रहता था और एक एमएनसी में वर्कफ्रॉम होम कर रहा था। बेटे मोहित की की मौत के बाद मां बदहवास है। मोहित और अनुराग दोनों चचेरे भाई थे। सुमित का परिवार शिवराम पार्क, नांगलोई में रहता था।

इसके परिवार में पिता मदनलाल के अलावा मां, दो बहनें और एक छोटा भाई राजन है। सुमित के पिता प्राइवेट नौकरी करते हैं। सुमित आईजीएल में पाइप लाइन की मैपिंग का काम करता था। तीनों ही युवक पहले एक ही मोहल्ले में रहते थे और गहरे दोस्त थे।

मौत का मातम... बुलेट सवार तीन युवकों की मौत के बाद उनके घर के बाहर शोकाकुल परिजन और पड़ोसी। अमर उजाला

बुलेट हादसा

घटनास्थल पर बाइक। संवाद

- परिजन मौके पर पहुंचे तब तक तीनों युवक वहीं पड़े थे लहूलुहान, सामने ही घायलों को भेजा अस्पताल
- परिजनों ने तीनों को देरी से अस्पताल पहुंचाने का पुलिस पर लगाया आरोप, समय से पहुंचते तो शायद बच जाते

हादसे वाला स्थान ब्लैक स्पॉट फिर भी बरती गई लापरवाही

इसी जगह हुआ हादसा। संवाद

पेशे से वकील अनुराग के मौसा धीरज मिश्रा ने बताया कि जिस जगह हादसा हुआ, वह स्थान जीटी करनाल रोड का ब्लैक स्पॉट है। बावजूद इसके एनएचएआई की ओर से लापरवाही बरती गई। घटना स्थल पर कोई स्ट्रीट लाइट भी नहीं है। बरसात हुए काफी समय हो चुका है। इसके बावजूद सड़क को समय से रिपेयर नहीं किया गया। टूटी सड़क को जर्सी बैरियर से कवर करने के बाद एनएचएआई ने सड़क से गुजरने वाले वाहन चालकों के लिए और मुसीबत खड़ी कर दी। साइन बोर्ड होता तो शायद हादसा न होता।

सड़क पर टायर घिसटने के निशान...

घटना से पहले टायर के रगड़ के निशान मिले हैं। ऐसा लगता है कि टक्कर से पहले बाइक रोकने के लिए ब्रेक लगाने का प्रयास किया गया लेकिन रफ्तार तेज होने की वजह से बैरियर से टकरा गई। पुलिस यह भी पता लगाने का प्रयास कर रही है कि किसी और वाहन ने तो इनको टक्कर नहीं मारी।

हेलमेट होते तो शायद बच जाती जान...

बाहरी-उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त हरेश्वर स्वामी ने बताया कि हादसे के समय तीनों ही युवकों ने हेलमेट नहीं पहना हुआ था। जांच के दौरान पुलिस को घटना स्थल से हेलमेट बरामद नहीं हुआ है। मामले की छानबीन की जा रही है।

हेलमेट बोझ नहीं...

अपनी सुरक्षा और अपनों के लिए पहनें

नई दिल्ली। हेलमेट को जो सिर्फ बोझ समझते हैं, उन्हें याद दिला दें... यह सिर्फ नियम नहीं, आपकी और आपके परिवार की सुरक्षा का सबसे बड़ा साधन है। एक लापरवाही आपके लिए मामूली हो सकती है, लेकिन आपके अपनों के लिए जीवन भर का दर्द बन सकती है। आपको भले ही इससे कोई फर्क नहीं पड़ता पर अपनी बेटी, पत्नी और मां के बारे में जरूर सोचें, जिन्हें आपकी फिकर है। अगली बार जब बाइक या स्कूटी से सड़क पर चलें तो आईएसआई मानक वाला हेलमेट जरूर पहनें जो पुलिस का चालान नहीं आपकी जान भी बचा सके। नीचे तस्वीर में दिख रहे ये लोग शायद इस खबर को पढ़कर हेलमेट नहीं पहनने की गलती दोबारा नहीं करेंगे। ब्यूरो

बेपरवाही मिंटो ब्रिज के पास बुलेट बाइक और स्कूटी से बिना हेलमेट पहने जा रहे तीनों युवकों को शायद पता नहीं है उनकी यह लापरवाही कभी उनपर भारी पड़ सकती है।

लापरवाही दिल्ली गेट पर एक स्कूटी पर बिना हेलमेट पहने सवार तीनों युवकों को लग रहा होगा मेरा कौन बिगाड़ेगा पर शायद उन्हें नहीं पता अनहोनी मिस्ड कॉल मारकर नही आती।

बेफिक्र रफ्तार नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास की इस तस्वीर में बुजुर्ग से लेकर जवान युवक तक हेलमेट पहने हुए नजर नहीं आ रहे हैं। उनकी यह बेफिक्र रफ्तार कहीं किसी दिन कहीं उन्हीं पर भारी न पड़ जाए। सभी फोटो विवेक निगम

धनतेरस पर शातिर महिलाओं ने ज्वैलरी शोरूम से पार की सोने की अंगूठी, बदले में रखी नकली

नई दिल्ली। धनतेरस पर जब पूरा शहर सोने-चांदी की खरीदारी में व्यस्त था, उसी दौरान पूर्वी दिल्ली के लक्ष्मी नगर स्थित एक नामी ज्वैलरी शोरूम में कुछ शातिर महिलाओं ने बेहद चालाकी से सोने की एक अंगूठी चुरा ली। खरीदारी के बहाने आई महिलाओं ने यह काम बेहद सफाई से किया, जिससे किसी को शक तक नहीं हुआ। एक महिला ने कर्मचारी का ध्यान भटकाया तो दूसरी ने असली की जगह नकली अंगूठी रख दी। त्योहार निपटने के बाद स्टॉक देखने पर एक अंगूठी के नकली होने का शक हुआ तो सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए। इसमें यह वारदात कैद हो गईए जिसका वीडियो बुधवार को वायरल हुआ। पुलिस ने शोरूम मालिक की शिकायत पर संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। ब्यूरो

खरीदारी के बहाने आई इन महिलाओं ने असली अंगूठी चुराकर उसकी जगह नकली अंगूठी रख दी। पूरी वारदात का सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई। संवाद

मर्सिडीज कार की टक्कर से बाइक सवार दो युवक घायल

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के राजौरी गार्डन इलाके में मंगलवार देर रात तेज रफ्तार मर्सिडीज कार ने एक बाइक पर सवार मोहम्मद सूफियान (21) और मोहम्मद आजम (22) नाम के युवकों को टक्कर मार दी। दोनों बाइक सवार गंभीर रूप से जख्मी हो गए। हादसा होते ही मौके पर लोगों की भारी भीड़ जुट गई, जिसका फायदा उठाकर चालक भाग गया। हेलमेट पहना होने की वजह से दोनों के सिर पर चोट नहीं आई। हालांकि दोनों की टांगों में फ्रैक्चर हो गया। गंभीर हालत में उनको नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त दराडे शरद भास्कर ने बताया कि हादसा मंगलवार देर रात करीब 12:34 बजे मेहता चौक लाल बत्ती के नजदीक, भारत पेट्रोल पंप के पास हुआ। दोनों युवक बाइक लेकर गुजर रहे थे तभी पीछे से आई कार ने दोनों को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के बाद आरोपी ने कार रोकने के बजाय बढ़ा दी, जिससे बाइक काफी दूर तक वाहन के साथ घिसटती चली गई। लोगों के चीखने पर आरोपी कार वहीं छोड़कर भाग गया। पुलिस टीम का कहना है कि आरोपी की पहचान कर ली गई है, जल्द उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा। ब्यूरो

पश्चिम दिल्ली के राजौरी गार्डन इलाके में हादसा, दोनों के पैरों में फ्रैक्चर, हेलमेट पहना होने से सिर में नहीं आई गंभीर चोट

देवली इलाके में बंद फैक्टरी में लगी आग

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली के देवली गांव इलाके में बुधवार सुबह एक बंद फैक्टरी में आग लग गई। आग से किसी तरह के नुकसान या हताहत होने की सूचना नहीं है।

दमकल स्टेशन अधिकारी विनय कुमार ने बताया कि प्रभावित लकड़ी की फैक्टरी के अंदर बिजली की आपूर्ति नहीं थी, जिससे संदेह है कि आग जानबूझकर लगाई गई होगी। हालांकि आतिशबाजी से आग लगने की आशंका से भी इन्कार नहीं किया जा रहा है।

बिजली कनेक्शन नहीं होने पर गड़बड़ी का संदेह, आतिशबाजी से भी आग लगने का अंदेशा

दमकल विभाग के अधिकारियों के अनुसार देवली गांव के एक गोदाम में आग लगने की सूचना मिली थी। करीब 2,000 वर्ग फुट क्षेत्रफल में फैली बंद फैक्ट्री के अंदर लकड़ी और मलबे में आग लगी थी। बताया जा रहा था कि यह फर्नीचर की फैक्ट्री थी। अंदर लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों सहित लकड़ी का सामान बिखरा था।

एक अन्य घटना मंगलवार दोपहर राष्ट्रपति भवन परिसर में घटी, जहां बहुमंजिला इमारत में आग लग गई। हालांकि दमकल की गाड़ियों ने इस पर जल्द ही काबू पा लिया गया। ब्यूरो

दोस्त के दादा पर फायरिंग करने वाले किशोर को पुलिस ने पकड़ा

नई दिल्ली। मध्य दिल्ली के चांदनी महल इलाके में संपत्ति विवाद को लेकर 75 वर्षीय बुजुर्ग पर फायरिंग करने के आरोप में एक किशोर को पकड़ा गया है। उसने दोस्त के कहने पर उसके दादा पर फायरिंग की थी।

आरोपी किशोर पश्चिम दिल्ली के ओल्ड जनकपुरी का निवासी है और उसे कमला मार्केट स्थित प्रेस क्लब रोड के पास से पकड़ा गया। उसके पास से वारदात में इस्तेमाल किए गए उसके पास से एक पिस्तौल और दो कारतूस बरामद किए गए हैं।

अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) विक्रम सिंह ने बताया कि यह घटना मंगलवार को उस समय हुई जब 16 वर्षीय लड़के ने अपने दोस्त समीर मलिक के साथ मिलकर उसके दादा शब्बूद्दीन पर गोली चला दी थी। ब्यूरो

बच्चे को अगवा करने वाली महिला गिरफ्तार

नई दिल्ली। रोहिणी जिले में चार साल के मासूम के अपहरण की गुत्थी पुलिस ने ढाई घंटे में सुलझा ली। रोहिणी नॉर्थ थाना पुलिस ने ज्योति नाम की महिला को गिरफ्तार कर बच्चे को सकुशल उसके परिजनों के हवाले कर दिया। श्रद्धानंद कॉलोनी, लिबासपुर की रहने वाली ज्योति ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उसके भाई के संतान नहीं है, इसलिए वह उसे बेटा देने के इरादे से किसी और के बच्चे को उठा लाई।

जिला पुलिस उपायुक्त राजीव रंजन ने बताया कि 20 अक्तूबर की सुबह करीब 6:30 बजे शिकायतकर्ता शहजाद ने पुलिस को सूचना दी कि अस्पताल से उसका बेटा गायब हो गया है। बेटी अस्पताल में भर्ती है और रात को वह बेटे के साथ वहीं रुका था। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज खंगाले। फुटेज में एक महिला रात 2:50 बजे बच्चे के साथ खेलती दिखी और 3:00 बजे उसे लेकर अस्पताल से चली गई। बाद में महिला को ऑटो में बैठते हुए भी देखा गया। पुलिस ने ऑटो चालक की मदद से आरोपी महिला का पता लगाया। ब्यूरो

महिला कांस्टेबल ने सोशल मीडिया पर दोस्ती कर बदमाश को पकड़ा

हत्या के प्रयास के मामले में पिछले छह माह से फरार था

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम जिला के अशोक विहार इलाके में छह माह से फरार चल रहे आरोपी राहुल उर्फ मताद (25) को महिला सिपाही ने सोशल मीडिया पर दोस्ती करके गिरफ्तार कराया। अदालत ने उसके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया हुआ था। राहुल वर्ष 2019 में हत्या के एक मामले में शामिल था।

उत्तर-पश्चिम जिला के पुलिस उपायुक्त भीष्म सिंह ने बताया कि 2 अप्रैल को मिशिका नामक युवती ने बदसलूकी और अपने अंकल प्रदीप पर गोली चलाने की तहरीर दी थी। साहिल उर्फ चिकना, दिनेश उर्फ नंगा, कृष्णा झा और राहुल उर्फ मताद पर आरोप लगाया था। पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी।

इस बीच पुलिस ने बाकी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन राहुल पुलिस को चकमा देता रहा। स्पेशल स्टाफ की सिपाही कोमल ने सोशल मीडिया पर आरोपी को ढूंढा। बाद में आरोपी से दोस्ती कर उसकी लोकेशन का पता किया गया। ब्यूरो

डीड राइटर 50 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा(एसीबी) ने 50,000 रुपये की रिश्वत लेते हुए डीडी राइटर केशव जोशी को रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता शिकायत पर एसीबी ने यह कार्रवाई की। अधिवक्ता ने बताया कि जोशी सेल डीड रजिस्टर्ड करवाने के लिए सब-रजिस्टार-एक के लिए रिश्वत मांग रहा था। एसीबी अधिकारियों की भूमिका की भी जांच कर रही है। एसीबी प्रमुख संयुक्त पुलिस आयुक्त विक्रमजीत ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के एक वकील 21 अक्तूबर को कार्यालय आए। उन्होंने बताया कि सराय रोहिल्ला में स्थित एक प्रॉपटी की सेल डीड रजिस्टर्ड करवाना चाहते थे। सब-रजिस्टार-एक कार्यालय के अधिकारियों ने 3 लाख रुपये की रिश्वत मांगी। बाद में बातचीत 1,60,000 रुपये में तय हुई। अधिकारियों ने उसे केशव जोशी ने मिलने के लिए कहा। शिकायत की पुष्टि होने पर एसीबी ने जोशी को रंगे हाथों रुपयों के साथ पकड़ा। ब्यूरो

सुविधा — नई दिल्ली से 9, आनंद विहार टर्मिनल से 6, शकूरबस्ती से 5 और दिल्ली जंक्शन से 4 गाड़ियां

छठ पर घर पहुंचाने के लिए रवाना हुईं 28 विशेष ट्रेनें

नई दिल्ली। छठ पर्व के मद्देनजर उत्तर रेलवे के दिल्ली मंडल ने यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए बुधवार को 28 विशेष रेलगाड़ियों का संचालन किया।

इनमें नई दिल्ली से 9, आनंद विहार टर्मिनल से 6, शकूरबस्ती से 5, दिल्ली जंक्शन से 4, हजरत निजामुद्दीन से 2, शामली से 1 और रोहतक से 1 विशेष ट्रेन शामिल है। उत्तर रेलवे के अधिकारियों के अनुसार, छठ पर्व के लिए पूर्वी भारत जाने वाले यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सभी प्रमुख स्टेशनों पर विशेष इंतजाम किए गए हैं। दिल्ली मंडल के अधिकारी लगातार स्टेशनों पर भीड़ की निगरानी कर रहे हैं। बुधवार दोपहर 1:20 बजे यात्रियों की मांग को देखते हुए नई दिल्ली-दरभंगा के बीच एक ऑन डिमांड विशेष ट्रेन चलाई गई।

आज चलेंगी 17 विशेष ट्रेनें

अधिकारियों ने बताया, यात्रियों की आवश्यकता के अनुरूप आगे भी ऑन डिमांड ट्रेनें चलाई जाएंगी। दिल्ली मंडल ने कल (21 अक्तूबर) 26 विशेष ट्रेनों का संचालन किया था, जबकि 23 अक्तूबर को 17 विशेष रेलगाड़ियां चलाने का प्रस्ताव है। ब्यूरो

सांकेतिक

डीआरएम, एडीआरएम और वरिष्ठ अधिकारी स्वयं प्रमुख स्टेशनों पर उपस्थित रहकर यात्री व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे हैं।

-हिमांशु शेखर उपाध्याय, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, उत्तर रेलवे

एआई 21वीं सदी की सबसे परिवर्तनकारी तकनीक होगी। यह प्रत्येक उद्योग व हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करेगी। -जेन्सेन हुआंग

जापान की नई प्रधानमंत्री के रूप में साने ताकाइची की नियुक्ति सिर्फ इसलिए उल्लेखनीय नहीं है कि वह एक महिला हैं। वह कई मायनों में भारत के लिए फायदेमंद हो सकती हैं, लेकिन सरकार पर अपनी पकड़ को मजबूत बनाना ही फिलहाल उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

ताकाइची का उदय

उगते हुए सूर्य के देश यानी जापान की संसद द्वारा साने ताकाइची को देश की नई प्रधानमंत्री के रूप में चुने जाने को सिर्फ इस कारण उल्लेखनीय मानना कि वह इस पद पर विराजमान होने वाली पहली महिला हैं, इस नियुक्ति से जुड़े कई बेहद महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज करने जैसा होगा। ताकाइची आत्मरक्षा बलों को औपचारिक मान्यता देने और रक्षा खर्च को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के दो फीसदी से अधिक बढ़ाने का समर्थन करती हैं। जाहिर है कि ताकाइची का प्रधानमंत्री बनना जापान के उस दिशा में बढ़ने का संकेत है, जो कहीं अधिक मुखर और अधिक सैन्यीकृत होगा। इससे यह सवाल भी उठता है कि क्या उनका प्रधानमंत्री बनना और लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के नेतृत्व की दौड़ में उनकी जीत सतर्कतापूर्ण ढंग से शांति बनाए रखने की उस नीति से विचलन है, जो दशकों से जापान की विदेश नीति का विशिष्ट लक्षण रही है। हां, यह जरूर है कि जापान जैसे भारी लिंग असमानता वाले समाज में, जहां महिलाओं की संसदीय भागीदारी 15 फीसदी के आसपास है, उनकी नियुक्ति का प्रतीकात्मक महत्व है। ताकाइची की जीत भारत के लिए भी फायदेमंद हो सकती है, क्योंकि वह जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की करीबी मानी जाती हैं, जिनके कार्यकाल में भारत व जापान के संबंधों में तेजी से सुधार हुए थे। क्षेत्रीय सुरक्षा और ताइवान जैसे मुद्दों पर चूंकि ताकाइची का पक्ष अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति के ही अनुरूप है, ऐसे में, नई दिल्ली उनके लिए एक स्वाभाविक रणनीतिक साझेदार के रूप में उभर रही है। दूसरी ओर, जब अमेरिका के अनिच्छापूर्ण रवैये के चलते क्वाड की प्रासंगिकता पर सवाल उठ रहे हैं, तब ताकाइची का यह कहना महत्वपूर्ण है कि भारत, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप के साथ मिलकर एक अर्ध-सुरक्षा गठबंधन बनाने के लिए लोकतांत्रिक देशों के समूह का हिस्सा है। दरअसल, एक ओर अमेरिका चीन का प्रभाव सीमित रखना चाहता है, तो दूसरी ओर, ताइवान को लेकर ताकाइची का रुख क्षेत्रीय

भू-राजनीति के शतरंज में भारत की स्थिति को मजबूत बनाता है। जहां तक बात आंतरिक चुनौतियों की है, तो जापान इस वक्त आर्थिक मंदी, बढ़ती महंगाई और अपनी मुद्रा येन के मूल्य में गिरावट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। हाल की चुनावी हारों ने एलडीपी के नेतृत्व पर भी सवाल खड़े किए हैं। ऐसे में, येन-केन-प्रकारेण सत्ता के शीर्ष पर पहुंचीं ताकाइची के उदय को समझना, विश्वास के संकट से जूझ रहे एक राष्ट्र की मानसिकता को समझना है। सरकार के अपने सहयोगियों से घोड़े की तरह काम करने का आह्वान करने वाली जापान की नई निजाम के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती तो अपनी सरकार के शासन पर पकड़ को मजबूत बनाने की ही होगी।

डाटा का मानसून और हम

भारत में एआई डाटा सेंटर के निर्माण के लिए गूगल ने पांच वर्षों में 15 अरब डॉलर खर्च करने की प्रतिबद्धता जताई है। एक गीगावाट का डाटा सेंटर बनाए जाने से हजारों नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है। लेकिन स्वचालन के आसन्न मानसून में मानवीय मौलिकता को बचाना सबसे बड़ी चुनौती होगी।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) डाटा सेंटर के निर्माण के लिए गूगल ने पांच वर्षों में 15 अरब डॉलर खर्च करने की प्रतिबद्धता जताई, जो इन दिनों चर्चा में है। इससे भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बहस तेज हो गई है। विशाखापत्तनम में एक गीगावाट का डाटा सेंटर अदाणी समूह और एयरटेल की साझेदारी में बनाया जाएगा। इस दक्षिणी बंदरगाह शहर को चुनना रणनीतिक कदम है-विशाखापत्तनम समुद्र के नीचे बिछाई गई केबलों के जरिये ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर और मलयेशिया सहित 15 वैश्विक गंतव्यों से जुड़ता है, जिससे यह अंतरराष्ट्रीय डाटा प्रवाह का केंद्र बन जाता है।

इस परियोजना से हजारों नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है और यह आंध्र प्रदेश के लिए एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन है। यह गूगल का भारत में अब तक का सबसे बड़ा निवेश है और यह एआई-संचालित सेवाओं के विस्तार में तेजी लाने के लिए भारत सरकार के विकसित भारत-2047 विजन के अनुरूप है। गूगल द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, यह पहल भारत और अमेरिका, दोनों के लिए पर्याप्त आर्थिक और सामाजिक अवसर पैदा करती है, साथ ही एआई क्षमता में पीढ़ीगत बदलाव का मार्ग प्रशस्त करती है। फिर भी एआई की क्षमता को लेकर उत्साह और नौकरी छिनने की चिंताओं के बीच, एक महत्वपूर्ण सच्चाई अक्सर नजरअंदाज हो जाती है। एआई की लहर पर सवार होने के इच्छुक युवा भारतीयों को याद रखना चाहिए कि स्वचालन द्वारा तेजी से बदल रही दुनिया में अपनी सोच को मशीनों को सौंपना खतरनाक हो सकता है। आज जानकारी मानसून की बारिश की तरह बहती है।

पत्रलेखा चटर्जी
वरिष्ठ पत्रकार

गूगल व चैटजीपीटी पर कुछ भी खोजकर उसे कुछ ही सेकंडों में संश्लेषित किया जा सकता है, लेकिन जो चीज असल में टिकती है, वह प्रश्न नहीं, बल्कि प्रश्नकर्ता है। एआई ज्ञान तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाता है, हरेक स्मार्टफोन को एक बुद्धिमान व्यक्ति में बदल देता है, लेकिन यह उस चीज को भी रेखांकित करता है, जिसका कोई विकल्प

नहीं है यानी मानवीय निर्णय। जैसा कि व्हार्टन के प्रोफेसर और *को-इंटेलिजेंस* के लेखक एथन मॉलिक कहते हैं कि एआई के इस्तेमाल के कई कारण हैं और कुछ ऐसे मौके भी आते हैं, जब इसका इस्तेमाल न करना ही समझदारी है। वह कहते हैं, 'एआई से किसी समस्या का समाधान मांगना सीखने का प्रभावी तरीका नहीं है, भले ही लगे कि ऐसा होना चाहिए। कुछ नया सीखने के लिए आपको स्वयं पढ़ना और सोचना होगा, हालांकि सीखने की प्रक्रिया के कुछ हिस्सों में एआई आपको अब भी मददगार लग सकता है।'

जब बहुत उच्च सटीकता की आवश्यकता होती है, तो एआई की त्रुटियां सामने आती हैं। लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) एक प्रकार की कृत्रिम बुद्धिमत्ता है, जो मानव की तरह पाठ को संसाधित और तैयार करती है। मतिभ्रम के लिए कुख्यात एलएलएम के साथ समस्या यह है कि इसके काम करने के तरीके से अनेक तरह की त्रुटियां पैदा होती हैं। एलएलएम मतिभ्रम तब होता है, जब एक बड़ा भाषा मॉडल पूरे विश्वास के साथ तथ्यात्मक रूप से गलत जानकारी उत्पन्न करता है। इसलिए मतिभ्रम को पहचानना कठिन होता है।

शोध से पता चलता है कि लोग अक्सर एआई पर भरोसा करके ड्राइविंग करते समय सो जाते हैं और इस पर ध्यान नहीं देते हैं। मतिभ्रम को कम किया जा सकता है, लेकिन समाप्त नहीं किया जा सकता। हालांकि, वास्तविक दुनिया में कई कार्यों में त्रुटियां सहन की जा सकती हैं। मनुष्य भी गलतियां करते हैं। यह भी संभव है कि कुछ मामलों में एआई मनुष्यों की तुलना में कम गलतियां करते हों। लेकिन एआई मनुष्य की तरह गलतियां नहीं करते हैं।

एआई अक्सर आपको यह समझाने की कोशिश करते हैं कि वे सही हैं, या वे चापलूसी कर सकते हैं और आपके गलत उत्तर से सहमत हो सकते हैं। इन जोखिमों को समझने के लिए आपको एआई का पर्याप्त उपयोग करने की आवश्यकता है। यदि आप किसी विषय के बारे में कुछ नहीं जानते हैं और हर चीज के लिए सीधे एआई की मदद लेने लगते हैं-रिपोर्ट तैयार करने से लेकर व्यावसायिक योजनाओं की रणनीति बनाने तक-तो इसका मतलब है कि आप एक ऐसी मशीन को नियंत्रण सौंप रहे हैं, जो एक नौसिखिए जुआरी की तरह तथ्यों और तर्क के जाल में आपको उलझा देती है। आप ऐसी गलती कभी न करें।

स्वचालन, चिंता और भू-राजनीतिक उथल-पुथल के इस दौर में यह याद रखना जरूरी है कि क्या प्रासंगिक रहेगा-सहानुभूति, अनुकूलनशीलता, संचार, नेतृत्व, और सबसे बढ़कर आलोचनात्मक सोच। ये जरूरी चीजें हैं। इसलिए अब, जबकि भारत में एआई का उदय हो रहा है, तो मशीनों का स्वागत जरूर करें, लेकिन अपनी सोच के बदले एआई पर निर्भर न रहें। अपनी निगाहें आईने पर टिकाएं।

भविष्य का निर्माण सिर्फ कोड से नहीं होता, बल्कि यह बातचीत, धुरी, सहानुभूतिपूर्ण अनुमान, आलोचनात्मक अंतर्मन के परीक्षण से होता है। सच्ची बुद्धिमत्ता कृत्रिम नहीं होती, बल्कि यह गहन रूप से, खूबसूरती से मानवीय होती है। पिछले साल विश्व आर्थिक मंच पर आईबीएम के अध्यक्ष और सीईओ अरविंद कृष्णा ने एक महत्वपूर्ण बात की थी कि जेनरेटिव एआई का नौकरियों पर प्रभाव बहुत बड़ा होगा। उन्होंने कहा कि 'यह पहली तकनीक है, जो सफेदपोश कार्यों की नकल करती है... इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप भौतिक विज्ञानी हैं, गणितज्ञ हैं, कंप्यूटर वैज्ञानिक हैं, डॉक्टर हैं, लेखक हैं।'

तो, एआई के युग में सफल होने के लिए हमें किस प्रमुख कौशल की आवश्यकता होगी? कृष्णा ने कहा, 'अगर सफेदपोश कार्य भी जेनरेटिव एआई द्वारा हड़प लिया जाता है, तो इसका मतलब है कि आपको आलोचनात्मक सोच सीखनी होगी। चाहे आप किसी भी क्षेत्र में हों, आलोचनात्मक सोच वह कौशल है, जिसकी कहीं ज्यादा जरूरत है।' दावोस में सभी वक्ताओं ने आने वाले बदलावों के अनुरूप शिक्षा को ढालने की जरूरत पर जोर दिया। यह कहावत हम जहां भी हों, हर जगह लागू होती है। इसलिए इस कोड-चालित युग में, आलोचनात्मक सोच, सहानुभूति और मानवीय सरलता हमारी सबसे बड़ी संपत्ति हैं। अपने मन को प्रशिक्षित करें, अपनी अंतरात्मा पर भरोसा करें, और गहन मानवीय अग्रदूत बनकर आगे बढ़ें।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

जेम्स ऐलन

जिस प्रकार एक ही वक्त में कोई सैनिक दो प्रतिद्वंद्वी सेनाओं में काम नहीं कर सकता, उसी प्रकार हरेक व्यक्ति दोनों ओर काम नहीं कर सकता या तो वह अहंकार की ओर जाता है या सत्य की ओर।

सत्य में किसी प्रकार का पेच नहीं होता

हमारे दो स्वामी हैं, अहंकार और सत्य। दोनों में प्रधानता प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष हो रहा है। पहला अहंकार है, जिसे 'संसार का राजा' कहते हैं। दूसरा सत्य है, जिसे 'परमात्मा' कहते हैं। पहला स्वामी अहंकार बड़ा उपद्रवी है। उसके राजसी हथियार हैं : काम, क्रोध, मोह, लोभ, द्वेष आदि। दूसरा स्वामी सत्य अथवा परमात्मा है, जो परम शांत है। उसके हथियार हैं, नम्रता, धैर्य, पवित्रता, त्याग, प्रेम और ज्ञान का आलोक। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अहं और सत्य का द्वंद्व होता रहता है। पर जिस प्रकार एक ही वक्त में एक सैनिक दो प्रतिद्वंद्वी सेनाओं में काम नहीं कर सकता, उसी प्रकार हरेक व्यक्ति दोनों ओर काम नहीं कर सकता या तो वह अहंकार की ओर जाता है या सत्य की ओर। मन आधा इधर और आधा उधर नहीं रह सकता है। भगवान बुद्ध ने कहा है, 'जहां अहंकार है, वहां सत्य नहीं होता और जहां सत्य है, वहां अहंकार नहीं होता।'

ईसा मसीह ने कहा है, 'एक आदमी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि या तो वह एक से प्रेम और दूसरे से घृणा करेगा, या दूसरे के पास रहेगा और पहले को छोड़ देगा।' आप ईश्वर और कुबेर, दोनों की साथ-साथ सेवा नहीं कर सकते। सत्य इतना सीधा, स्थिर और अटल है कि उसमें किसी प्रकार का पेच नहीं होता। अहंकार बड़ा चालाक होता है। वह कुटिल होता है। उस पर लालसाओं का शासन होता है। उसके उपासक समझते हैं कि वे अपनी सभी सांसारिक इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं और साथ-ही-साथ सत्य मार्ग पर भी चल सकते हैं। सत्य के पुजारी स्वार्थ को त्यागकर सत्य अथवा परमात्मा की पूजा करते हैं। ऐसे लोग सांसारिकता से सदा दूर रहते हैं। अपना सर्वस्व त्याग देना एवं अहंकार का अस्तित्व तक मिटा देना ही सत्य की पूर्ण अवस्था को प्राप्त करना है। संसार के सभी धर्म और पंथ सत्य की इस खोज में सहायक हैं। यदि आप अहंकार का नाश कर दें, तो आपका सत्य के रूप में पुनर्जन्म होगा। यदि आप अहंकार में फंसे हुए हैं, तो आपका मार्ग कठिनाइयों से पूर्ण रहेगा और दुख, कष्ट और निराशाएं आपको बराबर घेरे रहेंगी।

सत्य मार्ग में कोई बाधा नहीं है। जब आप सत्य का मार्ग पकड़ लेंगे, तो आप दुख और निराशा से मुक्त हो जाएंगे। सत्य अंधेरे में कहीं छिपा नहीं रहता है। यह सब जगह दिखलाई पड़ता है और जगमगाता रहता है, किंतु स्वार्थ के कारण अंधे और चंचल व्यक्ति उसको नहीं देख सकते। सत्य ही संसार की एकमात्र यथार्थ वस्तु है। वह आंतरिक शक्ति है, पूर्ण न्याय है और चिरस्थायी विश्व प्रेम है। उसमें न कोई कुछ जोड़ सकता है और न कुछ निकाल सकता है। वह किसी पर आश्रित नहीं है, बल्कि मनुष्य मात्र उस पर आश्रित है। आप तब तक सत्य का मूल्य नहीं समझ सकते, जब तक कि उसे आप अहंकार की दृष्टि से देखते हैं। वस्तुतः धर्म एक ही है, वह है सत्य और अधर्म भी एक ही है, वह है अहंकार। जो काम, क्रोध, मोह के वशीभूत होता है, वह हमेशा भ्रम में पड़ा रहता है। जो इन विकारों से रहित है, वह अपने को और संसार की सब वस्तुओं को वास्तविक स्वरूप में देखता है।

दूसरों को ध्यान से सुनें

सूत्र

अहंकार बुद्धि, शांति और सफलता के रास्ते में बाधा डालता है। अपनी खूबियों को पहचानें, लेकिन अति-आत्मविश्वास से बचें। अपनी असफलताओं को स्वीकार करें, दूसरों को ध्यान से सुनें, अपनी कमजोरियों को स्वीकार करें और दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहें। अहंकार से बचें, दूसरों के प्रति क्षमाशील रहें।

दूसरा पहलू

पत्थर का जलना इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस प्रक्रिया से गुजरकर और किन चीजों से बना है।

क्या पत्थर भी जल और पिघल सकते हैं

पत्थरों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वे आग में जल नहीं सकते, लेकिन कुछ पत्थर जलते भी हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि पत्थर किस चीज से बने हैं। पत्थर मुख्यतः तीन तरह के होते हैं, आग्नेय, अवसादी और कायांतरित। कुछ पत्थर ताप के संपर्क में आने पर पिघलकर मैग्मा या लावा जैसे अति-गर्म, तरल पदार्थ में बदल जाते हैं। लेकिन कुछ पत्थर जलने लगते हैं। इसका मतलब है कि उनके अंदर मौजूद तत्व, जैसे-सल्फर, कार्बन और हाइड्रोजन हवा में मौजूद ऑक्सीजन से मिलकर प्रतिक्रिया करते हैं। इससे गर्मी और रोशनी निकलती है, जिसे हम आग की लपटों के रूप में देखते हैं।

अगर पत्थर में दहनशील तत्व नहीं होते हैं, तो वे गर्म होने पर जलने के बजाय पिघल जाते हैं। ये तब बनते हैं, जब जमीन के नीचे का मैग्मा या ज्वालामुखी से निकला लावा ठंडा होकर ठोस हो जाता है। ये पत्थर ज्यादातर सिलिकेट खनिजों से बने होते हैं, जो 700 से 1,300 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान पर क्रिस्टल बन जाते हैं। इनमें सल्फर, कार्बन या हाइड्रोजन जैसे दहनशील तत्व बहुत कम या बिल्कुल नहीं होते। इन्हें दोबारा पिघलाने के लिए बहुत ज्यादा गर्मी चाहिए। अवसादी पत्थर टूटे हुए पत्थरों, खनिजों या कभी-कभी पौधों और जानवरों के अवशेषों से बनते हैं। जब पानी सूखता है, तो वह अपने पीछे क्रिस्टल छोड़ जाता है। जीवित रहने के लिए प्राणियों में प्रचुर मात्रा में सल्फर, कार्बन और हाइड्रोजन जरूरी होते हैं। इसी प्रकार कुछ हद तक कार्बनिक पदार्थों के अंश, खासकर मृत पौधे भी ज्वलनशील होते हैं और पत्थर को जलने में मदद करते हैं। आग्नेय पत्थरों से बने कायांतरित पत्थरों में ज्वलनशील तत्व नहीं होते, पर अवसादी पत्थरों से बने कायांतरित पत्थर जल सकते हैं।

नताली बर्ज्टीन

कुछ पत्थर ताप के संपर्क में आने पर पिघलकर मैग्मा या लावा जैसे अति-गर्म, तरल पदार्थ में बदल जाते हैं।

'भारत के झरिया' में भी वर्षों से जमीन के नीचे कोयले में आग लगी हुई है। कार्बन पर ज्यादा दबाव पड़ने पर कोयले से हीरा बनता है, जो प्रकृति का सबसे सख्त खनिज है।

एन्थ्रेसाइट कोयला पत्थर लगभग पूरी तरह से कार्बन से बना होता है। ये दलदल, रेत या कीचड़ में दब गए मृत पौधों से बने होते हैं, जो करोड़ों वर्षों में संपीड़ित होकर कोयले में बदल गए। दुनिया भर में कोयले की कई परतें हैं। कभी-कभी कोयला जमीन में रहते हुए भी आग पकड़ लेता है। इसका कारण प्राकृतिक हो सकता है, जैसे बिजली गिरना, या खनन जैसी मानवीय गतिविधियां। 'भारत के झरिया' में भी वर्षों से जमीन के नीचे कोयले में आग लगी हुई है। कार्बन पर ज्यादा दबाव पड़ने पर कोयले से हीरा बनता है, जो प्रकृति का सबसे सख्त खनिज है। लेकिन 1772 में फ्रांसीसी वैज्ञानिक एंटोनी लावोइसियर ने साबित किया कि हीरा भी मैग्निफाइंग ग्लास से जल सकता है। हालांकि, आप मोमबत्ती की लौ में भी हीरा जला सकते हैं।

-द कन्वर्सेशन से

आंकड़े

सोने की संभावना

देश के कई राज्यों में स्वर्ण अयस्क भंडार होने का अनुमान लगाया गया है, इनमें बिहार भविष्य में सोने की खानों का गढ़ बन सकता है।

बिहार	44%
राजस्थान	25%
कर्नाटक	21%
प. बंगाल-आंध्र प्रदेश	3-3%
झारखंड	2%

आंकड़े राज्यों में सोने की खानों की संभावना के, प्रतिशत में | स्रोत : Indian Bureau of Mines

भक्त ने पूछा, 'आप गुरुजी को क्यों नहीं दिखते?' रामजी बोले, 'तुम्हारी सरलता के कारण तुम्हें दिखता हूं।' गुरुजी ने कमी स्वीकारी, तो भगवान ने उन्हें भी दर्शन दिए।

सरलता में ही असली भक्ति है

आनंद नाम का एक भोला-भाला युवक था। कमाई नहीं करने पर घरवालों ने उसे घर से निकाल दिया। वह एक आश्रम में पहुंचा और गुरुजी की शरण में रहने लगा। एक दिन रसोई में खाना नहीं बना, तो उसने गुरुजी से पूछा। गुरुजी ने बताया कि आज एकादशी का उपवास है। आनंद ने कहा, 'मैं भूखा नहीं रह पाऊंगा।' गुरुजी बोले, 'खुद खाना बना लो और भगवान राम को भोग लगाना।'

आनंद ने खाना बनाया और रामजी को बुलाया, 'प्रभु! भोग लगाइए।' कोई नहीं आया, तो उसने कहा, 'मैंने रूखा-सूखा बनाया है और आपको तर-माल चाहिए, पर आज सब उपवास पर हैं, यही खा लो।' उसकी सरलता से प्रसन्न होकर श्रीराम व सीता प्रकट हुए और प्रसाद ग्रहण किया। आनंद बोला, 'मैं भूखा रह गया, अगली बार बताना कितने लोग आएंगे।' अगली एकादशी पर उसने तीन लोगों का खाना बनाया, पर रामजी लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान के साथ आए। आनंद फिर भूखा रहा।

अंतर्यात्रा
संकलित

तीसरी एकादशी पर उसने कहा, 'प्रभु, आप ही खाना बनाओ।' रामजी ने सीता, लक्ष्मण आदि के साथ रसोई बनाई। गुरुजी ने पूछा, 'खाना क्यों नहीं बनाया?' आनंद बोला, 'प्रभु सबके साथ आते हैं।' गुरुजी को कुछ न दिखा। आनंद ने रामजी से पूछा, 'प्रभु आप गुरुजी को क्यों नहीं दिखते?' रामजी बोले, 'तुम्हारी सरलता के कारण मैं तुम्हें दिखता हूं।' गुरुजी ने अपनी कमी स्वीकार की, तो प्रभु ने उन्हें भी दर्शन दिए।

अमर उजाला — पुराने पन्नों से — 23 अक्तूबर, 1954

उत्पादन वृद्धि के साथ लोगों को रोजगार देने का प्रयत्न

उत्पादन वृद्धि के साथ लोगों को रोजगार देने का प्रयत्न करना है

केंद्रीय खाद्य मंत्री रफी अहमद किदवई ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चीजों का उत्पादन बढ़ा है। हमें लोगों के रहन-सहन को बेहतर करना है, इसके लिए लोगों को रोजगार देने का प्रयत्न करना होगा।

बिहार चुनाव के केंद्र में महिलाएं

बिहार में महिलाएं एक दशक से राज्य की राजनीति को आकार देती आई हैं, देखना होगा कि इस बार वे किस पर भरोसा करती हैं।

केएस तोमर | **चुनाव**

बिहार की चुनावी जंग अप्रत्याशित दौर में पहुंच चुकी है और उसके केंद्र में हैं महिला मतदाता। महिलाएं एक दशक से शांतिपूर्ण ढंग से बिहार की राजनीति को आकार देती आई हैं और अक्सर उन्होंने नीतीश कुमार का समर्थन किया है। 2010 के बाद से पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं ने ज्यादा मतदान किया है, जो भारतीय राजनीति में दुर्लभ बदलाव है।

सत्ता विरोधी लहर के बावजूद महिलाएं नीतीश पर भरोसा जताती रही हैं, लेकिन इस बार हो सकता है कि महिलाएं उन्हें अपना एकमात्र संरक्षक न मानें। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत बिहार की 75 लाख महिलाओं के खाते में दस-दस हजार रुपये भेजने की घोषणा इसका संकेत है कि भाजपा नीतीश कुमार के महिला वोट बैंक को अपने पाले में करना चाहती है। हालांकि, योजना मुख्यमंत्री के नाम पर है, लेकिन इसका अनावरण मोदी ने दिल्ली से किया, जिससे बिहार के विकास की कहानी पर अपनी छाप छोड़ने के भाजपा के दृढ़ संकल्प का पता चलता है।

बिहार में करीब 48 फीसदी महिला मतदाता हैं। 2020 के चुनाव के बाद हुए सर्वेक्षणों से पता चला है कि 40 फीसदी युवा महिलाओं (18-29 वर्ष) ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को वोट दिया, जबकि पुरुषों के लिए यह आंकड़ा 33 फीसदी था, जिससे नीतीश कुमार बहुत कम अंतर से चुनाव जीत पाए।

भाजपा का महिला-केंद्रित अभियान (मुफ्त एलपीजी रिफिल, जन-धन खाते और अब सीधे नकद हस्तांतरण) मोदी को सच्चे हितैषी के रूप में पेश करना चाहता है। पूरे भारत में 11.3 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को विभिन्न राज्य और केंद्रीय योजनाओं के तहत नियमित रूप से एक से ढाई हजार रुपये मासिक तक मिल रहे हैं। बिहार की नवीनतम घोषणा कल्याण की इसी राष्ट्रव्यापी राजनीतिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा है-जो संरचनात्मक सुधारों के बजाय राजकोषीय निर्भरता के जरिये सशक्तीकरण को पुनर्परिभाषित करती है।

नीतीश कुमार की कल्याणकारी नीतियां, जिनकी महिलाएं मुक्त कंठ से प्रशंसा करती आई हैं, जैसे-शराबबंदी, अब कमजोर हो रही है, क्योंकि शराब की तस्करी बढ़ गई है, तो महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध और स्थानीय स्वास्थ्य ढांचे के पतन से भी उनका मोहभंग हो रहा है। कई लोगों को भाजपा का सीधा लाभ पहुंचाने और मजबूत केंद्रीय योजनाओं का वादा मुख्यमंत्री के बयानों से ज्यादा विश्वसनीय लगता है।

भाजपा स्पष्ट रणनीति के साथ नीतीश की साख का फायदा उठाकर राज्य में खुद को मजबूत करने पर जोर दे रही है। पिछले चुनाव में जदयू 43 सीटों पर सिमट गया, जबकि भाजपा ने 74 सीटें जीती थीं। भाजपा का मौजूदा अभियान पूरी तरह से मोदी पर केंद्रित है और अगर पार्टी इस बार सौ सीटों के आसपास पहुंचती है, तो नीतीश को आसानी से किनारे कर युवा चेहरे को मुख्यमंत्री के रूप में आगे बढ़ा सकती है। यह पैटर्न महाराष्ट्र जैसे अन्य राज्यों में भी दिखाई दे चुका है, जहां क्षेत्रीय सहयोगियों को उनकी उपयोगिता समाप्त होने के बाद या तो समाहित कर लिया गया या हाशिये पर डाल दिया गया। बिहार में भी 'स्थिर शासन' के बहाने इसी तरह का पुनर्गठन देखने को मिल सकता है।

करीब दो दशकों से सत्ता पर काबिज नीतीश कुमार की छवि को रोजगार और पलायन के अलावा सत्ता विरोधी रुझान जैसे मुद्दे कमजोर कर रहे हैं। महागठबंधन उनकी सेहत का हवाला देकर लाभ उठाना चाहता है। इसके अलावा, बिहार में जाति की राजनीति हावी रहती है। अगड़ा, पिछड़ा, अति-पिछड़ा, यादव-मुस्लिम समीकरण आदि मायने रखते हैं, पर पार्टियों की संगठनात्मक स्थिति भी चुनावी लहर को अपनी ओर मोड़ने में अहम भूमिका निभाती है। महागठबंधन में तालमेल का अभाव दिख रहा है, जबकि राजग में अपेक्षाकृत कलह कम है। भाजपा का कुशल बूथ प्रबंधन और मोदी की लोकप्रियता सत्ता विरोधी भावना को कम कर सकती है। फिर भी, महागठबंधन यदि लंबे गतिरोध से निराश महिलाओं और युवाओं को अपने पाले में करने में सफल हो जाता है, तो नतीजे चौंकाने वाले हो सकते हैं।

कुल मिलाकर, इस बार के चुनाव, 2020 से अलग होंगे। महिलाओं के उत्थान के लिए काम करने वाले नीतीश कुमार की छवि अब मोदी के राष्ट्रीय प्रदाता की छवि से प्रतिस्पर्धा कर रही है। भाजपा का इरादा केवल सत्ता में भागीदार बनने का नहीं, बल्कि प्रभुत्व स्थापित करने का है। नीतीश का अस्तित्व उनकी व्यक्तिगत अपील से कम और बिखरे हुए विपक्ष के गणित पर ज्यादा निर्भर करता है। महिलाओं के लिए यह चुनाव यह निर्धारित करेगा कि कल्याण के माध्यम से सशक्तीकरण वास्तविक स्वायत्तता में तब्दील होता है या सिर्फ चुनावी सुविधा बनकर रह जाता है। उनका फैसला न केवल बिहार की अगली सरकार का निर्धारण करेगा, बल्कि भारत में लैंगिक राजनीति की बदलती गतिशीलता का भी संकेत देगा। अगर इतिहास मार्गदर्शक है, तो बिहार की महिलाएं एक बार फिर पुरुषों से अधिक मतदान करेंगी।

दिवाली बलिप्रतिपदा के अवसर पर बुधवार को शेयर, मुद्रा विनिमय और सराफा बाजार में अवकाश रहा।

सस्ते आयात और डंपिंग से इस्पात क्षेत्र को नुकसान, नीतिगत समर्थन जरूरी

आरबीआई ने लेख में कहा...कीमतें घटने से बढ़ा आयात, घरेलू उत्पादन पर पड़ा प्रतिकूल प्रभाव

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। देश के इस्पात क्षेत्र को 2023-24 और 2024-25 के दौरान प्रमुख वैश्विक स्टील उत्पादकों के सस्ते आयात एवं डंपिंग के कारण भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

आरबीआई ने अक्तूबर बुलेटिन में प्रकाशित लेख में कहा, अंतराष्ट्रीय बाजार में कीमतें कम होने के कारण इस्पात आयात में बढ़ोतरी देखी गई है। 2023-24 में भारत के इस्पात आयात में 22 फीसदी की वृद्धि दर्ज की। आयात वृद्धि से इससे घरेलू इस्पात उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ऐसे में घरेलू इस्पात उत्पादन की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत समर्थन की जरूरत है।

स्टील अंडर सीज : अंडरस्टैंडिंग द इम्पैक्ट ऑफ डंपिंग ऑन इंडिया शीर्षक वाले लेख में कहा गया है, वैश्विक उत्पादकों के सस्ते इस्पात की डंपिंग से घरेलू इस्पात उत्पादन को खतरा हो सकता है। हालांकि, इसे उपयुक्त नीतिगत उपायों से कम किया जा सकता है। हाल ही में सुरक्षा शुल्क लगाने की पहल इस्पात आयात डंपिंग के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करती है।

रक्षोपाय शुल्क से लगा अंकुश

भारत ने खपत मांग को पूरा करने के लिए इस्पात उत्पादों का आयात किया। देश के लौह एवं इस्पात आयात में 2024-25 की पहली छमाही में 10.7 फीसदी की वृद्धि रही। वहीं, 2024-25 की दूसरी छमाही में कमी दर्ज की गई, जिसका मुख्य कारण रक्षोपाय शुल्क था।

45% इस्पात दक्षिण कोरिया और चीन समेत कई देशों से आयात करता है भारत

2024-25 में तेजी से बढ़ा आयात

भारत करीब 45 फीसदी इस्पात का आयात करता है। इसमें दक्षिण कोरिया की हिस्सेदारी 14.6 फीसदी और चीन की 9.8 फीसदी है। इसके अलावा, भारत अमेरिका से 7.8 फीसदी, जापान से 7.1 फीसदी और ब्रिटेन से 6.2 फीसदी इस्पात आयात करता है।

- लेख में कहा गया है कि 2022 से घरेलू खपत और उत्पादन के बीच का अंतर बढ़ गया है। 2024-25 के दौरान चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया और वियतनाम से इस्पात आयात में वृद्धि दर्ज की गई है।
- इसके अलावा, अप्रैल, 2022 से नवंबर, 2024 तक भारत की इस्पात खपत औसतन 12.9 फीसदी (मासिक वृद्धि दर का औसत) की रफ्तार से बढ़ी है।

यह लेख अप्रैल, 2013 से मार्च, 2025 तक के मासिक आंकड़ों पर आधारित है। लेख में व्यक्त विचार लेखकों के हैं और ये आरबीआई को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

निर्यातक देशों की मूल्य तय करने की नीतियां चिंताजनक

आरबीआई के सांख्यिकी एवं सूचना प्रबंधन विभाग के अधिकारी अनिर्बन सान्याल और संजय सिंह ने लेख में कहा, बढ़ते आयात और प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। इससे घरेलू उत्पादकों पर दबाव बढ़ा है। निर्यातक देशों की मूल्य निर्धारण रणनीतियां इस्पात उद्योग के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं।

- इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसमें नीतिगत समर्थन और नवोन्मेषण, लागत दक्षता एवं टिकाऊ व्यवहार के माध्यम से भारत के इस्पात उत्पादन की प्रतिस्पर्धी क्षमता बढ़ाने के लिए पहल शामिल हैं।

आरबीआई का स्वर्ण भंडार 880 टन के पार, मूल्य 95 अरब डॉलर

नई दिल्ली। आरबीआई का स्वर्ण भंडार 2025-26 की पहली छमाही में 880 टन के पार पहुंच गया। केंद्रीय बैंक ने इस भंडार में सितंबर के अंतिम सप्ताह में 200 किलोग्राम सोना जोड़ा।

आरबीआई के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, 26 सितंबर तक केंद्रीय बैंक का कुल स्वर्ण भंडार बढ़कर 880.18 टन पहुंच गया। इसका मूल्य 95 अरब डॉलर था। 2024-25 के अंत तक स्वर्ण भंडार 879.58 टन था। इस दौरान 54.13 टन सोना खरीदा गया।

आंकड़ों के मुताबिक, सितंबर में समाप्त छमाही में आरबीआई ने 600 किलोग्राम सोना खरीदा। वहीं, सितंबर में 200 किलोग्राम और जून में 400 किलोग्राम सोने की खरीद हुई थी। आरबीआई ने कहा, वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक अनिश्चितता बढ़ने से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोने की कीमतों में वृद्धि हुई है। इसने सुरक्षित निवेश के लिए खरीदारी को प्रोत्साहित किया और केंद्रीय बैंकों एवं निवेशकों की ओर से वित्तीय परिसंपत्ति के रूप में सोने की निरंतर मांग ने घरेलू कीमतों में वृद्धि को बढ़ावा दिया। उधर, वैश्विक स्तर पर केंद्रीय बैंकों ने आधिकारिक भंडार में 166 टन सोना जोड़ा, जिससे इसकी मांग में और बढ़ोतरी हुई। एजेंसी

न्यूज डायरी

भिलाई जेपी सीमेंट पर होगी दिवालिया कार्यवाही

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) ने कर्ज में डूबे समूह जयप्रकाश एसोसिएट्स लि. की अनुषंगी कंपनी भिलाई जेपी सीमेंट के खिलाफ 45 करोड़ रुपये की चूक के लिए दिवालिया कार्यवाही शुरू करने का निर्देश दिया है। एनसीएलटी की कटक पीठ का यह निर्देश कंपनी के परिचालन ऋणदाता सिद्धगिरि होल्डिंग्स प्राइवेट लि. की याचिका स्वीकार किए जाने के बाद आया है। एजेंसी

यूको बैंक मार्च तक खोलेगा 150 और शाखाएं

नई दिल्ली। यूको बैंक अपनी उपस्थिति एवं कारोबार विस्तार के लिए अगले पांच माह में 150 और शाखाएं खोलने की योजना बना रहा है। वर्तमान में, बैंक की देशभर में 3,322 शाखाएं हैं। 150 शाखाओं के जुड़ने से चालू वित्त वर्ष के अंत तक इसका नेटवर्क बढ़कर 3,472 हो जाएगा। यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ अश्विनी कुमार ने कहा, शाखाओं के माहौल को बेहतर बनाने पर काम चल रहा है। एजेंसी

एनएमडीसी ने लौह अयस्क के दाम घटाए

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी एनएमडीसी ने बुधवार को कहा, उसने तत्काल प्रभाव से लौह अयस्क ढेलों (लम्प) और उसके फाइन्स की कीमतों में क्रमशः 550 रुपये और 500 रुपये प्रति टन की कटौती की है। कंपनी ने एक नियामकीय सूचना में कहा, उसने लम्प अयस्क की कीमत 5,550 रुपये प्रति टन और फाइन्स की कीमत 4,750 रुपये प्रति टन तय की है। एजेंसी

आईडीबीआई बैंक : लाभ बढ़कर 3,627 करोड़

नई दिल्ली। आईडीबीआई बैंक का 2025-26 की सितंबर तिमाही में शुद्ध लाभ दोगुना होकर 3,627 करोड़ हो गया। बैंक ने बताया, उसने आईपीओ में 799.87 रुपये प्रति शेयर की कीमत पर 2.22 करोड़ इक्विटी शेयरों की पेशकश की। ये हिस्सेदारी नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लि. में उसके कुल 11.11 फीसदी स्वामित्व का हिस्सा थी। इस बिक्री से बैंक को 1,698.96 करोड़ का शुद्ध लाभ हुआ। एजेंसी

यस बैंक के मुनाफे में 18.3 फीसदी उछाल

नई दिल्ली। यस बैंक का चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में शुद्ध लाभ 18.3 फीसदी बढ़कर 654 करोड़ रुपये हो गया। गैर-प्रमुख आय में वृद्धि से मुनाफा बढ़ा है। बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ प्रशांत कुमार ने कहा, चालू वित्त वर्ष में ऋण वृद्धि को 10 फीसदी तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा जाएगा। तिमाही के दौरान बैंक की अन्य आय 16.9 फीसदी बढ़कर 1,644 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गई। एजेंसी

रेडसीर की रिपोर्ट...त्योहारी सीजन में मोबाइल-इलेक्ट्रॉनिक्स ही तय करते हैं बिक्री की रफ्तार

ऑनलाइन बिक्री अब त्योहारों पर ही निर्भर नहीं, पर मोबाइल-इलेक्ट्रॉनिक का वर्चस्व

अमर उजाला ब्यूरो/एजेंसी

नई दिल्ली। देश में ऑनलाइन खरीद-बिक्री की निर्भरता अब सिर्फ त्योहारी मौसम पर नहीं रह गई है। लोग अब पूरे साल ऑनलाइन खरीदारी कर रहे हैं। हालांकि, त्योहारी मौसम के दौरान बिक्री की रफ्तार बढ़ाने में मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स सामान की भूमिका अब भी काफी महत्त्वपूर्ण है।

परामर्शदाता कंपनी रेडसीर ने बुधवार को जारी एक रिपोर्ट में कहा, भारत का ऑनलाइन खुदरा क्षेत्र अब पूरे वर्ष में अधिक संतुलित मांग की राह पर बढ़ रहा है। इसके बावजूद मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी श्रेणियां अब भी वार्षिक त्योहारी उछाल पर निर्भर हैं। यानी त्योहारों के दौरान मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स ही अब भी बिक्री की रफ्तार तय करते हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि मोबाइल श्रेणी में त्योहारी मौसम से जुड़ा उतार-चढ़ाव सबसे अधिक है, जिसका मौसमी सूचकांक अंतराल 1.7 रहा। वहीं, इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद 1.3 के साथ दूसरे स्थान पर रहे। इन दोनों श्रेणियों की मांग सितंबर-अक्तूबर के महीनों में सबसे अधिक रहती है। मोबाइल फोन का मासिक सूचकांक 2.3 के करीब है, जबकि इलेक्ट्रॉनिक्स का 2.0 के आसपास पहुंचता है।

सुझाव...विभिन्न ब्रांड भी घटा सकते हैं निर्भरता

रिपोर्ट में कहा गया है कि विभिन्न ब्रांड को त्योहारी सीजन पर अपनी निर्भरता घटाने के लिए कैलेंडर वर्ष की पहली तिमाही जैसे सुस्त बिक्री समय में विशेष उत्पादों की पेशकश या प्रचार अभियान शुरू करने पर ध्यान देना चाहिए।

भविष्य में ये कंपनियां होंगी सबसे आगे...रेडसीर ने रिपोर्ट में कहा, दौर बदलने के साथ भारत में ऑनलाइन खुदरा कारोबार धीरे-धीरे त्योहारों के समय की चरम स्थिति से बाहर निकल रहा है। भविष्य में वही कंपनियां बाजार की अग्रणी होंगी, जो न सिर्फ त्योहारी उच्च मांग को कुशलता से संभालने में सक्षम होंगी, बल्कि सुस्त महीनों में भी मांग पैदा कर सकेंगी।

इन वस्तुओं की बिक्री पर त्योहारी असर नहीं

राशन के सामान, सौंदर्य उत्पाद और व्यक्तिगत देखभाल वाली श्रेणियों को ऑनलाइन बिक्री के लिहाज से सबसे स्थिर बताया गया है, क्योंकि इनमें सालभर मांग लगभग समान रहती है। यह कम मूल्य वाले और बार-बार खरीदे जाने वाले उत्पादों की विशेषता है।

- घरेलू साज-सज्जा एवं फर्नीचर के साथ फैशन श्रेणियां मध्यम मौसमी प्रवृत्ति दिखाती हैं। इनमें त्योहारी महीनों में उछाल तो आता है, पर उतार-चढ़ाव उतना अधिक नहीं होता है।

छोटे शहरों ने ऑनलाइन खरीदारी का तोड़ा रिकॉर्ड

त्योहारी सीजन की ऑनलाइन खरीदारी अब सिर्फ मेट्रो शहरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब छोटे शहरों के लोग भी जमकर ऑनलाइन शॉपिंग कर रहे हैं। दिवाली पर टियर-2 और टियर-3 शहरों में रहने वाले लोगों ने दिल्ली और मुंबई जैसे बड़े शहरों को पीछे छोड़ते हुए रिकॉर्डतोड़ ऑनलाइन खरीदारी की है। लॉजिस्टिक्स इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म क्लिकपोस्ट की ओर से किए गए 4.25 करोड़ से ज्यादा शिपमेंट के विश्लेषण से यह साफ हुआ कि अब गैर-मेट्रो शहर ई-कॉमर्स की नई रीढ़ बन चुके हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, दिवाली पर कुल ऑर्डर का 50.7 फीसदी सिर्फ टियर-3 शहरों से आया, जबकि टियर-2 शहरों का योगदान 24.8 फीसदी रहा। यानी देश के कुल ऑनलाइन ऑर्डर वॉल्यूम में छोटे शहरों का हिस्सा 74.7% रहा।

- **ऑर्डर मूल्य में भी इजाफा :** इस साल त्योहारों के दौरान औसत ऑर्डर मूल्य बढ़कर 4,346 रुपये पहुंच गया, जो 2024 में 3,281 रुपये था। यानी छोटे शहरों से किए गए ऑर्डर में 32.5 फीसदी का इजाफा हुआ है। यह दिखाता है कि ग्राहक अब न सिर्फ ज्यादा, बल्कि महंगी-प्रीमियम चीजें भी खरीद रहे हैं।

इन्फोसिस : 18,000 करोड़ के शेयर बायबैक में शामिल नहीं होंगे प्रवर्तक

प्रवर्तकों में नारायण मूर्ति, नंदन नीलेकणी और सुधा मूर्ति भी

नई दिल्ली। देश की दूसरी सबसे बड़ी आईटी सेवाप्रदाता कंपनी इन्फोसिस के प्रवर्तकों और प्रवर्तक समूह ने कंपनी के 18,000 करोड़ रुपये के शेयर वापस खरीदने की प्रक्रिया (बायबैक) में शामिल नहीं लेने का फैसला किया है। प्रवर्तकों में सह-संस्थापक एनआर नारायण मूर्ति, नंदन नीलेकणी और सुधा मूर्ति शामिल हैं।

इन्फोसिस ने बुधवार को नियामकीय फाइलिंग में बताया, शेयर बायबैक की प्रक्रिया की घोषणा तक प्रवर्तकों के पास कंपनी में कुल 13.05 फीसदी हिस्सेदारी थी। कंपनी के प्रवर्तक और प्रवर्तक समूह ने 14, 16, 17, 18 और 19 सितंबर, 2025 के अपने पत्रों के जरिये शेयर बायबैक में शामिल नहीं लेने का फैसला किया।

सूचना के मुताबिक, प्रस्तावित प्रक्रिया को मिलने वाली प्रतिक्रिया के आधार पर कंपनी में प्रवर्तक और प्रवर्तक समूह के वोटिंग अधिकार (सार्वजनिक घोषणा की तिथि तक 13.05 फीसदी हैं) बदल सकते हैं।

इन्फोसिस के प्रवर्तकों में नारायण मूर्ति की पत्नी सुधा मूर्ति, बेटी अक्षता मूर्ति और बेटा रोहन मूर्ति शामिल हैं। इसमें कंपनी के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणी, उनकी पत्नी रोहिणी नीलेकणी और बच्चे निहार एवं जान्हवी नीलेकणी भी शामिल हैं। अन्य सह-संस्थापक और उनके परिवार भी कंपनी के प्रवर्तक हैं। 11 सितंबर को बोर्ड की बैठक में कंपनी के अब तक के सबसे बड़े 18,000 करोड़ के शेयर बायबैक को मंजूरी दी गई थी। यह मंजूरी ऐसे समय में दी गई है, जब कमजोर व्यापक आर्थिक माहौल और उच्च अमेरिकी टैरिफ से उत्पन्न अनिश्चितताओं के कारण आईटी कंपनियों के शेयरों पर भारी दबाव है। एजेंसी

नारायण मूर्ति | नंदन नीलेकणी | सुधा मूर्ति

प्रवर्तकों के पास 54.2 करोड़ शेयर

घोषणा की तिथि एवं 30 सितंबर को समाप्त दूसरी तिमाही के अंत तक प्रवर्तकों और प्रवर्तक समूह के पास कंपनी के 13.05 फीसदी या 54.2 करोड़ शेयर हैं।

- **नारायण मूर्ति** के पास 0.36 फीसदी और **नीलेकणी** के पास 0.98 फीसदी शेयर हैं। कंपनी के सह-संस्थापक क्रिस गोपालकृष्णन की पत्नी **सुधा गोपालकृष्णन** 2.3 फीसदी के साथ सबसे बड़ी प्रवर्तक शेयरधारक हैं।

एक दशक में पांचवां बायबैक

इन्फोसिस औसतन 1,800 रुपये प्रति शेयर की दर से 10 करोड़ शेयर वापस खरीदेगी। यह कंपनी की मौजूदा कुल चुकता इक्विटी शेयर पूंजी में इक्विटी शेयरों की संख्या का 2.41 फीसदी है।

- पिछले एक दशक में यह कंपनी का पांचवां शेयर बायबैक है। पिछला बायबैक 2022 में हुआ था, जब खुले बाजार में 1,850 रुपये प्रति शेयर की औसत कीमत पर 9,300 करोड़ रुपये खरीदारी हुई थी। उस समय कुल छह करोड़ शेयर खरीदे गए थे।

एआई कौशल वाली नौकरियों की मांग 11.7 फीसदी बढ़ी

इनडीड की रिपोर्ट...सबसे ज्यादा डाटा एवं एनालिटिक्स क्षेत्र में 39 फीसदी आवेदनों में एआई का उल्लेख

नई दिल्ली। देश में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कौशल से जुड़ी नौकरियों की मांग लगातार बढ़ रही है। सितंबर में एआई आधारित नौकरियों में 11.7 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई, जबकि एक साल पहले की समान अवधि में यह 8.2 फीसदी थी। वैश्विक ऑनलाइन भर्ती मंच इनडीड की बुधवार को जारी रिपोर्ट के मुताबिक, तीन महीने पहले एआई कौशल वाली नौकरियों में 10.6 फीसदी वृद्धि दर्ज की गई थी।

रिपोर्ट के मुताबिक, एआई आधारित नौकरियां मुख्य रूप से प्रौद्योगिकी क्षेत्र में केंद्रित हैं। हालांकि, अब इनका विस्तार धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में भी हो रहा है। डाटा एवं एनालिटिक्स क्षेत्र में करीब 39 फीसदी, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट में 23 फीसदी, बीमा क्षेत्र में 18 फीसदी और वैज्ञानिक अनुसंधान में 17 फीसदी नौकरियों के आवेदनों में एआई का उल्लेख है।

सिंगापुर के बाद भारत एआई भर्तियों में सबसे आगे

इनडीड के एशिया-प्रशांत क्षेत्र के वरिष्ठ अर्थशास्त्री कैलम पिकरिंग ने कहा, भारत अन्य बाजारों की तुलना में एआई आधारित नौकरियों के मामले में उच्च स्थान पर है। भारत को छोड़कर सिर्फ सिंगापुर में ही एआई से जुड़ी नौकरियों की मांग का प्रतिशत इतना अधिक है। इससे स्पष्ट है कि भारत में कई नियोक्ता एआई पर पूरी तरह ध्यान दे रहे हैं।

इसके अलावा, एआई कौशल की मांग इंजीनियरिंग के सभी क्षेत्रों में देखी जा रही है। इनमें औद्योगिक इंजीनियरिंग (17 फीसदी), मैकेनिकल इंजीनियरिंग (11 फीसदी) और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग (9.2 फीसदी) प्रमुख है। रिपोर्ट के मुताबिक, सितंबर में भर्ती के कुल विज्ञापनों में 0.8 फीसदी गिरावट आई, जो भर्तियां कम होने का लगातार छठा महीना है। हालांकि, देश में संगठित क्षेत्र मजबूत बना हुआ है और पर्याप्त नौकरियां भी उपलब्ध हैं। हालांकि, मौजूदा समय में एआई आधारित कुशल कर्मचारियों की संख्या कम है। एजेंसी

तीन माह में बिक गए 4.8 करोड़ स्मार्टफोन, एपल फिर शीर्ष-5 में

भारत का स्मार्टफोन बाजार कैलेंडर वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में सालाना आधार पर तीन फीसदी बढ़कर 4.84 करोड़ इकाई पहुंच गया। यानी तीन महीने में देश में इतने स्मार्टफोन बिक गए। इस दौरान सबसे ज्यादा स्मार्टफोन बेचने वाली शीर्ष-5 कंपनियों में दिग्गज अमेरिकी कंपनी एपल की फिर से वापसी हुई है। ब्यूरो

वीवो शीर्ष पर, सैमसंग नंबर-2

97 लाख स्मार्टफोन बेच दिए वीवो ने

68 लाख इकाई के साथ सैमसंग दूसरे स्थान पर

49 लाख आईफोन खरीदे लोगों ने तीसरी तिमाही में

65-65 लाख मोबाइल बेचे शाओमी और ओप्पो ने

बाजार हिस्सेदारी भी बढ़ी

20% बाजार पर वीवो का कब्जा

14 फीसदी पहुंच गई सैमसंग की बाजार हिस्सेदारी

10 फीसदी रही एपल की हिस्सेदारी

एपल की सर्वाधिक तिमाही बिक्री

- कंपनी ने तीसरी तिमाही में भारत में अब तक की सबसे ज्यादा बिक्री दर्ज की।
- डिस्काउंट के कारण आईफोन 16एस व आईफोन 15एस की सर्वाधिक बिक्री।
- त्योहारी ऑफर और बेहतर उपलब्धता के कारण छोटे शहरों में आईफोन की मजबूत रही मांग।

पीएफआरडीए ने पेंशन निवेश के स्पष्ट मूल्यांकन के लिए परामर्श पत्र किया जारी

नई दिल्ली। पीएफआरडीए ने पेंशन निवेश के मूल्यांकन को अंशधारकों के समक्ष स्पष्ट रूप से रखने और दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक परामर्श पत्र जारी किया है। पेंशन कोष नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने कहा, प्रस्तावित मसौदा प्रशासन में सुधार, ग्राहकों के हितों की रक्षा और भारत के व्यापक वित्तीय एवं ढांचागत वृद्धि में योगदान देने की दिशा में उसकी मौजूदा प्रतिबद्धता का हिस्सा है।

परामर्श पत्र में एनपीएस/एपीवाई में रखी गई दीर्घकालिक सरकारी प्रतिभूतियों के लिए दोहरे मूल्यांकन ढांचे को अपनाने का प्रस्ताव किया गया है। परामर्श पत्र पर 30 नवंबर, 2025 तक सुझाव मांगे गए हैं। ब्यूरो

घरेलू वाहन क्षेत्र में 4.6 अरब डॉलर के सौदे

ग्रांट थॉर्नटन ने कहा, टाटा मोटर्स के 3.8 अरब डॉलर के अधिग्रहण से मिला बढ़ावा

नई दिल्ली। भारतीय मोटर वाहन क्षेत्र ने जुलाई-सितंबर तिमाही में 4.6 अरब डॉलर मूल्य के 30 सौदे किए। इसे टाटा मोटर्स के इवेको एसपीए के 3.8 अरब डॉलर के अधिग्रहण से बढ़ावा मिला। यह भारत के अब तक के सबसे बड़े मोटर वाहन लेनदेन में से एक है।

ग्रांट थॉर्नटन इंडिया ने बुधवार को एक रिपोर्ट में कहा, टाटा मोटर्स-इवेको सौदे को छोड़कर अप्रैल-जून तिमाही की तुलना में मूल्य में 36 फीसदी गिरावट आई है, जो दर्शाता है कि बड़े रणनीतिक दांव समग्र सौदे की गति को परिभाषित करते रहेंगे। हालांकि, सौदों की मात्रा पिछली तिमाही के समान रही लेकिन मूल्यों में तेजी से वृद्धि हुई। ग्रांट थॉर्नटन भारत के साझेदार एवं मोटर वाहन उद्योग के दिग्गज साकेत मेहरा ने कहा, इस तिमाही की मजबूत अधिग्रहण-विलय (एमएंडए) और निजी निवेश (पीई) गतिविधि वाणिज्यिक गतिशीलता में भारत की बढ़ती वैश्विक महत्वाकांक्षा, व्यापकता और प्रौद्योगिकी-सक्षम मंचों की ओर स्पष्ट बदलाव को दर्शाती है। उन्होंने कहा, सरकारी नीतियां, नीतिगत अनुकूलता एवं त्योहारी मांग के बीच तालमेल से हम वैकल्पिक ईंधन प्रौद्योगिकियों, मोटर वाहन प्रौद्योगिकी और आपूर्ति शृंखला के मोर्चे पर डिजिटलीकरण में निरंतर गति की उम्मीद करते हैं। एजेंसी

दिवाली पर बिजली की अधिकतम मांग घटी, खपत में भी रही गिरावट

नई दिल्ली। देश में दिवाली के दिन बिजली की अधिकतम मांग या सबसे ज्यादा आपूर्ति में पिछले साल के मुकाबले गिरावट रही। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, सोमवार को बिजली की अधिकतम मांग घटकर 180.14 गीगावॉट रह गई, जो पिछले साल 31 अक्तूबर, 2024 को दिवाली के दिन मांग 182.87 गीगावॉट थी।

आमतौर पर, दिवाली पर घरेलू एवं व्यावसायिक उपभोक्ताओं की ओर से लाइट और अन्य उपकरणों के अत्यधिक उपयोग के कारण बिजली की खपत के साथ मांग भी बढ़ जाती है। आंकड़ों के मुताबिक, सोमवार को देश की कुल बिजली खपत घटकर

396.5 करोड़ यूनिट रह गई, जबकि एक साल दिवाली के दिन 406.2 करोड़ यूनिट बिजली की खपत हुई थी। मंगलवार को अधिकतम बिजली मांग 176.50 गीगावॉट दर्ज की गई। मंत्रालय का अनुमान था कि गर्मियों में बिजली की अधिकतम मांग 277 गीगावॉट तक पहुंच जाएगी, जो पिछले साल मई में दर्ज 250 गीगावॉट के सार्वकालिक उच्चस्तर से अधिक है। एजेंसी

एम्फी के आंकड़े — बड़े संस्थागत निवेशकों ने नकदी जरूरतों और अग्रिम टैक्स भुगतान के लिए बॉन्ड म्यूचुअल फंड योजनाओं से निकाले पैसे

बॉन्ड म्यूचुअल फंड योजनाओं से सितंबर में 1.02 लाख करोड़ की निकासी

अमर उजाला ब्यूरो/एजेंसी

नई दिल्ली। निश्चित आय वाले बॉन्ड आधारित म्यूचुअल फंड योजनाओं से सितंबर, 2025 में 1.02 लाख करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी हुई। बड़े संस्थागत निवेशकों की निकासी इसकी प्रमुख वजह रही। अगस्त में निवेशकों ने इन योजनाओं से 7,980 करोड़ निकाले थे, जबकि जुलाई में 1.07 लाख करोड़ का निवेश आया था।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के मुताबिक, सितंबर में ऋण या बॉन्ड में निवेश करने वाली 16 में से 12 म्यूचुअल फंड श्रेणियों से शुद्ध रूप से निकासी हुई। इनमें लिक्विड फंड योजनाओं से 66,042 करोड़ रुपये, मनी मार्केट फंड से 17,900 करोड़ रुपये और बेहद कम अवधि वाले फंड से 13,606 करोड़ रुपये की निकासी देखने को मिली।

मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया में विश्लेषक नेहाल मेश्राम ने कहा, यह निकासी मुख्य रूप से सितंबर तिमाही के अंत की नकदी जरूरतों और अग्रिम कर भुगतान से जुड़ी संस्थागत निकासी का नतीजा है।

7,980 करोड़ निकाले गए थे अगस्त में

1.07 लाख करोड़ का हुआ था निवेश जुलाई में

एयूएम घटकर 17.8 लाख करोड़ रुपये

आंकड़ों के मुताबिक, बड़े पैमाने पर निकासी होने से ऋण आधारित फंड योजनाओं की प्रबंधन के अधीन परिसंपत्तियां (एयूएम) सितंबर अंत तक मासिक आधार पर करीब पांच फीसदी घटकर 17.8 लाख करोड़ रह गईं। अगस्त में इन योजनाओं का एयूएम 18.71 लाख करोड़ रुपये था।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में 30,421 करोड़ निवेश

आंकड़ों के मुताबिक, इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं में निवेशकों ने सितंबर में 30,421 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया। हालांकि, यह अगस्त के 33,430 करोड़ रुपये के निवेश से 9 फीसदी कम है। इससे पहले जुलाई में इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं ने 42,703 करोड़ रुपये का रिकॉर्ड निवेश हुआ था।

एम्फी ने कहा, बाजार में उतार-चढ़ाव और वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच निवेशकों ने सतर्क रुख अपनाया, जिससे इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं में शुद्ध निवेश घटा है।

ओवरनाइट फंड्स में निवेशकों ने लगाए 4,279 करोड़ रुपये

बॉन्ड म्यूचुअल फंडों के विपरीत ओवरनाइट फंड्स में बीते महीने निवेशकों ने 4,279 करोड़ रुपये का निवेश किया। वहीं, डायनेमिक बॉन्ड श्रेणी में 519 करोड़ का निवेश आया। इसके अलावा, निवेशकों ने मध्यम से लंबी अवधि वाले फंडों में 103 करोड़ और दीर्घकालिक अवधि वाले फंडों में 61 करोड़ रुपये का निवेश किया।

एजुकेशन & कॅरिअर

सवाल पूछकर ही सही दिशा में सुधार किया जा सकता है।

अमर उजाला **Job Alert**

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली

कॉन्स्टेबल के पदों पर आवेदन आमंत्रित

7565 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 31 अक्तूबर, 2025
योग्यताएं : बारहवीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : ssc.nic.in

राइट्स में रोजगार के अवसर ■ 600 पद

सीनियर टेक्निकल असिस्टेंट के पदों पर करें आवेदन
आवेदन की अंतिम तिथि
12 नवंबर, 2025
योग्यताएं
बीएससी, डिप्लोमा व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
rites.com

सीमा सुरक्षा बल में निकली भर्ती ■ 391 पद

कॉन्स्टेबल जनरल ड्यूटी के पदों पर नौकरी के मौके
आवेदन की अंतिम तिथि
04 नवंबर, 2025
आयु-सीमा
न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 23 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें
bsf.gov.in

रेलवे भर्ती बोर्ड ■ 5810 पद

स्टेशन मास्टर, मालगाड़ी प्रबंधक व अन्य पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि : 20 नवंबर, 2025
आयु-सीमा : न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 33 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : rrbapply.gov.in

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में मौके ■ 348 पद

ग्रामीण डाक सेवक एग्जीक्यूटिव के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
29 अक्तूबर, 2025
वेतनमान
रुपये 30,000 प्रतिमाह निर्धारित
यहां आवेदन करें
ippbonline.com

बैंक ऑफ बड़ौदा में अवसर ■ 50 पद

मैनेजर, सीनियर मैनेजर व अन्य पद रिक्त
आवेदन की अंतिम तिथि
30 अक्तूबर, 2025
योग्यताएं
ग्रेजुएशन, पोस्ट-ग्रेजुएशन व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
bankofbaroda.bank.in

यहां भी रोजगार के अवसर ...

- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली : प्रोजेक्ट रिसर्च साइंटिस्ट आदि के पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 05 नवंबर, 2025
- aiims.edu
- होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, मुजफ्फरपुर : तकनीशियन व अन्य पदों पर करें आवेदन।
  वॉक-इन-इंटरव्यू की अंतिम तिथि : 04 नवंबर, 2025
- tmc.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

सवाल पूछना कमजोरी नहीं है

सही वक्त पर सही सवाल पूछने से टीम में संवाद, समझ व नवाचार तो बढ़ता ही है, संगठन भी तरक्की करता है

जेफ वेट्ज़लर
हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

किसी संगठन में कर्मचारियों को फीडबैक लेने-देने के लिए प्रोत्साहित करना काफी फायदेमंद होता है। जब लोग नियमित रूप से एक-दूसरे से सुझाव मांगते हैं, तो उनमें विनम्रता बढ़ती है, डर कम होता है और खुलकर सीखने की भावना विकसित होती है। हालांकि, ऐसी संस्कृति अपने आप नहीं बनती, बल्कि इसके लिए लीडर को टीम से सदस्यों को सही ढंग से फीडबैक लेना-सिखाना, अन्य लीडर्स को उदाहरण बनाना, अच्छे व्यवहार को पुरस्कृत करना और फीडबैक को रोजमर्रा के काम का हिस्सा बनाना होता है। इससे एक ऐसी कार्य संस्कृति बनती है, जहां हर कोई सहजता से सीखता और आगे बढ़ता है। ऐसा करने की कुछ व्यावहारिक रणनीतियां यहां बताई गई हैं।

■ सवाल पूछने की कला
कुशलता से सवाल पूछना एक कला है, जिसे सीखना पड़ता है। जब टीम के सदस्य बिना मार्गदर्शन के ऐसा करने का प्रयास करते हैं, तो अक्सर उनके सवाल अस्पष्ट या अधूरे होते हैं। इस वजह से उन्हें सही जवाब नहीं मिल पाता। इसलिए, टीम के सदस्यों को सटीक व प्रभावी सवाल पूछने की क्षमता विकसित करने में मदद करें। उनसे पूछें कि क्या आप बता सकते हैं कि कहीं मेरी बात लंबी तो नहीं लग रही? या मेरे तरीके से बातचीत में कहां फायदा हुआ और कहां टकराव? फॉलो-अप सवाल भी पूछें कि अगर इस चीज को काम में लागू किया जाए, तो परिणाम कैसा मिलेगा?

Harvard Business Review

■ केवल दिशा न दिखाएं
लीडर का काम केवल दिशा दिखाना नहीं होता, बल्कि वे संगठन का माहौल और संस्कृति भी तैयार करते हैं। ऐसे में, सिर्फ सवाल पूछना पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि आप किसी जवाब पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, कौन-सी जानकारी साझा करते हैं और सुझावों पर क्या कार्रवाई करते हैं। यही तय करेगा कि आपकी सिखाने और सुधारने की संस्कृति कितनी मजबूत होगी।

■ सराहना करना सीखें
टीम का कोई सदस्य जब कोई सवाल पूछे, तो उसकी सराहना करें। उन्हें सोच-समझकर और विचारशील सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। पदोन्नति या प्रोत्साहन की स्थिति में यह स्पष्ट करें कि आपने सुझाव मांगने व सवाल पूछने वाले लोगों की कद्र की है। इससे आप साबित कर सकेंगे कि बेहतर सवाल पूछने वाले भी आगे बढ़ सकते हैं, न कि सिर्फ अच्छे जवाब देने वाले।

■ पहले पूछने की आदत
अपनी दिनचर्या में 'पहले पूछो' की आदत शामिल करें। इसके लिए साल में दो बार प्रत्येक कर्मचारी को आपसे या सहकर्मियों से दो सराहनीय बातें तथा दो सुधार योग्य पहलू साझा करने के लिए कहें। इससे फीडबैक सामान्य और सहज बन जाता है, प्रदर्शन व टीम के रिश्ते मजबूत होते हैं एवं सीखने की संस्कृति को गहराई मिलती है।

भारत सरकार की मुहिम

विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग-2026

भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को साकार करने की दिशा में, 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग-2026' या 'विकसित भारत प्रश्नोत्तरी' की शुरुआत एक प्रेरक पहल के रूप में की गई है। यह युवाओं को एक साझा मंच प्रदान करके भारत के भविष्य को आकार देने के लिए प्रोत्साहित करने की एक मुहिम है। 12 भारतीय भाषाओं में आयोजित होने वाली यह प्रश्नोत्तरी युवाओं के ज्ञान और सोच को परखेगी, खासकर भारत की प्रगति, नीतियों, नवाचारों और विकसित भारत की परिकल्पना से जुड़े पहलुओं पर। इसमें भाग लेने के लिए प्रतिभागियों की आयु 15 से 29 वर्ष के बीच होनी चाहिए। प्रश्नोत्तरी में कुल 20 बहुविकल्पीय सवाल पूछे जाएंगे। विजेताओं का चयन कंप्यूटर-आधारित लॉटरी प्रणाली के माध्यम से किया जाएगा। इच्छुक युवा आधिकारिक लिंक tinyurl.com/2p8x6jz6 पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से 31 अक्तूबर, 2025 तक इसमें आवेदन कर सकते हैं।

एनएचआरसी की पहल

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की इंटर्नशिप

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) की ओर से इंटर्नशिप प्रोग्राम के लिए आवेदन मांगे जा रहे हैं। इसका उद्देश्य विश्वविद्यालय के छात्रों में मानवाधिकारों के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता के बारे में जागरूकता फैलाना है। आवेदक मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के नियमित पाठ्यक्रमों-जैसे मानवाधिकार में पीजी डिप्लोमा या एमए, राजनीति विज्ञान या एलएलबी आदि में नामांकित होने चाहिए। छात्रों को बारहवीं और उसके बाद के डिग्री कार्यक्रमों में न्यूनतम 65 फीसदी अंक प्राप्त करने जरूरी हैं। साथ ही, आवेदकों की आयु 28 वर्ष से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। इस इंटर्नशिप में मानवाधिकारों के संबंध में व्यावहारिक अनुभव पाने का मौका मिलेगा। आवेदक आधिकारिक लिंक tinyurl.com/4cbbe7pw पर जाकर इसमें ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

एग्जाम अलर्ट हफ्ते की परीक्षाएं

एसएससी जूनियर इंजीनियर परीक्षा-2025

- **परीक्षा की तिथि :**
  27 से 31 अक्तूबर, 2025
- इस कंप्यूटर आधारित परीक्षा में सामान्य बुद्धि और तर्क तथा सामान्य जागरूकता से 50-50 अंकों के 50-50 सवाल, जबकि सामान्य इंजीनियरिंग के विषयों से 300 अंकों के 100 सवाल पूछे जाएंगे।
- **प्रवेश-पत्र डाउनलोड करने का लिंक**
  ssc.gov.in

एनआईएसीएल एओ (मुख्य) परीक्षा-2025

- **परीक्षा की तिथि :**
  29 अक्तूबर, 2025
- परीक्षा में 200 अंकों के लिए कुल 200 बहुविकल्पीय सवाल पूछे जाएंगे। इसके अलावा, 30 मिनट की एक वर्णात्मक परीक्षा भी होगी, जिसमें अंग्रेजी भाषा में 10 अंकों के लिए पत्र और 20 अंकों के लिए निबंध लिखना होगा।
- **प्रवेश पत्र यहां से डाउनलोड करें**
  ibpsonline.ibps.in/niacljul25

खुद को परखें

1. 2025 हेनले पासपोर्ट सूचकांक में भारत का स्थान क्या है?
   (a) 84वां (b) 85वां
   (c) 87वां (d) 88वां
2. भारतीय रिजर्व बैंक के हालिया आंकड़ों के अनुसार, किस भारतीय राज्य में प्रति व्यक्ति यूपीआई लेन-देन का उपयोग तीव्रता सबसे अधिक है?
   (a) कर्नाटक (b) गुजरात
   (c) तेलंगाना (d) महाराष्ट्र
3. गोमती नदी के पुनरुद्धार के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शुरू किए गए मिशन का नाम क्या है?
   (a) गंगा सफाई मिशन
   (b) यमुना कार्य योजना
   (c) जल शक्ति अभियान
   (d) गोमती पुनरुद्धार मिशन

उत्तर : 1.b, 2.c, 3.d

सामान्य ज्ञान

चैटजीपीटी एटलस

■ क्या है
ओपनएआई का पहला एआई-संचालित वेब ब्राउजर, जिसकी मदद से अन्य पारंपरिक सर्च इंजनों की तुलना में दैनिक कार्यों को करने में काफी सहूलियत होने की उम्मीद है।

■ सुर्खियों में क्यों
हाल ही में, इसका अनावरण किया गया।

■ सुपर-असिस्टेंट का तमगा
इसके इस्तेमाल से किसी भी टेक्स्ट को कॉपी या पेस्ट किए बिना और टैब (वेबसाइट) बदले बगैर अधूरे कार्यों को पूरा करने में मदद मिलेगी। इनबिल्ट मेमोरी की मदद से यह पिछले कार्य याद रख सकता है। इसीलिए ओपनएआई ने इसे 'सुपर-असिस्टेंट' का तमगा दिया है।

■ खुद काम करने में सक्षम
एजेंट मोड की मदद से यह रिसर्च, प्लानिंग और बुकिंग जैसे काम खुद कर सकता है। हालांकि, फिलहाल इसका उपयोग केवल मैकओएस यूजर्स तक ही सीमित है।

■ गूगल को टक्कर
अपनी खूबियों की वजह से यह गूगल के सर्च इंजन क्रोम को सीधी टक्कर देगा। इसकी घोषणा होते ही गूगल के शेयरों में दो फीसदी से भी ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई है।

कल्पवृक्ष FAITH & WISDOM

अकाल मृत्यु से मुक्ति का महापर्व

भाई दूज भाई-बहन के स्नेह और रक्षा का प्रतीक पर्व है। इस दिन यमुना के जल में स्नान कर सूर्यदेव को अर्घ्य देने वालों को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।

वर्तमान श्रीश्वेतवाराह कल्प में अकाल मृत्यु से मुक्ति पाने का महापर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया 'भाई दूज' को यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन बहनें शिव-पार्वती एवं यमदेव की पूजा करके अपने भाइयों के माथे पर चंदन, अक्षत अथवा रोली आदि का तिलक लगाकर उनकी आरती उतारती हैं। दाहिने हाथ में कलावा बांधकर गंध, अक्षत और पुष्प से आशीर्वाद देते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं कार्य-व्यापार में सफलता की कामना करती हैं। सनातन धर्म में यह एक ऐसा पर्व है, जहां बहनें भी अपने भाइयों को अकाल मृत्यु से मुक्ति दिला सकती हैं।

पं. जयगोविंद शास्त्री

यही नहीं, बहनें भाइयों को शनिदेव की साढ़ेसाती, ढैय्या और उनकी मारक दशाओं के कुप्रभाव से भी बचा सकतीं हैं। भाई भी उपहारस्वरूप बहनों को वस्त्र-आभूषण आदि देकर उनपर स्नेहवर्षा करते हैं। संध्या के समय बहनें भाइयों की लंबी उम्र की कामना के लिए यमदेव को प्रसन्न करने के उद्देश्य से अपने दरवाजे पर चार मुखवाला दीप दक्षिण दिशा की ओर मुख करके प्रज्वलित करती हैं। सनातन धर्म मानने वाले सभी लोगों को इस दिन दक्षिण दिशा की ओर मुख करके चारमुखी दीपक प्रज्वलित करते हुए यह मंत्र-

ॐदीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिः जनार्दनः। दीपो हरतु में पापं पूजा दीप नमोस्तु ते।। पढ़ना चाहिए, साथ ही तीन बार 'ॐ यमदेवाय नमः' का उच्चारण करके मृत्यु के देवता यम को प्रणाम करना चाहिए।

इस महापर्व के पीछे एक पौराणिक कथा है, जो इस प्रकार है। यमुना अपने भाई 'यमदेव' से बड़ा स्नेह करतीं थीं। वे भाई यम से बार-बार निवेदन करतीं कि वह उनके घर आएं और भोजन करें। यमराज अपने काम में व्यस्त रहने के कारण यमुना के निमंत्रण को टाल जाते। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर एक दिन 'यमदेव' को अपनी बहन यमुना की बहुत याद आई। उन्होंने दूतों से यमुना को ढूंढने के लिए कहा, लेकिन वे उन्हें तलाशने में विफल रहे। तब यमराज स्वयं ही गोलोक गए, जहां विश्राम घाट पर यमुना जी से भेंट हुई। भाई को देखते ही यमी ने भावविभोर होकर उनका स्वागत-सत्कार किया तथा उन्हें स्वादिष्ट भोजन करवाया। इससे प्रसन्न होकर यमदेव ने कहा बहन! वरदान में जो चाहे मांग लो, बहन यमी के मन में जनकल्याण की चिंता हुई और उन्होंने कहा, भैया मुझे वरदान दो कि जो मेरे जल में स्नान करें, उन्हें यमपुरी की कठोर यातनाएं न सहनी पड़े। जनकल्याण के प्रति बहन की व्याकुलता देख यमदेव ने कहा, 'एवमस्तु'! अर्थात ऐसा ही हो! किंतु जो तुम्हारा तिरस्कार करेंगे, तुम्हें बार-बार अपमानित करेंगे मैं उन्हें यमपाश में बांधकर यमपुरी ले जाऊंगा, फिर भी यदि वह तुम्हारे जल में स्नान करके सूर्यदेव को अर्घ्य देंगे, उसे स्वर्गलोक में स्थान मिलेगा। तभी से भाई दूज का यह त्योहार मनाया जाता है। जिनकी बहनें दूर रहती हैं, वे उनसे मिलने जाते हैं और टीका कराकर उपहार आदि देते हैं।

मत्स्य पुराण के अनुसार 'भाई दूज' के दिन मृत्यु के देवता 'यम' को प्रसन्न करने के लिए उनका षोडशोपचार विधि से पूजन किया जाता है। ब्रजमंडल में इस दिन बहनें अपने भाइयों के साथ यमुना में स्नान करती हैं। यमुना तट पर भाई-बहन का साथ-साथ स्नान एवं भोजन करना कल्याणकारी माना जाता है।

आत्ममंथन, अध्ययन और आत्मोन्नति का दिन

दीपावली के पांचवें दिन मनाया जाने वाला ज्ञान पंचमी का पर्व ज्ञान, विद्या और बौद्धिक विकास को समर्पित है। यह दिन हमें यह स्मरण कराता है कि जीवन में ज्ञान ही सबसे बड़ा प्रकाश है, जो अंधकार रूपी अज्ञान को दूर करता है। इसे सौभाग्य पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। जैन परंपरा में यह पर्व विशेष महत्व रखता है- इस दिन ग्रंथों, पुस्तकों, लेखन सामग्री और शिक्षण उपकरणों की पूजा की जाती है। माना जाता है कि ज्ञान पंचमी पर की गई साधना, अध्ययन और पूजा से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता बढ़ती है तथा जीवन में

ज्ञान पंचमी 26 अक्तूबर

सफलता के नए मार्ग खोलती हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार ज्ञान और कर्म एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। ज्ञान के माध्यम से ही व्यक्ति अपने कर्मों का विवेकपूर्वक चयन कर सकता है और उन्हें शुद्ध कर सकता है। बिना ज्ञान के किया गया कर्म अधूरा माना जाता है। सच्चा ज्ञान वही है, जो अच्छे कर्मों में प्रकट हो, इसलिए यह दिन आत्ममंथन, अध्ययन और आत्मोन्नति का प्रतीक है। इस अवसर पर लोग पुस्तक पूजन, स्वाध्याय और दान जैसे कार्य करते हैं तथा यह संकल्प लेते हैं कि वे ज्ञान के प्रकाश से स्वयं और समाज दोनों का कल्याण करेंगे। इस प्रकार, ज्ञान पंचमी आत्मज्ञान, सत्य और सद्कर्म की दिशा में प्रेरणा देने वाला पर्व है।

सप्ताह का मंत्र

सर्वेषामेव भूतानां हृद्येष वसतीश्वरः।
पश्यन्त्येनं ब्रह्मभूता विद्वांसो वेदवादिनः।।
स आत्मा सर्वभूतानां स बीजं परमा गतिः।
स्तूयते वैदिकैर्मन्त्रैर्देवदेवो महेश्वरः।।
तमर्चयति यो रुद्रं स्वात्मन्येकं सनातनम्।
चेतसा भावयुक्तेन स याति परमं पदम्।।
तस्मादनादिमध्यान्तं विज्ञाय परमेश्वरम्।
कर्मणा मनसा वाचा समाराधय यत्नतः।।
यत्नात् परिहरेशस्य निन्दामात्मविनाशिनीम्।
भवन्ति सर्वदोषाय निन्दकस्य क्रिया यतः।।
यस्तवैष महायोगी रक्षको विष्णुरव्ययः।
स देवदेवो भगवान् महादेवो न संशयः।।

स्रोत : कूर्म पुराण

शिव ही बीजरूप तथा परम गति हैं

संकेत : प्रस्तुत मंत्र कूर्म पुराण से लिया गया है, जिनमें दक्ष का यज्ञ विध्वंस हो जाने पर जब स्वयं महादेव वहां उपस्थित हुए, तो सभी देवों ने उनकी स्तुति की, जिनपर प्रसन्न होकर हंसते हुए श्रीशिव ने देवताओं तथा प्रचेता पुत्र दक्ष से कहा- देवताओं! मैं आप पर प्रसन्न हूं। आप सभी अपने-अपने लोक को जाएं। सभी यज्ञों में विशेष रूप से मेरी पूजा करनी चाहिए तथा मेरी निंदा नहीं करनी चाहिए।

मंत्रार्थ : प्रजापति दक्ष से भगवान शिव की महिमा का वर्णन करते हुए श्रीब्रह्मा जी कहते हैं, हे वत्स दक्ष! ये परमेश्वर सभी प्राणियों के हृदय में निवास करते हैं। वेदवादी ब्रह्मस्वरूप विद्वान लोग इनका दर्शन करते हैं। ये सभी प्राणियों की आत्मा हैं। बीजरूप तथा परम गति हैं। वैदिक मंत्रों द्वारा देवाधिदेव इन महेश्वर की स्तुति की जाती है। जो उस अद्वितीय सनातन रुद्र की अपनी आत्मा में श्रद्धायुक्त मन से आराधना करता है, वह परमपद अर्थात् मोक्ष प्राप्त करता है। इसलिए आदि, मध्य और अंत से रहित परमेश्वर को जानकर मन, वाणी तथा कर्म से प्रयत्नपूर्वक उनकी आराधना करो। अपना ही विनाश कर डालने वाली शंकर की निंदा करना प्रयत्नपूर्वक छोड़ दो, क्योंकि निंदा करने वाले की सारी क्रियाएं दोषयुक्त ही होती हैं।

तात्पर्य : अपनी तामसी वृत्तियों से अतिअहंकार के वशीभूत हुए प्रजापति दक्ष ने जब यज्ञ करते समय शिव को निमंत्रण न देकर उनके विषय में निंदापरक बातें की तो इससे आहत होकर माता सती ने अपना शरीर त्याग दिया। इससे क्रोधित होकर महादेव ने अपने शिवगणों को भेजकर उनके यज्ञ को विध्वंस करा दिया, युद्ध के समय दक्ष का सिर भी धड़ से अलग जा गिरा। बाद में देवताओं की स्तुति से श्रीशिव प्रसन्न हुए और सभी को शिव निंदा न करने के उपदेश दिए।

23 अक्तूबर, 1941

आज का दिन

डिज्नी की एनिमेटेड संगीतमय फिल्म 'डंबो' का वर्ल्ड प्रीमियर हुआ था। यह फिल्म डंबो नामक एक नन्हे सर्कस हाथी पर केंद्रित है, जिसे उसके असामान्य बड़े कानों के कारण दूसरे जानवर लगातार चिढ़ाते रहते हैं।

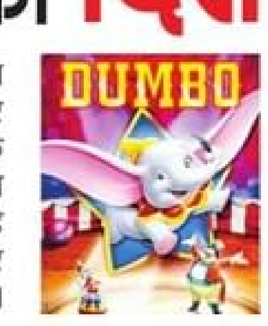

- 1925 : अमेरिकी हास्य अभिनेता जॉनी कार्सन का जन्म हुआ था।
- 1956 : अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की स्थापना हुई थी।
- 1998 : अमेरिकी गायिका ब्रिटनी स्पीयर्स का पहला गीत 'बेबी वन मोर टाइम' रिलीज हुआ था।
- 2001 : एप्पल ने आईपॉड नामक पोर्टेबल मीडिया प्लेयर लॉन्च किया था।

व्रत त्योहार

आज : कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया।
कल : हेमंत ऋतु, सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोले।
राहुकाल : प्रातः 10.30 से 12.00 तक

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 02 कार्तिक मास शक 1947, कार्तिक मास 08 प्रविष्टे, 01 जमादिउलअवल हिजरी 1447, कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतीया 25.19 तक उपरांत चतुर्थी, अनुराधा नक्षत्र दिन-रात, सौभाग्य योग 29.53 तक उपरांत शोभन योग, तैतिल करण 12.02 तक उपरांत गर करण, चंद्रमा वृश्चिक राशि में दिन-रात।

■ सूर्योदय : 06.32
■ सूर्यास्त : 17.39
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : दिनमान अनुकूल रहेगा। सरकारी क्षेत्र में अटके कार्य पूर्ण होंगे। नौकरी में पद भार बढ़ सकता है।

वृष : आरोग्य सुख अनुकूल रहेगा। कोर्ट-कचहरी में अटके मामले सुलझेंगे। नौकरी में वर्चस्व बना रहेगा।

मिथुन : वैचारिक प्रखरता से अटका कार्य बनेगा। कार्यक्षेत्र में मान-सम्मान बना रहेगा। संतान पक्ष से सुख मिलेगा।

कर्क : भाग्य सहायक रहेगा। किसी परेशानी से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में सम्मान बना रहेगा।

सिंह : मन में आशा का संचार होगा। योजना में सफलता मिलेगी। आर्थिक क्षेत्र में सावधानी बरतें।

कन्या : मानसिक तनाव बना रहेगा। विश्वासपात्र से धोखा संभव है। नौकरी में धैर्य बनाए रखें। व्यवसाय में लाभ होगा।

तुला : मानसिक उहा पोह बना रहेगा। कार्य विशेष की पूर्ति होगी। नौकरी में सम्मान बना रहेगा। थकान रहेगी।

वृश्चिक : दिनमान सामान्य रहेगा। कार्य क्षेत्र में सावधनी बरतें। नौकरी में अधिकारी अनुकूल रहेंगे। विरोधी से बचें।

धनु : आत्मबल बनाए रखें। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ेगी। चल-अचल संपत्ति बढ़ सकती है। छोटी यात्रा संभव है।

मकर : मानसिक चिंतन बना रहेगा। नौकरी में कार्य कुशलता बनी रहेगी। कार्य विशेष में अवरोध आएंगे।

कुंभ : मन प्रसन्न रहेगा। नई योजना में सफलता मिलेगी। नौकरी में दबदबा बना रहेगा। सेहत नरम रहेगी।

मीन : मान-सम्मान की चिंता रहेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी। राजकाज में आंशिक सफलता मिलेगी।

जन्मदिन

मलाइका अरोड़ा, अभिनेत्री

इस वर्ष का प्रारंभ आपके प्रतिकूल रहेगा। प्रत्येक कार्य में अवरोध आएंगे। समाज में आपके प्रति भ्रामक धारण बन सकती है। धैर्य बनाए रखने पर योजनाओं में सफलता भी अवश्य मिलेगी। वर्ष मध्योपरांत समय में शनैः शनैः सुधार आएगा। अटके मामलों में सफलता मिलेगी। न्याय क्षेत्र में विजय मिलेगी।

सुडोकू

		6		3	5			1
		5			4			
9		7	8					2
7	9							
2								8
							4	6
6					9	1		5
			5			9		
5			2	6		8		

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

8	2	6	9	3	5	4	7	1
1	3	5	7	2	4	6	8	9
9	4	7	8	1	6	3	5	2
7	9	4	6	5	8	2	1	3
2	6	1	3	4	7	5	9	8
3	5	8	1	9	2	7	4	6
6	8	3	4	7	9	1	2	5
4	1	2	5	8	3	9	6	7
5	7	9	2	6	1	8	3	4

डेली हेल्थ कैप्सूल

डायबिटीज में लाभदायक कच्चा केला

कच्चे केले के सेवन से सेहत को अनेक फायदे मिलते हैं। इसके सेवन से ब्लड शुगर का स्तर भी नियंत्रित रहता है।

कच्चे केले में विटामिन सी, पोटेशियम, कैल्शियम, प्रोविटामिन ए, विटामिन बी6, जिंक, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसमें फाइबर उच्च मात्रा में पाया जाता है। फाइबर कार्ब्स को पाचने और उसके अवशोषण को धीमा करने में मदद करता है। इससे ब्लड शुगर नियंत्रित रहता है। इसका ग्लाइसिमिक इंडेक्स

भी कम होता है, जिससे कच्चा केला ब्लड शुगर के स्तर को बढ़ने नहीं देता है। कच्चे केले में भरपूर मात्रा में फाइबर होता है। इससे आपको पेट लंबे समय तक भरा हुआ महसूस होता है और आपको बार-बार खाने की इच्छा नहीं होती है। नतीजे के तौर पर वजन नियंत्रित रहता है। साथ ही मोटापे से होने वाली बीमारियों से भी बचाव होता है। कच्चे केले में पोटेशियम होता है, जो ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद करता है। इससे दिल भी सेहतमंद रहता है। इसमें विटामिन सी, ई और के होता है, जो मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है। इससे खाना जल्दी पचता है और पेट फूलने की परेशानी से भी राहत मिलती है। इसके अलावा कच्चे केले में विटामिन बी 6 भी पाया जाता है, जो मस्तिष्क के विकास में मदद करता है और याददाश्त को भी बढ़ाता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

कच्चे केले का अधिक सेवन करने से पेट फूलने, गैस, कब्ज, सीने में जलन और जी मिचलाने जैसी समस्याएं हो सकती हैं। यदि आपको लेटेक्स से एलर्जी है, तो कच्चा केला खाने से बचना चाहिए।

-पायल शर्मा, आहार विशेषज्ञ